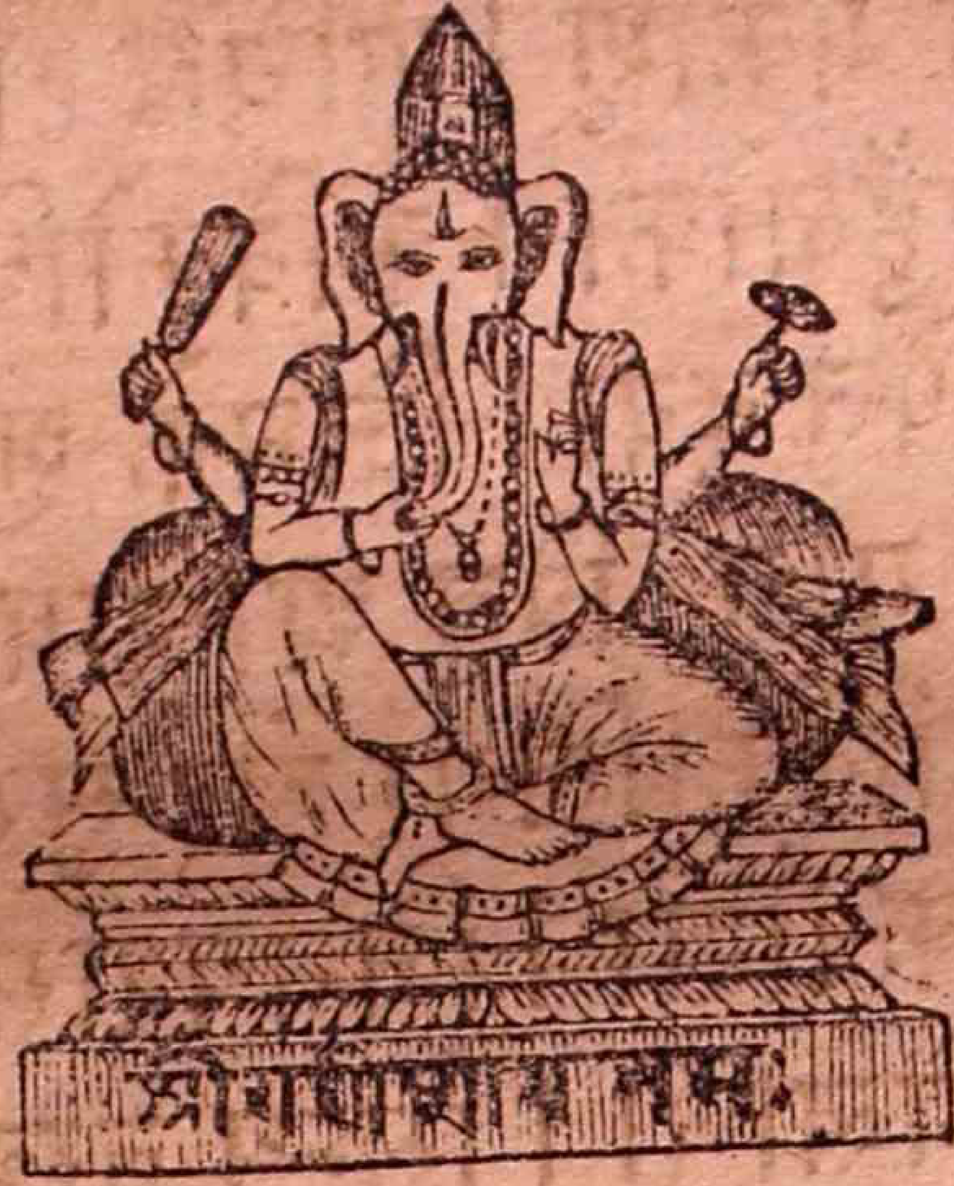


अथ कृष्णप्रिया

पूर्वार्द्ध॥

सोरठा

धर्म अनुज पितु मित्र ता अरि तनय कृपाल चित।
जिनके अमित चरित्र बन्दौं पद तिनके सहित॥
सिन्धु सुता पति जौन रक्षक भुवन सुचारिदश।
दया करौ प्रभु तौन बन्दि चरण वरणौं सुयश॥
उमा रमण यशधाम पञ्च बदत सुन्दर सुखद।
द्रवौ सुदायक काम संत असंतन को दुखद॥
सरवरसुत सुत नाम वेद बदन शोभित सुभग।
वरणत हरिगुण ग्राम द्रवौ लहौं शुभ ग्रंथ मग॥
बंदौं शक्ति अनादि जाकृतत्रै अरु पंचदश।
लखत न सुर ब्रह्मादि द्रवौ सुवरणौं कृष्णयश॥

गुरुपदरज हरि कर सम जानी। बंदौं समुद जोरि युग पानी॥
कुमतितिमिरहरसुमतिबढ़ावनि। ज्ञान कंज सर उर हुलसावनि॥
भ्रम तारे अदृश्य कृत सोहै। कृष्णाचंद मलिन द्युति जो है॥
दुबिधा निशा अंशजनु मेटनि। बुधि आतम चक्रईपति भेटनि॥
छल प्रपंच अज्ञान अपारे। विघ्न विषय तस्कर हियहारे॥

मन सुजान भल पाइ प्रकाशू । शुचिह्वै हरियश बरणहिं आशू ॥
गुरु उपमाके योग तिहुँलोका । कविकोबिद काहू न बिलोका ॥
पुनि अब बन्दि मात पितु देवा । जिनके शुक्र बपुष मम एवा ॥
दो० सोदयाल ह्वै मातु पितु आशिष दीजिय नीक ।
नशै सकल कलिकालिमा होइ सुभग मति ठीक ॥
बहुरि बन्दि हनुमान कपीशा । जिनयशसरवरभणतकबीशा ॥
चारुघाट रघुबीर मिलानी । सिन्धु तरब शुभभरा सुपानी ॥
सुरिसा तोषब निशिचर मारिब । लंकिनिहनबन अद्दुखउजारिब ॥
रावण सुत संग्राम अपारा । बन्धन रावण बचन बिचारा ॥
बढ़ब लँगूर लंककर जारन । सोइजनुबसतजीव जलचारन ॥
सियसुधि रामहिं कहब सहेता । सेतु बंध रण चरित समेता ॥
रजनीचर मारण बहुतेरे । ते जलजन्तु लसत जल नेरे ॥
औषधिसहित द्रोणगिरिलाउब । शरअगाधता लषणजियाउब ॥
दो० कुम्भकरण रण भांति बहु अपर निशाचर युद्ध ।
सोहत सर ढिग वृक्ष जनु सफल सपल्लव शुद्ध ॥
हरिजिति रावण बिबिध लराई । सरतट चतुर चारु अमराई ॥
दुहिता मिथिलप राममिलावन । सोइनिरमलताजनुजलपावन ॥
कहब भरतसन प्रभु आगमनू । बुध मधुरत्व सुजन दुखदमनू ॥
अपर अनेक चरित हरिकेरे । प्रफुलित सरजस कमलघनेरे ॥
राम भरत सन कह कपिकरणी । अलिवत ताहिपावीशनबरणी ॥
हरिहयमखरण बिबिध बिलासा । शुभ पराग मकरन्द सुबासा ॥
अचल भक्ति रघुपतिपदपावनि । मनुसमीरशुभबहत सोहावनि ॥
ब्रह्मज्ञान रत हरिय अभंगा । शुचि तड़ाग जनुउठततरंगा ॥
अबुध जेन हरिरस लवलीना । तृषा मनोरथ फिरत मलीना ॥
बिषयक नैन सूझसर नाहीं । कौनभांति सरढिगलघुजाहीं ॥
ब्याकुलफिरत नरनजगबूझत । मधुरोदकसरसो नहिं सूझत ॥
मेधा धाम चतुर भव जेई । मज्जत यहि सरसानँदतेई ॥
दो० दुबिधा दोष अनेक जे बिघ्न भयंकर भाव ।

जानि मैल जनु आपुकर तनसे सकल छुड़ाव ॥
जाकरयश असमुभगसर सो कृपालकपिराज।
विघ्न दोष सब नाशिये रहै दासकी लाज ॥
यह यशहौं बरणौं बहु बारा। सुन्दर कविता विविध प्रकारा ॥
आकांक्षा जो जीव मम भयऊ। कपिपतिदास जानिमोदयऊ॥
अबकी बार भरोस तुम्हारा। कर्यो कृपा जेहिलागौं पारा ॥
दोष अमित ममतन अनुमानी। कोपन कर्यो क्षम्योजनजानी॥
सा लंकार विविध कबिताई। छन्द ग्रन्थ नानाबिधि गाई ॥
नवरस कबित भाव कबितीनी। उपमा अमित भांति करिदीनी॥
संधि दोषयुत भंग कराला। उत्क्रम छन्द दीख गणमाला ॥
देशकाल आगम विपरीता। अनरस कबिता भणी अभीता॥
अक्षर ललितअर्थ बिधिनाना। कीन अमितधा कबिनबखाना॥
सो मोरे बल एको नाहीं। कह्यों एकरस कबितामाहीं ॥
आश पवन सुतकी उर मोरे। बारबार तेहि कहौं निहोरे॥
सकल दोष कविता के जोई। नाशिहिसकलकीशपतिसोई ॥
दो० दयासिन्धु अंजनितनय जानि दास निजमोहिं।
विघ्न दोष रक्षाहि लगि याँचौं स्वामी तोहिं ॥
बहुरि शारदा पद जलजाता। विनऊँप्रभुदजानि बुधिदाता ॥
चारि खानि संगम संसारा। तिनमहँ उत्तममनुजविचारा ॥
सो प्रताप वाणी करभाई। जेहिकरि बिबुधकरतनिपुणाई॥
होहु सहायकमे कमलासिनि। जिह्वाग्रमहाहुविलासिनि ॥
पाइ प्रताप तोर सुनु माता। वरणौं कृष्णचरितसुखदाता ॥
दश दिग्पालन शीश नवाऊँ। द्रवौसमस्त सुमति जेहिपाऊँ ॥
सर्व देव जे तेंतिस कोरी। विनवौं सबहिं दोउ करजोरी ॥
निज जन जानि द्रवौ सबसोई। मोर मनोरथ पूरण होई ॥
दो० पितृदेव ऋषिराज मुनि सब के चरण मनाइ।
वरणौं विशद चरित्र यह सुनिकलिकलुषनशाइ ॥
सूरज चंद्र सकल तारागन। विनवौंद्रवौजानिसबनिजजन ॥

सनकादिक ऋषि नारदयोगी। परमारथ रत राग वियोगी॥
सुनि विज्ञप्ति जानि अनुगामी। बुधिवर वरददेवौमुनिस्वामी॥
इलाविबुध गुणखानि अपारा। वेदवाक्य भव करण प्रचारा॥
निर्णय करनहार आगमके। अपरमनुज भूसुरकेसमके॥
चरण तामरस तिनके ध्याऊँ। दयाकरैं निर्मल बुधि पाऊँ॥
ब्रह्मवंश सम तिहुँपुर माहीं। ज्ञानदृष्टिकरि दीसति नाहीं॥
चरण प्रहार सहॉगरुड़ासन।चिह्नितअजहुं चिह्नलहदासन॥
दो० विप्रवृंदजन जानिनिज अमल बुद्धिवरदेहु।
अर्थभंग अचलितवरण शोधिसुधास्योतेहु॥
बहुरि विप्रमंडलिहि प्रणामा। करिवरणौंयदुपति गुणग्रामा॥
भूत कालके कवि बुधिवाना। वरणेजिनहरियशविधिनाना॥
वर्तमान कबि बिबुधघनेरे। जेंगावत हरि यश हरिचेरे॥
होनहार जे अगमन भाई। प्रणवौं सबहि सुप्रेम दृढ़ाई॥
कस्यो अनुग्रह बालक जानी। जेहि न होइ पाछेते ग्लानी॥
संतन सभा देवसरि बन्दौं। जिनअशीशविधिसकलअनन्दौं॥
प्रगटी धर्म हिमाचल सोई। जल विचार परिपूरण जोई॥
पर उपकार विराग करारे। शुभआचरण मिलतनदनारे॥
दो० भक्तिधार आवर्त शुभ तर्कविबुध विज्ञान।
जहँ तहँ सुजननहातजनुभल इतिहासपुरान॥
चलत विवेक समीर सुजाना। उठत तरंग ज्ञान विज्ञाना॥
ढाहत कुमति कूरता रूखा। छहुऋतुसरसकतहुँनहिंसूखा॥
मोक्ष उदधि मिलत सोधाई। बड़भागी याहि सरि जो नहाई॥
निमिषमात्रसंगातिजलकणजनु।परतिभक्तिमनकरतिअचलमनु॥
सतसंगति जिनकी सुरसरिता। सबविधिफलदमनोहरचरिता॥
तेहरिभक्त जानि निजदासा। करौ दया पूजै मम आसा॥
मूरुख वादी सुमति विहीना। तिनमहँप्रथमआपुमैं चीना॥
हरिजन क्षम्यो मूढ़ता मोरी। करतकथाबड़ि मममतिथोरी॥
दो० जिमि दारिद्री जन्मकरकरतमनोरथराज।

बिन सहाय छलबलअनी अंतउठावत लाज ॥
यहिकारण मैं सन्त मनाऊँ। आशिष राज मनोरथ पाऊँ ॥
वेदव्यास विनवौं करजोरी। पुरवौ नाथ शुभेच्छा मोरी ॥
मीन कमठ बन्दौं पदकोला। नरहरि दायाकरौ अतोला ॥
बावन भृगुनायक रघुनाथा। द्रवौछोह निधिजानि अनाथा ॥
कहा चहौं तुम्हारि प्रभुताई। कृष्ण रूपधरि करयो गोसांई ॥
पुनि बसुदेव देवकी दोऊ। ध्यावति द्रवौ जान जनसोऊ ॥
तुम्हरे गेह जन्म हरिलीना। सुखदचरितनानाबिधिकीना ॥
बहुरि नंद यशुमति पदध्याऊँ। जिनकी कृपा कृष्ण यशगाऊँ ॥
गोप सखा जे हरिके साँचे। परिहरि सकल कृष्ण रसराँचे ॥
धेनु बच्छ जे कृष्ण सँघाती। जड़ जंगम पुनिनाना जाती ॥
बन्दौं सब ब्रज भूमि बसेरी। जेहिते सदृढ़ होइ मति मेरी ॥
भानुज सरि प्रणाम करि आसू। कृष्ण स्थल विहार तटजासू ॥
दो० बन्दि बहुरि राधा जननि सखी सहेली तास ।
ह्वै प्रसन्न दीजौ सुमति हरि यशकरौं प्रकास ॥
निजकुल पूज्य बड़े अरु बारे। सुहृद बन्धु जे हितू हमारे ॥
पद सरोज तिनके शिरनाऊँ। कृपाकरैं उत्तम मति पाऊँ ॥
शेषनाग पद कमल नमामी। करौ अनुग्रहलखि अनुगामी ॥
अबहौं दुष्टन करौं प्रणामू। अनस्वारथ भवजे अघधामू ॥
कूर कुटिल क्रोधी बिन कारण। धर्मबृक्ष करि मूल उपारण ॥
हरि हर यश हरिरूप निहारी। चपरिचलहिं खलजग छलकारी ॥
प्रफुलित पर अकाज कृत कैसे। लहिनिधि रंकमुदितमनजैसे ॥
पर अवगुण बरणत मुदपाई। जिमिजनहरियशकहहरषाई ॥
पिशुन कर्म महँ असबलदाई। नागार्जुन को सुररिपु भाई ॥
साधु समाज लखत नहिं सोई। अछत अक्ष अंधवत होई ॥
परतिय परधन लखत सहेतू। लहत प्रभुत्व जगोदय केतू ॥
हित अनहित सुसती व्यभिचारी। निरखतअधमाधमअघकारी ॥
दो० हरिहर अज गणपति गिरा अपर देव इन्द्रादि ।

प्रेत पूज्य चांडाल नर इनहिं कहत शठवादि ॥
ऐसे आन कराल खल गनिन सिराहिं अपार।
मनबच क्रम कर्त्तव्य तजिलेहु प्रणाम हमार ॥
भयकर भय मोहिं यहिथलनाहीं। जसहौं डरत खलन मनमाहीं॥
जोरेकर बिनवत यहि तेरे। ह्वै दयाल सुख लहहु घनेरे ॥
बालक वय बुधि थोरि हमारे। दयादृष्टि सों रहेउ निहारे॥
यदपि विनय मैं कीन्ह बहूता। सुन्योनतिन जनुबाहिर सूता॥
जिमि सपेर कोउपाल भुजंगा। क्षीर पियाइ चढ़ावत अंगा॥
अतिहित सहरावत नित ताहीं। तदपिदुष्ट कतहुँक डसिखाहीं॥
हितन अनहित हीये नीके। कटुते मगन विनय ते फीके ॥
सत्य अनुख असत्य प्रियबाणी। मगविपरीतमिलतजड़प्राणी ॥
दो० जो दुष्टन नयके चलत तासु करत खलनास।
बैर प्रीति मोहिं भाव नहिं संग तजब अनयास ॥
अब बन्दौं श्रीकृष्ण कृपाला। जनमन रंजन दीनदयाला ॥
विपति विभंजन सज्जन पालक। श्रीबसुदेव देवकी बालक ॥
साधुबन्धुखलनिशिचरघालक। सुजनसुहृद अरुअरिउरशालक॥
नील सरोज रूप मृदुबोला। अधर बिंबशुचि सोह कपोला॥
दाड़िम पंक्ति दशन की शोभा। हास्यविलोकिउडुपमनलोभा॥
कीरतुंड नासा छबि सोहै। कर्णोपमा कहै कबि को है॥
अरुण नयन भृकुटी धनुमारा। बिशद त्रिपुंड्र बिराज लिलारा॥
मेचक कच कुंचित कंगोला। काकपच्छलखिमुनिमनडोला॥
दो० मुकुटसोह शिर नाग रिपु पच्छ कहत कविराज।
कंबु कंठ कंधासु हरि भुजा प्रलंब बिराज ॥
अरुण कमल श्यामल यथा तथा हस्त ब्रजनाथ।
जेहिकर जलथल व्योमचर सबकोउहोत सनाथ॥
उर बिशाल कटि केहरि सोहै। पीत बसन तापर मन मोहै॥
कोमल कंज चरण अरुणारे। संत मनालि निरखि अपुहारे॥
नखद्युतिद्विजपतिकरकर हाँसी। तापइपुञ्जकुमतिलखिनासी ॥

कहिको कहै को कहिहै आगे । वरणत रूप चित्त अनुरागे ॥
जो स्वछंद अद्वैत कहावै । पटतर तासु कहां कबिभावै ॥
उपमा सकल कही यहनीकी । समुझत रूप लगतसो फीकी ॥
रूपजासु अस अलख अपारा । कृपा करौ शरणागत पारा ॥
उज्ज्वल यथा चपाकर आहीं । तस चरित्र तव दूषित नाहीं ॥
जानिअनाथदयानिधिस्वामी । करौ छोह हरि अंतरयामी ॥
यशतुम्हार अति अगम अपारा । कथनतासु हौं हृदय बिचारा ॥
अस हौं मूढ़ कहौ को ऐसो । दुखिया चहत भूपपद जैसो ॥
जोपै कृष्ण कृपा तव होई । कहौंकछुकनिजमतिसमसोई ॥
दो० बंदि बहुरिरेवतिरमण दयाधीश सुख खानि ।
सुमतिदीजियेकृपाकरि निजकिंकरअनुमानि ॥
कृष्णमीत अर्जुनहिं मनाऊं । जानि धनुर्द्धर शीश नवाऊं ॥
उद्धव उग्रसेनि इत्यादी । छपन कोटि यदुवंशी गादी ॥
करि प्रणाम अति सहित सनेहू । कहा चहौं हरियशयुत नेहू ॥
श्री शुकदेव परम विज्ञानी । द्वादश खंड पुराण बखानी ॥
दशमस्कंध कृष्णकर लीला । कही महामुनि ज्ञानसुशीला ॥
सुन्यो परिक्षित नृपति सहेता । मिटीकुमति उपजी चितचेता ॥
सोइतिहास विदित जगमाहीं । तदपिकथबअनस्वारथनाहीं ॥
सुगम पंथ यश नृपकरि देहीं । धनीदुखी सो मगगहिलेहीं ॥
दो० तिमिश्री शुककृत दशम शुभता आशय के तूल ।
बंदिचरण रुक्मिणि रमण बरणौं कथा अभूल ॥
रुक्मिणि सतिभामा बसुरानी । बिनवौंसबहिंकृष्णप्रियजानी ॥
निजसुत जानि द्रवौ सबमाता । तवयशसुभगकथौंसुखदाता ॥
स्थावर जंगम दुबिधि जहाना । ध्यावतसकलसुलभकल्याना ॥
अबहौं कहौं सुभग रुचिमनकी । जानतरीतिप्रीतिप्रभुजनकी ॥
समय वृथा हौं जात निहारा । भैरुचि कथौं कृष्ण अवतारा ॥
बुधि भरोसनहिं काछनि काछी । हैयकप्रबलआशहरि आछी ॥
यथा मशक प्रणमेरु उठावन । अथवा पंगुपार गिरिधावन ॥

तस यह अहै मनोरथ मोरे। पुरयहु कृष्ण कहौं करजोरे॥
दो० तराचहै सुरसरिहि जिमि लघुपपीलिका कोइ।
बिन तरणी सतसंग के पारलहै नाहिं सोइ॥
हठकरि जो उतरै तेहि माहीं। निस्सन्देह पारलह नाहीं॥
उडुप दशम चढ़ि कीट बिचारा। जैहै कृष्ण कृपा तरिपारा॥
मास नभस्य सुभगसित पाषा। अदितिजातगुरुदिनकृतभाषा॥
संवत जीव नदी तट देखे। भक्ति ब्रह्म संयुक्त बिशेखे॥
शाकः राग योग के अंगा। भूधर धरा लखे यक संगा॥
कीन्ह कथा तेहि समया रंभा। ममभाति थोरि सोऊ सहदंभा॥
मन चंचलहि बहुत हौं रोंकत। तदपि दुष्टभव राग बिलोकत॥
जब यहि पौरुष रहै न रंचा। तबखल त्यागिहिबिषयप्रपंचा॥
दो० तजि प्रपंच ह्वै शुद्ध मन करै बुद्धि सतसंग।
अब निज मनको रोंकिकै वरणौं चरित अभंग॥
बंदि चरण शुकदेवके सुनि पुराण कृत तास।
भाषा करि वरणौं चरित कृष्ण सुनत अघनास॥
निज कर्त्तब न बिबुध चतुराई। श्रीशुकदेव कथा कथ भाई॥
कठिन ग्रंथ व्याकरण बखाना। समुझत पंडित चतुर महाना॥
भाषा माहिं कबिन बहुभांती। भन्यो कृष्णयशपातकघाती॥
पढ़िगुणि सुनि ते सुखदप्रबंधा। सहजस्वभाव कीन्हयहधंधा॥
देख्यों विषय बयारि कराला। कलि कुपंथ दम्भीचगडाला॥
होत न सुरुचि कुरुचि मनकेरी। विषनतजर्तजिमिमलयबसेरी॥
यहि मिसहौं कहिहौं हरिनामा। दुखनलहौंजेहिकरियमधामा॥
भाषा लखि भाषा यह गाई। सोइ गुणनिधिपाढ़िदेइबड़ाई॥
दो० विद्या गुण नहिं अधिकतन सुखदाबिबुध सतसंग।
निज मति के अनुसार हौं गावत सुभग प्रसंग॥
सो० पढ़ि हँसिहैं बहुलोग लखि प्रबंध भाषा सरल।
भय न हँसे के योग प्रथम विचारौ हँसौ पुनि॥
बुधजन हँसैं होइ गिल्यानी। मूरुख हँसै तर्क अनजानी॥

जिमि किरात कोउ पारस पावै । सुठरदेखि तेहि निजकरलावै ॥
पाथर जानि डारि मग देहीं । दुखनलगै कछु पारस तेहीं ॥
जो पारख कर पारस पाई । बिन परखे तेहि त्यागै भाई ॥
तौ बड़ दुख पारस उर होई । असजेहिकथिनसकैबुधकोई ॥
कथा रसाल कृष्ण करतूती । पढ़तसुनतलहविमलविभूती॥
तेहिकरि मंजिमुकुर मन ज्ञानी । वरणतकथाविविधगुणखानी॥
भरा भक्तिरस कविता माहीं । गूढ़ाशय अनरसयुत नाहीं ॥
दो० चहु कोउ गुणौ प्रवीणजन चहु कोउ हँसै गँवार ।
दुहूं भांति भल कृष्णयश गावत होइ हमार ॥
सर्वोपरि कीरति विमल हरि की हृदय विचारि ।
तीनिकाल श्रुति शास्त्र भण है दायक फलचारि ॥
मुक्ति चारि विधि वेद बतावत । यहगावतते सुलभहिपावत ॥
नवधाभक्ति भजन नव जोहैं । हरियशगुणतामिलतिसबसोहैं॥
तीरथ व्रत मख पूजा ठाने । जोफल सो हरिचरितबखाने ॥
सुरपादप जो भिक्षुक पावै । गृहप्रतिबहुरि जोमानगँवावै ॥
तौ बड़मूढ़ कुमति वश प्रानी । अभिमतदानितजोतटजानी॥
इमि मतिमंद अहैं ते लोगा । हरियशत्यागिआनकृतयोगा॥
कंजसुवन मृडादि सब देवा । हरिपद परसि कृतामितसेवा ॥
अससुरपूज्य विष्णु यश धामा । धरिनररूप कीन्ह जो सामा ॥
दो० श्रीशुकदेव सो सब कथा कही सहित विस्तार ।
समुद वरणि इतिहास सो कहौं तासु अनुसार ॥
छं०॥ इतिहाससोअतिसुखदपावन ज्ञाननिधि मुनिवर कही ।
सो समुझि सुनि गुणि बुद्धि निज समबरणि अब कहिहौंसही ।
कबि कुशलकोबिद चतुर सज्जन कृष्ण गुणगायक मही ।
ते जानि बल दायालहू जो शरण हौं साँची गही ।
सो० बरणत कथा रसाल सुनौ चतुर कोबिद कुशल ।
आनँदमय सबकाल कृष्णचरित पातकहरण ॥
जब कुरु पांडव समर सिराना । भये कृष्ण तबअन्तर्ध्याना ॥

पांडव क्लेश ग्रसित भे भारी। सुतजराज्यपद करिअधिकारी॥
हिमिगिरि प्राणतजनते गयऊ। गजपुरशोक मग्नसबभयऊ॥
प्रजापाल धार्मिक नृप कैसो। पुराभूप हरि बिधु भो जैसो॥
अमित महिपजित भूप बलिष्ठा। सर्बकाल माधव पद इष्टा॥
गयेकाल यक दिन नरपाला। गयोअखेटबिपिनघनजाला॥
देखि धेनुयक वृषभ समेता। भागत तिनहिं नीच दुखदेता॥
मूशलकर पाछे ते मारत। कटुबचमुख निज शूद्र उचारत॥
निकट जानि तब भूप बोलाई। कह्यो क्रोधयुत बयन रिसाई॥
हे चांडालतुको अघ रूपा। हनत वृषभगो कह असभूपा॥
का जानसि मारग बिनधरनी। ताते अभय करत अघकरनी॥
पांडु बंश कब तू अस पावै। जेहि सन्मुख खल दीनसतावै॥

दो० असमणि भूप सक्रोधकरि गह्यो तीव्रकरबाल।
देखि शूद्र भयभीत ह्वै ठाढ़ भयो ततकाल॥
बहुरि नृपतिगो वृषभ कहँ निकटहंकारि सप्रेम।
पूछयोको तुम कहौ निज समाचार युत क्षेम॥

देव बिप्रको तुम केहि लागे। दुखितजात खल आगे भागे॥
निडर होहु जनि नीचहिडरहू। राज मोर निजहित चितधरहू॥
को समर्थ दुखदातुव भव मैं। रक्षक सायुधहौं जग सब मैं॥
सुखद बचननृप बृष सुनिबोला। शशिनवाय सुबचन अमोला॥
महाराज यह शूद्र कराला। भयदायक मूरति बिकराला॥
कज्जल नगवत लखौ स्वरूपा। सन्मुख ठाढ़ सोहै कलिभूपा॥
आगम जानिजात अब भागा। चतुष्पाद हौं धर्म्म सभागा॥
सततप अरुबिद्या पुनिदाना। मोर चरण श्रुति वेद बखाना॥
गोतन धरे धरा सुनु राजा। कलिडर भागीजानिअकाजा॥
कृतयुग विंश अंश ममराजे। त्रेता चतुर्भाग बिनछाजे॥
द्वापर अर्द्ध सुकलि चौथ्याई। यहि कारण हौं चल्यौं पराई॥
कलि कुपंथ नृपममन निबाहू। तिमिर हरण हौं यहुखलराहू॥

दो० दीनबचन बोलीधरा सुनिय धर्म्म अवतार।

कलिमहँ किहिविधि रहौं अबसुनु नृप कलिव्यवहार ॥
नीच भूप ह्वै हैं कलिमाहीं। ते अधर्म करिहैं बहुताहीं ॥
तिनकर भारसहो नहिंजाई। हौंपलानि तेहिभय सुनुराई ॥
सुनिनरेश करिकोप महाना। कलियुगनिधनचित्तनिजठाना ॥
कह्यो आजुकरिहौं खलनासा। जेहिनबहुरिगोकुललहत्रासा ॥
नरपति गिरासुनत कलिकाँपा। पराचरण उपजी तन तापा ॥
बोल्यो दीन बयन करजोरी। पृथ्वीनाथ शरण मैं तोरी ॥
निज किंकर बिचारि भुवराई। कहौठाम निबसौं जेहिठाई ॥
अजकृत तीनिकाल युगचारी। मिटिहिन सोनृप देखुबिचारी ॥
समुझि दैवकृतकालि परवेशा। धरिधीरज इमिकहा नरेशा ॥
बसहु द्यूतगृह झूँठ अवासा। मदिरा गणिकालयतवबासा ॥
हिंसक भवन चोरके गेहा। हाटक महँ निबसो युतनेहा ॥
क्षोणिप वचनसुनत कलिआसू। नृप निदेश जहँतहँ कृतबासू ॥
दो० धर्महिं उर धरि भूपतब निजगृह कीन्ह पयान।
मिलीधरा निज रूपमहँ मंगल हृदय जुडान ॥
पुनिनृप आइ राज्यमह धर्मा। लाग सुनीति करैनृप कर्मा ॥
इमि कछुकाल व्यतीते राजा। मृगयाकरसबसाजि समाजा ॥
अकसर भूप निबिड़बन गयऊ। तृषावंत व्याकुल तन भयऊ ॥
अर्जुन मुकुट शीश भूपाला। कलियुगतहँनिबसतसबकाला ॥
औसर लहिकलि नृप बुधिनासी। भ्रमितभूपवनजिमिबनबासी ॥
इमि महीश खोजत की लाला। पहुँचे ऋषिलोमशप्रणशाला ॥
बैठमहामुनि निज अस्थाना। मूंदे चक्षु करत हरि ध्याना ॥
भूपागमन ऋषय कछुजाना। नृप निजमनकृत इमिअनुमाना ॥
दो० तप मदवश मुनि अहै यह करयो न मम सन्मान।
समय कठिन कलिकृत कपट भयउभूप अज्ञान ॥
धिषणालय महीप सब काला। द्विज तोषक बड़ दीनदयाला ॥
कठिन परंतु कमल भवअंका। मेटिसकै कोउभूप न रंका ॥
कुमति बिवशनृप रहो निहारा। मृतकनाग लखितेहिथलडारा ॥

इषुधी करि उठाइ ऋषि ग्रीवा। मेलनराधि मुदित ह्वै जीवा॥
तदपिन जगा सदृढ़मुनिध्यानी। गयोभूप तबनिज रजधानी॥
शीशमुकुट धरधरा उतारी। उपजा ज्ञान शोच भो भारी॥
जातरूप ममुकुट बिशाला। जहँनिबसतकलियुग सबकाला॥
बैर सम्हारि अधीय बनायो। तेहिखल अधमकर्म करवायो॥
दो० आसी बिष सबस्वकरहैं मुनि गल मेलो जाय।
भयोदोष अस मितिनजेहि भूप हृदय अकुलाय॥
बरण धर्मत्रिय धन परिवारा। किमिन नश्यौयहु आजुहमारा॥
धृकहौं जीवत ऋषि दुखदाई। का जानिय कबयह अघजाई॥
इतबसुधेश शोक दधिमाहीं। पैरतथाह लगत जनुनाहीं॥
उत बालक खेलत तेहि काला। मुनि तट जातभये मुनिबाला॥
ऋषिकंधरअहिमृतकबिलोकी। चकितबिकलभेजिमिनिशिकोकी
सम्मत करै परस्पर सोई। तदापधीर नहिंतिन तनहोई॥
एक कहिसि कौशिकि सरितीरा। इनकर सुतखेलत सुनुबीरा॥
ताहिकहौ कोउ सुनियक धावा। मुनिसुतवृंदमध्य चलिआवा॥
दो० तहँ शृंगीऋषि समुदमन करत खेल जिमिबाल।
कहिसि जाय तेहि बालतें यहचरित्र तेहिकाल॥
का खेलत अशोच तैं भ्राता। चलुमम साथदेखु निजताता॥
वाके कंठ सर्प मृतडारा। नृपकाहू हौं नैन निहारा॥
सुनत सकोप भयो ऋषि कैसे। बीरभद्र बिधिसुत मषजैसे॥
अरुण चक्षु भृकुटी भै बाँकी। यथात्रिपुरलखिभयोपिनाकी॥
उठे रोम थर हरेउ शरीरा। कही महामुनि गिरागँभीरा॥
अबकलि भूपभये अभिमानी। धनमद मते अंध अज्ञानी॥
देहौंशाप ताहिहौं आजू। जिहि बशकालकीन्ह यहकाजू॥
असकहि मुनि कौशिकि तटजाई। जलकर लै बोल्यो अकुलाई॥
दो० जेहिभूपति ममतात गल डारमृतकअहिलाइ।
दिवससातवेंताहिकहँ सर्प अवशिडसिखाइ॥
दैअसशाप जनक ढिग गयऊ। कंधरसर्प निकारत भयऊ॥

पुनिपितुप्रति सबिनयकहस्वामी। तनसुधिकीजियअंतरयामी॥
मैं तेहिखलहि शाप दैदीन्हा। जेहि तवगलअहिमेलप्रबीना॥
पुत्र गिरासुनि चेतमुनीशा। खोलि बिलोचनदशदिशिदीशा॥
बहुरि ध्यान धरि देखत भयऊ। यहकर्त्तब भूपति करिगयऊ॥
सुतसन कहा नीकनहिंकीन्हा। शापशोचिनहिंभूपहिदीन्हा॥
जाकेराज्य सुखी मुनि लोका। पशुविहंगनहिंदुखितविलोका॥
गो हरि एक संग दोउ रहईं। बैर न प्रीति परस्पर लहईं॥
पुनि ताके नृपता हम बासी। दुखनलग्यो कीन्हें नृपहासी॥
दोष भूपलघु शाप कराला। दियउपुत्र करि क्रोधबिशाला॥
बर अरु शापदिये बिन जाने। अमित पापजनुदोषनसाने॥
भोसुत गुण तजि औगुणग्राही। शाप बिचारिन दीन्होताही॥

दो० शीलवान संतोषशुभ सहजस्वभाव अमान।
औगुण तजि गुणगहत जे तेहरिदास प्रमान॥

इमि बहुभांति सुतहि समुझाई। शिष्य चतुरऋषिएकबुलाई॥
कहिनिजाइ भूपहि सुधि दीजै। शृंगी शाप कठिन सोलीजै॥
यदपि अहै अनुचित सन्देशा। तदपिभूपसुनि सहित अँदेशा॥
करिहि उपाय शापजेहि मोचै। चलाशिष्यमगकृतअतिशोचै॥
तहँ आवा जहँ बैठनरेशा। सक्लेशभयोतनबिगलितकेशा॥
कहाभूप शृंगीऋषि शापा। दीन्हातुमहिं सहित परितापा॥
मुनिदिन गत तक्षकडसिखाई। तुमहिं रुचैसो करहु उपाई॥
जेहिकृत कर्मपाशते मोचन। होइ करियसोज्ञानबिलोचन॥

दो० जोरि बाहु मुख सुनत नृप उठा कहाशिरनाइ।
दोषशोक अर्णवतरत थक्योथाहनहिं पाइ॥

मुनि गुणिशाप तरनिसमदीन्हा। बूड़तसिंधु पारजनुकीन्हा॥
गयो शिष्य मुनि पहँ पुनिराजा। आश्रम बीतराग मनसाजा॥
जन्मेजय सुततासु प्रबीना। निजपदवीतेहिछोणिपदीना॥
कहा सुनीति प्रजापति होहू। गोद्विजादि रक्षहु करिछोहू॥
सुखी प्रजारहु सोइ बौसाऊ। कह्योतात कहि गमनेउ राऊ॥

गे रनिवास सकुचि उठिनारी। शोकबियोग उदासितभारी॥
बंदिचरण तिनकीन्ह बिलापा। निरषिभूपदिशिदुखितअलापा॥
मंदबुद्धि औगुण गृहनारी। तुमबिन कागति होइ हमारी॥
अपर समस्त बिपति दुखजोई। पतिबियोगसमत्रियहिनसोई॥
किमि सहिजाय नाथ दुखभारी। तवसँग प्राणतजैं सबनारी॥
कृत उपदेश भूप सुनिबानी। त्रियाधर्म नृपव्याज बखानी॥
पतिब्रत धर्म नारि कृत जोई। तासम अबला अपरन कोई॥
दो० कुलवंतिनि जो सलज तिय चातुरअरुधीमान।
अंबरगामी बदनिसुनु सो जगनारि प्रमान॥
उचित नारि कहँ पति सेवकाई। करैसोजेहिनसुपतिपतिजाई॥
किमपि करत पति शासन भंगा। अधिकचढ़ै अघत्रियकेअंगा॥
शुभकारजन करै हठिबाधा। यहभाषत कबिबुद्धिअगाधा॥
कहिअस धनजन तजि परिवारा। निरमोही तप लागि सिधारा॥
बैठयोग साधन गंगातट। सुनत लगी पुर रोदनकीरट॥
जेहि यह सुन्यो हाय विनठाने। रहोनकोउनर बिनपछिताने॥
युवती युवा वृद्ध कुल नारी। रुदन करैं अति भईं दुखारी॥
बृद्ध तरुण नर बालक जोई। करत विलाप सकुल सबसोई॥
दो० सुन्यो ऋषीशन हाल यह तजतभूपनिज प्रान।
सुरसरितट मुनिशाप बश जनु अथवत जगभान॥
तब श्रुति व्यास बाशिष्ठ दयाला। भरद्वाज कांती तेहि काला॥
बिश्वामित्र पराशर नारद। बामदेव गुण ज्ञान बिशारद॥
यमजमदग्नि आदि मुनि जोई। आये सहस अठासी सोई॥
डासि निजासन भूप समीपा। पंक्तिपंक्ति राजे मुनिदीपा॥
शास्त्रधर्म ऋषि अखिल बिचारी। कहैं नृपतिसन द्विजगणभारी॥
सात्विक श्रद्धा सहित भुवाला। सुनतसप्रेमतजे भ्रमजाला॥
पुस्तककाँखि दिगम्बर बेखा। श्रीशुकदेवसो मुदितबिशेखा॥
तेहि अवसर आये तेहि ठाईं। उठे ऋषय सबहिय हुलसाईं॥
दो० अरुनरेश उठि जोरिकर सबिनय बाणी दीन॥

करि प्रणाम कह ऋषय सन अमितदया तुमकीन॥
ममसुधिलेउ समय यहि स्वामी ।दयाधीश तव चरणनमामी ॥
सुनि नृपबिनय ऋषयतहँ बैसे ।कहा मुनिनसन भूपति ऐसे ॥
मुनि शुकदेव व्यासकेबालक । पौत्रपराशरके अघघालक ॥
तिन हिं देखि तुम सर्वमुनीशा ।ठाढ़ भयउ यहअचरजदीशा॥
अनुचित उचित भयोकेहिकारन । यह सँदेह ममकरियनिवारन॥
कहापराशर नृपहि बुझाई । वैबड़ हमहिंज्ञान लघुताई ॥
आदर मान दया यह कारण । येमुनि अहैं तरणअरुतारण ॥
जन्म दिवस ते भये उदासी । श्रीशुकदेव विपिनके बासी ॥
दो० उदय भाग्य बड़ तोर नृप यहि अवसर भाजानु॥
अति उत्तम जो धर्मसो कहिहौं सुमुनि बखानु ॥
जोसुनि जरामृत्यु ते राजा । तूछूटिहि भलजुरा समाजा ॥
बहुरि नृपति मुनिपदजिमिदंडा। पख्यो कहाकाधर्म्म अखंडा ॥
कर्म पाश बंधन निरुवारा । जेहिकरिहोइकहियश्रुतिसार ॥
सप्तम दिन मुनिकाल हमारा । किमि जैहौं भवसागर पारा ॥
श्रीशुकदेव कहा सुनु भूपा । है अशौच सुनुधर्म्म अनूपा॥
पर्वत दिवस अवधि तू गावत । मुक्तिचतुरच्छणमाहिं बतावत ॥
पूरब नृपति षडांगुल एका । नारद तेहि कह ज्ञानविवेका ॥
उभय दंड महँ मुक्तिहिपाई । सप्तदिवसबाड़ि अवधि बताई ॥
दो० यक चित समुझौ आपुही ध्यान सहित नरपाल ।
काशरीर को बसत को कृतप्रकाश सबकाल ॥
यह सुनि भूपसहर्ष पुनि पूछ ऋषिहि शिरनाय ।
उत्तम धर्म्म बिचारि अबकहौ मोहिं मुनिराय ॥
मुनि कह जिमिसब धर्मनमाहीं । धरम वैष्णव बड़ा सदाहीं ॥
जिमि पुराण सकलोपरि राजा । श्रीभागवत कथा सुखसाजा ॥
हरिजन जहँ यह कथासुनावैं । तीरथ धर्म्म तहाँ चलिआवैं ॥
यदपि पुराण सकल गुणखानी । यहिसमतानकराहिंसुनुज्ञानी ॥
रविस्कंधहौं महा पुराना । कहौंतोहिमोहिंव्यासबखाना ॥

सानँदश्रद्धा युत चितदीजै। महापुराण सुखदसुनिलीजै॥
समुदसुन्योनृप सुऋषि बखानी। नवस्कंध कहि कथासिरानी॥
कहाराउ सुनु दीनदयाला। कहौ कृष्णकर चरित रसाला॥
दो॰ मोरसहायक पूज्यकुल माधव अहैं ऋषीश।
सुनिमुनि कह मोहिंदयोसुख सुनौ प्रसंग महीश॥
यदुकुल मध्यनाम भजमाना। भयो भूपयक बिबुध महाना॥
तासुतनय भो पृथिक नृपाला। बिदुर तासुसुत रिपुगणकाला॥
शूरसेन तासुत भटभारी। नवौखंड पृथ्वी अधिकारी॥
प्रमदा तासु मरिष्या नामा। दशसुत तासुभये बुधिधामा॥
शरकन्या गुणरूप सुशीला। उपजीं तासुसुनौ नृपलीला॥
ज्येष्ठपुत्र बसुदेव कहावा। जादिन तासुमातु तेहिजावा॥
तादिन सुरपुर बजी बधाई। लहा अनंद अधिक सुरराई॥
अष्टम गर्भतासु त्रियकेही। प्रकटे कृष्ण साधु जननेही॥
दो॰ पंचसुता नरनाहकी बड़ीजो कुन्ती नाम।
सो व्याही नृप पांडुकहँ सकल गुणनकी धाम॥
जासुकथा भारत महँभाई। व्यासमहामुनिबरणि सुनाई॥
रोहिणि नृप रोहनकी जाता। सो बसुदेव व्याहि शुभगाता॥
तापाछे दशसप्त बिवाहा। किय बसुदेव समुद नरनाहा॥
बहुरिभूप मथुरा पुर माहीं। कंसभगिनि देवकी बिवाहीं॥
त्रिय लैचलो जबहिं महिपाला। भई व्योमबाणी तेहिकाला॥
यहिकरसुत अष्टम रिपुतोरा। उपजिहि कंसबचन सुनुमोरा॥
सुनिबाणी खल बंधन कीन्हा। बन्दी भवन बासलै दीन्हा॥
कृष्णचन्द्र जन्मे तेहिठाई। सुनिबोल्यो नृपगिरा सोहाई॥
कंसजन्म बरदान कहानी। बरणि कहौनिजसेवकजानी॥
प्रभु अवतार भयो जिमि स्वामी। सो चरित्र कहु अंतरयामी॥
पुनि गोकुल किमिगयो कृपाला। भणौमहामुनिसकलहवाला॥
श्री शुकदेव महामुनि ज्ञानी। कहीकथा अधिकारी जानी॥
दो॰ मथुरानृप आहुक यक भयो प्रथम महिपाल।

तासुतनय देवक अपर उग्रसेन रिपुकाल ॥
उग्रसेन बीते कछुकाला। भयोतहां मेदिनि प्रतिपाला॥
नाम पवनरेखा त्रिय तासू। शोभित अंग अंगसब जासू॥
पतिब्रत धर्म निरत बसुयामा। नृपनिदेश लंघक नहिंबामा॥
यकदिन भई रजोवति सोई। बिधिगतिबामजातनहिंजोई॥
पति अनुशासन रथ चढ़िनारी। सखिनसंगकाननहिंसिधारी॥
सघनबृक्ष किंशुक बहुभांती। त्रिबिध बयारितहां लहराती॥
कोकिल कीर कपोत कलापी। द्विजगण बोलिरहे तनतापी॥
अगजगतट यमुना सुखखानी। उठतबीचिलखिक्षोभतज्ञानी॥
दो० देखिमनोहर सघनबन अरु तमारिजाकूल।
उतरि रानिरथते धरा चलीससुखगतशूल॥
कानन सघनगई भ्रमि रानी। बन बीथिनसो फिरै भुलानी॥
यातुधान द्रुमलिक जेहिनामा। दैवयोग आवा तेहि ठामा॥
यौवनवती रूपनिधि नारी। देखि दुष्ट तन दशा बिसारी॥
निजमननिशिचरकृतअनुमाना। किहिबिधिभोगकरौंअकुलाना॥
अमित युक्तिकरि बासव माया। उग्रसेनवत रूप बनाया॥
सन्मुख जाइ कही मृदुबानी। देरति सुनि उत्तर दिय रानी॥
महाराज निशिकाम कलोला। करैकहा दिन रति खगकोला॥
तियनर शील धर्म अरुकानी। अहरति रहत न बेद बखानी॥
दो० तुम ज्ञानी सर्वज्ञ नृप निज मन करहु बिचार।
सुनत बचन मन कामबश अधिकभयोतेहिबार॥
गहिकर आकर्ष्योनिज ओरा। मनभावितकृतकरि खलछोरा॥
यह प्रपंचकरि भोगेसि वाही। पुनि निजरूप दिखायो ताही॥
बिकल नारि भइ बदन निहारी। सुखदकहा अस बचनप्रचारी॥
सुनु पापी अधर्म चाण्डाला। यहका कीन्हदीन्हदुखजाला॥
धर्म पतिब्रत मोर निपाता। धृकखलतव अरुतवपितुमाता॥
पुनिधृक तवगुरुजासु सिखावा। करिअघकृतममसत्य छुड़ावा॥
बाँझ न भई जननि शठ तोरी। स्रव्यो न गर्भ अरे अघघोरी॥

मानस देह जगत जे पाई। आन सत्य खल देत छुड़ाई ॥
दो० जन्म जन्मते अधम नर बास अधोगति लेत।
जानि अघी सूरज सुवन तिन्हैं महादुख देत ॥
द्रुमलिक कहा सुनौ महरानी। शापदेहुजनि बिधिकृतजानी॥
बाँझजानितोहिं मोहिं दुचिताई। अहै रानि मम मन महँ छाई ॥
निजतप फलदीन्हा तेहिकारण। मन चिन्ताहौंकीन्ह निवारण॥
गत दशमास सुवन यक होई। मम सम बली जान सबकोई ॥
नवौ खण्ड बसुधा बशताके। है है समर कृष्ण सँग जाके ॥
अब बृतांत सुनु मोर सयानी। कहौं कथा निज तोहिंबखानी ॥
पूरब कालनेमि मम नामा। हरिसँग अमित कियोंसंग्रामा॥
पुनर्जन्म अब द्रुमलिक भयऊँ। पुत्रदान तव हित लगिदयऊँ॥
दो० तजि चिंतमन सप्रेम त्रिय जाहु आपने धाम।
अस कहि द्रुमलिकअन्तरित भयउभूपगुणग्राम॥
छं० जब गयो सो बिबुधारि। तब धर्यो धीरज नारि॥
होनिहारि जसितसि बुद्धि। प्रगटी बिसरि सबसुद्धि॥
तेहि काल सजनी तासु। गइपहुँचि ता ढिगआसु॥
लखि रानि भंग शृंगार। बयसा कहा तेहिबार॥
कहँ बिलम या बिधिकीन्ह। केहितोहिंयहदुखदीन्ह ॥
कह रानि बन घन जाल। अरुहौं सुअकसरबाल ॥
सो० मिल्योबली मुखएक तेहि मोहिं दीन्हो विविधदुख।
किमिकरि कहौं बिवेक जेहि डर कंपत अजहुँ तन ॥
रानिबचन सुनिसखि अकुलाई। रथचढ़ाइ रानिहिं गृह लाई ॥
समय पाय सुनु भूप सुजाना। उपज्योतनयअमित बलवाना॥
प्रसवकाल अति चल्यो समीरा। डोलि धरा डगमग अहिधीरा॥
जगतमनिबिड़नकर निजसूझै। दिननिशिसममगाचित्तअरूझै॥
उडुगण पर्यौ इलाघन गाजे। भादिग्दाह तड़ित गतिछाजे ॥
माघ सितात त्रयोदशि जीवा। जन्म्योअसुरजोकस्मलसीवा॥
पुत्र जन्म जब भूपति सुनेऊ। चितप्रफुलितबड़आनँदगुनेऊ॥

अखिल मंगला सुखी नृपाला। जोतेहिनगरनिवसतेहिकाला॥
दो० बोलि नृपति ताही समय मंगलचार कराय।
बिप्र वृन्द बोले बहुरि निजचर चतुर पठाय॥
आवतभूप लखा द्विज वृन्दा। उठ्योसभासदसहित अनन्दा॥
भाव भक्ति करिबड़ि सिवकाई। शुक्लासन बैठारिसि आई॥
करि बिनती सुत जन्म सुनावा। सुनि भूसुरन महा मुद पावा॥
शोधी लग्न शुद्ध ज्योतिषबल। ग्रह बिपरीत परे थलहीथल॥
धर्म रहित यह सुर रिपु क्रोधी। ह्वैहै असुर सुकर्म बिरोधी॥
भूपहि कहा कंस यहि नामा। भयो सूनु तव बल करधामा॥
यातुधान पति ह्वै है राजा। बुधहरिजनकर करिहि अकाजा॥
जब अधर्म मिति आगेकरिहै। तबनिजकरहरियाहिसँहरिहै॥
दो० सुनतभूपभ्रम बशभयो द्विजगे निजनिज धाम।
आनकथा अब सुनहुनृप जो दायक मनकाम॥
देवक उग्रसेन कर भाई। तासु चरितनृप सुनुमनलाई॥
चारिपुत्र देवक के राजा। अरुषटकन्या सुमुखिसमाजा॥
प्रीति समेत दीन्ह बसुदेवै। षटौ सुता बिधुबदनी तेवै॥
सप्तम सुता देवकी जोई। देवकि गृह उपजी पुनिसोई॥
जन्मत सुरपुर आनँद भयऊ। भे प्रसन्नबुध संकट गयऊ॥
उग्रसेन के भये दश बालक। सब महँ कंस जेठ सुरशालक॥
जादिन ते उपजो खल सोई। करै उपाय अधम कृत जोई॥
प्रजा बाल लघु सो गहि लावै। अग जग गुफा मूंदि तेआवै॥
दो० पुनि न बतावै काहुकहँ तजैं बाल तहँ जीव।
बड़ बालक जो तासु जिय दाबि निकारै ग्रीव॥
प्रजालोग ते भये दुखारी। जिनसुत हने कंस अघकारी॥
सबकोउनिजनिजसुतनचोरावै। तेहि भय बालनबाहिर आवै॥
यूथ यूथ जुरि नर अरु नारी। कहैं परस्पर बैन बिचारी॥
उग्रसेन कर सुत यहु नाहीं। असुर शुक्र लक्षण तनमाहीं॥
जन्म दिवसते प्रजा सताई। तजौदेश निबसौ जनिभाई॥

सुन्यो राउ सुत कर्म कराला। कंसहि बोलि लियो तत्काला॥
राजनीति मत तत्त्व सिखावा। नृप उपदेश न तेहि मनआवा॥
तज्यो न अधम कर्म नृप हारा। मन गलानि दुखभयउअपारा॥
दो० उग्रसेन मन शोच प्रथु प्रजा दुखित लखितात।
अस सुतते बिन सुतन कस किय इंदीबरजात॥
गृह कपूत जन्मत जब आई। सुयश धर्म तब जात पराई॥
कंस बहिक्रम भई बसु बर्षा। दल बटोरि तब चल्यो सहर्षा॥
नगर राजगृह मगध प्रदेशा। अजित जरानिधि तहांनरेशा॥
मल्लयुद्ध तासन किय जाई। देखि कंस बल हिय हर्षाई॥
जरासन्ध हिय हारि महीपा। द्वै कन्या ताके गृह दीपा॥
करि उद्वाह सहित उत्साहा। कंस संग कीन्हीं नरनाहा॥
तिनहिं संगलै मथुरहि आयो। उग्रसेन सँग बैर बढ़ायो॥
यक दिन पितहिकहासुनुताता। रामराम जपि तजु दुखदाता॥
भजुकामारि नाम सुख खानी। बोल्यो भूप दुखित मृदुबानी॥
मम कर्त्ता हर्त्ता दुख रामा। तिनतजि तरौंन सुनुसुतबामा॥
किमि परिहरौं राम अनुरागा। सुरतरुतज कोउ रंकअभागा॥
निजकर नैन सेराई खोंसै। पुनि जगकाहि देइ नरदोसै॥
दो० बिबुध नदी तजि तृषित नर मृगजल धावैमूढ़।
अस मूरुखको जगतमहँ घृत जल मथि जो ढूंढ़॥
बिनशै धर्म जो हरि नहिंध्याऊं। बूड़ौं भव दधि पार न पाऊं॥
सुनि सकोपि पितुबंधनकीन्हा। सकलराजनिजबशकरलीन्ह॥
नगर फेरि खल आपु दुहाई। गृहगृह प्रति यह खबरिजनाई॥
दान यज्ञ जपतप शुभ कामा। करौ न कोउनजपौहरिनामा॥
हठ करिकरिहि जो कोउनरनारी। ताहि दंड देहौं हौं भारी॥
मिट्यो धर्मकर सेतु अपारा। सकलबिबेक कटक जनुहारा॥
बढ्यो अधर्म धरा सुनुराजा। प्रगटीकुबुधिमिटा बुधिसाजा॥
गो द्विज साधु लहैं दुखभारी। मुदितअसुरखलचोरजुआरी॥
दो० जहँ तहँ निशिचर फिरहिंबहु करैं अमित उत्पात।

दबत मेदिनी भारसों किमि अनीति कहिजात ॥
चहुंदिशि कंस महीपति जीते। सजाकटकपुनिकछुदिनबीते॥
आखंडलपुर जीतन चाहा। मंत्री कहा सुनिय नरनाहा॥
तपबल प्राप्त होत इंद्रासन। बिनतपको जीतै मघवासन॥
बलमद आपु करै जनिस्वामी। सुनासीर हरिकर अनुगामी॥
अहंकार रावणहि नशावा।सचिवबचनसुनिकटकफिरावा॥
श्रीशुक कहा सुनौ महिपाला। होइ महाअधमहितेहिकाला॥
दुखित कश्यपी भई महाना। धेनु रूप धरिरोदन ठाना॥
गई अमरपुर बज्री पासा। करिप्रहूननिज दुःखप्रकासा॥
दो० बासव सुनु संसारमहँ बढ़े असुर मिति नाहिं।
अति अधर्म ते करतहैं किमिसुख बरणे जाहिं॥
लोप्यो धर्म भानु जगमाहीं। तम अधर्म छायो बहुताहीं॥
जो सुरेश आज्ञा तव पाऊँ। तजि नरलोक रसातलजाऊँ॥
सुनि महि बचन चला अमरेशा। अजशिवादिमहिसंगनरेशा॥
पयनिधि गय मधुसूदन तीरा। सैन किये देखे रघुबीरा॥
सोवत जानि बिष्णु जनत्राता। त्रिदशबृंदनिजमनपछिताता॥
ब्रह्मा कहा शिवहि समुझाई। देवस्तुति अब करिय गोसाई॥
अमरबिनयसुनिजगिहिकृपाला। बृंदारक समाज तेहि काला॥
शंकर सहित ठाढ़ ह्वै राजा। बिनवतहरिहिजानिमहिकाज्ञा॥
दो० सकल दिवौकस जोरिकर कृत बिनती सुनु भूप।
जो सुनि जागे कृपानिधि असुर नाग हरिरूप॥
छं०जयंदेवदेवेशदेवारिहंता। जगज्जीवजयजयजगन्मातकंता॥
धरानागपातालत्रातापरेशं। त्वमेकंअनेकंस्वरूपंसुरेशं॥
नमस्कारचरणारबिंदंकृपालं। नतोहंरमानाथसंसारपालं॥
निरीहंनिराकारअद्वैतव्यापं। नमामीशमव्याहतंत्वंअपापं॥
अकामादिरूपानवद्यंअमानं। स्वभक्तामरादिंसदारक्षमानं॥
त्वमाद्यांतहीनंदयाधीशस्वामी।प्रसीदादिदेवंत्वपादंनमामी॥
छं० अतिअगममहिमानाथतोरि पारकिहित्रिधिकैलहैं।

तू देवदासन सदारच्छक अहै प्रभु आगम कहैं ॥
धरिमत्स्यरूप उबार वेदन कच्छ ह्वै भूधर धस्यो।
पुनिकोलबनिबरदशनऊपर धराधरिजगदुखहस्यो ॥
अरुकनककश्यपहत्योपुनि नरनागरिपुतनधारिकै।
प्रहलाददुखप्रभुदूरिकीन्हो दासनिजसुधिचारिकै ॥
बलिछल्योबामनबपुष बनिकै इंद्रसंशयनाशियो।
भृगुनाथह्वैजगछत्रभंज्यो राज्यकश्यपकोदियो ॥
अरु रामचंद्र बहोरिह्वै हनरावणै गतदुखमही।
जबजबनिशाचरबाढ़महिपर संतजननसतावही ॥
तबतबकृपानिधिमनुजतनधरिसकलखलननशाइयो।
अबकंसदुष्टप्रसिद्धभो जेहिकर बिबुध दुखपाइयो ॥
सो० विकल धरा सुनु ईश अब आई तोरे शरण।
करु रच्छा जगदीश धेनुरूप सन्मुख खड़ी ॥
देव स्तुति सुनतै सुनु बीरा। गगनगिराभइ सुखद गँभीरा ॥
तैं बिधि देह देव समुझाई। होनहार मम जन्म सुनाई ॥
सारस जात सुरन सन कहेऊ। बाणीरुख जो निजहियलहेऊ ॥
सुनौ दिवौकस भई जो बानी। आज्ञा तुमहिं दई यह आनी ॥
नरतनु धरि सब देव समाजा। मथुराबसहु सहितसुखसाजा ॥
तेहि पश्चात् ईश भव त्राता। प्रकटिहि चारिरूप सुखदाता ॥
यदुबंशी बसुदेव अगारा। देवकि जठर धरिहि अवतारा ॥
नंद यशोदा के गृह जाई। बालचरित करि हैं सुरराई ॥
दो० कंजजात समुझाव जब तब सुर मुनि गन्धर्व।
किन्नर यच्छ सबाम ब्रज जन्म लेत भे सर्व ॥
ब्रजमण्डल यदुबंशि ते गोप कहाये भूप।
वेदऋचन बिधिसों कहा सुनु नृपचरितअनूप ॥
जो अज तव अनुशासन पावैं। गोपी तनधरिब्रजहि सिधावैं ॥
बासुदेव सेवन हम करहीं। आपन धर्म नीक अनुसरहीं ॥
सुनिकैवचनबिहँसिकमलासन। वेदऋचनदीन्हों अनुशासन ॥

ते चलि ब्रजमण्डल कहँ आईं । नरतन धरि गोपिका कहाईं ॥
अखिल देव ब्रज उपजे राजा । किमित्ररणैकविजन्मसमाजा ॥
यहिविधि लियो सुरनअवतारा । तबहरिनिजमनकीन्हाविचारा ॥
अबसबसुरनजन्म भुव लीन्हा । मोर रजायसु पूरण कीन्हा ॥
जेहिध्यावत सबभ्रम मिटिजाई । सो चिंतवन करत भुवराई ॥
छं० चिंतवनकरि निज कृपानिधि लीन्ह यह सुविचारिकै ।
बलरामतन प्रथमहिंलषण अवतार लेइ सुधारिकै ॥
पुनि बासुदेव सुहोउँ हौं अरु भरत प्रद्युम्न होइ हैं ।
अनिरुद्ध है पुनि शत्रुहा हनि दुष्ट जग दुख खोइ हैं ॥
सो० सीता शक्ति अनादि सो रुक्मिणि तन धरै भव ।
मुनिजन सकल सुरादि लहै जन्म फल जगत तव ॥
दो० यह मत निज मन सदृढ़ किय श्रीजगदीशगुपाल ।
गावत मंगल कृष्ण यश मिटै कपट जंजाल ॥
इति श्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदास विरचितायां पीढ़ाबन्ध कंसजन्म देवस्तुति
वर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः १ ॥
दो० बन्दि चरण राधारमण निज गुरु चरण मनाइ ।
वरणौं सुखदचरित्र यह सुनि अघसकलनशाइ ॥
पुनिमुनिकहासुनियनरनायक । हरिचरित्रसबविधिसुखदायक ॥
कंसराज कृत सहित अनीती । जस पूरब गायो करि प्रीती ॥
उग्रसेन दुख युत दिन भरईं । काहि कहै जेहि ते दुख टरईं ॥
अपर कथा सुनु नृप मनलाई । देवक उग्रसेन कर भाई ॥
तनुजा तासु देवकी नामा । ब्याहन योग भई बुधि धामा ॥
देवक कहा कंस सन जाईं । तनया काहि देउँ कहु राईं ॥
कंस कहा बसुदेवै दीजौ । आनबिचारनचितकछुकीजौ ॥
सानँद देवक बिप्र बोलायो । काम्यलग्नलिखितिलकपठायो ॥
दो० सूरसेन नृप समुद तब रचि बरात अभिराम ।
देश देश के महिप सँग आये मथुरा धाम ॥

कंस बरात नगर तट जानी। पितुपितुबंधुसहितसुनुज्ञानी॥
अगवानी करि नगरहि लायो। रम्यालय जनवास करायो॥
षटरस व्यंजन बिबिध प्रकारा। दीन्ही सबहि कंस ज्योनारा॥
मंडफतर पुनि सकल बराती। शोभितभये अखिलनृपजाती॥
जस बिवाहकी बिधि श्रुति गाई। प्रथम द्विजनसोंबिधिकरवाई॥
कन्यादान दियो पुनि राजा। भामरिफेरि बहुरिसुखसाजा॥
बिदा समय यौतुक बड़ दयऊ। कंस भूप आनँद सों छयऊ॥
तिथि सहस्र कंबोज ससामा। करभसहसफलादियअभिरामा॥
अरु वसु दश सहस्र रथ मोहर। दासी दास अनेक मनोहर॥
भरि कलधौत थार मणिजाला। पट भूषण दीन्हे तेहि काला॥
अगणित बित्त अपर नृपदीन्हा। पुनिबरातपहिरावनि कीन्हा॥
यहि बिधि तोषे सकल बराती। मिलतसबहिभरिआई छाती॥

दो० सँग बरात के कंस तब पहुंचावन के हेत।
चल्योमहीपतिमुदितमन दान अमितबिधिदेत॥

ताही समय व्योम भइ बानी। अरे कंस मूरुख अज्ञानी॥
जात ससुख पहुँचावन जाही। अष्टम पुत्र प्रगटिहै ताही॥
ह्वैहै तोर काल सुत सोई। मोर वाक्य अन्यथा न होई॥
यह सुनि कंस महा भयमाना। कंप्योतनु जनु रहेउ न प्राना॥
पुनि आमर्षि देवकी केशा। निजकरगहि आकर्षिनरेशा॥
रथते दुष्ट तलातल डारा। मंडलाग्र रदपीसि सम्हारा॥
कहिसि सुनहु सबबचन हमारा। मैंनिजमन यहकीन्हबिचारा॥
जेहि पादपकर काटिय मूला। पुनिकसताहि लगैंफलफूला॥

दो० हतों देवकी को अबहिं मम सबशूल नशाइ।
करौं अकंटकराज्य जग फिरि मोहिंकालनखाइ॥

निजमन बसुदेव कीन्ह बिचारा। ममकरयहखल मरहिनमारा॥
जानत पुनि न सुकृत औपापा। अबयाहिअधम दीन्हसंतापा॥
जो अब कोप करौं हौं भारी। तौ परिणाम होइहै रारी॥
बिगरिहि काज प्रबल रिपुआही। क्षमा कियेबिनअबभलनाही॥

कहत चतुर रिपु सबलजो होई। करै क्षमा मेधालय सोई॥
जो अरिप्रबल गहै करबाला। कृत मनुहारिसाधुतेहिकाला॥
आपु नीत्र लज्जित सोहोवै। जिमिजलअग्निपरेतनखोवै॥
शत्रु सबल संग कृत रौताई। हारिहोइ अरु होइ हँसाई॥
दो० इमि बसुदेव अनेकबिधि करिअनुमान नृपाल।
जोरि हाथ तबहीं कहा सुनिये कंस भुआल॥
तुम सम बली न कोउ संसारा। सकलमहीतुम्हरोअधिकारा॥
सब नर बसत तुम्हारी छाहा। त्रियबधअनुचितअतिनरनाहा॥
तापरपुनि यह भगिनि तुम्हारी। निधनकियेअघअमितसुरारी॥
अस दुःकृत सोई नर करई। अमरहोइ जो कबहुं न मरई॥
यह संसार असार महीशा। कहत ज्ञाननिधि सर्वमुनीशा॥
जेहितन धरा अवशि मरसोई। सुर अजादिभा अमरनकोई॥
कोटि सुकृत अघकरितनपालै। तदपि अंत यहु संगन चालै॥
धनयौवन प्रभुत्व नृप ऐसो। जल बुलबुला होतहै जैसो॥
दो० निजमन शोचिबिचारुनृप सुनिकहनी पुनिमोर।
पराधीन त्रियजानितजु बढ़ैसुयश नृपतोर॥
सुनि बसुदेव बचन महिपाला। भुक्यो कंसभयलोचनलाला॥
लखिरुख पुनि बसुदेव बिचारा। यहखल बुधि आसुरीअगारा॥
निजहठटेक तजिहिनहिं आजू। बड़अनरथ भा महाअकाजू॥
अबचाहिय उपाय असकीन्हा। जेहिकरिबधनजायत्रियदीना॥
अमित युक्ति भूपति मनठानी। तदपि न कोऊ युक्तिठहरानी॥
ध्यावतहारिहि मनहिंअसआवा। पंथी भ्रमित मनो मगुपावा॥
कहौं खलै उपजिहि सुत जोई। तुरत तोहिं देहौं मैं सोई॥
यहिमिसिबचिहि देवकीकाला। फिरिदेखौंकाकरिहिगोपाला॥
सो० सुताहोइ की बाल अथवा यहु जड़ जाय मरि।
लिखेअंकबिधिभाल सो कौनिहुंकृतमिटिहिनहिं॥
दो० मनबच क्रम यह समुझिनृप कंसै कहा बहोरि।
यहि सुत करसों भूप सुनु मृत्यु होइ नहिं तोरि॥

मैं निज मनयह कीन्हबिचारा। चित दै सो सुनु कंसभुवारा॥
एक आदि बसु लगि सुतजोई। यहि त्रिय गर्भ प्रगटि है सोई॥
देहौं तुमहिं प्रसवहीं काला। अबलाबध न करियमहिपाला॥
जो भवतब्य होत सुनु भूपा। उपजत बुद्धि तासु अनुरूपा॥
बाचाबंध सुनत सुख भयऊ। तजिदेवकियदुपतिढिगगयऊ॥
कहबसुदेव बड़े तुमज्ञानी। तुमसमचतुरनकोउजगप्रानी॥
भल बिचार कीन्हो तुमभाई। अमितपापते लयो बचाई॥
तिनहिंबिदाकरिनिजगृहगयऊ। चिन्तातदपि तासुउरछयऊ॥
गयबसुदेव आपने धामा। आठौयाम जपत हरिनामा॥
कंसशोचिपुनि चार बोलाये। सकलभेद कहिते समुझाये॥
गृह बसुदेव जाहुतुमभाई। करौसदा तिनकी रखवाई॥
सुतकन्या वाके जोहोई। दीजै सोध मोहिं पुनिसोई॥

दो० तेप्रतिहारे कंस के रहत आठहूयाम।
अपरकथा सुनुसुचितमन भूपतिधिषणाधाम॥
बहुत दिवस मथुराबसत गयेबीति बिधि एव।
भयोपुत्र यकतासुके तेहि लैचल बसुदेव॥

कंस सभा जहँ जुरा समाजा। रुदत सूनु धरिदिये तहँराजा॥
यह न तात अपराधी मोरा। निधन किये संताप अघोरा॥
निरखिकंसबिस्मित ह्वैरहयऊ। आनँदसों बसुदेवै कहयऊ॥
सतबादी तुमसम कोउ नाहीं। उपमा कासुदेउं भवमाहीं॥
कपटत्यागिअरु तजि सुतमोहा। दिहेउपुत्र मोहिं परिहरिकोहा॥
अब मैं अभय भयउँ नहिंत्रासा। दयउपुत्रलै जाहु अबासा॥
अष्टम गर्भ शत्रु मम भाई। कही नाकबानी समुझाई॥
सुनि बसुदेव मुदित मनभयऊ। करिदण्डवत ससुतगृहगयऊ॥
तेहि अवसर नारद ऋषिआये। देखिकंस आतुर उठिधाये॥
अभिबंदन करि प्रेम सभीता। शुभ आसन बैठार सप्रीता॥
कथा समस्त देवऋषि पासा। कंसासुर नृप करसि प्रकासा॥
कृपासिंधु सर्बज्ञ ऋषीशा। अबजसकहोकरियधरिशीशा॥

दो॰ तब नारदमुनि कंससन कह्यो कहा यह कीन्ह ।
जो बालक बसुदेव कहँ फेरि भूप तुम दीन्ह ॥
तुमहिंनबिदितत्रिदशसबजाती । यदुबंशी भय कबुंक घाती ॥
बासुदेव सेवा हित लागे । जन्मे ब्रज हरि रस सब पागे ॥
अष्टम गर्भ देवकी केरे । शिरी कृष्ण जन्महिं सुनु एरे ॥
सो कर्यादि बंशकर नासा । करि हैं कंस कृष्ण अनयासा ॥
बसुधा भार उतारिहि सोई । यहिमहँ कुछ संदेह न होई ॥
पुनि नारद गजरेखा कीन्ही । यक यक बादि आठ गनि दीन्ही
जो कहि कंस सोई गनवाई । सबते आठ आठ भइ भाई ॥
सभय कंस तब दूत बोलवा । बसुदेवालय सपदि पठावा ॥
दो॰ बालक सहित उताहिलै लावो मेरे पास ।
इत नारद उपदेशदै गये ब्रह्म आवास ॥
चरलावा बसुदेव ससूना । आइनृपहि तिनकीन्ह प्रहूना ॥
सुतलै निजकरहतसि चँडारा । यदुप सदुख निज भवनसिधारा ॥
जब जब पुत्र जन्म गृह तासू । कंसहि देइ करै सो नासू ॥
इमि षट्सुत ताके तेहि मारे । दंपति यदुप लहे दुख भारे ॥
सप्तम गर्भ शेष भगवाना । निबस्यो आइ भूप बुधिवाना ॥
कीन्ह प्रश्न नृपइमि मुनिपाहीं । यह चरित्र कस बूझयो नाहीं ॥
परम भक्त हरिके ऋषि नारद । बैरागी बुधि ज्ञान बिशारद ॥
तिनसिख बालक बधलगिदयऊ । जाते अधिकपापतेहि भयऊ ॥
सो समुझाय कहौ पुनिकारण । ममबिस्मय प्रभुकरियनिवारण ॥
श्री शुक बिहँसि भूपसन कहेऊ । का नरेश यह भेद न लहेऊ ॥
नारद परम चतुर बिज्ञानी । तिन निजमन नृप यह अनुमानी ॥
जब यह अधमपाप बहुकरिहै । नरतन तब नारायण धरि है ॥
दो॰ ताते तासन भूपसुनु अमित करायो पाप ।
मंगल भूपतिको गयो सुनि बिस्मय संताप ॥
इतिश्रीकृष्णप्रियायांमंगलदासबिरचितायांदेवकीबसुदेवत्रिबाहनारदोपदेशबालकबधबर्णनोनामद्वितीयोऽध्यायः २॥

सो० भवदधिकथाजहाज तेहिचढ़ि बुधजनसुजनसब।
सेवक सो ब्रजराज पारजात संशय नहीं॥
श्री शुकराजहि कहा बहोरी। सुनौ कथामृतरस जनुबोरी॥
जिमिहरि गर्भबासनृप लीन्हा। ब्रह्मादिकजिमि अस्तुतिकीन्हा॥
मायाजेहि बिधिलै बलरामैं। पहुंचायो सो नंदके धामैं॥
सो बृतान्त अब कहौं नरेशा। जोसुनि बिनशै कपटकलेशा॥
यकदिन कंस सभामहँ जाई। बैठि कहिसिसब दैत्यबोलाई॥
अखिल देव जन्मे महि भाई। अब पाछे रिपु जन्मेहि आई॥
मोहिं देवऋषि कहा बुझाई। मैं निज चित यह गुणाउपाई॥
मोर हितू सोई मम मीता। करै काज जो मम मनचीता॥
दो० जेहि बिधि यदुबंशीनशैं बचै न पावै कोइ।
सुनौ सभासद सकल मिलि करौं कर्म अब सोइ॥
आयसु पाय चले खल कैसे। मकरहि कूकुर धावत जैसे॥
जानत नहिं हरिरक्षक आहीं। सो न भक्ति लेवै क्षण माहीं॥
करि दण्डवत चहूँ दिग धाये। जहाँ जहाँ यदुबंशी पाये॥
भोज्य रचत भक्षत कृत पाना। बैठ ठाढ़ निरबल बलवाना॥
चलत फिरत जागतअरु सोवत। यदुबंशिहिजहँकोउखलजोवत॥
तजत न ताहि तुरतगहि लेता। नाना बिधिन तिनहिंदुखदेता॥
जात बेद काहुइ लै डारा। बोरिउदक पुनि काहुइ मारा॥
पटकि पटकि मारे बहु धरणी। भनौं भूप किमि दुष्टन करणी॥
लघु दीरघ खल भयकर बेखा। नगरगांव प्रति फिरत अलेखा॥
शोधि शोधि यदुबंशी मारत। रूप अनेक अधमते धारत॥
यदुबंशी भयभीत पराने। देश बिदेश गये दुखसाने॥
ताहि समय सुनु भूप सुजाना। दुखित भये बसुदेव महाना॥
दो० देवकि बिन निज सकल तिय गोकुलदई पठाय।
जहाँ पर्म प्रीतमबड़े बसतनंद सुनु राय॥
अति हित सहित नंदते रानी। आशा भरोस देइ गृह आनी॥
जानि मित्रत्रिय अससन्माना। प्रीति धर्म यश वेद बखाना॥

सानँद तहा रहै ते नारी । आनचरितसुनु भव दुखभारी ॥
कंसदेव जब सकल सताये । अरु बहुदोष किये मन भाये ॥
तब हरि निज चषते यक्बाला । प्रगटी सो माया बिकराला ॥
दोउ करजोरि ठाढ़ भे आगे । तासन हरि इमि कहिबे लागे ॥
सपदि भूमि धरु जाय शरीरा । मथुरा पुरी सूरजा तीरा ॥
जहँ खल कंस राजकृत माया । मम दासन दुख देत अदाया ॥

दो० पुराकाल कश्यप अदिति तप कीन्हो मम हेत ।
देवकि अरु बसुदेव ते भये जाय ब्रज खेत ॥

सो० तिनहिं कंस दुख देत बन्दीगृह करि बंदसुनु ।
षटसुत तासु निकेत जन्मे ते कंसहि हने ॥

सप्तम गर्भ लषण अब सोहै । देवकि जठर बिराजत जोहै ॥
मोहनतन धरि ताहि निकारी । तैंगोकुल लगि आउ पनारी ॥
रोहिणि उदर यतन सों धरिये । काहू जीवहि सुद्धि न करिये ॥
अवशि दुष्टकोउ ताहि न जानै । तवयश जेहिते जगत बखानै ॥
इमि मायहि समुझाय कृपाला । बोले बाणी बहुरि रसाला ॥
जब सम्हारिहूँ जसि यहकामा । जन्मसि तुरत नन्दके धामा ॥
पुनि बसुदेव भवन तेहि पाछे । मैं जन्मिहौं बीर कछ काछे ॥
नंद निकेत आइहौं सांचू । फिरिसब खलन नचैहौं नाचू ॥

दो० सुनि माया सानंद तब मथुरा आई भूप ।
प्रविशी गृह बसुदेव के धरे मोहनी रूप ॥

सो० लखो न काहू मर्म हर्‍यो गर्भ तेहि भूपतब ।
आपु भई सो बर्म दयो रोहिणिहिजाइकर ॥

जानत सब पहिलो औधाना । रोहिणि उदरराज भगवाना ॥
श्रावण सितहर तिथि बुधवारा । नृप बलदेव लीन्ह अवतारा ॥
उत गोकुल भव बजत बधाई । इतमाया मथुरहि पुनि आई ॥
दयउ स्वप्न देवकि कहँ जाई । अरु बसुदेवहि कहा बुझाई ॥
मैं तव गर्भहरेउं सुनु राजा । दयउंरोहिणिहिंजानिअकाजा ॥
तुम चिंता आपनि परिहरहू । गई बिपतिचित आनँदधरहू ॥

दंपति स्वप्न देखि अस जागे। चर्चा करन परस्पर लागे॥
यहतौ नीक कीन्ह करतारा। फिरिपाछे यह कस्योविचारा॥
दो० यहि अवसरही कंस को सुद्धि कराइय जाय।
नतु पाछे सो अधमनर दंड देइहै आय॥
सत्वर भूप शोचि अपने मन। असबसुदेव कहापहरुनसन॥
स्रवेउ गर्भ भाइहु यहि बारा। सुनियक क्षिप्र चलारखवारा॥
कंस भूप ढिग खबरि जनाई। महाराज सुनिये चितलाई॥
अबकी गर्भ अधूरा गयऊ। सबविधिनाथजानिसोदयऊ॥
सुनत भूप विह्वल भागाता। तनकंप्यो जिमिकदलीबाता॥
पुनि धीरजधरि चरहि बुझावा। यह तोअधिकभयोपछितावा॥
अष्टम गर्भ केरि रखवारी। करयोबुद्धिबल समयविचारी॥
मम रिपु सोइ जन्मि है आनी। सुनु चर चतुर कहा नभबानी॥
दो० बेगि जाहु चौकस रहौ वाही को भय मोहिं।
अपरचरित सुनुभूपअब ससुद सुनाऊं तोहिं॥
संकर्षण जन्मे जेहि रीती। पूरब सो बरणयो सह प्रीती॥
अब सुनु कृष्ण जन्म नृपज्ञानी। कहौं सहित विस्तार बखानी॥
देवकि उदर कृष्ण जब आये। अमरलोक तब बजे बधाये॥
यशुमति उदर बसी तब माया। यहवृतान्त काहुनलखिपाया॥
रहैं गर्भ युत दोनों नारी। परा पर्व यमुना कर भारी॥
गई देवकी तहां नहाना। उत यशुमतिहू कीन्ह पयाना॥
बिधि संयोग मिलीदोउ आनी। निजदुखदेवकि कहाबखानी॥
सुनतयशोदहि अतिदुखभयऊ। सानँद ताहि बचनयहदयऊ॥
दो० निज सुत तोकहँ देइहौं तूनिज दीजे मोहिं।
सो तू दीजै कंसकहँ मैं प्रतिपलिहौं ओहिं॥
बचनबंध करिदोउ त्रियगई सो निजनिजधाम।
आनचरित्त सुनु महिपजो मुनिमनलहु विश्राम॥
अष्टम गर्भ कंस जब जाना। तउखलनिजमनकरिअनुमाना॥
बहुरजनीचर प्रबल हँकारे। यदुपसदन चहुँदिशि बैठारे॥

बहुरिलीन बसुदेव बोलाई। तिनहिं कहा इमि कंसबुझाई॥
कपट त्यागि सुतमोकहं दीजै। अबकी बार सुयश बड़लीजै॥
मोर शत्रु अष्टम यह बाला। दीजौबचन करयो प्रतिपाला॥
कहि असदम्पति करपद माहीं। बेरीडारिदीन्ह खल ताहीं॥
करिसि बन्द खल एक अगारा। तामहँ डारि दीन्ह दृढ़ तारा॥
निज निकेत भयभीत सिधारा। सोइ रहा बिन बारि अहारा॥
दो० जागि बिहान सकोप चलि गया देवकी पास।
कठिन वचन बोलतभयो लखिकै गर्भ प्रकास॥
जठर न है यमगुफा यह बसत सो मोरा काल।
अपयश डरते डरत नतु हनि मेटत दुख जाल॥
नीतिशास्त्र अस कहत बिचारी। निजकर बीर बधै जो नारी॥
ताहि दोष होवै मिति पारा। ताते मैं यह मंत्र बिचारा॥
को त्रियहनै अयश की खानी। उपजिहिबालसोबधिहौं आनी॥
असकहि गजहरिश्वान मँगाये। चहुँदिशि निलयते सबबैठाये॥
दनुजसबलजग जीतनलायक। रक्षक कंस कियेते पायक॥
नितप्रति कंसजाय अरुआवै। क्षणकमात्र सोकल नहिंपावै॥
दशदिशि जहँदेखै खल सोई। परतकाल बपुहरि तहँजोई॥
आठौयाम ग्रसित भयरहई। अहिनिशिदुखितनींदनहिंलहई॥
दो० इतहिकंस कीयहदशा उत बसुदेव महीश।
देवकिसह चिंतागलित रहत मनावतईश॥
कथित दंपति बिधुर महाना। प्रसवकाल हरिकर नियराना॥
दिय बसुदेवै स्वप्न कृपाला। दुखितनहोउ तजौ दुखजाला॥
अबजन्मतहौं सपदि तलातल। सकल दुष्टहनिहौं अपने बल॥
जनिपरिताप करौ निजजीवा। पीड़ामिटिहि आइ सुखसीवा॥
जागेद्वौ असस्वप्न बिलोकी। गतदुखमनौं लखादिन कोकी॥
तेहि अवसरशतमन्यअयोनी। त्र्यंबकादि सुरसुनुपतिक्षोनी॥
सबनिजनिजबिमानचढ़िधाये। यदुपतिसदनतुरतचलिआये॥
अलख देह वृंदारक धारी। वेदध्वनि अस्तुति अनुसारी॥

नभमें सकल विमान सुहाये। मानहु उडुगण अति नियराये॥
दो॰ लखे न काहू देवते सबन सुनी ध्वनि सोइ।
प्रतिहारन अचरज लहा किमि कवि वरणै कोइ॥
छं॰ कविबरणिकिमिकरिकहैसोगतिचारितजोकाहुनलहो।
बसुदेवदेवकिमुदितमनध्वनिसुनतनिजमनयोंकहो॥
अब स्वप्न साँचो भयो हमरो दुःख हरि बिनशाइहैं।
मंगल मनोहर कृष्ण कीरति सदा कविजन गाइहैं॥
दो॰ निजनिज लोकन सुरगये करिबिनती प्रभु केरि।
आनँदभे बसुदेवअरु देवकि यह गति हेरि॥
इतिश्रीमद्विबिधकिल्विषांधकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांसंकर्षणजन्मगर्भस्तुतिवर्णनो
नामतृतीयोऽध्यायः ३॥
दो॰ बालरूप धरि कृष्णके चरण कमल धरि ध्यान।
बरणौं जन्म चरित्र अब सुनौ सोसकल सुजान॥
जन्मकाल जब हरि कर भयऊ। जगतसकल आनँद सों छयऊ॥
अमरन सकल भयो सुखभारी। असुरसमूह डरे अघकारी॥
भवदुख तिमिर नशासब अंगा। जन्मत हरि जिमि बालपतंगा॥
बन उपबन कुसुमित नवपाता। जोलखिमुनिमनविहँगभुलाता॥
सरवर सरित भरे सब नारे। बहुत दिनन के सूखे डारे॥
द्विजगण बोलत बिबिधप्रकारा। नगरग्राम प्रति मंगलचारा॥
करत नारि नर विथुर बिसारे। जहँ तहँ विप्रन यज्ञ सम्हारे॥
दशौ ककुभ आशापति हरषे। सानँद सबन फलपिता बरषे॥
ब्रजमण्डल ऊपर घन छाये। चढ़िचढ़िनिजविमानसुरआये॥
दो॰ कुसुमावलि छोड़त बिबुध विद्याधर गन्धर्व।
गावत हरियश भांतिबहु अन्य जाति सुरसर्व॥
सो॰ ढोल दमामे भेरि ते बजाय प्रभु गुण भनत।
ब्रज के सर्व बसेरि सुनत अप्सरा गान ते॥
हरिजन सुनत बधिर खलनाहीं। हरिगतिअगमसोअहैसदाहीं॥

भाद्र असित अष्टमि बुधवारा । सुभग रोहिणी ऋक्षविचारा ॥
अर्द्ध रैनि जन्मे भगवाना । सो चरित्र नहिंजात बखाना ॥
शशिमुख मेघ बरण तनशोभै । कमल नैन देखतमन लोभै ॥
शिरपर मुकुट बसन कटिपीता । जोलखि देवकि कर दुखबीता ॥
उरसोहत बैजन्ती माला । भुजप्रलंब अरुहृदयबिशाला ॥
अभरण रत्न जटित तन राजत । सुभग चतुर्भुज रूपबिराजत ॥
चारुजनेउ नासिका कीरा । निरखत नशै अखिलभवभीरा ॥

दो० शंखचक्र अरु गदाकर कंज मनोहर भूप ।
देवकि अरु बसुदेवके सन्मुख याहीरूप ॥
ठाढ़भयो गोविंदजू लखि अचरज तिनकीन्ह ।
ज्ञाननैन दंपति बहुरि जानिईश कहँलीन्ह ॥

छं० पहिचानिहरिजगपालदंपतिजोरिकरबिनतीकरी ।
जय देवदेव कृपालसज्जन दुष्टवनपावकहरी ॥
बड़भाग्यहमरोउदितभो अबनाथदर्शनपाइकै ।
छूट्योजराअरुमृत्युदुख किमिकहौंतवयशगाइकै ॥

दो० करि विनती बसुदेव तब सकल सुनाव प्रसंग ।
जेहिबिधि दीन्हो कंस दुख कहो अंग प्रत्यंग ॥

कहा मुरारि सुनौ मम बानी । चिन्ता तजौ मोहिं सुत जानी ॥
केवल तुव दुखलागि तनधारा । अबयाहिबिधि करिकरौ बिचारा ॥
गोकुल हमहिं देहु पहुँचाई । यशुमति अहै कन्यका जाई ॥
पलटि लाइ कंसहि सो दीजै । निज कहनी परिपूरण कीजै ॥
कारण मोर जानकर एहा । यशुमति नन्द प्रथमही देहा ॥
उग्रकीन्ह तप मोहिं मनुलाई । रहौं कछुक दिन तहँ लरिकाई ॥
कंसमारि तुव सेवा करिहौं । धरौ धीर बिपदा सब हरिहौं ॥
कहि अस बालरूप बनि स्वामी । रोवन लगे नाग अरिगामी ॥

दो० श्री हरि माया मोह लिय बसुदेव देवकि ज्ञान ।
जानेउ सुत हमरे भयो यह निजमन अनुमान ॥

धेनु सहस दशमन बसुदेवा । संकल्पीं मनाइ सब देवा ॥

सुतउछंगि निज हृदयलगावा । निशिकरबदनदेखिसुखपावा ॥
पुनि दोउ भरैं उसासन भारी । इमि आपस में कहत दुखारी ॥
जेहि बिधि बचै बाल कृत सोई । कीजै जो सहाय बिधि होई ॥
को अस जहां राखिये याही । बचै कंसते धाइय काही ॥
पुनि बसुदेव कहा सुनु नारी । लिखे भालाबिधि अंकबिचारी ॥
सो होनिहार मिटैंगे नाहीं । कहा देवकी सदुख तहांहीं ॥
प्रीतम बड़े नन्द पति तोरे । बचै पुत्र तिन गृह दृढ़ मोरे ॥

दो० यशुमति हरिहि कलेश मम या महँ संशय नाहिं ।
सुतहि तहां करिआउ पति जहां रोहिणी आहिं ॥

सो० बिकल कहा बसुदेव किमि छूटै बन्धन कठिन ।
करत बारता एव आपु छूटि गइ बंदि सब ॥

सकल कपाट खुले चहुँ द्वारा । रच्छक सोइगये तेहि बारा ॥
लखि यह यदुप कीन्ह प्रस्थाना । मेघ मंद ध्वनि नभघहराना ॥
शूर्पधारि सुतधरिनिज शीशा । गोकुल गमन कीन्हअवनीशा ॥
पाछे कंठीरव हुंकारा । सूझत कछु न निबिड़ अँधियारा ॥
यमुना उमड़ानी लखि आगे । तटह्वै ठाढ़ विचारन लागे ॥
पाछे पुंडरीक कृत शोरा । अग्र निम्नगा बाह प्रघोरा ॥
गोकुल जाउँ दैव केहि रीती । धरि धीरज हरिपद करिप्रीती ॥
मारतंड दुहितहि धसि परेऊ । जीवनमरन शोच परिहरेऊ ॥

दो० जिमि जिमि आगेजात सो तिमितिमि बढ़तप्रवाह ।
अमृत नासिका लगि बढ्यो भो व्याकुल नरनाह ॥

सो० जानि बिकल गोपाल पद बढ़ाय हूँकतभयो ।
परशत पगततकाल थाहभई सरिता अगम ॥

गये पार तरि गोकुल ग्रामा । पहुँचे जाइ नन्दके धामा ॥
खुले कपाट पाइ प्रविशे तहँ । सोवत सब अचेत मंदिर महँ ॥
माया असि मोहनि नृप डारी । कहत बनतनहिं अचरजभारी ॥
यशुमति सुताजन्म नहिंजाना । लै बसुदेव सो श्रीभगवाना ॥
निकट यशोदा दीन्ह सोवाई । ताकर कन्या लीन्ह उठाई ॥

झटित जिष्णु लीन्हो तेहिबारा । सरिता उतरि भवन पगुधारा ॥
देवकि तहँ शोचति जेहि भाँती । भूप दशासो नहिं कहिजाती॥
पति सुत शोच अमिततनतासू । पुनि बन्दीगृह शून्यअवासू ॥
दो० कन्या लै बसुदेव सो ताकहँ दीन्ही आइ ।
कुशल क्षेम फिरि नन्दकी ताहि कही समुझाइ॥
मुख प्रसन्न बोली तब नारी । सुनो प्राणपति बात हमारी ॥
अब चहु कंस हनै नहिं शोचू । बच्यो पुत्र जगु कहै न पोचू ॥
कहा महामुनि सुनु महिपाला । कन्या लै आये जेहि काला ॥
बन्द कपाट भये तेहि बेला । हरिमाया कर अद्भुत खेला ॥
बहुरिसुता रोदन तेहि ठाना । ध्वनि सुनि जगे पहरुवानाना॥
निज निज आयुधसबनसम्हारे । लघु भुशुण्डि दागी चहुँद्वारे॥
शब्द अघात सुनत गजगाजे । पंचानन गूँजे मृग भाजे ॥
स्वानशब्दकृतनिशिअँधियारी । नभघन घटा छटा छबिकारी ॥
दो० हरषित चला प्रघोर गति ताहि समय रखवार ।
कहाजाइ नृप कंस सों जन्म्यो शत्रु तुम्हार ॥
सो० सुनत कंस बिन प्रान होत भयो पुनि गिरामहि ।
मंगल हरिपद ध्यान बैर भाव लागो करन ॥
इतिश्री मद्विविधकिल्विषांधकारादिनमणि श्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदास बिरचितायां श्रीकृष्णचन्द्रजन्मवर्णनो
नाम चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥
दो० परिहरि रुक्मिणि रमण पद सेइय काको और ।
सुखदायक संतन सदा कृष्ण देव शिरमौर ॥
बालक जन्म सुनत घबरावा । असिकरगहिव्याकुलह्वै धावा॥
गिरत परत बिथुरे शिर केशा । चलत प्रस्वेद शरीर नरेशा ॥
उर धकधकी भयातुर भूपा । देवकि ढिग पहुँचो यमरूपा ॥
कन्या छीनि लई जड़ तासू । तब देवकि किय बचन प्रकासू॥
जोरि हाथ कह सुनु ममभाई । यह भानजी तोरि मैं जाई ॥
अवशि त्यागु यहत्यागन योगू । यहि प्रतिपालि मेटिहौं सोगू॥

बिदित शास्त्र सुत तैं मम मारे। अति दुख तिनकर अहै हमारे॥
करत अलेख पाप केहि अर्थू। तजु कन्या तू अहै समर्थू॥
॥ दो० कंस भनो बिकलित तबहिं सुनु मतिमन्द महान।
जीवत दुहिता तजौं नहिं जब लगि घटमें प्रान॥
जो यहि धैरे हनै सो मोहीं। कहि असरूपदि चलासुरद्रोही॥
बाहिर भवन शिला यकडारी। पद गहि फेरि सुता बिबुधारी॥
पटका चहत बीचहीं छूटी। जीवन आस कंस की टूटी॥
जाइ अकाश कही अस बानी। रे मतिमंद कंस अभिमानी॥
आपन काल बचावै लागी। मोरहतनचह कुमतिहिपागी॥
उपज्यो तोर शत्रु जगमाहीं। अब भा काल बचै करनाहीं॥
बिस्मय सुनत कंस उर छावा। कृष्णमातुपितुढिगचलिआवा॥
बंधन छोरि कटाइसि बेरी। कृत करजोरि बिनय तिनकेरी॥
दो० अधिक दुरित यह कीन्ह मैं हने तुम्हारे बाल।
लागकलंक अगासबड़ कब छूटौं केहि काल॥
मृषा अनंत बाक भइ पाछे। देवअलिकजिन बरण्यो आछे॥
कहिनि देवकी अष्टम बाला। उपजिहिकंस तोर सो काला॥
प्रगटो सो न सुता भइ आई। बधतसोउ घन बास सिधाई॥
मोपर दया करौ युत नेहा। मोर दोष नहिं कारण एहा॥
लोपहि कर्माक्षर जग कैसे। जीव स्थावर चर सब ऐसे॥
यथा कीश बश नट के होई। जो चह नाच नचावतसोई॥
जन्मे जग संयोग बियोगा। जीवन निधनलहतसबलोगा॥
यह न मिटत कौनौं विधिजगमें। पितुसुतअसपंथीजिमिमगमें॥
सो० ज्ञानवान जे लोग जीवन मरण ते समलखत।
अरिहितु दुख अरु भोग मान अमान समानहीं॥
मायामद अहमित जग जोई। मित्रहि शत्रु लखत खलसोई॥
तुम बड़साधु अहौ सतिबादी। जस भे हरिश्चंद्र जनकादी॥
मेरी मीचु बचावै हेता। दयउपुत्र निज कोउनहिं देता॥
बार बार अस कहि करजोरे। बिबिध भांति के करतनिहोरे॥

कह बसुदेव सत्य नृप कहयऊ। बिधिकर्त्तब अदोषतुम अहयऊ॥
बरण भाल मम लिख अजसोई। निस्संदेह अत्रशि नृपहोई॥
कंस प्रसन्न भयो सुनि बानी। प्रफुलितद्वौजन निजगृह आनी॥
रस रस व्यंजन सरस जेंवाये। भूषण बसन सुभग पहिराये॥
सादरकरि सब बिधि सेवकाई। दीन्हें दोउजन सदन पठाई॥
निज मंत्री सन कहसि हँकारी। अरिजन्म्यो यहसुता पुकारी॥
यहि ते प्रथम देवबध कीजै। अमर लोक महँ रहै न दीजै॥
देव गिरा जिन मृषा सुनाई। ममभगिनी पुनिदुखितकराई॥

दो० अष्टम सुत बसुदेवको काल बतायो मोहिं।
सो उपज्यो नहिं तासु गृह कासमुझाऊं तोहिं॥

नृप रुख हेरि सचिव अस बोला। महाराज सुनु समर अडोला॥
त्रिदश हनब नहिंकठिन सुरारी। सुमनस सबदिनकेरभिखारी॥
जब कोपौ तुम नाथ रिसाई। अखिलबिदौताचलिहिपराई॥
को समर्थ तुव संग्रम योगा। सुनौ बृतान्तकहतबुधजोगा॥
ब्रह्मा आठ याम हरि ध्याना। करत रहत सुनु नृप बलवाना॥
बिजया कनक भषत गंगाधर। जग प्रसिद्ध कौशिकनृपकादर॥
नारायण संग्राम न जानत। चपलासंग सदासुख मानत॥
बोल कंस सुनु सचिव सुभाषा। मम मन एक अहैअभिलाषा॥

दो० दानवारि मिलिजाय कहुं तासँग ठानौं रारि।
सुनु मंत्री संग्रामकरि मन को करौं सुखारि॥
जो कदाचि मिलिजाइकहुँ तौ किमिजीतौंताहि।
असउपायकोउशोचिभणु सकलशोचमिटिजाहि॥

सविनय सचिवकहा सुनुनाहा। सहज उपाय गुनो मनमाहा॥
जहँ जहँ करत निवास सुरारी। करौ उपाधि तहां तहँ भारी॥
ब्राह्मण विष्णुभक्त मुनि योगी। तपी जपी पुनि रागवियोगी॥
संन्यासी इत्यादि अनेका। जे विवेक मग टेके टेका॥
इनसबकर अब करौ विनासा। बृद्धतरुण बालक दोउ त्रासा॥
भक्तदुखितलखि प्रगटिहि सोई। सुनिनृपबोलिध्वजनिपतिजोई॥

जे जे सचिव कहे तिन घाता। जाय करौ आयसु मम ताता॥
यह सुनि दैत्य सकल अतुराने। जिमि सुधर्म मैं साधु सयाने॥
कोटिन खल मंत्री सह धाये। दुष्टन बहु विधि रूप बनाये॥

दो० नगर ग्राम प्रति धेनु द्विज बालक औ हरिदास।
जेहि छलि पावत कपट तेहि बधत दुष्ट दै त्रास॥
मंगल इमि ते अधम नर कृत उपाधि बहु भाँति।
सो चरित्र निन्दक अधिक किमि मो सन कहि जाति॥

इतिश्री मद्धिविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रिया यां मंगलदास बिरचितायां कन्याबध कंसोपद्रववर्णनो नामपंचमोऽध्यायः ५॥

दो० गुरुपद रज़ अंजन चषन हौं लगाइ कबिराज।
राधाबल्लभको चरित भणत लवा अघ बाज॥

श्रीमुनि नृपाहि कहत पुनि भयऊ। यशुमति नन्द प्रथम तप कियऊ॥
सुनो सप्रेम सोइ इतिहासा। दम्पति तप कीन्हो सुत आसा॥
उग्र तपस्या निरखि महीशा। आपुहि प्रकट भयउ जगदीशा॥
वर दीन्हों तिनको यह भूपा। कछु दिन तुव गृह सुत अनुरूपा॥
रहिहौं आइ सत्य करि जानू। जाहु निलय कीजो मम ध्यानू॥
तहां जात भय कारण ताहीं। भादू असित बुध अष्टमि माहीं॥
अर्द्धनिशा जब जागि यशोदा। देखा सौम्य सून निज गोदा॥
आनंदित सो भइ नृप कैसे। दीन अमरपत्री लहि जैसे॥
नंदहि बोलि लियो त्रिय आसू। सुत जन्म्यो पाति निरखु प्रकासू॥
नन्द सुनत सहसा उठि धाये। अनुपम आनँद सों तन छाये॥
तदपि बुद्धि सम उपमा गाई। पूरण भनत दुचितई पाई॥
जिमि दारिद्र उपास नित करई। अन्न आश बहु संकट भरई॥

दो० दैवयोग ते ताहि कहुँ नृपता बड़ि मिलि जाय।
फिरि आनँद तेहि पुरुष कर कहै बिबुध कोगाय॥

ऐसेइ सुख्य नन्द नृप जान्यो। आपन जन्म सुफल अनुमान्यो॥
प्रात समय द्विज ज्योतिषज्ञाता। बोले नन्द सुरुचि सुनु भ्राता॥

ज्योतिष ग्रंथ काँख गहि भूसुर । नन्दालय आये भूमीश्वर ॥
करि आदर सत्कार महाना । साष्टांग दण्डवत सुजाना ॥
स्वौतासन द्विज बर बैठाये । बिहँसिनन्द असबचनसुनाये ॥
उपज्यो पुत्र लग्न शोधौबर । कहिबिधिसबग्रह द्विजताकेपर ॥
द्विजन बेदबिधिसम्बत मासा । तिथिदिनऋक्षयोगअनयासा ॥
लिखिसबबिधिशुभलग्नबिचारी । समुझिमहिसुरनगिराउचारी ॥
दो० शास्त्र रीति तब सूनुके ग्रह ऋक्षादिक जोइ ।
सर्बो बिधि पंचांग शुभ सुनु अब लक्षण सोइ ॥
निश्चर तूल सखी यह ताता । धरा भार हर जिमि तृण बाता ॥
दैत्य मही के सब यहुहतिहै । याकर दूसर धाता गति है ॥
गोपी नाथ कहैहै आगे । यहियशजग गाइहिअनुरागे ॥
नन्द सुनत सुख लहा अपारा । उभय लक्ष गो नृपतेहिबारा ॥
चामीकर रचि शृंग सोहाये । खुर नृप दुर्बनता मढ़ाये ॥
ताम्र पृष्ठि वासांसि ओढ़ाई । मुदित नन्द संकल्प कराई ॥
दान अनेक अपर तिनदीन्हें । दै दक्षिणाबिदा द्विजकीन्हें ॥
आशिर्बाद पढ़त महिदेवा । गये सराहत गोपति सेवा ॥
दो० बहुरि नन्द सानंदनृप मंगलबदनि बोलाइ ।
सत्वर आईं सकल ते बाजन लगी बधाइ ॥
बैजंत्री डफ ढोल बजावैं । नृत्यत नृत्यक गायक गावैं ॥
बन्दीजन बिरदावलि साजत । जनु तिहुपुर मंगल तहँराजत ॥
गोकुल ग्वाल बसत नृपजेते । नारिन सहित चले सबतेते ॥
भांति भांति के बेष बनाये । नाचत गावत करत बधाये ॥
दधिभाजन निजनिजशिरधारे । भेंट देनगये नन्ददुवारे ॥
नन्दसदन भइ भीर नृपाला । जेहि अवसरआये सबग्वाला ॥
लागतधका गिरत दधिभाजन । दधिकांदौकीन्हीं तिनराजन ॥
गोकुलगृह बीथिका बजारा । दधि दधि दृष्टिपरत तेहिबारा ॥
दो० खेलिचुके दधिकांदवहि जब सब ग्वाल नृपाल ।
भोजन सबहि जिमायऊ नन्दमहर तेहि काल ॥

सबन सबन पहिरायपुनि तिलक शीश करिभूप।
बिदाकरे सब नन्दजू निज निज रुचि अनुरूप॥
यहिबिधिबहुतादिवसलगिराजा। बाजिबधाइ सहितसुखसाजा॥
तेहि अवसर मांगा जेहि जोई। दीन्हा नन्द ताहिनृप सोई॥
जन्म कर्म श्रुति बिधिवतकीन्हा। दान भूप माहिदेवन दीन्हा॥
ह्वै निश्चिन्त बधाई तेरे। बोले सकल ग्वाल निजनेरे॥
बांधव सुनौ सुना हम आहीं। बालक बधत कंस जगमाहीं॥
का जानिय प्रपंच करि कोई। दुष्टहिं कहे बाल बध होई॥
ताते उचित यहै सब मिलिकै। दैआवैं बरसौंड़ी चलिकै॥
नन्द बचन सुनि केहि भलधाये। घृतदधि पय मुद्रासबल्याये॥
दो० भरिभरि शकटन नन्दसँग गोकुल ते सबग्वाल।
तुरतगये मथुरा नगर भेंटन कंस नृपाल॥
जाय सभातिननृपहि जोहारा। सबहि यथोचित चर बैठारा॥
देइभेंट महि दंड चुकाई। पलटे सब ग्वाल भुवराई॥
पहुँचे सब हंसजा समीपा। समाचारलहि यदुकुलदीपा॥
नंदहि मिले जाइ तब आतुर। पूंछि कुशल बोले नृपचातुर॥
तुम सम मीत सगा जगमाहीं। हमरे कोउ अब दूसर नाहीं॥
कठिनविपतिबश जबहमभयऊ। तुवघर नारि पठइ तब दयऊ॥
गर्भवती रोहिणि मम नारी। तुमप्रतिपालिदियोसुखभारी॥
जन्मो ताके सुत तव गेहा। पाल्योतनयसो सहितसनेहा॥
कहँलगि सखा तोरि करतूती। वरणिकहौं मोरीमति सूती॥
पाछे अब आगे तिहुँ काला। भो न अहै न होइ हितुपाला॥
उपमा कासुदेउँ सुनु मीता। करैसदा हरि तव मन चीता॥
कहि अस रामकृष्ण कुशलाई। रानि न सहित पूंछि भुवराई॥
दो० कहा नन्द बसुदेव सन तव दाया दिन राति।
भवन हमारे सकल बिधि सुख छावा सब भाँति॥
तनय तुम्हार मोर जिय मूला। है बलदेव कुशल गत शूला॥
जिनके जन्मतपुण्य तुम्हारे। भयउ प्रगट यक पुत्र हमारे॥

दुख लव लेश रहा नहिं मोरे। दुखित परन्तु अहौं दुख तोरे ॥
सुनत नन्द कहनी दुखसानी। यदुकुल कंजरस्मि कहबानी ॥
सुहृदसुनो विधि गति बिपरीता। होतन अहै अपन मनचीता ॥
कर्म रेख नाशत नहिं भाई। परारब्धि सन कछु न बसाई॥
नरनागर बुधि सागर ज्ञानी। शोचत नहिंअसार भवजानी॥
मात पिता सोदर सुत नाती। प्रमदा आदि सगे सबभांती ॥

दो० अंत समय सुनुबन्धु प्रिय होत न संगी कोइ।
दुख सुख जग व्यवहार है बुध न बिचारतसोइ ॥
पेंठहाट जिमिजाइकोउ निजस्वारथ अनुमानि।
मिलै बाटमहँ आन नर संगचलै मुदमानि ॥

छं० मुदमानि सँगते जात पेंठहिं पंथ महँ कोउ छूटहीं।
सब ताकि निजनिज स्वारथहि पुनिपेंठमहँ सबफूटहीं ॥
कहुकासुदुखसुख मिलन बिछुरनबिबुधजनसो मानहीं।
संसारइमि सुबजारसम सुनु मित्र हम सब जानहीं ॥
यहिभांतिकहिपुनिनन्दसों भए जाहु बेगि निजालये।
चाण्डाल कंस नृपाल कोटिन बाल निजकर सों हये ॥
जहँलागिमहिमहँ चलत बश तहँलागिसुतन ढुँढ़ाइकै।
मारत महीपति दीन के अस अधम सो मँगवाइकै ॥
तुम सकल जुरिमिलिइहांआये कंसको करभरिदियो।
उत फिरत ढूँढ़त असुरबालक हाय तुमयहु काकियो ॥
कोजान कोउखल जाइ गोकुल सून लखिछलबलकरै।
यह सुनत मिलिबसुदेबको तब नंद धावत भे घरै ॥

दो० ग्वाल सकल निज साथलै मथुराते अकुलाइ।
चलत भये गोकुलहितब मंगल हरिपदध्याइ ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रिया
यांमंगलदासबिरचितायांकृष्णजन्मोत्सवनंदमथुरा
गमनबर्णनोनामषष्ठमोऽध्यायः ६ ॥

दो० शमन कलेश बिचारि मन राधारमण चरित्र।

बरणतहौंबुधजनसुनों यह किल्बिषतममित्र ॥
बोले पुनि मुनि गिरा सोहाई। सुनुकुजमातु कंत चितलाई ॥
सचिव कंसकर सँग रजनीशा। हनत फिरत चहुँओरमहीशा ॥
सो वृतांत प्रथमहिं हमगावा। अबसुनु अपरचरितमनभावा ॥
यक राक्षसी पूतना नामा। सो छल कर्म चतुरबुधिधामा ॥
नंदहि बिदा कंस जब कीन्हा। ताकहँअधम बोलितबलीन्हा ॥
कहिसि जहांलग हैं यदुबंशी। तिनकेसुततें आउ विध्वंशी ॥
पाइ रजायसु बन्दन कीन्हेसि। चितप्रसन्नगोकुलमगलीन्हेसि ॥
शोचिसिमन पुर सूना आहीं। बधौं सुतन यामहँ श्रम नाहीं ॥
दो० उपजे तनय जे नन्दके ते गोपी तन धारि।
छलबलकरिबधिआइहौं इमिनिजमनहिंविचारि ॥
षोड़श रचि शृंगार सोहावन। रुच्याभरण सजे मनभावन ॥
चली कुचामृत लाइ सयानी। रूप मोहनी माया ठानी ॥
जलज कुसुम कर सोहत वाके। अंग अंग प्रति सुन्दर ताके ॥
नखशिखकरितनसाज सहेली। बनीराक्षसिनित्रियअलबेली ॥
उपमा कहत बनत नहिं कोई। लक्ष्मी बदत दोष कछुहोई ॥
शिवा कहत अर्द्धांगिनि नारी। रंभा भणत मोरि मतिहारी ॥
सत्योपमा एक अनुमानी। सूपनखा रघुनाथ कहानी ॥
यकु परंतु भ्रम है याहि माहीं। आनसकल पूरणघटिनाहीं ॥
जबगोकुलगइ अली प्रपंचिनि। नंदभवनपैठी त्रियवंचिनि ॥
निरखि सकल सुंदरता तासू। मोहीं नारिभयउ बुधिनासू ॥
बैठि यशोदा तट सुख मानी। कुशलक्षेमपूछी प्रियबानी ॥
पुनि दीन्हीं असीस मुदपाई। चिरजीवै तव कुंवर कन्हाई ॥
दो० कोटि वर्षलागि होइवै तव सुतकी सुनु रानि।
बारम्बार असीसअस कहि छलसहित बखानि ॥
प्रीति बढ़ाइ सप्रेम तेहि यशुदा करते बाल।
गोदलयो मुख कुचदयो सुनुभलचरितभुवाल ॥
देखौ माया मोह अपारा। अग्नि नशावन कीट बिचारा ॥

चक्षुस्रवीचहइ द्विजपतिमारा । तिमि यहि दुष्टिनि कर्मपसारा ॥
यथा शशी हरित्रिभमनठाना । तथा कस्यो जड़नी अज्ञाना ॥
द्वौकरकुचगहि कृपानिधाना । तासु प्राण सहकृत पय पाना ॥
तब ह्वै विकल पूतना टेरो । यशुमति यह कस बालक तेरो ॥
सुनु मनुजादन है यमदूता । रज्जु धोखे पकरयों अहि पूता ॥
जीवत आजु बचौं यहिहाथा । हे शंकर शंकर भव नाथा ॥
ऐहौं यहि पुर नाहिं बहोरी । असकहि चपरि चलीमतिथोरी ॥
दो० गहे व्याल व्यालारिके चहु बचिजाय प्रवीन ।
दानवारिकर असुर परि उबरत संशय पीन ॥
बाहिर ग्राम गई भजि नारी । तदपि न तज्यो उरोज मुरारी ॥
क्षीरपानकरितेहिजियलीन्हा । आपन मन भायो प्रभुकीन्हा ॥
गिरी महीतल प्राण निपाता । शब्दभयउ असजस पविपाता ॥
दारुण शब्द सुनत त्रियधाई । आतुर तासु निकट चलिआई ॥
रोदत बदत रोहिणी रानी । जनु धन खुयउ दरिद्री प्रानी ॥
यशुदाअस अकुलानी मनमें । शव सम भई जीव नहिं तनमें ॥
ग्राम लोग सब पाछे धाये । नर नारी समूह चलिआये ॥
दीखपरा तन योजन आधे । पय हरि पियत उरजकर साधे ॥
दो० आशु यशोदा झपटि सुत कर उठाय हियलाय ।
चूमिबदनआनँदभई जिमिअहि मणिगतपाय ॥
आतुर सद्म गई लै श्यामें । बोले गुणी बसत जे ग्रामें ॥
तिनहिंपूछिधनकरिन्योछावरि । समुझितासुगतिहोतसुबावरि ॥
गोपी ग्वाल पूतना पासा । करत परस्पर बचन प्रकासा ॥
गिरी मही जेहि बेरियाँ भाई । घोर शब्द तब दयउ सुनाई ॥
अबलग धकधकात भयछाती । बालक बच्यो दैव केहि भाँती ॥
ताही समय नंद तहँ आये । देखतही मन संभ्रम छये ॥
परी मृतक रासची कराला । घेरेचहुंदिशि तेहित्रियग्वाला ॥
पूछिनि यह उपाधि कसभाई । कहिसिग्वालयकशीशनवाई ॥
दो० सुंदर तन धरि भवन तव गई प्रथम यह राज ।

मोहिं अबला देखिसुख भूला सकल समाज ॥

सो० यहिहरि लयउ उठाय पयप्यावन लागी तुरत ।
पुनि जानान उपाय मरी कौनबिधि सुतबच्यो॥

बोलेनंद कुशल बड़ि भयऊ । पुत्रमोर यहि करबाचि गयऊ ॥
अरुन गिरी पुर ऊपर भाई । नतजातो सब ग्राम नशाई ॥
यहितल परत मरत शकनाहीं । कहि असनन्द गये गृहमाहीं॥
बिप्रबोलि दीन्हो बड़दाना । इतग्वालनलै आयुधनाना ॥
काटि देहपल अग्नि जराई । अस्थि महीमहँ दीन्ह गड़ाई ॥
जरत शरीर उठी शुभबासा । छाइरही जगसो दशआसा ॥
सुनत महीप जोरियुग पानी । चकित चित्तकहि कोमलबानी॥
महाराज राक्षसिनि चँडारी । मनमलीन मदपल आहारी ॥

दो० ताके तनते गंधिशुभ क्यों निकरी मुनिराय ।
कहौमोहिं समुझाइ कै ममभ्रम सबबिनशाय ॥

छं० बिनशाय भ्रमसो कथा सिगरी कहौ प्रभु बिस्तारिकै ।
मुनि कहा सुनुमहिपाल हरि पयपान कियसुबिचारिकै ॥
जगबन्दिते तेहिं मोचियो यहिते सुबासित तन भयो ।
नरनाहको भ्रमसुनतहीं तेहि समय बुधजन सब गयो ॥

दो० अधम निशाचरिमलिन मन पाप गलित तनजासु ।
मुक्ति दई तेहि कृष्ण जेहि मंगल भजु पदतासु ॥

इतिश्रीमद्विबिधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांपूतनावधवर्णनोनामसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

दो० भवदधि अगम अपारहै नीर जान जसईस ।
बुध तापर आरूढ़ ह्वै पारजात बिसवीस ॥

कुरुकुल दीप सुनत मन काया । श्रीशुकमुनिबरणतकरिदाया ॥
जन्म नक्षत्र कृष्ण कर आवा । मातु यशोमति कर्योबधावा ॥
आयसु नंद चरहि असदयऊ । वैसरिच्छ दिन सुतकरभयऊ॥
बसुधा मर ममनगर बसेरी । सबहि निमंत्रबिनयकहिमेरी ॥
ब्रजबासी जे जाति अजाती । निबतुसकलनरतियसुतनाती॥

चल्योदूत पावत अनुशासन । गयोप्रथम उर्बरा सुरासन ॥
नृप सँदेश भणि निवता दयऊ । आनसमस्तगृहन पुनिगयऊ ॥
दै निमंत्र घर घर फिरि आवा । आवतसबकहि नृपहिसुनावा ॥
दो० आये तबहिं समाजजुरि बिप्रादिक सब लोग ।
करि आदर बैठारेऊ जो जेहि आसन योग ॥
दै बहुदानकुंभिनी देवा । बिदा किये करिकै बड़िसेवा ॥
आनजाति जो कोउजसआवा । करिसत्कार अनंद घुमावा ॥
ज्ञाति बन्धुजो तेहि दिन आये । उज्ज्वल बसनसबहिपहिराये ॥
छबिधि भोज्य रचि सब बैठाई । चतुर सुआर परोसतभाई ॥
तिनसँग मातु यशोदा रानी । लगी परोसन आनँदसानी ॥
रोहिणिकरत टहल गृह केरी । जेंवत सब प्रियबन्धु बसेरी ॥
तहँ गोपिका गीत बहुगावैं । आनँद सों डफ ढोलबजावैं ॥
यहि सुखमगन नारिनरभयऊ । बिसरिश्यामसुधिसबकहँगयऊ ॥
दो० शकटी पर्म विशालयक तेहितर पालन माहिं ।
सोवत परे अचेत हरि काहुइसो सुधि नाहिं ॥
लागिक्षुधाजागे खल भानन । पदअंगुष्ठदियो निज आनन ॥
रोवत दशदिशि हेरत स्वामी । मन बिहसत प्रभु अंतरयामी ॥
नभमारग खलयक तेहिबेला । जातलखा हरिबाल अकेला ॥
निजमन शोचत सुर आराती । सुतनिरखत बिहरत ममछाती ॥
महाबली उपजो यहुकोई । अबहीं हनौं जाइ दुखखोई ॥
प्रबल पूतना यहि सुनमारी । बैरलेउं असमनहिं बिचारी ॥
शकटरूप धरि शकट समाना । प्रभु अंतरयामी सबजाना ॥
शकटासुर तेहिते तेहिनामा । भो महिपाल सैमुखीधामा ॥
दो० चटक्यो शकटा भारतेहिं लखि श्रीहरि बिलखाइ ।
चरण प्रहार्‍यो शकट महँ गिर्‍यो दूरि भहराइ ॥
चक्रादिक शकटी करटूटे । गिरत दुग्ध भाजन बहुफूटे ॥
गोरसबहा भवन असभाई । जस पावस पयबहत तोराई ॥
शकटी भाजन टूटे फूटे । शब्द भयउ जसपावि हरि छूटे ॥

सुनत शब्द नरतिय गणधाये। सत्वर कृष्णचंद्र पहँ आये॥
यशुदा गोहरि बच्छ निहारी। सहसा लीन्ह उठाइ मुरारी॥
चूँबि मुखारबिंद हिय दीन्हों। क्षीर पियाइ सुखी सुत कीन्हों॥
यह आश्चर्य्य बिलोकत जोई। शोचत ठाढ़ठगोसो सोई॥
जो जेहिमन आवत अनुमाना। तेहि अनुसारसोकरतबखाना॥

दो० काहूलखोन काभयो शकटटूट किमिभूप।
चकितबिचारतलोगसब निज निज मति अनुरूप॥

कहत परस्पर बिधि भल करेऊ। बचासूनु शकटी खसिपरेऊ॥
टूटाशकट शोच नहिं भाई। दबत बचा यह बाल कन्हाई॥
ऐसइठाम नीचकृत बाधा। होइजहां सुन्दर मखश्राधा॥
इन्द्री मास भई बय हरिकै। कंसमहीपति चिन्ताकरिकै॥
तृणावर्त्त बोल्यो अकुलाई। गोकुल जाहु कहा समुझाई॥
पठई प्रथम पूतना नारी। तहां ताहि केहु बीर सँहारी॥
जो जीवत होती सुनुताता। आवति तौदिन भे यहिबाता॥
धरि बकरूपसो गोकुल आवा। उहाँ कृष्ण असकीन्ह बनावा॥
सोहत श्याम उछंग यशोदा। करिमाया भारी भे गोदा॥
निजबल समथाँभा नँदनारी। थँभेन तब महि दिय बैठारी॥
धराबौंडरा रूप निशाचर। बिकलहोतलखिताहि चराचर॥
अंधकार गोकुल खलछावा। तिमिरनिदान न मगकोउपावा॥

दो० दिननिशि समदीसन लगा भयउ घोर अँधियार।
प्रबल धनंजय बहत नृप गोकुलमहँ तेहिबार॥

पत्री गिरि पत्री भहराने। अंधकार महँ दुखित भुलाने॥
अस्मउड़ात यशोदा देखी। हरिहि उठावन लागि बिशेखी॥
उठेन करि पौरुष सोहारी। कर सरोज तब लीन्हसिटारी॥
तृणावर्त्त तेहि अवसर आयो। गहिहरि अधमनाककहँधायो॥
पुनिनिजमनअसकरतविचारा। हनौं सुतहि कोकरै उबारा॥
उतकृत अस बिचार बशकाला। इतयशुमति नलखा गोपाला॥
हाहाकृष्ण कृष्ण ममप्राना। कहि बिलखानी भूपमहाना॥

रुदनशब्द सुनि गोपीग्वाला । अविचट धाइचले महिपाला ॥

दो० टोहत सब आवत मगहिं सूझत कछुन अँधेर ।
ठोकर लगिमहि गिरिपरत महा विपति तेहिबेर ॥

युवा बाल अरु जरठ गोपाला । ढूंढ़त हरिहिबिकलतेहिकाला ॥
कृष्ण मातु रोहिणी समेता । रुदिबदि महितलपरतअचेता ॥
नंद पुकार मेघ ध्वनि करहीं । खोजत हरिहिदृष्टि नहिंपरहीं ॥
सकलबिकलहरिमनअनुमानी । पटक्योखलहिशिलापरआनी ॥
मरतहि असुर थम्हापवमाना । सकलतिमिरकरभयउनिदाना ॥
भ्रमे जे तमते पाइ प्रकाशू । निज निज गृहआयेसबआशू ॥
सो खल परा नन्द अँगनाई । खेलत उरपर बाल गोसाँई ॥
देखि यशोदा कण्ठ लगाये । दान हेत द्विज वृन्द बोलाये ॥

दो० दान बिबिधबिधि भूसुरन देइ बिदा करि दीन ।
मंगल दुखभ्रमजगतको दूरि कृष्ण सबकीन ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणि श्रीकृष्ण
प्रियायांमंगलदासबिरचितायांशकटासुरतृणावर्त्त
बध वर्णनोनामाष्टमोऽध्यायः ८ ॥

दो० जग पालक परमात्मा धर्यो स्वरुचि नर देह ।
ताहित्यागिकबिबिबुधजन काकर करियसनेह ॥

श्रीशुक कहा सुनिय बुधिबोधा । गर्गनाम यदुबंश परोधा ॥
बड़ज्ञानी मुनि ज्योतिष ज्ञाता । कहि बसुदेव बोलि असबाता ॥
दयासिन्धु गोकुललगिजाइय । नामकरण सुतकर करिआइय ॥
सगरभ रोहिणि गइ नँद धामा । ताके उपज्यो सुत गुणग्रामा ॥
तासुनाम बल बुद्धि पराक्रम । लग्नसाधिपुनि लिखियबाहिक्रम ॥
अरुयक पुत्र नंदगृह भयऊ । सोऊ तुमहिं बोलि मुनिगयऊ ॥
चित प्रसन्न सुनि यदुपति बानी । गोकुलगमनकीन्हद्विजज्ञानी ॥
पुर तट जब पहुँचो महिदेवा । नंदहि काहू कह यह भेवा ॥

दो० आवत हैं यदुकुल गुरू नाम सुभग गर्गर्षि ।
सुनत सभासदउठि चल्यो नन्दभप सुनि हर्षि ॥

भेंटि भेंट दै बिनय बखानी। निज सुभाग्य सराहि मृदुबानी॥
डासि फाल्गुण भल पटआसन। कृत पूजा लाये निज आसन॥
पदपखारि लीन्हा पग पाथा। यशुमति नन्दजोरिदोउहाथा॥
सानुराग सविनय मृदुबाता। ऋषिसनकहीप्रफुल्लितगाता॥
मम बड़ भाग्य लखे पद तोरे। अब कलेश कोउरहा न मोरे॥
कियउ पवित्र हमार अगारा। चरण कृपा करि धरिदुखटारा॥
तव प्रताप द्वै सुत मम गेहा। प्रकटे सुनहु बिप्र युत नेहा॥
यदुबंशी यक रोहिणि जायो। एक यशोदा सूनु कहायो॥
नामकरण अब लगिभा नाहीं। भणौनाम गुणि ज्योतिषमाहीं॥
बोले गर्ग सुनो प्रिय भाखा। गुप्तनाम राखौ गुणि राखा॥
मधुर बाक्य सुनि द्विजबर केरे। बिस्मित नन्द कहा भ्रम मेरे॥
केहि कारण न प्रकटकृतनामा। सोवृतान्तभणु द्विजगुणग्रामा॥
दो० प्रगट सभा महँ नाम कृत होइ बिदित जग बीच।
कंस सुनै मम आगमन तौअस समुझै नीच॥
देवकि सुत बसुदेव चोराई। नन्द सदन दीन्हा पहुँचाई॥
सो सुधि लहि तहँ गर्ग पधारा। यहमनसमुझिकंस बिकरारा॥
बन्धन मोर करै सुत लागी। कटु बचकहै मूढ़ता पागी॥
तुमरो दैव जानका करई। बधै तुमहिं नहिंआपुहि मरई॥
यहि कारण एकान्त अगारा। कहौंनाम गुणि ज्योतिषसारा॥
बोले नन्द बिप्र भल शोचेउ। आगमन लखिहमारदुखमोचेउ॥
कहि असऋषिसहगे गृहबीचा। बैठे भवन अर्गजा सींचा॥
तबमुनिजन्मदिवसतिथिकाला। पूछिलग्न शोधी गुणपाला॥
दो० ज्योतिषमत मनयाचिकरि कही सुनो नँदराय।
रोहिणिसुतके नामअब कहौं तुमहिं समुझाय॥
संकर्षण रेवतिरमण बलदाऊ बलराम।
कालिंदीभेदन बहुरि शुभ बलबीर सुनाम॥
अरुजेहि आपन पुत्रबतावत। तासुनामअगणितश्रुतिगावत॥
तदपि उचितचाहिय कोउनामा। जन्म्यो कतहुं देवकी धामा॥

बासुदेव संज्ञा यहि कारण । जगप्रसिद्धकरि करौउचारण ॥
दोनों सुत ये नन्द तुम्हारे । चहुँयुग सँग उपजेगुणभारे ॥
नन्दकहा अबग्रहगुण भाखौ । निजजनजानिगुप्तजनिराखौ ॥
कहमुनि सुत दूसर करतारा । गुणइनकरअतिअगमअपारा ॥
तदपि भविष्य कहौं यकबाता । ये सुतकरिहैं कंस निपाता ॥
अरु महिभार उतारिहिं भाई । इमिकहिमुनि निजगृहगेराई ॥

दो० कहाजाय बसुदेव सन गोकुल चरित ऋषीश ।
प्रफुलितचित गद्‌गद भये सुनतवृतांतमहीश ॥

नामकरण अस भयउ भुवाला । अपर अग्र सुनु कथारसाला ॥
रामकृष्ण दिनप्रति बाढ़तअस । शुक्लपक्ष निशिकरबाढ़तजस ॥
करत बाललीला दोउ भाई । लखिहरषत चितपितुअरुमाई ॥
नीलपीत झँगुली तन सोहै । निरखत महामुनिनमनमोहै ॥
उत्तमांग लघु लसत सिरोरुह । राजततनघनबिधुकरछबिमुँह ॥
यंत्रित कठुला उर बर राजै । रुचिर खिलौना करन बिराजै ॥
भृकुटि भंग भवभय बिनशावै । तेहिका कोउकियंत्र पहिरावै ॥
जेहि निज इच्छा पुरतिहुंकीन्हें । जननीताहि खिलौनादीन्हें ॥

दो० यहै मनोहर चरितलखि भूलिजातमतिहीन ।
चीन्हतनहिं परमात्महिं जहँतहँ फिरतमलीन ॥

आंगन रुचिर न बरणिसेराई । जहँ खेलत हरि दोनौं भाई ॥
बातैं करत तोतरी राजा । सुनिहरषत पितुमातुसमाजा ॥
जानुपाणि धावत गिरिपरहीं । यशुमतिरोहिणिसँगसँगफिरहीं ॥
जनि काहुइ डरिगिरहिंकन्हाई । यहि कारण लागीं सँगजाई ॥
गहि गोवत्स पुच्छ उठिगिरहीं । लेहिं मातु ऊपर गहिकरहीं ॥
हृदयलगाइ पियावत क्षीरा । इमिबहु करत चरितदोउबीरा ॥
जब बड़भये श्याम असुरारी । ग्वालबाल तब लिये पुकारी ॥
पयदधिमही चोरिबे काजन । संध्या प्रात फिरैं सुनुराजन ॥

दो० शून्यालय लखिदुग्ध दधि माखनखात लुटाइ ।
बचत न कौनौंबिधि चतुर चहुजस धरत चोराइ ॥

ऊंच अवास धरा दधि देखी। अस कौतुकहरिकरैं विशेखी॥
पीढ़ी पटा उलूखल धरिकै। तापर सखा ठाढ़ यककरिकै॥
तासु कन्ध पुनि चढ़ैं मुरारी। सीके ते दधि लेहिं उतारी॥
अल्प भखैं भाजन गहि फोरैं। पुनिदूसर गृह जाइ ढँढोरैं॥
यहिप्रकार प्रति गृह प्रतिवासर। कृतचोरी दधिनाथ चराचर॥
चोरी करत गहा त्रिय चाहैं। कौनौंबिधि नश्यामकहँलाहैं॥
सम्मत नारिन तब असकीन्हा। हरिहि जाइ घरभीतरदीन्हा॥
चहुँदिशि चितै शून्यगृह जानी। जातदेखि यकअली लुकानी॥

दो० प्रविशि सद्ममाखनदही चहा चोरावन श्याम।
तबहीं हरिकर करगहे झपटि ग्वालिनी बाम॥
कहि नितप्रति दधिचोर सुत आवत संध्याप्रात।
चलुतोहि सौंपौं यशुमतिहि कहि अससो मुसकात॥

पुनिमोहन करकर निज करिकै। यशुदा पासचलीं सब जुरिकै॥
तबमाया करि दीनदयाला। तेहिसुत तेहि गहाइ नरपाला॥
दौरिसखन सँग मिले बिहारी। गइसखि जहँराजत नँदनारी॥
बन्दि चरण उरहन असदीन्हा। सुनौंमातुनिजसुतकृतकीन्हा॥
दधिमाखन ये खात चोराई। अहनिशि यहउपाधिब्रजछाई॥
धरिय गुप्त गृह बचत न सोई। लेतमनौं निजकर धरहोई॥
पावत स्वल्प लुटावत रानी। यहिसुतकरअतिअकथकहानी॥
भरा अस्पदधि निरखैं जबहीं। कहैं श्याम दधिखायो अबहीं॥
उतरु देहितौ तोहिं खवायो। पलटि मोहितैं चोरु बतायो॥
यहि निमित्त गहि लाइउँ आजू। पहिचानैं सुत सकल समाजू॥
हँसिहरि मातुकहा सुनु आली। काकर सुतलाई बाचाली॥
मोरसूनु नाहिंसुनु मतिथोरी। श्यामहिं वृथालगावतचोरी॥

दो० मेष बचन कहि लगि बदत लाजन आवत तोहिं।
प्रथम चीन्हु यहि बालकहि फिरि उरहनदे मोहिं॥
लखो पाणिनिजबाल निज भई विलज्जित सोइ।
बोलियशोदा कृष्णसन कहा चंद मुख जोइ॥

कृतचोरी किमर्थ परगेहा। निंदक कर्म बताइसि केहा॥
सबकुछ भवनभरा सुतखाहू। जनि काहूके मन्दिर जाहू॥
श्रीहरि बिहसि मातुप्रति बानी। कहउजननितूभलिपतियानी॥
मृषागोपिका सकल बखानैं। ममसंग अमित ठठोलीठानैं॥
कतहुँ बच्छ दोहनी थम्हावैं। कतहुँक सदन टहल करवावैं॥
द्वारकतहुँ मोहिंकरि रखवारा। जाहिंकाजलगिआनअगारा॥
रचिप्रपंच तवढिग ये आवैं। मृषाकर्म भणिमोर सुनावैं॥
सुनि गोपिकन कृष्ण मुखहेरा। निजनिज भवनगईं तेहिबेरा॥

दो० भुवनचारिदश जासुकर सृजतपलत नशिजात।
सो परमात्मा भक्तिवश दधि चोराइ ब्रजखात॥
आन प्रमोदक चरित अबसुनिय सध्याननृपाल।
यकदिन श्रीहरिरामजी करत ख्याल सँगबाल॥

भषेलाग मृतिका तहँ श्यामा। यशुदहि सखाकहा प्रभुकामा॥
क्षोभक्षुभित करसाँटी ग्राही। बालवृंद जहँआइ तहाँहीं॥
क्रोधित जननी हरि अनुमानी। है रहे ढाढ़ससाध सज्ञानी॥
आनन पोंछोजन भयहारी। तेहिच्छण तहँआई महतारी॥
कहाकान्ह तैं माटीखाई। सभयसकंप कहा यदुराई॥
मिथ्या काहुतोहिं भटकायो। कह अंब्रातव सखा बतायो॥
सरिस सुहृद दिशिनैन तेरे। कबहौं भषी मृत्तिकाएरे॥
हरिरुख निरखि त्रास तनताहीं। कहत तातमैं जानत नाहीं॥

दो० सखासाथ बतरातहीं गहा यशोमति माय।
बिहसिभन्यो श्रीकृष्णजू तू जनिमातु रिसाय॥
सो० मनुजन माटीखात कातोरी बुधि बिधिहरी।
कहायशोमति मात सुनहुलालममबचनशुभ॥

ये अटपटि बातैं नहिं जानौं। मुख दिखराउ सत्यकरिमानौं॥
तबहि श्याम आनन फैलावा। अलख चरित मातहिंदेखरावा॥
तीनौं लोक भुवन दश चारी। मुख भीतर हेरेउ महतारी॥
दीख अजीश फणीश गणेशा। त्र्यंबक पासनाथ अमरेशा॥

हंस छपाकर सरिता नाथा। त्रिदशअसुरयमयसचरसाथा॥
रंभा ब्रह्मायणी भवानी। दशौ महा विद्या गुण खानी॥
नरनराधि पशु खगवसुव्याला। भूत प्रेत बैताल कराला॥
तिहुपुर जो विभूति सुनुराजा। लखा मातुसोसकलसमाजा॥
दो० जोन सुना देखा न जो सो देखामुखमाहिं।
भयो ज्ञान जाना हरी रहानेक भ्रम नाहिं॥
अहह दैवमति मति कतनाशी। सुतकरिलखा पुरुषअविनाशी॥
जो हर मन मानसहि मराला। जेहिध्यावतअजादिसुरपाला॥
अरुजेहिलगिकृतजपमखलोगा। करिउपवासकठिनतजि भोगा॥
सो अवतरेउ मोर गृह आई। मैं मति बिनतेहिमारन धाई॥
यह चरित्र श्रीहरि सब जाना। प्रगटिमोह हरिलीन्हेउज्ञाना॥
पुत्र भाव पुनिह्वै अनुरागी। सानँद सुतहि सराहनलागी॥
कंठ लगाइ सप्यार भुवाला। गई गेह सँग मदनगोपाला॥
जानि चराचर पति अस स्वामी। भजतनताहि मंदमतिकामी॥
दो० जन्मजन्म श्रीकृष्ण जू जानिदास निज मोहिं।
भक्ति दीजिये कृपाकरि ध्याऊं स्वामी तोहिं॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांकृष्णबाललीलायशोदाविश्वदर्शनवर्णनोनामनवमोऽध्यायः ९॥

दो० सारस अरुण अश्यामवत चरण श्याम के ध्याय।
जेहि रसममतिसहढ़ अलि हरियशकहै बनाय॥
एक समय दधिमथने काला। जगी यशोमति प्रातनृपाला॥
सकल सखी दधि मथने हारी। ते बोलीं यदुपति महतारी॥
आलिन मुदित गृह आइ बहारा। लीपि पोति घररुचिरसम्हारा॥
सानुराग पुनि मथनी भाजन। लैलैं मथन लगीं तहँराजन॥
नूतन कलस भरा दधिरानी। शुभथल लै बैठीं सुखसानी॥
चारिपदी लघु सुरुचि बिछाई। बैठि मथन रज्जु मथनिमँगाई॥
नवदधि भाजन पाछि सयानी। रामश्यामहित धरिनंदरानी॥

पुनि नृपदधिहिबिलोवनलागी। शोचत जगहितहरिरिसपागी॥
दो० शब्द भयो दधि मथन कर जनु गरजे घनघोर।
जागिपरे ध्वनिबड़ि सुनत तबहीं नन्द किशोर॥
रुदत पुकारत जननि कहि सुन्यो न मथरवघोर।
उठिधाये तब आपुहीं जलभरि नैननकोर॥
जननी निकट ठाढ ह्वै आगे। गहि बड़स्वासरुदनहरिलागे॥
कहा बचन प्रभुपुनि तुतराई। बहुत बार तोहिं टेर्यों माई॥
तदपिन उठी काज प्रिय तोहीं। दारुण क्षुधा लागि सुनुमोहीं॥
मचल मही असकहिभगवाना। करसरोज गहि रईसुजाना॥
दधि भाजनते बाहिर डारी। फेंकत दधि द्वौकरन निकारी॥
अंचल खैंचि चरणमहि मारे। तब रिसाइ यशुमति बैठारे॥
कहा कहाँ मचलापन सीखी। अबलगिसुत तू पुरुषमनीखी॥
चलौ कलेवा तुम कहँ दीजै। पुनि पश्चात कार्य गृहकीजै॥
दो० श्याम कहा अब लेउँ नहिं प्रथम न दीन्होमात।
यहकहि ठुनकत मातुढिग यशुदामन झुँझुलात॥
फिरि परिणाम प्यारकरि पोटी। चूमिगोदलै दीन्हेसि रोटी॥
मिसिरी माखन स्वकर मिलाई। कहाखाहु यह कुँवरकन्हाई॥
लगेखान मुसकाइ कृपाला। चंचल चहुँदिशिचितैनृपाला॥
अंचल ओट करैनँदरानी। लगै न दृष्टिचित्त अनुमानी॥
नशैकाल लखि भृकुटी जाकी। जननी दीठि बचावत ताकी॥
तेहिक्षण कहागोपिका आई। कानिशिचन्त बैठि तू माई॥
पयउफनाइगयो चहुँ ओरा। झपटिचलीतजि हरितेहिंठोरा॥
क्षीरउतारि मही धरि दयऊ। इतहरियहकौतुक नृपठयऊ॥
तोरि मथानी भाजन फोरी। लीनी माखन भरी कमोरी॥
बालसखा सँगलै यदुराई। बैठ उलूखल रीतो पाई॥
चहुँदिशि सखा घेरि बैठाई। हँसिहँसि माखन दयउखवाई॥
उतयशुदामहि धरिनृप क्षीरा। सहसा फिरि आई हरितीरा॥
दो० घर बाहिरदधि बहत लखि तबकरिकोप अपार।

गहिकर साँटी चलभई आतुर नृप तेहिबार ॥
खोजत यदुकुल कैरवचन्दा । गईजहाँ शोभित सुखकन्दा ॥
मंडलीक हरिबाल समाजा । खात खवावत माखन राजा ॥
शनय शनय पगधरि हरिमाई । पाछे तेगहिलियो कन्हाई ॥
अरु कहतैं दधि माखन नाशा । आजु ताहि देहौं बड़ित्राशा ॥
हाहा करि कहरोइ मुरारी । गोरस मैं न जान महतारी ॥
दीन बाक्यसुनि जो मुसकानी । रिसमुदमग्नपकारिगृहआनी ॥
चहत उलूखल बाँधा ताहीं । प्रभुमाया करि दीन तहाँहीं ॥
जेहि रजु बाँध छोट सो होई । काहूरजुनबँधा सुत सोई ॥
दो० तब सरोष सहचरिन सन सब गृह रजुनमँगाइ ।
बाँधेउ तदपि न हरिबँधे यशुदामन अकुलाइ ॥
देखौ मोह प्रबलताभारी । जेहिनिजबलयशुदामतिहारी॥
भवबंधन दारुण जेहि नामा । छूटत मातु बाँधतेहि दामा ॥
कहत आजु बाँधे बिनु तोहीं । तजौं नशपथतोरिसुतमोहीं ॥
जानि बिकल बड़ि सौंहबिचारी । लघुदामरिबँधि गये खरारी ॥
पुनि गोपिकन कहानँदनारी । करै मुक्त तेहि शपथ हमारी ॥
कहि असगेह काजसो लागी । बँधेउलूखल जन अनुरागी ॥
नरइव चरित सुनत पुनिजोई । भ्रमत चतुरनहिं मूरख कोई ॥
दामबँधे दामोदर स्वामी । मन पछितातदेखिसँगगामी ॥
दो० जाकरअस अद्भुतचरित जानिसकतनहिंकोइ ।
बिनवत मंगल जोरिकर दया करौ प्रभुसोइ ॥
इतिश्रीमद्विबिधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांश्रीकृष्णचंद्रदामबंधन
वर्णनोनामदशमोऽध्यायः १० ॥
दो० विघ्न दोष दुख रुजलवा जगबन करत बिहार ।
भागत सुनतहि दशौदिशि हरियशश्येनप्रचार ॥
बिशदबाक्य बोले सुमुनिसुनु अवनिप चितलाइ ।
सुधि आई श्रीकृष्णकी भूत समय की राइ ॥

धनद सुतन नारद दियशापा। तिन उद्धार करिय हरितापा॥
सुनि संदिग्ध भूप मुनिबानी। कीन्ही प्रश्न जोरि युगपानी॥
सुत कुबेर के पुरुष प्रबीना। का अपराध ऋषयकर कीना॥
जेहिलगिशापदीन्हमुनिनारद। सब प्रसंग बहु ज्ञान विशारद॥
मुनिकह सुनहु भूप नयधामा। धनद पुत्र नल कूबरनामा॥
गिरिकैलास बसत ते दोऊ। शिव सेवा बिधि जानत सोऊ॥
लखि तत्परता सेवा शंकर। अप्रमाण धनदयउ कृपाकर॥
रास बिलास करैं गिरिऊपर। उपमा कासु देउँ नृप भूपर॥

दो० एक समय बामन सहित बन बिहारगय सोइ।
धन मद तापर मद पिये मतवारे मति खोइ॥
साबलान द्वै नग्न ते ध्रुवनन्दा के बीच।
सकल स्नातसप्रेमनृप जल दोउ करनउलीच॥

कंधर बाहु डारि नर नारी। कृतकिलोलनिजमनअनुहारी॥
अकस्मात तेहिसमय महीशा। तहँ आवत भे देव ऋषीशा॥
तिनहिं बिलोकतनारिरिसानी। पहिरे बसन निकरितटआनी॥
ते द्वौ गलित महा मतवारे। नग्नठाढ़ मुनि नैन निहारे॥
यक्षप सुतन देव ऋषि देखी। निजमनकियचिंतवनबिशेखी॥
श्री मद मद ये गर्वित भारी। यहिते निंदा करत हमारी॥
काम क्रोध जानत सुखसीवा। इनते भले रंक जगजीवा॥
अहमित होत कतहुं ते नाहीं। भजत ईश दुखबश मनमाहीं॥
धर्माधर्म धनिहि नहिं सूझत। केवल चित्त कुकर्म अरूझत॥
भणत पुराण बेद इतिहासा। सम्पतिकरत सुमतिकरनासा॥
मूरुख करत देह अनुरागा। लहतअवशिदुख अंतअभागा॥
जानत सर्व शरीर असारा। बुध न होत धन मद मतवारा॥

दो० गृह कुटुम्ब लखि चतुर नर नहिं भूलतमतिधीर।
समुझतसकलअसत्यही जिमि अंजुलिकरनीर॥

सुखदुखसम्पति विपतिसमाना। जानत संत मान अपमाना॥
इनके समजड़मति जग कोई। मनुज देह मम जानि न होई॥

ममअपमानयदपि इनकीन्हा। पहिचाना अथवा नहिंचीन्हा॥
तदपि शापबिन त्यागौं आजू। तौ होवै परिणाम अकाजू॥
निंदिहिमुनिनआनखललोगा। यहिते अवशिशाप के योगा॥
असमन शोचि सुरर्षि पुकारी। कहा सुनौ द्वौ गिरा हमारी॥
कियोजड़त्वकर्म तुमजड़मति। यहिअघयक्ष लहोगे जड़गति॥
पादप तन उपजौ भव जाई। गोकुलग्राम शाप मम पाई॥

दो० मुक्ति लहोगे कृष्णकर सत्य सत्य मम बयन।
नारद शाप कराल दै जात भये बुध अयन॥
कारण भूपति शापकर तुम्हैं सुनायो सर्ब।
विकल भये द्वौशाप सुनि यथापरे शशिपर्ब॥

यहि कारण धनपति सुतभूपा। वृक्ष भये यमलार्जुन रूपा॥
तिनहिं निरखिकृपालशकटारी। कठिनशापऋषिहृदय बिचारी॥
निजबल तब आकर्षिउलूखल। लै आये यमलार्जुन के तल॥
मूल मध्य विटपोभय केरे। आड़ि उलूखल खैंचि करेरे॥
टूट मही कुज परे समूला। भयो शब्द बड़ तरवर थूला॥
वृक्षन ते द्वौ पुरुष सोहावन। प्रगटे तरुण धरे तन पावन॥
जोरि हाथ है ठाढ़ अगारी। अस्तुति कृत द्वौ जीव सुखारी॥
दीनबन्धु तुम बिनको ऐसो। मोचत अघबड़ हमरो जैसो॥

दो० बहुत दिवस तरु देह महँ लहा कलेश कराल।
कमलचरण तव परसि अब दुखछूटो यहिकाल॥

बोले बिहसि बाक घनश्यामा। सुनो यक्षपति सुत गुणग्रामा॥
नारद बड़ि दाया करि शापा। गोकुल मुक्ति लहेउ गततापा॥
जन्म अनन्त करततपज्ञानी। अन्तसमयमाहिंलहतन प्रानी॥
सहजहितुमहिंमिल्योंमुनिदाया। परम पुरुषहौं आदि अमाया॥
अब प्रसन्नमोहिंसब विधिजानी। यॉचौबर निजमनअनुमानी॥
नीलोत्पल पद हरिके देखी। परे दण्डवत युगल बिशेखी॥
नारद कृपा दरश तव पाये। दुरितसमस्त सहज बिनशाये॥
पूजी इच्छा सकल हमारी। परसि चरण तुव देव मुरारी॥

छं० पदपरसि तुम्हरे दयासागर पूजि सब मन कामना ।
अचलह्ना सुख्य अशेष स्वामिन भयउ थिरचंचलमना ॥
जनजानि तदपिदयाल केशवभक्ति अविचलदीजिये ।
तब भक्ति बर प्रभुदेइ तिनसन कहागृहमग लीजिये ॥
दो० प्रभु आयसु लहि बंदि पग गये यक्ष निज धाम ।
मंगल मन मम सीख सुनि भजिले मोहनश्याम ॥
इतिश्रीमद्विबिधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदास बिरचितायां यमलार्जुनमोचबर्णनो
नामैकादशोऽध्यायः ११ ॥
दो० जासु रोम प्रति कोटिधा झूलत हैं ब्रह्मण्ड ।
सो बिराट तन मनुजबनि भयो कृष्ण बसुधाएड ॥
तासुचरण कोमल कमल अमल बंदि मनमाहिं ।
बरणौं सुखद चरित्र यह जो सुनिपाप बिलाहिं ॥
गिरत बिटप मुनिपुनि कहराजा । घोर शब्द भोजनु घनगाजा ॥
चौंकितुरत यशुदा उठिधाई । आतुर कृष्णपास चलिआई ॥
जेहिठाँ हरिहि उलूखल बाँधा । मिले न तहँतब रोदन नाधा ॥
ते पश्चात आन त्रियगोपी । यशुदा निकट पहूँचीं सोपी ॥
ग्वाल युवा बूढ़े लघुकाली । आये तिहिठाँ सबनर आली ॥
लखि रोदति नँदनारि दुखारी । कहत कृष्ण हे कृष्ण पुकारी ॥
पीड़ित सकल रुदत बहुतेरे । तेहिक्षण सखिआई गणनेरे ॥
कत निरर्थकृत गहन कराला । मैं हेरो बुधिसों नँदलाला ॥
दो० वृक्षपरे टूटे जहाँ तहँ स्वभावहीं श्याम ।
खेलन मिस प्रभुजानि मम चलेगये गुणग्राम ॥
नेककाल पीछे अबहिं भयो शब्द बिकराल ।
ढाहिगिरे द्रुम तिनहिंकर असभाषा जबबाल ॥
तबसब झपटि चले सुनि आगे । निश्चय बृक्षपरे महिलागे ॥
बँधे उलूखल तिनके बीचा । सकुच बैठ हरिमूल नगीचा ॥
देखि यशोमति धाईकैसे । धेनुबच्छ कहँ धावत जैसे ॥

खोलि उलूखल हृदय लगाये। नरनारी समूह जुरिआये॥
कोउ करतालदेहिं बहिलावैं। कोउ मध्यमा अँगुष्ठ बजावैं॥
जानि सशंकित लोग लोगाई। चाहत हँसैपुत्र सुखदाई॥
जासु त्रास त्रासित यमकाला। सभयताहि जानत गोपाला॥
नंदुपनंद परस्पर कहहीं। चिरुकालीन वृक्ष ये अहहीं॥
दो० सहज टूटि धर गिरि परे यह अचरजकी बात।
भेदकाहुबिधि मिलतनहिं तबबोल्योयकतात॥
आड़ि उलूखल कृष्णहीं तरुवर दिये गिराय।
जानिबाल सुनु चतुरनृप कोउनतेहिपतिआय॥
कोउकहै बालबंग यह बातुर। समुझिचित्तपुनिकोउकहैचातुर॥
हरिमाया गोपार अपारा। कोउन बुध बिधि जाननहारा॥
बाल कहत चहुँ ऐसयहोई। ईश्वर जान भणत असकोई॥
कहत अनेकानेक प्रकारा। निजनिजबुधिअनरूपबिचारा॥
हरि संयुक्त धाम सब आये। बिबिध भांतिके करत बधाये॥
अगणितदानद्विजनदियनन्दा। कीन्हबधायो सहितअनन्दा॥
यहि प्रकार कछुदिनचलिगयऊ। द्रुमवृतान्त जगछावतभयऊ॥
हरिकर जन्म दिवस पुनिआवा। सकलकुटुंबहि निवतपठावा॥
दो० मंगलचार करायकै सूत्र ग्रंथि तिन कीन्ह।
उतआगम रससरसशुभ भोज्यतियनरचिलीन्ह॥
जुरि मिलि सब बैठेभषन तबनृप नन्दअगार।
जेंवत हरिहि समेतसब किमि बरणौं ज्योंनार॥
कहा नन्द सब भाइहु सुनहू। मनबच क्रम गुणिउत्तरभनहू॥
नित नव बिपतिहोतियहिग्रामा। सूझतमोहिं कठिनपरिणामा॥
सुथल बिचारि भूमिभल जोई। यह पुर त्यागिबसाइय सोई॥
तब उपनन्द नन्द सन भाखा। सुंदरथल यक हमसुनिराखा॥
वृन्दाबन नृप कीजिय बासा। तहांतृणोदक सकलसुपासा॥
कहिभल नन्द सबहि अँचवावा। पानखवाय सभा बैठावा॥
ततक्षण एक ज्योतिषी आवा। सादर ताकहँ नन्द बोलावा॥

यात्राकेर मुहूर्त्त बताइय। वृन्दाबनै बसे कब जाइय॥
दो० करि बिचार द्विजवरकहा प्रातकाल सुनुराव।
वहिदिशिकी यात्रा सुभग निवसौ वृंदागाँव॥
योगिनिबाम पृष्ठि दिगशूला। सन्मुख सिन्धुतनय सुखमूला॥
निस्संदेह प्रात प्रस्थाना। करौराउ गुणि बिप्र बखाना॥
सुनि सब गोपी ग्वाल सिधाये। सातुरसकल भवन चलिआये॥
रजनियकरि सबबस्तु सम्हारा। भिनसारहि सबशकटिन डारा॥
जुरिनर सहित तनुज अरुनारी। नन्दद्वार पहुँचे गण भारी॥
खरभर रव न बात सुनिपरहीं। जहँ तहँ बोलिरहे खगवरहीं॥
सजन कुटुम्ब सहित नृपनंदा। कहिजै सिधिदाता शिरचंदा॥
चलि अवतीतरि संध्याकाला। वृंदाबन पहुँचे सँग ग्वाला॥
दो० वृन्दा देवी के चरण सारस बन्दि सप्रेम।
बसे नन्द उपनन्द तहँ रहै लगे युतक्षेम॥
यहि सुख बीते दिन घने वृन्दाबन नँदग्राम।
सुनु नरेश इतिहासबर है प्रमोददा धाम॥
भै कृष्णायु शराब्द प्रमाना। तब हठ अस मातासनठाना॥
मम मन रुचि यह बच्छ चराऊं। कहुबल बोलि संग मैं जाऊं॥
तजहिनबिपिन अकेलाजानी। सुनिसुतबचनबोलिप्रियबानी॥
बच्छ चरावन हार अनेका। दास तुम्हार तजौ सुतटेका॥
तुम जनि होहु बिलोचन ओटा। बन बीथिन लागै कहुंचोटा॥
जो न मातु कानन मैं जाऊं। तौ काहू बिधि अन्न न खाऊं॥
जानि कठिन प्रणहठ बिकराला। बोले सकल ग्वाल सुतबाला॥
जे नित बच्छ चरावत कानन। सौंपे तिनहिंमातुबलभानन॥
दो० जो रक्षक तिहुँलोकको ध्यावत जाहि मुनीश।
ग्वाल सुतन कहँ मातु तेहि सौंप्यो सुनोमहीश॥
कहा दूरि घनबन जनि जायहु। दिनते संग घरहि लैआयहु॥
अकसरगहनबिपिनजनित्यागेउ। रहेउसदृढ़इनकेसँगलागेउ॥
असकहि मिसिरी माखनलाई। राम कृष्णहित सखहिबँधाई॥

भोजन हरिहि करायहु पोसी। कहितिनकेसंगसुतहिकरोसी॥
कृष्णा तट सब कृष्ण समेता। बच्छ चरावन गये सहेता॥
जमी निकट तजिधेनु किशोरा। खेलत ग्वाल बालचहुंओरा॥
ताही काल दैत्य यक आवा। प्रबल जानि नृपकंसपठावा॥
करिमाया धरि बच्छ स्वरूपा। कपट खानि तेहि देखतभूपा॥
दो० सभय बच्छ चहुँ दिशिभजे रम्यकूदि अकुलाइ।
कृष्णकहा पहिचानिखल रामहिंसैन बुझाइ॥
हलधर यह कौतुकी निशाचर। बच्छ बपुषधरि आवायहिथर॥
बारबार हरि ओर बिलोका। कालरूपलखि हृदयसशोका॥
मरण ठानि निजघात बिचारी। प्रभु समीप आये बिबुधारी॥
पाछिल चरण गहे हरिधाई। महि मर्यो बहुबार भ्रमाई॥
मरतिबारनिजतनखललीनासि। कृष्णकृष्णकहितनतजिदीनासि॥
कंससुना बच्छासुर घाता। मन गद्गदअरु बिगलितगाता॥
बोलि बकासुर सुभट सप्रीती। कथाकही सब पूरबबीती॥
सुनि सकोपसो अधम कराला। वृंदाबन आयो बशकाला॥
दो० महिषध्वज अनुजा निकट खल बिचारिनिजघात।
बकतन भूभ्रत सम बिरचि बैठ असुर सुनुतात॥
देखि सभीत भयउ सुत जूहा। कृष्णहि कहा सबनकरिहूहा॥
बन्धु दैत्य यह बकनहिं होई। यहिते आजुबचै नहिंकोई॥
इत इमि बालकहरिहिजनावत। सुराराति उत घातलगावत॥
निजमन बदतबिकट जड़सोई। बधौं कृष्ण भूपति भलहोई॥
तेहि समाजहरि तासुसमीपा। सहज गये कौरव कुलदीपा॥
प्रमुदितअसुरचोंचगहिश्यामैं। भषिमुख मूंदि बैठतेहि ठामैं॥
आतुरविकलित बाल समाजा। सिन्धु दिशालखि रोवतराजा॥
हे हरि कहि टेरत बिललाता। निजकर उरमर्दत पछिताता॥
दो० कहत न यहि अनमिष यहां हलमूशल धरहाय।
यशुदहि उत्तर कासु हम कहब दैवघरजाय॥
गौरी रंगा[illegible]न सबकेरा। अन्यवरण मिटि भो तहिंबेरा॥

आरत सखाजानि भयहारी। मायामुख महँ श्याम पसारी॥
धस्यो धनंजय रूप कृपाला। तबसो असुर भयउ बेहाला॥
दहतजानि निज बक्र सुरारी। उगिलिदयो खल तुरत मुरारी॥
उठिकर चिबुक चरणकरसाधी। आकर्ष्यों सो सहज नराधी॥
चीरि फाँकडारी महिदोई। जिमितृण चीरिडार सुतकोई॥
अघरूपीखल जड़बुधि कामी। कीन्ह कृतारथ ताकहँ स्वामी॥
को असदीनबंधु सुनु राजा। अरिउद्धारक तजि ब्रजराजा॥

दो० मिले सखन सँग आइहरि लखि हरषे सबबाल।
घेरि बच्छ जुरि घरचले जान्यो सायंकाल॥
बिहँसत खेलत पंथसब आये निज निजधाम।
गृह गृह बालन कहा यह प्रभुकर अद्भुतकाम॥
सुनिसचु मानो काहुनर मृषाकाहु मन माहिं।
मंगल हरि नित प्रात उठि बच्छ चरावन जाहिं॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रिया यांमंगलदासविरचितायांगोकुलबासपरित्यागबच्छा-सुरबकासुरबधवर्णनोनामद्वादशोऽध्यायः १२॥

दो० यथा सिंहको शब्द सुनि गजगण चलत पराय।
तथा कृष्ण यश सुनतहीं भजत पाप अकुलाय॥

सुनु कौरवकुल कमल दिनेशा। प्रातसमययकदिनहृषिकेशा॥
धेनु जात चारण बन गयऊ। तिनकेसाथग्वाल सुतभयऊ॥
दही मही घर घर ते ल्याये। चलिसमस्तकाननमहँआये॥
बच्छ चरनहित बन तजिराजा। बैठे यकठां बालसमाजा॥
गेरू खरीलाइ तन चीता। भल कौतुकतेहिअवसरबीता॥
बनफल कुसुमाभूषण कीन्हे। कोन भूलसुत कर्त्तब चीन्हे॥
भाषा पशुखग बोलत नीकी। पशुविहंग भाषा कृतफीकी॥
ख्याल रचा पुनि विबिध प्रकारा। मनफूले खेलत तेहिबा[रा॥]

दो० पठयो कंस अघासुरहि बीर प्रबल अनुमानि।
आयो सो सुररिपुतहाँ काल आपुनहिं ज[ानि]॥

उरग प्रथुलवत बिरचि कलेवर। श्यामश्रृंग जनुगिरि गिरितेतर॥
बैठा अधम बिकट मतिहीना। तासुचरित सुनुराय प्रवीना॥
दैवयोग सँगबाल मुरारी। खेलत तेहितट गये बिहारी॥
देखा पन्नगतन परिनाहा। मुखपसारि बैठा मृतुचाहा॥
हरिमाया गतिनृप बिपरीती। प्रभुजो चहत करत मनचीती॥
ग्वाल सुतन तेहिदेखि बिचारा। बड़ भूधरासितो रग डारा॥
कोउसुत कहैं ऊँच गिरिकैसो। अबलागि हमन बिलोकोऐसो॥
दीरघ गुफा जासु हिमितूला। कहत चलौ देखिय नगथूला॥
दो० यहि बिधि करतसो बतकही काकोदर तट जाय।
गिरिकन्दर मुख देखितब कह सुतेक शिशुभाय॥
बांधव गुफा भयानक भारी। यहिप्रविशाहिंनाहिंशक्तिहमारी॥
जाकहँ लखत सभय मनहोता। पैठि बनहिं मूरुख गुणपोता॥
तोषनाम यकसखा सुजाना। कहाघुसौ रक्षक भगवाना॥
संग हमारे जबलगि भाई। तबलागि भ्रूखमारे भयखाई॥
जो कोउखल कृतशैल शरीरा। काल बिबशतौ जानिय बीरा॥
यथा बकासुर प्राण गँवावा। बैर भाव हरिकर फल पावा॥
तथा निशाचर जाइहि मारा। त्राता हमरो नन्द दुलारा॥
कछुकदूरि मुखते सबठाढ़े। करत बारता आनँद बाढ़े॥
दो० निकटजानि तेहिक्षण असुर श्वास प्रलंबाकर्षि।
बालबच्छ भच्छे सकल कपट नागउर हर्षि॥
ताती बिषयुत तन पव माना। लागतत्रसितदुखितभयनाना॥
रँभतबच्छ बाल कृतशोरा। त्राहित्राहि प्रभु नन्दकिशोरा॥
वेगिराखु रच्छक भगवाना। तनभय भस्म गये अबप्राना॥
दीनबन्धु सुनि दीन पुकारा। प्रथमन गये चले तेहिबारा॥
आतुर आनन महँ घुसिगयऊ। मुदितमूँदिमुखतब खललयऊ॥
पंहूत बक्र निबिड़ तम छावा। बच्छबालकन अतिदुखपावा॥
भनिज शरीर विस्तारा। अधिक मणी बपुतेतहिबारा॥
बाढ़ते.. उदर तेहि फूटेउ। बालकबच्छ बन्दिते छूटेउ॥

दो॰ अघासुरहि यहिबिधि बधो लखिहरषे सुरसर्ब।
छोड़त कुसुमावलिभली हरिपर सकल अखर्ब॥
पुनिहरिजू धरि बालबपु ठाढ़भये तेहि ठाम।
गरलमिलत श्वासा प्रथम खैंची अघअघधाम॥
बालकबच्छ विषम बिषश्वासा।लगिअधमरकोउप्राणननासा॥
सुधावृष्टि तबकीन्हि दिवेशन। बालबच्छ विषहर रह लेशन॥
आनँदयुत सब कहत कुमारा। जोनहोत सँगहरि रखवारा॥
आजुमरण होतेउ शकनाहीं। बधेउ असुरहरि करिबलबाहीं॥
मारणहार यदपि बलदाई। रक्षक तदपि बड़ाहै भाई॥
श्यामहिंकहतमनुषतुमतातन। असगुणहोत मनुजके गातन॥
महाबली यह असुर कराला। पन्नग छली शरीर बिशाला॥
ताहिहतो तुम चणमहँ भाई। प्राण सबनके लियेबचाई॥
सो॰ बाल बरूथ अपार विनय करत हरि की चतुर।
निजनिज मतिअनुहार कहौंकहांलगि बरणिकै॥
दो॰ शिशुतामें अस प्रबलखल जेहिमारो क्षणमाहिं।
मंगलकी रच्छाकरौ सो प्रभुकृष्ण सदाहिं॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांअघासुरबधवर्णनो
नामत्रैदशमोऽध्यायः १३॥
दो॰ प्रसव कालते अंतलगि नहिंबूझत ममजानि।
जेहिमायाते जीवजग तहियश कहौं बखानि॥
मारि अघासुर हरि पुनिभूपा। घेरेबच्छ स्वरूप अनूपा॥
बालसखा सँगचले मुरारी। कदमविटपतट पहुँचि बिचारी॥
तरुतल ठाढ़होइ मुरलीकर। ताहि बजावतभे मुरलीधर॥
बोलिसखानबिहँसि कहिबानी। थलभलयह भाइहु ममजानी॥
आगे सुथल और को ऐसो। यमुनानिकट कदम तटजैसो॥
सबजन द्रुमतल आइ विराजें। माखन दधि भोजन सँगरे॥
सुनतबच्छताजि बनपुनिसिगरे। कदमतरे बैठे

पातमदार पलास सरोजा। बहुपद तूलनीय करिखोजा॥
दो० लाइ बनाई पातरी करिउज्जल तररूख।
पंक्तिबाँधि शिशुसकलते बैठे व्यापीभूख॥
सो० सबके मध्य अघारि राजत कर भोजनलिये।
पारस करत बिचारि यथायोग्य तनबल निरखि॥
प्रभुहि परोसतलखि सुतग्वाला। आतुरपरसि चले महिपाला॥
आपन और आनकर आपू। भाग यथोचितलै तजिताप॥
ठाढ़होइ हरि जेंवन लागे। भक्षणलगे सखा अनुरागे॥
किमिवरणौं शोभा तेहिथरकी। बुधि अनुरागत होतअतरकी॥
शिरपर मुकुट मयूर बिराजत। बनमाला गल शोभा साजत॥
लकुट कमलकर रूप त्रिभंगी। मुखछबिलखिलाजतद्युतिअंगी॥
पीतपाट पटकाछनि बाँधे। तद्वरणी शोभित पट कांधे॥
कुंडल लोल श्रवण छबिदेता। लाजतलखिहरिजल वरकेता॥
दो० हँसनि चंद्र उडुगण दशन मुखनभरूप अनंत।
लजत हँसत लखि तापखल बिकसतकुमुदसुसंत॥
हँसि हँसिमोहन बांटत खाता। प्रफुलित गात तिहूंपुर त्राता॥
अपर बालकर भोजन खाई। षटरस तासनकहत बुझाई॥
कटुअरु अमिल मधुरअरुखारा। रस चरपरा कषैला सारा॥
बाल मंडली हरि भा मोहति। ऋक्षावली मनौबिधुसोहति॥
तौने काल अजा दिवराका। निजनिज यानारूढ़सुनाका॥
निरखत यह चरित्र चितदीन्हे। कोउकोउ भोजनलालचकीन्हे॥
गोपसुतनसँग खात निहारी। कमलजात मनभ्रमभाभारी॥
हरिअवतार सुना अरु जाना। सो प्रभुखनहिंबिदितदेखाना॥
दो० ब्रह्म जोव्यापक अखिलयक तेहिलीन्होअवतार।
सोकिसुतनसँगखाइदधि बिधिबुधिभ्रमितअपार॥
बिना परीक्षा भ्रम नहिं जाई। परखिगयेपुनि मन न भ्रमाई॥
अस बिचारिहरि बच्छ बिधाता। भूधर गुफा राखिसुनु ताता॥
शिला द्वार दै बिधि सुख पाई। चलिवृन्दाबन आयउ राई॥

बेरजानि इत गोप कुमारा । कहत कृष्ण सन भै बड़िबारा ॥
हम तुम इहां अचिंत बिराजत । सानँदसबमिलिभोजनसाजत॥
बच्छनकी सुधिकाहुइ नाहीं । काजानिय ते अबकहँआहीं ॥
कहा कृष्ण तुम जेंवहु नीके । बच्छ गये सब मध्यबनीके ॥
सो हौं अबहिं घेरिकरि लाऊं । उठ्यो न कोउ रह्यो यहिठाऊं ॥

दो० पुनि बिलम्ब मोहिंहोइजो तौन कस्यो औसेरि ।
अस भणि प्रबिशेबिपिनहरि दूरिगयेचितहेरि ॥

जब जाना बिधि हरिलैगयऊ । तब प्रभु तहां ठाढ़ है रह्यऊ ॥
इत बिरंचि हरिबालसमाजा । गयउ दूरि मन भ्रमहढ़राजा ॥
बच्छ बनाइ कृष्ण फिरि आये । कदम बिटपतल सखानपाये ॥
निज प्रपंच तब बाल बनाई । संध्या जानि चले घरराई ॥
बालक गोसुतनिजनिजभवना । पूरबवत कीन्हों नृप गवना ॥
युवति पुरुष काहू नहिं जाना । जो कछुचरितरचाभगवाना ॥
गो गोपिका सून निज जानी । नित नवप्रीतिकरैं सुखसानी ॥
ते बालक ताही गिरि खोहा । बन्दकियेबिधिमतिबशमोहा ॥

दो० निज मायाबल कंजसुत निद्रा शिशुन बढ़ाइ ।
जानिगेह सब बच्छ शिशु सोइ रहे हरषाइ ॥
ब्रह्मलोक कहँ बिधि गये गई भूलि सुधि ताहि ।
इत गोबिंद चरित्र नित करत नये दुख नाहिं ॥

संवत गये अजहि भा शोचा । कीन्हों कर्म स्वकर हौं पोचा ॥
यदपि मोरयक बिपल न बीता । तबपिनराब्दगयउबिधिभीता ॥
चलि देखौं ब्रजगोतिय जिनके । हरे सूनकस दुख भा तिनके ॥
अस बिचारिप्रथमहिं गिरिकंदर । देखेबाल बच्छ बिधि भूधर ॥
घोर सुषोप्ति दशा तिन हेरी । ब्रजकहँ चल्यो करत औसेरी ॥
वृन्दाबन अथोनि जब आये । चरत बच्छ खेलत सुतपाये ॥
अमिताचंभितमनकमलासन।चल्योसपदिपहुँच्योगिरिआसन ॥
गुफा उपल अजटारिनिहारा । सुत धेनुज बश नींदअपारा ॥

दो० सहसा घूमि स्वयंभु ब्रज देखे गोसुत बाल ।

विस्मय बश तहँ ठाढ़ ह्वै कृत बिचार महिपाल।
का मम बुधि भ्रम देखत आजू। दोउथल गोसुतबालसमाजू॥
कैवहनगन कि ब्रजनहिं अहई। पूछौं काहि कौनु यह कहई॥
जेहिठाँजेहिविधिसुतनसोवायों। गिरि कंदर तौनीबिधिपायों॥
स्वै सुरभीसुत सुत ये ठाढ़े। अथवा कृष्ण नये गढ़िकाढ़े॥
असमनशोचिबहुरिबिधिगयऊ। कूट खोह सुत निरखतभयऊ॥
पलटि ब्रजातुर जबलगिआयो। तबलागिप्रभुइतख्यालबनायो॥
धेनुज गोपति जाकरि माया। रूप चतुर्भुज सबहि बनाया॥
बालक बच्छजिते अजतेते। शंकर बासव त्रिदश समेते॥
दो॰ यकयक के सन्मुख खड़े कृत बिनती कर जोरि।
अजबिलोकि अद्भुतचरित भईतासुमति थोरि॥
सो॰ यथापूतरी चित्र तथा अवाकित सो भयउ।
मिटोज्ञान उरमित्र छायो भ्रमकेबलतिमिर॥
अस जिमि पाथर देवसुजाना। दुखित होत पूजाबिन नाना॥
जबबिधिचकितभयउमहिपाला। कंप्योतन उपजा भयजाला॥
अजाधैर्य्य बैठोमहि माहीं। थरथरात जियतनसुधिनाहीं॥
प्रभु सर्वज्ञ संत सुख दायक। धातागतिबिलोकियदुनायक॥
एकभये सकलांश बटोरी। असजिमिजलधरउठिचहुँओरी॥
बर्षत समय होत यकरूपा। तिमिप्रभुकरयहचरितअनूपा॥
बिधिन चंद्रधन नहिं अमरेशा। बालबच्छ कोउरहन नरेशा॥
हरिनिज माया सकल समेटी। यथा सूत्र सूत्रक कृत फेटी॥
दो॰ सुन्दर रूप अनूप हरि सकलाभरण शरीर।
शोभित विधि सन्मुख खड़े मंगल हर्त्तापीर॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांब्रह्माबच्छबालकहरणकृष्णमाया वर्णनोनामचतुर्दशोऽध्यायः १४॥
दो॰ सूरघामजल बीचिजिमि बाक्यअर्थतिमिएक।
जीवईश द्वै कहन को कठिन परंतु विवेक॥

तातें अलखालख समुझि जीव ईश भ्रमटारि ।
निजगुरुपद शिरनाइकै हरियश कहौंबिचारि ॥
तत्पदवी त्वं पद बदत असिपद जानत जोइ ।
श्रीशुक मुनि ज्ञानी परम कहत भूपसन सोइ ॥
जबहरि निज माया हरि लीनी । अरुदाया बड़िअजपरकीनी ॥
तब बिरंचि कहँ तन सुधि आई । चीन्हों हरिमनध्यान लगाई ॥
चित पछितायजोरि दोउपाणी । प्रभुतट जाय बदारतबाणी ॥
अमित दया करिदया निधाना । हरानाथ मम भ्रम अज्ञाना ॥
रंचक गर्बरहा अब नाहीं । जेहि बशभ्रमितफिराद्यौठाहीं ॥
सूझा कुछुन ज्ञान दृग हेरा । धनि मायाजेहिवशमनमेरा ॥
बर्त्तमान भावी अरु भूता । अहै होइ भोको बुधि पूता ॥
जो चरित्र तव जानत जानै । जान्योतेहि नबुद्धिअनुमानै ॥
मायातीत अगम्य अजाना । सो तुम बालरूप भगवाना ॥
तव माया मोहत सब काहू । यक प्रभु तू माया करनाहू ॥
मायाबिवश करयोंछल स्वामी । क्षमाकरोलखिनिजअनुगामी ॥
तिहु पुर संभव लयकर पालक । अनुपम रूप धरे प्रभुबालक ॥
दो० रोमरोम ब्रह्मांड बहु जगप्रति बिधि ममतूल ।
तुव सन्मुख गणनाम ममक्षमाकरो जनमूल ॥
मम अपराध क्षमो जनजानी । दयासिंधु दायक सुखखानी ॥
विनयपितामहकीसुनिश्यामा । मुसुकाने तबनृप गुणग्रामा ॥
बिहसतलखिरुखचला बिघाता । शैलगुफा पहुँचो पछिताता ॥
बालक बच्छ तुरत लै आवा । लज्जित मन बृन्दाबन ठावा ॥
मायाहरि गोसुत तजि कानन । तरुतर सुत करिलैअनुशासन ॥
जोरिकर स्तुतिकरि गृह गयऊ । अग्रकथा सुननृप जसभयऊ ॥
भोजन भाजत गोप कुमारा । जिमि पूरब बरनो बिस्तारा ॥
बर्षदिवस बीतानहिं जाना । ग्वाल सुतन प्रथमै दिनमाना ॥
दो० गईनींद सब सुतनतब हरिगो सुतसब घेरि ।
लैआये तट कदम के कहतबाल हरिहेरि ॥

कृष्ण बेगि गोसुत तुमलाये। दूरिन रहैं निकटहीं पाये॥
हमभोजन करिअेन गोसांई। सुनितब बिहसि कहा यदुराई॥
चिन्तामोहिं सखातव रहेऊ। लावा आशु निकटहीं लहेऊ॥
अबसब मिलिनिकेत पगधारौ। प्रातहिके आये सो बिचारौ॥
सुनिकहि अच्छा बच्छा सबलाये। बिहसतसकलसदनचलिआये॥
मातपिता केहि जानन भेवा। गुप्त चरित कीन्हा हरिएवा॥
हरिमाया दुस्तर संसारा। जाहि निरखि बिधिनिज हियहारा॥
बावरतरतेहि जीतन चाहत। सिंधुपिपील कतहुं अवगाहत॥
दो० यथा दिवाकर एकबपु कृत प्रकाश तिहुलोक।
तथा कृष्ण घटघट प्रगट हरत जननके शोक॥
सो० कोजग अस सामर्थ जेहिन मोहमाया प्रबल।
कतकौं बकिय निरर्थ मंगल जीतत हरिकृपा॥
होइ अपावन पूत कृष्ण कृपा माया तरत।
चारि खानि भवभूत मुक्तिलहैं संशयनहीं॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंग
लदासविरचितायांब्रह्मामोहवर्णनोनामपंचदशोऽध्यायः१५॥
दो० बीतराग सुबिवेकसम दम मुमुक्षुमिलिचारि।
कर्त्तासब साधनन के ते मुनि कहत बिचारि॥
जबहरि आयुर्षबसु भयऊ। यकदिन तब मातासन कहेऊ॥
यह लालसा जननि मनमेरे। धेनु चरावन जाउँ सबेरे॥
तूपितु प्रतिकहु अवशिबुझाई। ग्वालन सँग मोहिं देइँ पठाई॥
कहानन्द सन तिन करजोरी। कहिभल विप्रबोलि गुणधोरी॥
शुभ मुहूर्त्त पूछा नँदवाहीं। पूजन खरिक कृष्णकब जाहीं॥
कार्त्तिक सित अष्टमी बताई। तेहिदिन नँदसब ग्वाल बुलाई॥
राम कृष्णसन खरिक पुजावा। कुल लौकिक व्यवहारकरावा॥
शिवबिरंचि जेहिपदमन लायो। तासन पिताखरिक पुजवायो॥
दो० बचन मनोहर तबकहा ग्वालन सों नँदभूप।
सौंपतहुमकहँ तनुजद्वौ तुममम सखा अनूप॥

नितप्रति सुतन संगलै जायउ । कानन सघन धेनु चरवायउ ॥
बिपिनगहननहिं तज्योअकेले । रहियो सुत समान परहेले ॥
कहिइमिभोजनदीन्हनृपाला । पुनिदधितिलककरयोहरिभाला ॥
रामहु के माथे दधि लाई । गोपन सँग बनदीन्ह पठाई ॥
प्रभु सौ बन्धु मग्न मन चाले । धेनु चरावन दीन दयाले ॥
कानन जाइ बिपिन छबि देखी । हलधरप्रतिभणबचनबिशेखी ॥
दाऊ भली सोहावन ठाऊँ । जेहि निरखतमनउपजतचाऊ ॥
पादप नयनय महि नियराने । नवपल्लव नाहिं जातबखाने ॥
दो० तिनपर नभगामी सुघर बाणी बदत रसील ।
कृतकिक्कोलनानाबिधिन कहिअसलखिय कटील ॥
तापर हरि पाटाम्बर डासी । क्षणक बैठबिहँसतअबिनासी ॥
पुनि उठि प्रभु पीताम्बर फेरी । दया दृष्टि चतुराशा हेरी ॥
कारी गोरी पीरी कारी । धौरी धूमरि पीत पुकारी ॥
नीली इत्यादिक लै नामा । मधुर बाणि टेरेउ गुणग्रामा ॥
सुनत धेनु सब आतुर धाईं । चहुँ दिशिनिकटश्यामकेआईं ॥
कोउ रंभत कोउ कृत हुंकारा । मध्य कृष्णअस लसतेहिबारा ॥
जनु घनघटा चहूंदिग सोहति । तेहिके मध्य सूर हरि मोहत ॥
चरैलागि गोहांकि बहोरी । कहदाऊसन प्रीति न थोरी ॥
दो० भोजन करिय सप्रेम अब कहा राम भलतात ।
सानँद दोनों बन्धुमिलि बिहँसिबिहँसि दधिखात ॥
करिभोजन गय तलतरुगंधा । दिव्यबिलोकि हर्षिदोउबन्धा ॥
तहँबैठे तब प्रभु अलसाई । शिरधरि सखाजंघ सुखपाई ॥
शयनकीन्ह हरि उर सुखपागी । रामहिं कहाबहुरि असजागी ॥
ममनखेल करौ यह आजू । दुठाजोरिदल सखा समाजू ॥
करियसमर भणिइमि यदुनाथा । बाँटसखा दुठा निजहाथा ॥
पुनि फल फूलायुधन बनाई । दोउ बांधव कृत बिबिधलराई ॥
गोमुख भेरि ढोल सहनाई । डफ़ दमाम मिरदंग तोराई ॥
सकल शब्द रसनाग्र बजावत । शाब्दिक पूरब लाजलजावत ॥

दो० मारु मारु धरु धरु बदत मुदित ग्वाल दुहुँओर।
खेलरहा यह बार लगि करतजगत चितचोर॥
गो रक्षक गोभाग सम वृंदबिरचि तजिख्याल।
ईषधाग्र चलि वृष जननि चारतभे जगपाल॥

तेहि क्षण सखा आइकहरामै। अल्पकु दूरि तालबन नामै॥
दिव्य स्थल मोहन मनलोभी। अहैं तात बनफल बिषक्षोभी॥
तहां परंतु एक भय भारी। असुर खरा कृति कृत रखवारी॥
सुनि संकर्षण सहित उछाहा। तेहि बन जात भय नरनाहा॥
संग सखा बालक गो त्राता। अभय प्रबिशिबनकृतउत्पाता॥
मृति कोपल लकुटी तरुघातैं। अल्प भखै फल वृक्षनिपातैं॥
ध्वनिसुनि धेनुक राक्षस धावा। गर्द्धभरूपी प्रथम बतावा॥
जागतनिज सुरबल तट आई। घूमि दुपादी हृदय लगाई॥
पदगहि फेरि धरा धरिमारा। मरानखल उठि सम्हरि प्रचारा॥
मर्दिरसा श्रुति अधकरिधावा। हटहट बदत बहुरि तटआवा॥
घुमरि घुमरि पदघात चलावै। जिमिपिपील भूधर डरपावै॥
हँसि हँसि राम खेलावत ताको। मनौं सहत वृकमेष धकाको॥

दो० बिपुलबार लगि समरइमि धेनुक कियबल साथ।
तब हलधरउर क्रोधसिखि ज्वलित भयउ कुरुनाथ॥

पाछिल चरण दुकर गहि फेरी। पादपैक आयत बल हेरी॥
डारा ताहि तासुके ऊपर। तरवर सहित गिराखलभूपर॥
परत प्राण बिन भो खल सोई। अचरज लहासखन यहजोई॥
जौन समय तरुखल महिपरेऊ। शब्द अघातकठिनबनभरेऊ॥
बिटप निकर हाले सुनि शोरा। बोलेकृष्णनिरखि तिनओरा॥
ग्वालवेश कासु सुनि जाहीं। साखी डुलिखगनिकरउड़ाहीं॥
तेहि क्षण नीलाम्बर चर आई। बिहँसिहरिहियहखबररिजनाई॥
कृपा सिंधु राक्षस यक मारा। बल तेहिकारण तुमहिंपुकारा॥

दो० चले कृष्ण सुनि मगन मन पहुँचे हलधर पास।
सुहृद बन्धु सेवक असुर जुरि आये चहुँ आस॥

सो० अस्त्र शस्त्र गहिहाथ युद्ध काज मनमरण गनि ।
ते घाले यदुनाथ क्षण महँ बिनहिं प्रयास नृप ॥

जब दुर्नाद रहित बन भयऊ । तब ग्वालनके संशय गयऊ ॥
फल अक्षोभ खाये तिन तोरी । मन मानती भरी पुनि झोरी ॥
सुरभी सकल घेरि ते ल्याये । हरिकह चलौ बारके आये ॥
असकहि युगुल बन्धु मुदपाई । बिहँसत भवन चले सुरराई ॥
संग गोप सुरभी गण झारी । गये सदन सानंद मुरारी ॥
लाये तोरि मधुर फल जोई । घर घर प्रति बँटवाये सोई ॥
रैनि शयन करि प्रात नृपाला । करि भोजन टेरेगणग्वाला ॥
कहि जय जीव धेनु तिनहांकी । सुंदर रथ्या लै बन घांकी ॥

दो० राम कृष्णहू संग तिन गये चरावन गाय ।
चारत चारत भूप सुनु कालीदह पै जाय ॥

सो० लखि मध्याह्न सप्रेम गोपसुरभि जल पियतभे ।
सुनु नृप तू सह नेम पान करतही बिष चढ़्यो ॥

दो० महि लोटत सब शव मनौं बदत पाहिहरि पाहि ।
सुधादृष्टि देखत भये सबहि कृष्ण तेहि ठाहि ॥
विष समस्त सबकर हर्यो आनँद भे गोग्वाल ।
मंगलअसप्रभुत्यागकरिकेहिध्याइयकलिकाल ॥

इतिश्रीमिद्धिबिधकिल्वषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंगलदासबिरचितायांधेनुकबधबर्णनोनामषोडशोऽध्यायः १६ ॥

दो० ऊसरपर बर्षत घनो पावस अन मिष माहिं ।
तृण संपन्न न होत अरु होत शरद मिटिजाहिं ॥
तिमि मूरुखके चित्त में उपजत सदृढ़ न ज्ञान ।
विधि सम गुरुके प्राप्त भे सुने समस्त पुरान ॥
मूरुख सो जा उर बसत तमरूपी अज्ञान ।
तेहिते अज्ञानी नरन डरत चतुर बुधिवान ॥
अज्ञानिहिं ज्ञानी करत हरि जन ज्ञान प्रबीन ।
काठक काठ सुपूतरी नट नागर आधीन ॥

हरि चरित्र उत्तम गुण दायक। बर्णतसुमुनिसुनतनरनायक॥
सुनु नरेंद्र हरि विष करुणाकर। कंदुक खेल रचो करताकर॥
काली जेहि दह बसत नरेशा। करिन सकत तहँ जीवप्रवेशा॥
योजन एक प्रयंत गजाशा। ज्वलितविषाहिपाणमृतुपाशा॥
जलचर थलचर नभचर योनी। अँचवतजलभूलिहुपतिछोनी॥
तजत प्राण अवलंब बिहीना। सरिगिरिपरत लिंगतनपीना॥
भँवर कूल साखी लघु थूला। कदमरहित लखिपरत न भूला॥
सो द्रुम अक्षय समय चिर केरा। वेद चक्षु विष सहत घनेरा॥

दो० जासु गरल भवभूत सब बिकल तजैं निज जीव।
केहिकारण द्रुम अक्षय सो कहौ कथा गुण सीव॥

एककाल खगपति भुवराई। त्रिदशभोग निजचोंचदबाई॥
तेहि तरुपर बैठा नृप आई। बिधिबश बिन्दु परा द्रुम जाई॥
अमर भयउ सुर भोग प्रसादा। तेहिते सदा कुशल मरयादा॥
काली कारण श्याम बिचारी। चढ़े बृक्ष सहजहि बनवारी॥
अधते सखा गेंद तकि धेरऊ। प्रभु बचिगयउ गेंद दह परेऊ॥
गिरत देखि कूदे दह आपू। आहट सुनत नाग उर तापू॥
बमतहलाहल सिखि समश्वासा। फुंकृतमन चिंततघनत्रासा॥
अब लागि जीवतको यह धाता। विषलागिकिधौंद्रुमामरपाता॥
वा कोउ पशु पक्षी बलखानी। आयउमृतुबशमगअनजानी॥
असमनसमुभतदशशतआनन। उगिलतगरलभूपहरिभानन॥
पैरत दहमधि नभगप गामी। प्रभु कृतज्ञ उर अंतरयामी॥
रोदत सखा पसारि भुजानी। रंभाहि सुरभिजीवअकुलानी॥

दो० कहत ग्वाल हे कृष्ण अब निकरि आउजलपार।
एक गेंदकी बीसहम रचि देहैं यहि बार॥

तुम बिन कहब कहा गृह ताता। पूछिहि आइ यशोदामाता॥
इतदुख मग्न गोप भूपाला। उत गृह सुद्धिदई यकबाला॥
कालीदह कूदेउ हरि आजू। सुनिबिलखानेउसकलसमाजू॥
रोहिण यशुदा नन्द सिधाये। गोपी ग्वाल रुदत सब आये॥

उरकर मर्दत गिरत अचेता। कालीदह गये सकल समेता॥
तहँन कृष्ण देखा नँदरानी। गिरनचलीदहजिय अकुलानी॥
गोपिनधाइ ताहि गहिलीन्हा। जीवदानुजनु यशुदहिदीन्हा॥
कोउ करगहे नन्द कर ठाढ़े। हरि बियोग उर आरत बाढ़े॥
दो० कहत महाबन त्यागिके बसे आइ यहि ठाम।
तदपि सतायो खलनबहु कुशलभई परिणाम॥
अबदह गिरेउ कृष्ण करतारा। निकरबकठिन महाबिष धारा॥
नंदव्यवस्था अकथमहाना। जिमिफणिमणिबिनतनबिनप्राना॥
दीप रहित गृह सरिबिन बारी। पच्छ बिहीन किधौं नभचारी॥
यशुदा दशा निरखि तेहिकाला। थकतभारती बुद्धि बिशाला॥
उपमा कहत तदपि उतरीसी। भई अबाक चित्र पुतरीसी॥
तजनचहततन तेहिच्छणरामा। आये तहां अखिल गुण धामा॥
सबहि बुझाइ जननि तट जाई। कहा होत बावरि कसमाई॥
अबिनाशी श्रीकृष्ण बिचारी। परिहरि शोक धीर धरु भारी॥
दो० काल काल भ्रूबंक जेहि को काली विषमात।
आवत हैं श्रीश्याम जी तू काहे पछितात॥
सो० आजुन आयउँ संग मोबिनहरि दहप्रविशियो।
तजौ सकलदुखअंग जानि स्वतंत्रस्वछंदहरि॥
तोषत इतहि तालध्वज सबहीं। उतहरिगये फणी ढिगजबहीं॥
तब उठि सरुष उरगतनश्यामा। वेदाशा लिपटो मति बामा॥
प्रभुनिजतनहिं बिपुलबिस्तारा। तजिहरि तब चक्री हुंकारा॥
जिमिजिमिसरुषकालिफनमारततिमितिमिप्रभुबचिताहिप्रचारत
पुरुषारथ बिषगर्ब बिलासी। चीन्हानाहिंपुरुष अबिनासी॥
लवाश्येन जिमि शशपंचानन। झपटत तथानृगानिलभानन॥
मूढ़ कुमति बश जानि मुरारी। अरुब्रजबासी दुखित बिचारी॥
सहजउचकिशिरअहिचढ़िगयऊ।शिरशिरप्रतिहरिनृत्यतभयऊ॥
दो० तनविराटभारी अतुल धर्‌यो श्याममहिपाल।
नृत्यत काली शीशपर नट नागर नँदलाल॥

अधपगोर्द्ध बाजत करताली। बोझित भारबिकलभोकाली॥
मर्दि मही फण रसना काढ़ी। क्षतजधार तिनते अतिबाढ़ी॥
विष पौरुष वैभव नशिगयऊ। तब गूढ़पा जानि हरिलयऊ॥
आदि पुरुष धरि बाल शरीरा। मम मदभंज्यो सहिविषभीरा॥
नत समर्थ को आन जहाना। विषमगरलममतजतनप्राना॥
जीवनआशतजीयहजानी। शिथिलभयउनृपअहिअभिमानी॥
काकोदर कलत्र कर जोरी। नाइशीशकृतबिनय न थोरी॥
कृपासिंधु भल कीन्ह बिचारा। जो ममपतिकर गर्ब प्रहारा॥

दो० बड़भागी यहिते अधिक अपरनदूसर कोइ।
तव दर्शन पायेहरी गये सकल अघ खोइ॥

सुर अजादि सनकादिकनारद। भवभय हरणसुबुद्धिविशारद॥
जप तप यज्ञादिक करिध्याना। जेपद ध्यावत कृपानिधाना॥
स्वै सरोज पगबिमल तुम्हारे। काली शिरराजत अरुणारे॥
यहि समधन्य आनको आजू। सुधरिगयउ सबबिगराकाजू॥
अब दयाल ह्वै प्रभुपरिहरहू। नतपति संगमोरबध करहू॥
नीतिभणत पतिबिनात्रियऐसी। खगपति बिनायामिनी जैसी॥
प्रमदा पतिबिन तजै कलेवर। पतिब्रता अबलासो भूवर॥
प्रभु बिचारि देखिय मनमाहीं। रंचकदोष स्वामि ममनाहीं॥

दो० ज्ञाति दोष यह नाथ है विष बिवर्द्ध पयपान।
सुनिसनीति बाणीबिमल उतरिपरेभगवान॥

करि प्रणाम काली कह बाता। मम अपराध क्षमौ अज्ञाता॥
संगर करि फण तुमहिं चलाये। नाग अधमहमजगतकहाये॥
ज्ञान रहित किमि तुमकहँ जानै। बड़ हृदय लघु दोषन आनै॥
जो भवतव्य लिखाबिधिकाली। भयउसोअबतुमममबचपाली॥
रमणक द्वीप कुटुम्ब समेता। बसौ जाय परिहरि ब्रजखेता॥
सभय कंपि कह सुनो गोसाईं। उहांजात खगपति मोहिंखाईं॥
जासुत्रास भजि यहिथलआयउँ। सौभरिशापकवच जनुपायउँ॥
निरभय तात जाहु वहि देशा। अबन गरुड़करकरौ अंदेशा॥

दो० चरण चिह्न मम शीश तव को समर्थ दुखदाय।
असकहिकालीमद हरण लीन्होद्विजपत्रोलाय॥
प्रभु काली उरगारि मिलावा। अरु सब पाछिलवैर मिटावा॥
तव फणीश बिधिवत हरि पूजा। यकचिततजा मनोरथ दूजा॥
बिपुल भेंटराखी पुनि आगे। बिनती कीन्ह भक्तिरसपागे॥
लै निदेश काली जब चलेऊ। तबकहप्रभुमम सबदुखदलेऊ॥
बेद दण्ड मम उत्तम अंगा। विरचेउ नाथ नृत्य रस रंगा॥
निज किंकरलघु जानिकृपाला। राखेउ प्रीतिमोरि नँदलाला॥
पुनिपुनिकरिअहि दण्डप्रणामा। गो कुटुम्बसह रमणक ठामा॥
इत श्रीकृष्ण पठइ व्यालारी। दह बाहर आये बनवारी॥
दो० तरणि श्याम प्राचीभँवर प्रगट नशातम शोक।
मंगल ब्रजबासी कमल फूले बिहँसे कोक॥
इतिश्रीमद्विबिधकिल्विषान्धकारदिनमणि श्रीकृष्णप्रि
यायां मंगलदास बिरचितायां कालीमर्दनोनाम
सप्तदशमोऽध्यायः १७॥
दो० यथावेद गावत चतुर तथा लखा कलिकाल।
छलपितुसुत हितमीतसन अरु पाखण्डबिशाल॥
जे साँचे राचे जगत तिनकर झूँठ बिचारि।
मन बिस्मित हर्षित कलुक सकल पुरुषअरुनारि॥
बनि न परत करणी कठिन सहज नामसोउ नाहिं।
हरियश गावत मुदितहौं तजे सबै छल छाहिं॥
भूपति प्रश्न कीन्ह मुनि पासा। ऋषिरमणकथलसबैसुपासा॥
सो काली तजे कारण काही। बूझतिहौं यह बूझा नाही॥
रमणक द्वीप भूपहरि जाना। बसत सदासुमिरत भगवाना॥
अति बलवन्त महारणकारी। लरितासन सब अहिगयहारी॥
नित प्रतिव्यालदेइ यककीना। कस्योसबनमिलिबिनयअधीना॥
ठाम नियत किय तरु यकताहीं। जात एकअहि चूकत नाहीं॥
वैनतेय नितयहि भषि जाहीं। निजस्थानप्रमुदितमनमाहीं॥

एक दिवसकी रुचिर कहानी। कद्रू सुत काली अभिमानी ॥
दो० निजपियबलअहमितअमित सुनुनरेशचितलाय।
खगपति भय भक्षण गयउ उर आनंद बढ़ाय ॥
तस्मिन् काल खगेश तहँ आवत भयउ महीश।
भिरेयुगुल भट समबली जनु द्वै रूप गिरीश ॥
सो० करी त्रिविध बिधि रारि बहुत काल बीते लरत।
तबकाली हिय हारि निज मनकृतचिंतमन अस ॥
रिपुकर बचत लखत कठिनाई। बचौं कहां भजिजाय लुकाई ॥
वृन्दाबन पतंगजा तीरा। जाउँ तहां शोचेउ अहि बीरा ॥
उहां गरुड़ नहिं जाइ सकाई। समर पलाय रहा तेहि ठाईं ॥
यहि कारण काली नरनाहा। बसा आइ यमुना दह माहा ॥
नागाराति नाथ भय कासू। तेहिथलजात न करियप्रकासू॥
एकसमय सौभरि ऋषि भूपा। करत रहें तप तहां अनूपा ॥
हरिबाहन ऋषि तटगहि मीना। भक्षत भयउ नरेश प्रवीना ॥
सो बिलोकि दीन्हो मुनिशापा। सुनुखगेशमम बचनप्रतापा ॥
दो० बहुरि आइ है ठाम यहि तौ ह्वै है तुवनाश ।
क्षम्यौं आजुअपराध यह जाहुभवन अनयाश ॥
ऋषि भय तहां न जात खगेशा। सब वृतान्त मैं भणेउँनरेशा ॥
काली जबते कर्यो निवासू। भयउ नाम कालीदह तासू ॥
अबसुनु आनकथा मनभावनि। दोषशोकरुजसकलनशावनि॥
कृष्ण चन्द्र आवत लखि गोपी। सबकोकी बिहँसीं दुखलोपी ॥
जीवन मूरि देखि नँदरानी। प्रथमशोकआनँदअकुलानी ॥
तोष सहित दीन्हे बहु दाना। जब आवत हेरे भगवाना ॥
मुखभा विधुमा शरद निहारी। बिकस बक्षसर मन सुतवारी ॥
रोम पंक्ति तन गदगद भयऊ। हरि अनुराग प्रगट उरछयऊ॥
दो० ब्रजबासी नर नारि नृप जुरे कूल सरि जोइ।
मृतक सुधा छवि पान करि आनंदे सबसोइ ॥
करत मुखाब्र अमृत सब पाना। नैन रंध्र छवि पान बखाना ॥

रजनी मुखभा बासर बीता। कहत परस्पर बचन बिनीता॥
दिवस भरे के क्षुधित पियासे। कहां जाइँ कहिअसतहँवांसे॥
रैनि ब्यतीतत होत बिहाना। बृन्दाबन चालिब मतठाना॥
अर्द्ध निशा असभा नृपयोगा। सोइगये जब सब ब्रजलोगा॥
अंधकार यकआव बिशाला। लागदवाचहुंदिशिशिखिमाला॥
काननतरु बनचर अकुलाने। जरत बचत नाहिं कतहुंपराने॥
गोपी ग्वाल चौंकि सबजागे। दावानल लखिआरत पागे॥
भुज पसारिकृत त्राहि मुरारी। रक्षहु दास जानि सुखकारी॥
नातरु भस्म होत नहिं फेरा। जलज प्रबाह खानिगो घेरा॥
त्रासितजननिजनकअनुमानी। उठे भक्त मन रंजन ज्ञानी॥
आमिष मध्य सहज यदुराई। पान दवाग्नि कस्योसुखपाई॥
दो॰ गति नाशी पवमानकी मिट्यो अनल चहुंओर।
सुख सोये पुनि रैनितहँ चले सकल उठि भोर॥
मंगल आनँद सहित सब गृह गृह पहुंचे जाय।
भयउ बधायो नगर बहु गयउ क्लेशबिनशाय॥

इति श्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायां दावाग्निमोचनोनामा द्वादशोऽध्यायः १८॥

दो॰ क्षुधित पुरुष जिमिहीनमति क्षुधा चिंतमन माहिं।
निशिदिन कल पावतनहीं तिमि गृहधर्मसदाहिं॥
लोभबस्त्र भूषण कपट मोहपाग शिर सोह।
काम कामप्रिय क्रोधजन गृहीबिवश दुखद्रोह॥
ये पांचौ पचकूट सम यकमत होत न जानि।
बरणयों मैं यदुपति चरित सुखदायक अनुमानि॥
ऋतु बर्णन अब सुनौ नरेशा। मुनिवर कहत दिगम्बर भेशा॥
जोक्रीड़ानितप्रति घनश्यामा। कीन्हकहत सो नृपबरकामा॥
ग्रीषम प्रथम दुखद ऋतु आई। आइ भूमि नभ द्यउ तपाई॥
हारक सुखदायक पुरतीनी। पाथसूनुजनु देह नवीनी॥

तदपि न वृन्दाबन तप ब्यापी। सूरस्थल तमसकतकिझांपी॥
शुभ ऋतुराज त्रिबायुबहई। लगत शरीर सकलतपदहई॥
राजत जहां अग्नि सुखआपू। तापतहां कोउ करतकितापू॥
कुंजैं घन द्रुम बेलि सोहाई। तिनपर सुखदनभजलहराई॥
नानाबरण कुसुम बन फूले। तिन गुंजरत शिलीमुख भूले॥
साख रसाल कूक कल कंठा। बरही नृत्य जगत उतकंठा॥
समनभगनिकानन लखिमोहैं। शुभथलबरणि कहैंकबिकोहैं॥
बिलसत जहां त्रिलोकबिलोचन। अजहूंसोथलशोकबिमोचन॥
दो० सुरभिनसँग प्रातहि प्रभू गये तहां दिन एक।
बनगोतजि हलधरसखा करत ख्याल अनटेक॥
सो० तत्समये खल एक नाम प्रलंब प्रपंचकरि।
आयउ सखाअनेक ग्वालजानि आदरकरत॥
तेहि बिलोकिप्रभु रामहिं भाषा। ग्वालरूप यह असुर समाषा॥
कंस पठाव प्रबल अनुमानी। आवा हमहिं बधै अभिमानी॥
जिम्ह कलेवर सखा न भाई। निधन उपाय रचौं चितलाई॥
मित्र बपुष घालत अघभूरी। बिहँसे हरि बाणी कहि रूरी॥
निज बपु जब धारै यह नीचा। तबतुमयाहिमारयो क्षणबीचा॥
भेद समस्त बंधु प्रति गाई। हँसि प्रलंब तट गये यदुराई॥
सहज गहा कर निजकर तासू। मधुर बचन कह रमाबिलासू॥
सकलोपर उत्तम तव बेखा। तैं मम मीत कपट अनरेखा॥
दो० भणिअस संग लिवाय तेहि चले श्यामनरनाह।
गोप सखा अधिकाइ रच ख्यालसहित उत्साह॥
एक ओर मूशली प्रधाना। दिशिद्वितीयस्वामीभगवाना॥
द्वै सुत पठइ नाम फल पाता। पूछि बतावत सज्जन दाता॥
ठान्यो यहै खेल यदुनाथा। गये हारिहरपो बल साथा॥
तब मूशली संग के ग्वाला। काँध हरि सखन चढ़ेनृपाला॥
निजनिजयोग जोरिअनुमानी। चले चढ़ाइ बदत मृदुबानी॥
असुर काँध हलधर असवारा। कंस काज मन नीच बिचारा॥

भूरिदूरि अगमन बढ़ि गयऊ । निज शरीर बिस्तारत भयऊ ॥
कज्जल नगाकार तन जासू । विपिन सघनबल काँधे तासू ॥
दो० जनु दधिसुत भासत रुचिर जलद घटो पर भूप ।
दीपत कुंडल ताड़ित सम स्वेद बिन्द अनरूप ॥
पाइ यकान्त असुर बलदाऊ । चाहत हतन बनत वैसाऊ ॥
जिमि लेलिहबध अहिर बिचारा । किधौं श्येनचह लवासँहारा ॥
अथवा जिमि बातप हरिघाता । चहततथाखलमनअकुलाता ॥
जानि प्रपंच रोहिणी पूता । खल मल राशि कंसकरदूता ॥
प्रथम श्याम कहि भेद बतावा । सो सुधिहोत रोष उर छावा ॥
कोपि मुष्टिकन मारि गिरावा । बिबुधसमाजनिरखिसुखपावा ॥
जानितीब्र असि निजगलमारै । किमिन चतुरयमसदनसिधारै ॥
धोखेउ पियै हलाहल कोऊ । अवशि मृत्यु पावै नर सोऊ ॥
दो० मंगल तिमि खल जानिहरि भिरतआइबरिआइ ।
बनिन परत पौरुष कछू चलत शरीर गँवाइ ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रिया
यांमंगलदासविरचितायांप्रलम्बासुरबधवर्णनोनामै
कोनाविंशोऽध्यायः १९ ॥
दो० जिमि आरत नर उर बसत द्रव्यचाह दिन राति ।
तिमि संतन के हृदयमहँ हरिपद प्रीति दृढ़ाति ॥
असी लक्ष भ्रमि योनि मन मनुज देह शुभपाइ ।
परमात्मा पद प्रीति बिन वृथा गमावत भाइ ॥
महिधर तर छिनि छोरलौ काल बचैगो नाहिं ।
हरिभजुतजि छल अमरपद पावैमिलिहरिमाहिं ॥
परम बिवेकी मुनि शुकदेवा । समरथ आदि पुरुषकर भेवा ॥
भूपहि कहा प्रलंब निपाती । घूमे हलधर सुख अधिकाती ॥
सखन सहित संमुख ते श्यामा । मिले तबहि कौतुक कहरामा ॥
ग्वाल अपर बन चारत धेना । असुर मरण सुनिचलेसुखेना ॥
देखिनि सबन जाय खल सोई । शृंगासित गिरितनु जनुहोई ॥

चकित ग्वाल घूमे उत्ताला। गहरजानिसँग रामगोपाला॥
दर्भ कास तजि तवलगिगाई। चरत मूंज बन पहुंचीं जाई॥
बिबिभ्राता त्राता गो साथा। आये काँस दर्भ कुरुनाथा॥
दो० तहाँ एक सुरभी नहीं जोहत चहुँ दिशिग्वाल।
गोबियोग बिछुरे सखा फिरत मूंज बन ताल॥
छं० चढ़ेबृच्छटेरैंचहुँओरबाल।सखानाम लैफेरिबासांसिजाला॥
कहांमीतकाहूतबेजोरिपानी।किगोमूंजआरण्यहैजूभुलानी॥
दो० ग्वाल बाल भूले फिरत ढूँढ़त कानन गाय।
सुनि यहप्रभुचढ़ि कदमपरबंशीदई बजाय॥
ऊँचे सुर मुरली सुनि राजा। धेनु गोपकर सकल समाजा॥
मगकुघाट आये चहुँ ओरा। दाविहिमिलतजिमिनभमरिजोरा॥
घेर्यो हरिहि सबन तजिशंका। जस दुर्भिच्छ उदारहि रंका॥
तदनंतर देखन का भूपा। प्रजरत अग्नि भयंकर रूपा॥
चतुराशा द्रुम जूह जरावत।पशुखगभषतप्रलयजनुआवत॥
गह्वर बाल सखा हरि केरे। आरत बचन बदत असटेरे॥
पाहि पाहि नँदलाल दयाला। शुक्र करालकाल यहिकाला॥
भस्मी भूत करिहि जनत्राता। रक्षा करहु जगत पितुमाता॥
दो० हरिबिलोकि दावाग्नि बढ़ि कहा सखन समुझाइ।
मेटहुत्रासहि मूंदिदृग सुनिलिय सबन छपाइ॥
मूंदत नैन सिखीहरि नाशी। आन रुचिरमायापरकाशी॥
गोधन ग्वालन युत यदुराई। बन भांडीर दीन्ह पहुंचाई॥
तब सब सन कह नैन उघारौ। बिनशादुखचहुँ ओरनिहारौ॥
निरखत अक्ष खोलिसबग्वाला। कहतकहाँहरिबहासिखिमाला॥
अरुयहि बिपिनकौनुलै आवा। अत्याश्चर्यन परत लखावा॥
सुनि यदुनाथ मन्दमुसुकाई। सबहि साथलै घरगये राई॥
प्रति आगार सबन बनलीला। कहा नरेश सप्रेम सुशीला॥
बधप्रलम्ब दावाग्नि कहानी। बिधि पूर्वक भणीजसिजानी॥
छं०जस जानितस सब गोप बालन कथा घरघर नृपकही।

सुनि नन्द पुर बासीसुकानन चरितदेखन गयसही ॥
माया बिकट यदुनाथकी कछु भेद काहुन पाइयो ।
तबभूमि निजनिज सद्म आये कृष्ण पद मन्लाइयो ॥
दो० मंगल बपुरे गोपको हरि अनंत कृत भूरि ।
तजिप्रपंचभजुहरिचरणबिधिपितुजीवनमूरि ॥

इतिश्री मद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंगलदासविरचितायांदावाग्निहरणोनाम विंशोऽध्यायः २० ॥

दो० बाल तरुण बृद्धत्वबश अङ्गकाम इरषाहिं ।
जात बिचारत सुमति शुभकुमति अबुधतेनाहिं ॥
बिन सेये नीरजचरण राधापति के तात ।
जन्म सूतनवमन मनौ अरुझा किमि सुरझात ॥
सो० कुहू निशा बुधतात दृष्टि परै संशय नहीं ।
बिनध्याये जगत्रातकठिन मुक्तिपदवी चतुर ॥
ग्रीषम ऋतु नृप प्रथम बखानी । अनय महीपति करणीठानी ॥
पावस भूप प्रचंड कराला । खग पशुजीवजंतु तपशाला ॥
लखि दयाल ह्वैचहुँ दिशिराई । जलद चमूरसबीर बोलाई ॥
बिजय लागि ग्रीषम सहरोसा । छाइसुबर्त्त मही मन पोसा ॥
घन गाजत बाजत रण मारू । पावस भूप जगत सुख सारू ॥
नाना बरण बलाहक ऐसे । भट प्रघोर रावत रण जैसे ॥
कामकमन्ध चंचला भासा । अस्त्र शस्त्र जनु समरप्रकासा ॥
वक अवली राजत ध्वज श्वेता । भूप मनोहर सो छबि देता ॥
दो० दादुर बरही गण बदत जनु बिरदावलि बंदि ।
शुचि पावस भूपतिसुरुचि यशगावत आनंदि ॥
इन्द्र कमठ पावस धनु सोहैं । जेहिबिलोकि ग्रीषमरिपुद्रोहैं ॥
वृष्टि बुन्द दीरघ झरिभारी । भट जीमूत हनत शरधारी ॥
अरि वैभव दारुण अनुमानी । ग्रीषम तजि रणभूमि परानी ॥

मेघनाद महि तिय सुख दयऊ । तपफलसार प्रगट जनुलयऊ ॥
पति वियोग धर अबलाभूरी । पलसुंडाल कीन्ह तपरूरी ॥
तेहि फल कुच भूधर शितलाने । तपबियोगदुख मिलतनशाने ॥
पतिहि प्रसंगति गर्भहि धारा । उपजे पुत्र दुगुण निधिभारा ॥
तेलै भेंट फूल फल पाता । करतप्रणामपिताहिजनुताता ॥
दो० तेहि अवसर वृन्दा बिपिन भूमि सोहावन तात ।
जिमि श्रृंगारित कामिनी किमिबरणी छबिजात ॥
स्रवती सर नीरे जल पूरे । सोहत राजहंस खग धूरे ॥
धवल बिटप शाखा शुभ झूमैं । सघनउदार लसत जिमिभूमैं ॥
चातृक पिक कपोत अरुकीरा । करत कुतूहल सुखद गंभीरा ॥
अपरनभग गण नाना जाती । बोलत कामकला सरसाती ॥
जहँ तहँ नर युवती नृप जूहा । पहिरे बसन कुसुंभित सूहा ॥
झूलत गावत राग मलारा । प्रगटतसुनिमनोजअधिकारा ॥
तिनके निकट जाय हरि रामा । करत बालखीला सुखधामा ॥
प्रमुदित सो लखि नरअरुनारी । बीती इमि बरषा दुख हारी ॥
दो० जग जीवन नँदलाल तब कहा सखन समुझाय ।
पावस गत आई सहज सुख दशरद ऋतुभाय ॥
सब तपहरणिकरणि सुखसोहर । शरद किधौंममभक्तिमनोहर ॥
स्वादगंधि जग मोदक भयऊ । जलप्रवाहजहँतहँ घटिगयऊ ॥
रजनी ऋच्छ नाक उजियारा । मनो प्रकाश अगुणकरतारा ॥
पन्थी भिक्षुक बणिक समाजा । बर्षा विगत चले निजकाजा ॥
मंद मंद गति शीत सोहावा । धीर दंभि जनु पन्थ चलावा ॥
निरमल उदित क्षपाकर कैसो । परउपकार सुयश जग जैसो ॥
शरदतापअति असहकराला । जिमिअनीतिशासनमहिपाला ॥
जानिसुगमऋतुकरिदलसाजा । चले आन नृप जीतनराजा ॥
दो० सकल शरद ऋतुधर्म हरि सखन कहा बहुभाँति ।
सुनिआनन्दितभे अखिल किमिकरिबरणौजाति ॥
पुर कानन नित श्याम जू लीला करत अपार ।

भजु मंगल श्रीकृष्ण पद तजि के कपट बिचार ॥
इतिश्रीमद्विविधाकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियागां मंगलदासविरचितायांवर्षाशरदवर्णनो नामैकबिंशोऽध्यायः २१ ॥

दो० ज्ञानदिवाकर व्योमउर जब लगि उदितनहोत ।
तबलहुतम अज्ञानवश उगत नशत दुख पोत ॥
क्रीयमान गुण दोष जे ग्रसत न ज्ञानिहि सोइ ।
परारब्धि आधीन है संचित हूं गय खोइ ॥
पूरण ज्ञान प्रताप हिय प्रगटै हरि की भक्ति ।
अभयफिरै भव बीथिका बँधै न माया शक्ति ॥

सुठि सोहर सुनु चरित महीपा । कहौं बुझाइ तोहिं कुरुदीपा ॥
इमि प्रबोधि सब हरिनरनायक । करैलागशिशुकौतुकभायक ॥
जबलहु हरि बन धेनु चरावैं । तबलगि गोपी हरियशगावैं ॥
कथाअलौकिकयक दिनभयऊ । कानन श्याम बेणुरव ठयऊ ॥
बंशी शब्द सुनत ब्रज नारी । सकलबिरहबशकाजबिसारी ॥
तरस ग्राम बाहिर यक ठांई । सुश्रोणी बिच जोरि अथाई ॥
बैठीं हरि दर्शन अभिलाषा । तब यक सखी परस्पर भाषा ॥
लोचन सफल होइँ हरि दरशी । कर पवित्र होवैं पग परशी ॥

दो० अबहि कान्ह बन नृत्य करि गावत धेनु चराय ।
गृह प्रदोष आवत दरश मिलिहैं जनिअकुलाय ॥

जल्पत कत निरर्थ अलिबोली । ध्वनिसुनुबंशीबजतअमोली ॥
बेणु बंश पावन करि दयऊ । केहिगुणश्यामनेहअतिठयऊ ॥
अरुणोदय ते निशिमुख लागी । हरि मुख लगीरहतअनुरागी ॥
करत सदा अधरामृत पाना । कोसखि यहिसमधन्यजहाना ॥
आनँदवृष्टि पयद ध्वनि बाजत । कलरवसुनत कलाधरलाजत ॥
अति हमते प्रिय हरि कह बेनू । निशिदिन ढिगकरवारतधेनू ॥
मम सन्मुखनिर्मित बित नासी । प्रीतम प्रियाबनी मुख बासी ॥
अजहूं बय मानत जग जंगम । जड़मति निंदिबड़ीहरिसंगम ॥

दो० पोंछि पीतपट याहि जब श्याम बजावत हर्षि।
सुर किन्नर गंधर्ब मुनि लेत सबाम अकर्षि॥
तेअम्बर प्रफुलित मुदित निजनिज यानारूढ़।
श्रुति सध्यानदै श्रवणकृत बदत वाक्यमृदुगूढ़॥

सुनत बिमोहत चित्र लिखेसे। सबाथित होत अमोल बिकेसे॥
को महान तप किय बिकराला। यहि आधीन तीनितिहुंकाला॥
प्रत्युत्तर सखि आन बखाना। दारुण तपकष्टित यहि ठाना॥
बेणु वंश उद्भव भा आदी। भजेउ हरिहिदिनकीननबादी॥
हिमि बतासआतप अघशीशा। सह कराल जससहत तपीशा॥
दुख अनीक खंडन सह थूला। छिद्र कायकर क्लेश अतूला॥
धूमपान करि भई प्रसिद्धा। तपन कीनकहनारिनिषिद्धा॥
तपसा यह न आपको आली। पूत जानि ग्राही खलशाली॥

दो० कसन बेणु मुरलीहमहिं बिरच्यो पितुवरआदि।
रैनिदिवस हरिसँग रहत कहतआन सुखबादि॥
सुनि क्षितीश धरमात्मा जबलगिहरि तेहिं ओर।
आवत नहिं बन बेणुते सकल जगत चित चोर॥

सो० गोपी तब लगिराय बिबिधभांति हरि यशगुणें।
दरशन करि सुखपाय जाइ गेह आनंद सों॥

इतिश्री मद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्ण
प्रियायांमंगलदासबिरचितायांबंशीआख्यानव
र्णनोनामद्वाबिंशोऽध्यायः २२॥

दो० जिमिचकोर पावकभषत तजत न को सुख जानि।
बिकलहोत दारुण चतुर निजकुलप्रण अनुमानि॥
तिमि प्रवीण हरिगुण भणत तजत न पाइकलेश।
हरिकी कृपा कटाक्षसों रहत न दुखकरलेश॥
कहत अलख लख अगुण गुण सो भ्रमहौं निरुवारि।
बरणौं यदुबर चरितबर लखि दायक फलचारि॥

सुनुनरेश गतशरद विचारी। आई हिमि तुषार बढ़वारी॥

नागलता बिकलित भैकैसे। लखत गवास पयस्वनि जैसे॥
ब्रज युवतिन सम्मत असकीना। न्हाइयमार्गशिरसखीप्रवीना॥
जन्म अनेक कलुष नशन्हाता। जिमिहरि चंडउड़त तरुपाता॥
पूजतमन लालसा सहेली। बर्षापाय मुदित जसबेली॥
नरकालीन बदतयह सजनी। मारगभरि न्हाइय गत रजनी॥
जो निरबिघ्नहोय प्रणपूरा। मिलैं कृष्णबरमम बचफूरा॥
सुनिसबके मनदृढ़ मतआवा। मुदइच्छित फलफुर उरछावा॥
दो० उठिप्रभात बस्त्राभरण पहिरि अनंदित नारि।
जुरिसप्रेम यमुनहिं चलीं मारग न्हान बिचारि॥
करि अस्नान उदक रबिदेई। मृतिका चिक्कन बाहिर लेई॥
उमा स्वरूप बिरचि रुचिमानी। आवाहन अस्थापन ठानी॥
पाद्यासन शुभअर्घ सुदीना। अचमनन्हानसबिधिसुठिकीना॥
मलयज कुसुम चढ़ाय सप्रीती। धूप दीप नैवेद्य सरीती॥
आरति ताम्बूल युतपूजी। करिप्रदक्षिणाताजिरुचिदूजी॥
नौमि जोरिकर बिनय बखानी। इमिषोडश बिधिपूजिभवानी॥
वरयाचहिं अस आरतबानी। तवमहिमागिरिजाजग जानी॥
कर्म पोच हम जड़मति नारी। बरहरि बरचाहहिं बरभारी॥
दो० हैदयालु लखि चेरिनिज हे त्रिपुरारि पियारि।
बरयांचा सो दीजिये कीरति बिमल तुम्हारि॥
यहि प्रकारनित न्हाइ सुलावा। करैंदिवस निरजल व्रतबाला॥
दधि ओदन संध्या कहँपावैं। भूमिशयन करिहरि गुणगावैं॥
मिलैशीघ्र फलव्रत यहि हेतू। मारगन्हाइ सधर्म सुचेतू॥
रुचिर बारता यकादिन केरी। सुनु भूमीश सदृढ़ मतितेरी॥
ब्रज बनिता जुरिन्हान सनेमा। आनघाट गईं सुरुचि सप्रेमा॥
पट भूषणउतारि सरिकूला। नग्नन्हाइ मनहरि रसभूला॥
गुण अनुबाद श्याम बरबादैं। क्रीड़हिंसकलसमुदअबिषादैं॥
तस्मिन्काल बंशिबट छांहा। राजतराम रहित जगनाहा॥
दो० दैवयोग ते गानसुर पस्यो श्याम श्रुति आइ।

गुप्तरूप करुणानिधे जातभये तहँराइ ॥
अलखठाढ़ देखत जलक्रीड़ा । सत्यसिन्धुहरिमनहिंअव्रीड़ा ॥
कौतुकीय मनकौतुक आयउ । बसनाभूषण सब्ब चोरायउ ॥
गाठरिबांधि प्रियक आरूढ़ा । भयउश्याम सुनि मोहतमूढ़ा ॥
निजप्रिय वेदऋचा अनुमानी । ठगी भूपवश कामनजानी ॥
नैककाल गत आपते बाला । निकरिदीख नहिंचीरनृपाला ॥
श्रुतिकन्या हेरैं उठिगोपी । विकलमहामतिथिरता लोपी ॥
वादैं चकित परस्पर सोई । अबलागि तटसरि आवनकोई ॥
हारक जो मम चीर बिधाता । प्रगटहु सोकृतज्ञ गुणत्राता ॥
दो॰ नतकेहि मिसतन नग्नगृह जाइब हे करतार ।
कदम शाख घन पात सखि लखतभई तेहिबार ॥
मोरमुकुट शिरफल पितुगाथे । सुरबल्लभा तिलक भलमाथे ॥
करसरोज लकुटी भादाई । उरबन स्रक उर्बशी सोहाई ॥
पीत बसन बासित हरिचीरा । बैठेमौन साधि यदुबीरा ॥
निरखतहीं तेहि सखि कियशोरा । अलिहमलखाचीरचितचोरा ॥
करि प्रपंच सब बस्त्र अगोटी । राजत हरितरु परलै पोटी ॥
तासुबचन सुनि सकल निहारी । द्रुमघन सखा बैठ बनवारी ॥
हरिबिलोकित्रियलाज लजानी । आतुर प्रविशि गईं नृपपानी ॥
जोरि भुजा अनवाइनि शीशा । आरत बिनयकीन्ह धरणीशा ॥
दो॰ रुजपातक घातक वृजिन दीनबन्धु यदुनाथ ।
सत्य सेव किनि लखिदरश दैकरकरयो सनाथ ॥
सो॰ अब दयालु है श्याम बस्त्रदान दीजिय सुरुचि ।
सुनिबोले गुणग्राम इमिन देहुँपितु शपथशुचि ॥
सबरस बाहर सकल उघारी । आवहु चीर लेहु दुखहारी ॥
सरुढ़ पोषि तनकहँ कुटिलाई । पढ्यो नीकगुण बड़ि चतुराई ॥
बिहँसि बदतघन रसबरु त्यागौ । नग्न आइपटममढिग माँगौ ॥
जनक सहोदर हमरे जानैं । गहैं तुमहिं कहिचौर बखानैं ॥
तवपितु अंबहि देहिं गिलानी । भूलिजाय लालन मुसुकानी ॥

हमकृति कानिमानि यकनाता। तुममेटत प्रिय पूरब बाता॥
अब कौनौ विधि चीर न देहूँ। निजजन बोलु चोरुवानि लेहूँ॥
सभयनारि कह दीनदयाला। ममसुधि लेनहार गुणकाला॥
दो० तुमते बड़तिहुं पुरसगा अन्यन आपन कोइ।
करैं दुहाई जासुसन लखिन परत हरिसोइ॥
जनपति रक्षक आपु मुरारी। जिमिपोषक नीरज बनवारी॥
मारग मासन्हात तव हेता। केवल चरण राग श्रुतिसेता॥
जोपै फुर दोहद पद मोरे। कृतस्नान मारग छल छोरे॥
सत्य मित्रसन तौ कस लाजा। तुमसाखिकरहु भणतब्रजराजा॥
परिहरि छद्मभाव निजचीरा। लीजिय मिटैसकल भवभीरा॥
सम्मत कीन्ह सुनत प्रियबानी। बस्त्रलेहु सखि तजहु गलानी॥
हरिकृतज्ञ तन मन बच केरे। बनायोग शुचि पायहु नेरे॥
असमत ठानिसुनौ भुवराई। गुह्यस्थल कुचकरण छपाई॥
दो० सकुचि नारिजल बाहिरेजब आईनर नाह।
बिहँसि कहाहरिठाढ़ि अबहोहु जोरि मुखबाह॥
पटभूषण तबदेइँ तुम्हारे। हैं निरर्थकहि काज हमारे॥
सरल प्रकृतिहम त्रियमति भोरी। कहत बात तुम छलरस बोरी॥
तव माया दुस्तर संसारा। जेहिबश होतशंभु करतारा॥
कुमति बिवश त्रियनाथ सदाहीं। ठगेउश्याम कछुबड़ कृतनाहीं॥
जोठग बिबुध चतुरठगि आवै। मूरख ठगतन बड़ पदपावै॥
व्यापक अखिलबिश्वतुमएका। अरुअनंत हमकीन्ह बिवेका॥
मनभावित कृतकरौ कृपाला। हम परिहरीलाज यहिकाला॥
इमि कहिकर सरोज तिनजोरे। करहिंनवनि बड़िही तृणतोरे॥
दो० सत्य प्रेम लखि बस्त्रतब दिये समस्त मुरारि।
निकट आइ मायापते कह इमिबचन बिचारि॥
हास्यन करेहु बिलगु जनिगुनहूँ। दयउँ सीखमो कारण सुनहू॥
नीराध्यक्ष बरुण दिशि नाथा। तीनहुँ काल बसत सो पाथा॥
मज्जन नग्न अमृत मनुजादा। खोवत मनहुँ धर्म्म मर्य्यादा॥

बरुण बास जल जानि प्रबीना। नग्नन्हातनहिंबद बुधपीना॥
चीर हरण कीन्हा यहि भेदा। पुनिनन्हाउपय नग्नअखेदा॥
अबगृहजाउ मुदित तजिशोचा। पाप तुम्हार आजुहौं मोचा॥
रास मास दामोदर माहीं। करिहौं तव सँग संशय नाहीं॥
सुनि निबन्ध रासावधि नारीं। प्रमुदितनिजनिजगेहसिधारीं॥

दो० श्याम जाइ बंशीबटहि सखा धेनु लै संग।
कानन घनकहँचलतभे छबिलखिलजतअनंग॥
फल प्रसून सम्पन्न द्रुम रहे भूमि निय राय।
निरखितिनहिंश्रीश्यामजू कहतसखानबुझाय॥
यथा वृक्ष ये तथा जग हैं उदार नर धीर।
आपुसहैं दुख आन हित करैं हरहिं सब पीर॥

सो० इमिहिं बुझावत श्याम जातभये यमुना निकट।
मंगलतजि भवकाम भजु हरिछूटै अघ विकट॥

इतिश्री मद्धिविध किल्विषान्धकार दिनमणि श्रीकृष्ण प्रियायां मंगलदास बिरचितायां चीरहरणवर्णनो नाम त्रैविंशोऽध्यायः २३॥

दो० उपजतजलतेलौन जिमि बहुरिमिलत पयमाहिं।
तिमि सब देहीं ब्रह्मते उपजै नाशि मिलिजाहिं॥
यथा विरोचन स्वबलहीं देत पसारि मयूष।
कर्षि लेत निज कौतुकै समुझत चतुर अदूष॥
तथास्वतंत्रित ब्रह्म बुध निज कृत ते क्षेत्रज्ञ।
अमित रचत अरु हरत है जानत अज्ञ न तज्ञ॥
सो अनादि अज अंत बिन पारब्रह्म परमीश।
स्ववश धरयोमानव वपुष नौमि तासुपद शीश॥
विशद यथा हिमकर तथा दूषण बिनगुण तासु।
बरणतहौं बुधजन सुनौ दायकफल श्रुतिआसु॥

कुरुकुल भूषणसों ऋषिराई। कही बहुरिइमि कथा बुझाई॥
जबकृतांत अनुजा अबिदूरी। पहुँचे नृपजगती बनमूरी॥

कुंज अभिराम छांह मे ठाढ़े। तब गोपाल बदारत बाढ़े॥
नाथ क्षुधा व्यापी बिन सीमा। होत अधीर जबै कलजीमा॥
निज निकेतते जो कुछ लाये। छुधान मिटी तासु के खाये॥
धूमसमूह परत जो देखी। कंसत्रास संक्षिप्त बिशेखी॥
मथुरा भूमि देव मखसाधत। भक्तिसहितहरिपद अनुराधत॥
तिनढिग जाहुनाम ममलीजौ। जोरिहाथ अभिबंदन कीजौ॥
दो० जिमि भिक्षुक साधीन है याँचत तिमि तुमतात।
माँगेहु भोजन मानतजि सुनि इमिहरि मुखबात॥
ग्वालमुदितमनगय तिनपासा। प्रबलक्षुधाव्यापित भ्रमभासा॥
दूरिहिते गज अंग प्रणामा। कस्योसभय भूपतिगुणधामा॥
जोरि हाथ आरत मय भाषा। कठिनक्षुधाअहार अभिलाषा॥
बिदित जगत यह चतुर बतावैं। भूखबुद्धि बल तेज नशावैं॥
कृपानिधान बिप्र मखकारी। तुमहिं प्रणामकहा असुरारी॥
अरुयह सानँद कहा सँदेशा। हमहिं क्षुदा लागी धरमेशा॥
अल्पाहार दयाकरि दीजिय। सुयशमहानसमययहिलीजिय॥
सुनिसरोषद्विजभण बुधिनासी। बड़मूरख तुम गोप कुबासी॥
दो० मख पूरण बिन रंच भष देइँ न हम गोपाल।
मीत सगा सोदर चतुर बरु मांगै यहिकाल॥
परिपूरण करि यज्ञपुनि शेषभाग रहिजाय।
बांटेंगे सो लीजियो कृष्णहि कहौ बुझाय॥
मृदुभाषा आरत रससानी। गोपन बहुरि महीश बखानी॥
अतिथितोष समधर्म न आना। कहत बिबुध कबिवेद पुराना॥
अतुल पुण्यलीजियक्षितिदेवा। ईषद भष दीजियक्षण देवा॥
सुमन यज्ञ कृत द्विजबर सोई। बकिथाके पुनि बोलनकोई॥
महिसुर भूप परस्पर कहई। पशुपालकजड़ पशुसमअहई॥
यज्ञमध्य यांचत मख भाषा। कुमतिक्षुधाबशगुणइनकागा॥
ग्राम बाक्य सुनिपलटे ग्वाला। आये जहँ शोभितनँदलाला॥
दीन बचन कह सुनौं गोसांई। मान महत निजदीन्हगवांई॥

दो० भिक्षाटन निंदक करम कीन्ह तुम्हार निदेश।
परुषाक्षर स्यो व्यंग्यता कहे न भष दियलेश ॥
अबका करिय दया जलराशी। दारुण क्षुधा बियामनभाशी ॥
द्विज प्रमदा करुणालय सोई। अति धर्मज्ञ भक्ति रस भोई ॥
पांचौ तिन ढिग जाइ अहारा। देहैं तरस करौ जनि बारा ॥
हरिआयसु शिर धरि सब धाये। आतुर द्विजबनितनतट आये ॥
भोजन रचहिं मुदित मननारी। गोप बिलोकत भये सुखारी ॥
नौमि जोरिकर प्रभु सन्देशा। दीन गिरामय कहा नरेशा ॥
सुनौ मातु यहि क्षण हरि देहीं। उपजी क्षुधा बिपुलहिततेहीं ॥
तुम पै भोजन मांगि पठावा। दीजिय दर अहार मनभावा ॥
दो० सुनि भूसुर प्रमदा मुदित भईं भूप अधिकाइ।
भोज्य तर्क रसपात्र हरि भरिधाईं अकुलाइ ॥
निजबलसम रोक्यो द्विजन तदपिरुकी नहिंकोइ।
एक नारिके कंतने बरजि राख त्रिय सोइ ॥
परिहरिकाय ध्याइ शकटारी। प्रथममिली हरिकहँ बर नारी ॥
जिमि जल तुंग तरंगहि फारी। मिलतनीर तिमि बालमुरारी ॥
तेहि पश्चात नारि निकरंबा। हरितट गईं सग्वाल कदंबा ॥
सखा सिरोधी कर हरि धारे। रुचिर त्रिभंगी रूप सम्हारे ॥
कर सारस अंभोज प्रसूना। लसतचारु अनुपम तेहिजूना ॥
भोजन पात्र क्षमा धरि नारी। मुख अनूप लखिभवभयहारी ॥
सानुरागसेन्द्रियनतिकीन्हा। सकलसखिनतबनिजप्रभुचीन्हा ॥
यककहदेखआलिछबिलोनी। बरणिसकतनहिं शेष अयोनी ॥
दो० नयन दशन नासाकरण अकथ सखा चहुँओर।
ऋक्ष व्यूह मध्येन्दु बिन तर्क सो नन्दकिशोर ॥
कीरति बिमल चंद्रिका जासू। बिकसकुमुद जनखलतमनासू ॥
श्रवत भक्ति रस अमी अपारा। दुरितानन्त तापहर धारा ॥
जाकर ध्यान करत मुनिज्ञानी। मनगोतीत बदत श्रुतिबानी ॥
सो सच्चिदानन्द गोपाला। निज इच्छा तनरचाकृपाला ॥

प्रथमगुणिनमुखसुनाजोआली। नटवर बेष सुभग रिपुशाली॥
नित उर दरश लालसा जाकी। भयेसुफलचषछबिलखिताकी॥
नर शरीर फल पायउ आजू। अबन आनजगतीसनकाजू॥
इमि बतराय जोरि द्वौ पानी। अतिआरतमय बिनयबखानी॥
शरणागत बत्सल भगवाना। विभव प्रताप अजानपुमाना॥
विधि महेश लम्बोदर सूरा। उडप महीधर कतहुँकि पूरा॥
गाय सकृत कौ असुर अराती। दया देखि उर दया जुड़ाती॥
प्रणतारत विभंज श्रुति सेतू। जनपालक बड़िकृपासमेतू॥

दो० जावत कृपा न कृपानिधि होत दास पर भूरि।
तबलहु दरशन रावरे वेद बदत हैं दूरि॥

हमरे तुल्य धन्य नहिं आना। संचितअघपददरशिनशाना॥
बिप्र कृपण मूरुख अज्ञानी। मोहलोभबशअतिअभिमानी॥
आगम निगम पुराण बखाना। तव मायाबश तदपि नजाना॥
पुरुषोत्तम अनादि तुम एका। पहिचानै जेहि देहु विवेका॥
बेधा बामादिक बश माया। को महिदेव धरे नर काया॥
तपब्रत मख साधिय जेहिलागी। तेहिभोजननदयउमतिखागी॥
दाया उदन्वान है सोई। नर तन पाइ भक्ति तव होई॥
धन ब्रीड़ा जन धन्य जहाना। तुम्हरे काज लगै भगवाना॥

दो० मैथुन क्षुत्तृष्णा तृषा सम सबही के होत।
विद्यावतजन हृदय खल करत अविद्य उदोत॥

ज्ञान बिराग तपस जप सोई। तवयश भजन जासुमहँ होई॥
सुनि हरिबिनय पूछिकुशलाता। पुनिहँसिश्यामकहीमृदुबाता॥
जनिप्रणाम मोहिं करौ सयानी। नंद सूनु निजमन अनुमानी॥
तुम जग पूज्य बिप्र त्रिय अहऊ। अनुचितबचन देविकसकहऊ॥
जेनर द्विज कर आपु पुजावैं। ते भव कुछ न बड़प्पन पावैं॥
हमहिं उचित तुम्हारि सेवकाई। क्षुधितजानि भोजन लैआई॥
पर काजी भूतल नर थोरे। भाषत सत्य चतुर दृढ़ मोरे॥
दया शीलनिधि जे जग प्रानी। अंतबास दिवि लहत सयानी॥

दो० कहा करिय आदर इहां हम तुम्हार गुणखानि ।
दूरिभवन बनि परत नहिं आवत मनहिंगलानि ॥
यहि बेरिया घर होते आजू । करते शिष्टाचार समाजू ॥
मम हित बिथुर सदा तुमभारी । दभोजन पुनि कीन्हसुखारी ॥
हमसों बनिन परी पहुनाई । नाहिं पछिताव जन्मभरिजाई ॥
इमि प्रबोधि हरि नारि समूहा । कहत भये फिरि असशत्रूहा ॥
बड़ बिलम्बभा तुम कहँ आये । अबगृह जाहु मोहिं उरलाये ॥
तव बर्त्तम पति हेरत ह्वै हैं । पन्थ बिलोकनकारण द्वै हैं ॥
प्रमदा बिन मख फलित न होई । कारण प्रथम परत यह जोई ॥
द्वितियेनारिहीनपतिकानन । अवशिजाहुयहममअनुशासन ॥
सो० त्यागि ज्ञाति कुलकानि नेह कुटुंब बिरागमन ।
सुख पूरण अनुमानि लंघिसेतु जग यज्ञकर ॥
दो० परिहरि लज्जा गुरुनकी पति अनुशासनटारि ।
पदकौशीश स्नेह बश आई हम असुरारि ॥
बाम बाम पतिशासन टारै । श्रुति बिपरीतकर्म्म अनुसारै ॥
कन्त रजायसु अगमत नारी । बासव नगर लहत सुखभारी ॥
आज्ञा भंजि भर्त्त हम आई । उहाँतजाइ सकहिं यदुराई ॥
हठकरिगये ब्यंग द्विज बैना । कहि बिहँसैं सुनुकुमुदिनिनैना ॥
जो कोपहिं तौ देहिं निकारी । फिरिहम कहाँजाहिं बनवारी ॥
तव शरणागत कारण एही । रहैं सुखेन अनादर तेही ॥
अरु यक नारि हमारे संगा । धाई तव पद प्रीति अभंगा ॥
तासु कंत राखा हठि ताहीं । तनअकुलाइ तजाक्षणमाहीं ॥
दो० बिहँसि देखाई श्याम तब सबकहँ सो सुकुमारि ।
बचन भक्तिसाने मधुर पुनि बोले सुखकारि ॥
जेहरि रस पागे छल हीना । कतहुं होत तिन नाश सखीना ॥
अद्भुतचरित लखतद्विजबाला । चकिभा दारु पुतरि समहाला ॥
पुनि धरिधीरहरिहिशिरनावा । सुखद मनोहर प्रभु यशगावा ॥
अति बिकरालनाथतवमाया । जेहिवश तिहुँपुरजीवनिकाया ॥

तबसबालकरिभोजन श्यामा। नारिन कहा जाहु निज धामा ॥
तवते अब आदर अधिकाई। करि हैं तुव प्रति हृदय लजाई ॥
करिप्रह्न युवतिन कर जोरी। निजथल चली भूपगुण थोरी ॥
उतमहिदेव करत पछितावा। हरि अवतार प्रसंग चलावा ॥
दो० श्रुतिइतिहास पुराणमहँ सुनीप्रथम यहबात।
भूत समय स्योबाम नँदतप कियसहि दुखगात ॥
देखि उग्रतप सुर शिर मौरा। पुरुष अनादि प्रकट तेहि ठौरा ॥
करिप्रबोध यहबर शुभदीन्हा। नरतन यदुकुल धारि प्रबीना ॥
बाल चरित तुम्हरे गृह करिहौं। बिपदा द्विजगोजनकीहरिहौं ॥
बूझिपरत अससोइ भगवाना। जन्मागुप्त बचन परमाना ॥
बाल बिनोद करतहै सोई। भोजन काज पठाये लोई ॥
अहहदेव हमरी बुधि नाशी। माँगास्वसुखपुरुषअविनाशी ॥
अरुन दीन्ह हम अल्प अहारा। हम समको अज्ञान अपारा ॥
जेहिलागिमखनाना बिधिकीन्हे। तासुदरशचलिआजुनलीन्हे ॥
दो० अकल अनीह अमान अज आदि पुरुष भगवान।
मानस करि जानत भये बिधि हर ज्ञान सुजान ॥
ग्वाल थकित भय बिनयसुनाई। तदपि न हृदयदयादृढ़आई ॥
शठकुभाग्यअहमितहमपापी। धृकअसकुमतिसुमतिजेहिझाँपी ॥
दोषिक यज्ञकर्म यह भयऊ। सुकृतअतिथितोषननशिगयऊ ॥
हरिपहिचानि दरशनहिंकीन्हा। रंकपरमनिधिजनुतजिदीन्हा ॥
हमते भल सब बिधिते बाला। बिन तप मख देखाजनपाला ॥
निजकरभोजनश्यामहिंदीन्हा। पूरब सुकृत लाभ यह लीन्हा ॥
इमि पछिताइ बिप्र बर राजा। आईं तेहिच्छणनारिसमाजा ॥
देखि द्विजन उठि जोरे हाथा। कहा धन्य तव अक्षर माथा ॥
दो० करि दर्शन जगदीशके जन्म सुफल करिलीन्ह।
असकहि आदर सह सबन बैठहु आसनदीन्ह ॥
जानिदास जापर सहज दयाकरैं गोपाल।

मंगलताहिन छलिसकै ठगरूपी कलिकाल ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांद्विजपत्नीदर्शनोनाम
चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

दो० व्योमानिल जल मित्रमहि पंचभूत गुणथूल।
शब्द परस रस रूपयुत गन्धितत्त्व गुणमूल ॥
करणत्वचा रसनानयन सहित नासिकापांच।
ज्ञानेन्द्रिय शरतत्त्वकी बदतवेद बुधसांच ॥
ये सिगरे मिटि मिलत हैं अहंकार में जाय।
महाप्रकृति महँ मिलतहैं अहंकार बिनशाय ॥
परमात्मा अव्यक्त में महाप्रकृति मिलिजात।
सांख्यधर्म बुधजनबदत यह प्रसंग विख्यात ॥
जो न नशत काहू समय पारब्रह्म अज्ञात।
भक्ति हेत सो नर भयउ कृष्णरूप साक्षात ॥

कीरति तासु अमोघ सप्रेमा। मुनि भूपहि बरणी युतनेमा ॥
नृपसुनु जिमि गिरिवरनखधारा। बृन्दारक नायक मद हारा ॥
सो प्रसंग बिस्तार समेता। बरणतहौं अबकुरुकुल केता ॥
ब्रज बसेरि सम्बत गत एका। हरतिथिअसित ऊर्जसबिबेका ॥
न्हाइ प्रात सुर प्रिय श्रीखण्डा। रुचिरलाइरचिचौक सुभण्डा ॥
बिबिध प्रकार स्वाद मिष्टाना। रचि पुनीत सुन्दर पकवाना ॥
धूपदीप करि इन्द्रहि पूजैं। आनँदसहितअशनपुनिभूजैं ॥
ब्रज मंडल यह रीति सनातन। आवत चली भूपश्रमघातन ॥

दो० जानि जलद पति बासवै अर्चत ग्वाल सनेह।
सुनुद्रोणिप एकाग्र चित कथा रम्य है एह ॥

सोई दिवस पर्यो जब आई। ग्वाल नारिनर करहिं बधाई ॥
सामा अशन नन्द बहु कीन्हीं। प्रतिगृह सोइदशाहरिचीन्हीं ॥
प्रभु अंतर्यामी क्षितिपाला। नरइव चरित करतनँदलाला ॥
पूछेउ जननि कहा है आजू। जेहिहितप्रतिगृहअशनसमाजू ॥

सुनुसुकुमारन मोहिंअवकाशा। सकलकथाजो करौं प्रकाशा॥
जनकहि पूंछु जाउँ बलिहारी। गये सभा हुलसत बनवारी॥
जहाँनन्द उपनन्द समाजा। बोले मधुर गिरा ब्रजराजा॥
ममउर पिता पर्म्म सन्देहा। अधिकासनबिरचन गुणकेहा॥
दो० कौन देवकी आजु पितु पूजन है सो मोहिं।
कहौ बुझाइ सप्रेम जेहि पराचि जाउंहौं ओहि॥
भक्ति मुक्तिदाता प्रकट को असदेव प्रमान।
नामग्राम गुणकहौ मोहिं पूछतमनो अजान॥
बोले नन्द मन्द मुसुकाई। अब लगि तैं बूझा न कन्हाई॥
मुदिरनाथ जो बाला राती। जेहि अनुकम्पा क्षमा जुड़ाती॥
अणिमादिक पावत संसारा। जल तृण अन्नहोतअधिकारा॥
फलत पल्लवत बन उद्याना। चहुँबिधि जीवलहतकल्याना॥
पूजन करत समोद सदाहीं। ताकर लखिस्वारथ मनमाहीं॥
प्रति पुरिषान मेघ पति अर्चा। आवतचली नवीन न चर्चा॥
बचन सुनत श्रीपति मुसुकाने। बोले बचन भद्रस साने॥
वश अयानता पितु कालीना। पूज्यो सुनासीर सुधि हीना॥
दो० अब तुम तात सुजान है गहत कुबाट अलीन।
कुबुधी बरणाधम पुरुष पूजत बासव हीन॥
पूजत शचीनाथ निःकाजा। भक्ति मुक्ति दानहिं सुरराजा॥
अणिमादिक वर्चादिक कासू। मघवा दीन्ह कीन्हदुखनासू॥
अरु जग केहि उत्तम बरदाना। दिविपतिदयउसुकरौंबखाना॥
तम मख मध्य दिवौकस ताता। मानतसाँचु निजाधिपनाता॥
इन्द्रासन कमनीय महाना। तहां बसत सुरभूप समाना॥
तेहिते भा ईश्वर नहिं सोई। समुझौ तात बदत श्रुतिजोई॥
इन्द्रहि निशिचर बारम्बारा। जीतहिं संग्रम ठानि अपारा॥
कादर समसो समर पराई। गिरि कंदरमहँ जाइ लुकाई॥
दो० तासु भजन पूजन पिता करत न कोउ जगमाहि।
जानि धर्म निज शुचि सुकुल तजो इन्द्र अर्चाहि॥

को बापुरो क्रूर पुरहूता। आपुहि रचिसकतन कपूता॥
अंकानीक लिखे अज जोई। तात मृषा नहिं होवतसोई॥
सम्पति सुखकदेन सुननाती। प्रमदा सुताश्रादि सबभाँती॥
मिलत समस्त कर्म्म आधीना। केहिहरिपुपाकदीन्हकेहिलीना॥
सोखत नीर सूर बसुमासा। बर्षत बर्षाऋतु अनयासा॥
तेहिकरि बसुधातृण अरुनाजू। उपजत है न कर्म सुरराजू॥
चारिबरणशुचि रचे बिधाता। द्विज क्षत्री बै शूद्रकहाता॥
पृथक पृथक शुभकर्म्म बताये। तेहिमग बिचरत चतुरसोहाये॥
दो० पढ़ैं बेद बिद्या सुरुचि अरुतप करैं महान।
रुचिर धर्म्म यह बिप्रकर भाषत निगमपुरान॥
अस्त्र शस्त्र गाहि रक्षाहि देशा। जेहिकरलहै न प्रजा कलेशा॥
दान देइ यज्ञादिक करई। क्षत्री धर्म पुरुष जो धरई॥
कृषी कर्म बाणिज्य अनेका। करै वैश्य करि धर्म विवेका॥
सेवा धर्म शूद्र अधिकारा। रच्योशोचि प्रथमहिंकरतारा॥
पितु तुम वैश्यबरण हौ आछे। सुना वेद बक्तन मुख पाछे॥
सुरभी वृद्धि भई गण नाना। यहिहितगोकुल नामबखाना॥
ज्ञाति बन्धु सब गोप कहाये। सश्य बणिज द्वै कर्म्मसोहाये॥
गो द्विजादि सेवन सहप्रीती। कीजिय तात बखानत नीती॥
दो० श्रुतिशासन है धर्मनिज करिय न कतहूँ त्याग।
माया बश मूढ़त्व मय आन धर्म्म जो लाग॥
सोअतिकुटिलकुमति आधीना। जिमिकुलबधूआनरतिकीना॥
यहिकारण सुनि बिनय हमारी। बासव पूजन देहु बिसारी॥
गिरिकानन तटनी शुचि पूजौ। पितु परिहरौ अपरसुर दूजौ॥
तृण आरण्य ठाम नग दाता। सलिलद्वीपवतिपाणअघाता॥
जिनके राज्य सकल सुखपाइय। तिनतजि हरिबपुरेपदध्याइय॥
हैअनुचित पितु कर्म अलीका। अगमनयाहिकृतअपयशटीका॥
लै अन्नेक्षु सार पकवाना। पूजियगिरिवरममनमाना॥
सुनत श्यामसुख वचनविनीता। उठे नन्द उपनन्द अभीता॥

दो० जेठर वहिक्रम ग्वाल जहँ बैठे हैं मुद पानि।
जातभये सत्वर तहां यदुनाथहि उर आनि॥

जेहिप्रकार प्रभु कहि समुझावा। सो प्रसंग नृपनन्द सुनावा॥
बोले गोप वृद्ध सुनि बानी। तात बात हरि सत्यबखानी॥
वय शिशुता बूझौ जनि वाकी। भ्रमवशबात न मेट्योताकी॥
तुम सज्ञान बिचारौ हीमें। अर्चत शक्रहि कौनु महीमें॥
नहिं कर्त्ता पालक लयकारी। आपु दुखित सब दिनवृत्तारी॥
जो त्राता सबकर निरबाधा। तज्यो मोह भय तासु अराधा॥
दिविनायकसों को निजकामा। सरि बन नग पूजौ लै सामा॥
अन्य गोप बोले हरषाई। भलमत कीन्हा बालकन्हाई॥

दो० भूधर गोबर्द्धन बड़ो पूजिय सब मिलि ताहि।
अपर देव इन्द्रादि सों कहा काज निजआहि॥

जब सबकर सम्मत नँद पावा। तब प्रसन्न मन चार बोलावा॥
पुर प्रति सदन सुद्धि करुजाई। प्रात सर्व मम आयसु पाई॥
चलि गोबर्द्धन पूजो भाई। लै सामग्री अशन मिठाई॥
पाइ रजायसु होत बिहाना। शौचक्रिया करिन्हाइसध्याना॥
व्यंजन छरस पात्र भरि नाना। गिरि पूजनगमने गुणवाना॥
सोपनन्द नँद सुजन समेता। गोपन सँग नृप चले सहेता॥
बाजत ढोल तूर्य सहनाई। सभत्र शैलतट पहुंचे जाई॥
भूभ्रत निकट चारिहू ओरा। स्वच्छ पवित्रकीन्ह जलछोरा॥
बहुप्रकार मिष्टानके भाजन। धरे भूमि प्रमुदित सुनुराजन॥
भोजन अमित जाति तहँधारे। बरणि सिराय न भाँति अपारे॥
कुसुममालअवली भाजनप्रति। पहिराई निरखत मोहत मति॥
पाटबस्त्र शुचितानि बिताना। गाइ सकतनहिंकबिबुधिनाना॥

दो० क्रांतिदरी भ्रत ता समय बरणी जात न भूप।
बस्त्राभूषणभूषि जनु नखशिख नारि अनूप॥

तब नँद निजकुल पूज्यभुदेवा। बोलत भये समुद युत सेवा॥
ज्ञाति बन्धु अन जाति समेता। निशा चूनु तंदुल कुरु केता॥

प्रथम चढ़ाय धूप दै दीपा । अर्चत भये नैवेद्य समीपा ॥
घोटा अहि बल्लरी बहोरी । सहित दक्षिणा धरिकरजोरी ॥
श्रुतिवत महिसुर आयसु पाई । शिखिरीबर ध्यावत चितलाई ॥
द्विजबर कहा तजौ दुबिधाई । जेहिते दरश देहिं गिरिराई ॥
सुनि मोहन विबिबन्धुस ग्वाला । दम्पति नन्द वृद्ध लघु बाला ॥
मूँदि नैन दोउकर सब जोरी । शीश नवाइ रहे मति धोरी ॥
दो० कौतुकही भगवान उत बिरचि दूसरी काय ।
असबिशालजनु द्वितियगिरिकरपदथूलबनाय ॥
नीरज नैन मैन मद खण्डा । इन्द्रानन शिरमुकुट शिखण्डा ॥
गल बनमाल पीतपट सोहै । रत्न जटित भूषण तन सोहै ॥
मुख पसारि हरिगति पथगामी । चले गूंग सम अन्तर यामी ॥
इत आपुहि प्रभु कहत पुकारी । गिरिवर दरश करौ नरनारी ॥
पूजा सबिधि तुम्हारि बिलोकी । प्रगटदरशदै कीन्ह अशोकी ॥
कहि असप्रथमदण्डवत कीन्हा । अभिबन्दहुपुनि आयसुदीन्हा ॥
युवती नरन करयो परनामा । अति अनंदमय लै लै नामा ॥
कहत परस्पर लोग सयाने । इन्द्रहि हम पूजा बिन जाने ॥
दो० दरश प्रसिद्ध न कतहुँ तेहि दीन्हो आइ सुरेश ।
समुझि पितामहका सगुण पूज्यो ताहिगवेश ॥
इमि प्रत्यक्ष सुर गिरिवर त्यागी । यह चरित्र भूमिक अनुरागी ॥
होत बतकही अस तेहि काला । सबहि पुकारिकहा नँदलाला ॥
जो भोजन भूधर हित भूरी । लाये सकल प्रेम तन पूरी ॥
सो गिरिदेवहि मुदित जिमावौ । जेहिते मनवांछित फलपावौ ॥
सुनि सानन्दगोपि अरु ग्वाला । षटरस भोजन लै महिपाला ॥
लागे देइ सकल निज हाथा । जेमन लगे गोबर्द्धन नाथा ॥
जो सामग्री तहँ सब आई । बचीन नेक सकल हरिखाई ॥
पुनि सो मूरति अद्रि समानी । सबन सत्य पूजा अनुमानी ॥
दो० अद्भुत लीला श्याम करि सबकहँ संग लगाय ।
परिक्रमा गिरिकी समुद करत भये नरराय ॥

सो० प्रफुलित मन पुनिधाम सकल संग आवतभये।
बर्णतगिरिगुणग्राम अकथसौख्य मयनारिनर ॥
दो० ग्वालगाय बच्छानके रँगरँग किंकिणि ग्रीव।
पहिराई कौतुकहि युत बृन्दाबन सुख सीव ॥
प्रगट शैलतन जेहि रच्यो खायो सुरपतिभाग।
मंगलतूतजिमानमद करु तेहिपद अनुराग ॥

इति श्रीमद्विविधकिल्बिपान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासबिरचितायां गोवर्द्धनपूजनवर्णनोनाम पंचबिंशोऽध्यायः २५ ॥

दो० मुक्तिसरूप्य सलोक्यशुचि अरुसायोज्यसमीप।
चारों पावत चतुरजन धरे ज्ञान उर दीप ॥
ध्यावत राधारमणको राग द्वेष बिसराय।
सो जनु चारिप्रधान मय बनो भूप सुखपाय ॥

सुनौ नृपाल रुचिर हरि लीला। तुम श्रोतानृपसुमतिसुशीला ॥
तजिदिवीश गिरिपूजा कीन्ही। यह सुधि देवनइन्द्रहिदीन्ही ॥
सुनि सकोपि सब बिबुधहँकारे। सादर निकर निकटबैठारे ॥
भ्रातहु पाव मर्म्म यह काऊ। जानत होउन कस्यो दुराऊ ॥
ब्रजग्वालन पूज्यो कहिकाली। त्यागेउमोहिंगोपालकुचाली ॥
ऋषि कौतुकी समय तेहिआये। देखत तुराखान हरषाये ॥
करि प्रणाम आसन बैठारा। कौतुकही मुनिबचन उचारा ॥
कहिय कहा रिपुपाक कहानी। तव महिमाप्रसिद्धजगजानी ॥
दो० देवराज मान्यता तव करत सगौरव सर्व।
ब्रजबासिन अबपरिहस्यो पूजागिरिकरि गर्व ॥
नन्दसूनु जोइ आयसु देता। करत गोप सोइ प्रेम समेता ॥
तेहि सुत तुव पूजन मिटवावा। प्रेरि सबहि भूधर पुजवावा ॥
सुनि उर दह्यो पुरंदर कैसे। सिंधु अगस्त्य बातसुनिजैसे ॥
भृकुटी वक्र अरुण चषभयऊ। हरिमायावशबुधिभ्रमिगयऊ ॥
कह धनवान भये ब्रजबासी। तामद मम पूजा तिननासी ॥

मख व्रत जप तप मम न भुलायो। मूढ़न अवशि दरिद्र भेलायो॥
जानत परमात्मा नर श्यामा। करत तदज्ञावत जगकामा॥
शिशुता बिवश अज्ञ सुत सोई। मूरुख अभिमानी जिमि लोई॥
दो० मदबाढ़ो विधि रचनि सम आजु विभंजौं सोइ।
गोधन श्री नाशौं सकल तब निज मारग होइ॥
इमि बहु जल्पि इन्द्र मतिहीना। घनपति बोलि रजायसु दीना॥
तात सबै निज चमू कराला। संग लाय गमनौ यहि काला॥
प्रलयकाल बर्षा झरि लावो। गोबर्द्धन नग घोरि बहावो॥
अरु ब्रजमंडल देहु नशाई। पुनि न चिह्न कहुं परै लखाई॥
पशु मनुजादिक रहै न कोई। तब मम हृदय प्रफुल्लित होई॥
नीरदनाथ रजायसु पाई। करि प्रणाम गमनो सुत्वराई॥
निज निकेत मुखिया जीमूता। बोले निकर कही गतिभूता॥
त्रिदश राज शासन है आजू। बोरौ ब्रज पशु सरन समाजू॥
दो० सुनि सानँद मेघाधिपन निज निज जोरि सहाय।
सानुराग बलकृत चले संग मेघपति पाय॥
क्षणमहँ ब्रजमंडल घन छायो। गिरिघनपति तर्जन हिबतायो॥
दिवस क्षपासम निकर निहारा। लखि न परत निज हाथ पसारा॥
गर्जत घोर मनो पविपाता। मूशलधार बुन्द सरसाता॥
महाप्रलय घनघटा कराला। अभ्र अखण्ड देखि सब ग्वाला॥
वृष्टि अपार असन जस देखी। व्याकुल नन्द सग्राम विशेखी॥
गोप नारि नर नगर निवासी। भीत देखि वरषा मृतु पासी॥
सभय कम्पतन जनु बिनु प्राना। कहत त्राहि यदुपति भगवाना॥
प्रभुपहँ जाय पुकारत भयऊ। रखहु नाथ नतरु जिय गयऊ॥
दो० महाप्रलय की वृष्टि यह सूझत कोउ न उपाय।
करिय कृपा आरतहरण भई मृत्यु यहि ठाय॥
कोउ कहत तुम नगहि पुजायो। हरि पूजा कालीन मिटायो॥
अब पर्व्वतहि पुकारौ ताता। रक्षा करै जीव नतु जाता॥
निमिषमात्र महँ ब्रज लय होई। थावर जंगम बचिहि न कोई॥

नन्द सहित नृप गोप सयाने। सोपि गये भ्रमि बुद्धिनशाने॥
वयप्राचीनकर्म्म तजि दीन्हा। व्यर्थ महीधर पूजन कीन्हा॥
सखिकाकहिय सुमति बौरानी। बालक कहे तजा पति पानी॥
इमि नरनारि बकहिं बुधितूला। सकल भयातुर गोपिनशूला॥
जानि व्यथित सबकह यदुराई। धीरज धरौ तजौ कदराई॥

दो० गिरिवर अबहीं आयकर रक्षा करिहि तुम्हारि।
उत गोबर्द्धन अग्निसम तप्त कस्यो असुरारि॥

शोकानन्द रहित करुणाकर। गिरिहिउठायो यदुकुलभाकर॥
बामे कर कनिष्ठिका धारा। बिनु श्रमजनु छत्रकमहिपारा॥
छायालखि त्रियग्वाल निकाई। तेहि तर बैठ ठाढ़ सुरराई॥
पशु अम्बरगामीचर जीवा। भे थित नगतल सुखकी सीवा॥
अबला मनुज परस्पर कहईं। आदिपुरुषहरि नरनहिंअहईं॥
देव देव शिरमौर कृपाला। मोहन मानव नहिंजलपाला॥
सुनु सखि करअंगुलिगिरिधारी। को अस नरशरीर बलभारी॥
उत सकोपि बर्षत जलराशी। मूशलधार पयद मतिनाशी॥

दो० बड़वानल इव ज्वलितगिरि इत जल तापरराय।
होवतभस्म अशेष सो हरिगति अकथ सदाय॥

यह सुधि पाइ आपु अमरेशा। आयो ब्रजमण्डलहि नरेशा॥
कथित बृष्टि भूधर दिन ठानी। दिविपति बुधिहारिमायाभानी॥
प्रभु प्रताप सर्वदा प्रचण्डा। अभिमानीमदकृतशतखण्डा॥
पाथ रहित सब भे क्षीरोदा। बुन्द न ब्रजपर भयउनओदा॥
हारि पयदपति सहित सहाई। द्वौ कर जोरि कहा सुरराई॥
दयाधीश जल प्रलय सिराना। तदपिनब्रजबूड़्यो भ्रममाना॥
को उपाय कीजिय यहि बेरा। देवराज यह करिय निबेरा॥
जलदवचनसुनि अमरप्रधाना। तनसकम्पमन बहुअकुलाना॥

दो० धरिधीरज बिबुधेश पुनि मनमहँ कीन्ह विचार।
हरणभारमहि मनुज तन आदिपुरुष अवतार॥

को समर्थ नत अस महि भाई। महाप्रलय पय देइ नशाई॥

अरु नग छत्रक सम कर धारै । कोटिहु मानव गिरिहिनटारै ॥
भै बड़ि चूक अगास अपारा । कृपा कृष्ण बिन लहौंनपारा ॥
इमि पछिताय जलद युतसोई । निजपुरगमनेउ जलमदखोई ॥
उये प्रभाकर तिमिर नशाना । अकथसौख्यग्वालनतबमाना ॥
युवती मनुज आइ हरिपासा । वचनप्रसन्नित सबन प्रकासा ॥
गिरि महिधरिय दयाजलराशी । भाप्रकाशनभ घनगयनाशी ॥
बिहँसे प्रभुसुनि गोपति बानी । भूधर भूधास्यो सुखमानी ॥
दो० नाशो मद सुरराजको ब्रजजन लिये बचाइ ।
मंगलको अस दूसरो उपमा जेहि हरिभाइ ॥
निष्प्रपंच मनकायबच तू भजु नन्दकिशोर ।
सबप्रकार सुख जगलहै अंत मुक्तिपदतोर ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांइन्द्रमानभंगवर्णनोनाम
षड्बिंशोऽध्यायः २६ ॥
दो० काम क्रोध को त्यागिके लोभ मोह बहिराय ।
मानभंजिअपमानताजि निजमनबुधिबशलाय ॥
जो ध्यावत निज आतमा योग पंथ नर नारि ।
मुक्ति लहत सायोज्य सो जरा मरण दुखटारि ॥
प्राणायाम विशेषि कृत सुषमन मारग पाय ।
पूरक कुंभक सबिधि बुध रेचक करत सदाय ॥
करत आतमाशुद्ध निज विषय भोगको त्यागि ।
पावतगति जो मुनिलहत रहतअमीरस पागि ॥
सोगतिसहजहि कलिचतुर हरियश गावतलेत ।
यामें संशय रंच नहिं सत्य साखि श्रुति देत ॥
मुनिवर महाप्रमोद कहानी । कुरुनायकप्रति बहुरिबखानी ॥
जब उर्बरा कूट प्रभु थापा । बासव मान नशो तनतापा ॥
ग्वाल चतुर धिषणालय जोई । करत परस्पर चर्चा सोई ॥
अद्भुत चरित बिलोका आजू । हरि समको नर देव समाजू ॥

जेहिनिजशक्तिकरजगिरिधारा । इन्द्रमान मथि सबहि उबारा ॥
ताहिकहिय किमि नन्ददुलारा । आदिपुरुषनिजबशतनधारा ॥
उग्र तपस दंपति नँद साधा । प्रथमहिं पारब्रह्म आराधा ॥
सुनहु तात प्रभु कारण तेही । नन्द सूनुभा स्वजन सनेही ॥
दो० बड़भागी हम पुण्यजन नित्य दरश कृततात ।
परमात्मा करि आजुते मानब ताजि नरनात ॥
गोप सखा सानँद नृप आई । पूछहिं श्यामहिं कंठ लगाई ॥
कोमल कमल सरस कर तोरा । बिदित शैल बड़तात कठोरा ॥
वै सुकुमार छत्र नर जैसे । साधत तिमि साधा गिरिकैसे ॥
कहौ तात यह अकह कहानी । गद्य पद्य गूढ़ाशय बानी ॥
निज कौशल वैभव यदुराई । दास जानि प्रभु कहौबुझाई ॥
सखाबचन सुनि श्रीभगवाना । नरइव बयन सनीति बखाना ॥
सब पर आदि अंत बिन जोहै । कर्ता हर्ता पालक सोहै ॥
तत्प्रातिकूल करत कृत जोई । लहत गलानि मसीमुख सोई ॥
दो० मघवा बुधि माया हरी आपुहि ईश्वर जानि ।
ब्रजनाशौं मनचिंतमिति तब रक्षौ गिरिआनि ॥
यशुमति नन्द हरिहि उरलावा । निजकरप्रभुकर पाणिदबावा ॥
पाणिजलजनगधर दिनसाता । होइहि कोमल हाथ पिराता ॥
गोपिन नृप यशुदा ढिगजाई । कथाभूत कहिकहि समुझाई ॥
मातु तोर सुत पुरुष अनादी । बदत निकर परमारथ बादी ॥
चिरुजीवो ब्रजपालक स्वामी । जनरक्षक पद सरजनमामी ॥
बिपदा बहुप्रकार भै पाछे । टारयोहरिनिजजनलखिआछे ॥
खल भंजक पालक श्रुति सेतू । सुत तुम्हारनर नहिं सुरकेतू ॥
यथा गर्ग ऋषि कहा सयानी । भई बातसो परी न हानी ॥
दो० इमि बतरायसप्रेम सब निज निज कारज लाग ।
मंगल परिहरि मोह भ्रम करुहरिपद अनुराग ॥
इति श्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंग
लदासविरचितायांपरस्परवार्तावर्णनोनामसप्तविंशोऽध्यायः२७॥

दो० जिमि कुधात पारस परसिहोत कातिश्वर रूप।
तिमि मूरख सतसंग में पावत ज्ञान अनूप॥
याते उत्तम सबनते सत संगति भव बीच।
सो न मिलत बिनभाग्य भल यद्यपि होतनगीच॥
जड़ चुंबक लखि लोहको चेष्टित होत प्रबीन।
तिमि साधूजन जगत महँ हरियश सुनत अधीन॥
अरुजस दर्पण बमत शिखिलखि कर दिनमणिदेव।
मूढ़ कृतघ्नी अपयशी हरियश सुनि तेहि भेव॥
पातक हर दायक सदा भक्ति मुक्ति अनुमानि।
श्री राधावर चरित हौं बरणत सुखकी खानि॥

सुनमहीश पुनि रुचिर कहानी। रुज अघतूल शिखीबरखानी॥
सुरभी ग्वाल सखा लै प्राता। हलधरसहित चलेजनत्राता॥
वेणु मन्दध्वनि सुरुचि बजावत। मधुर मनोहर सुरहरिगावत॥
बृन्दाबनहि जाहिं सुनु भूपा। धेनु चरावत नर अनुरूपा॥
उहाँ सुराधिप मन पछिताई। निज सँग लायदेव समुदाई॥
गो कामदा अग्र निज कीन्हे। विह्वलहरिपद दृढ़मनदीन्हे॥
ऐरावत आरूढ़ दिवेशा। बृन्दाबन आयो बिबुधेशा॥
मध्य बाट ठाढ़ा सो राजा। सँग लीन्हे सब देवसमाजा॥

दो० आवत लखि जन पालको तजिगज महितल आय।
नग्न पाद कर जोरि करि चला कम्पतन छाय॥
सो० पर्‌यो चरण तर जाय त्राहित्राहि कहि त्राहि पुनि।
बिनय करत सुरराय विकलितमन गदगद गिरा॥

छं०भु० नमोदेवदेवेशदेवाधिकर्ता। नमोचंडदेवारिकेप्राणहर्ता॥
नमोमत्सआकाररूपाधिकारी। नमोकच्छकायाकृतंभूमिधारी॥
नमोकोलवद्रूपस्वच्छंदस्वामी। नमोभक्तपालंनृसिंहेति नामी॥
नमस्कार मद्राज्य रक्षांस्वरूपं। नमो भूसुरेन्द्रं हतंभूमि भूपं॥
नमो जानकीवल्लभंदेवनाथं। नमोकृष्ण गोपीहितंशुभ्रगाथं॥
नमो बौद्धकल्कीदयाकैवनौगे। स्वदासानहेतंकुकर्मीहनौगे॥

महामोहमैनाथहौं बुद्धि हीनो । क्षमौदासआगासदुर्कर्मकीनो ॥
भ्रमावैसबैनाथ मायातुम्हारी । चतुर्पंचवक्त्रादि को छोहभारी ॥
नजानातुम्हैंतुच्छहै बुद्धिमेरी । कृपासिन्धु देवाधिहौं शर्णतेरी ॥
तुकर्तार तू भंग कारी मुरारी । सदारक्षमानं त्वमेकं खरारी ॥
त्वभूनीर अग्निर्सदाचारनाकं । स्वयं कारणंलिंगथूलंस्त्रवाकं ॥
त्वतत्वं अर्सारूपमेकं प्रकासं । त्वमोंकारसोहं महामंत्र भासं ॥
त्वमाद्यंत मध्यं विनाकालकालं । सदैवामरादिंदयाधीशपालं ॥
नयावत्त्वभक्तिं उरमें निवासं । दुखौघंरमानाथ तावद्विलासं ॥
दयाकैक्षमाकीजियेदोषशोकं । नतूकोपकारक्षकंतीनि लोकं ॥
लहादर्शनं पाप पुंजै नशायो । प्रसीदंकृपासिन्धुत्वंशर्णआयो ॥

दो० अहंकार बश तामसी हौं जगदीश कृपाल ।
दोष चूककर जानिजन क्षमाकरौ यहिकाल ॥

मम उर धन अभिमान अपारा । जाना रंचन भेद तुम्हारा ॥
परमात्मा अनादि अज एका । सकल अनीह नागखलभेका ॥
भव सरोज सुत आदिक देवा । तव दीन्हो पावत पद तेवा ॥
जग पितु मातु एक असुरारी । हौ अनूप उपमा न तुम्हारी ॥
लक्ष्मी सर्व काल तव दासी । आदिपुरुषप्रभुतुमअविनासी ॥
दासन हेत रच्यो नर काया । तिहुँपुर रचत तवाज्ञामाया ॥
सकल काल रक्षक भगवाना । जनअपराधक्षमौ अनजाना ॥
मघवा विनय सुनत यदुराई । ह्वै दयाल बोले मुसुकाई ॥

दो० कामधेनु के संग अब तू आवा सुर भूप ।
क्षमाकियो अपराधबड़सुनि तव विनयअनूप ॥

सो० गर्व न कीजौ भूल होवत मदते ज्ञान हुत ।
कुमति बढ़ावत थूल देत कुमति अपमानदुख ॥

उठ्यो अमरपति सुनि प्रभुबानी । कीन्ह पदाची वेद बखानी ॥
चरणोदक समोद तब लीनसि । सह प्रमोद परिकरमा दीनसि ॥
तेहि बेला नभ बजे दमामा । गावहिं गंधर्ब पूरण कामा ॥
निजनिज यानारूढ़ दिवौकस । बरषिकुसुमबरणतसबहरियस ॥

अस आनंद भयो तेहि काला। जनुफिरिजन्मलीन्हगोपाला॥
करि अर्च्चन रिपुपाक सनेमा। हरि प्रसन्न लखि पाइसि क्षेमा॥
सविनय भूप जोरि दोउ पाणी। कह्यो शची पति आरतत्राणी॥
अब प्रताप वैभव तव जाना। प्रणतारतहर श्री भगवाना॥
दो० हे अनादि पूरुष परम का आज्ञा अब मोहिं।
बिहँसिश्यामतब असभन्यो दयोइंद्र शिषतोहिं॥
अब गृह जाहु करहु मम सेवा। जानेहुआदि पुरुष मोहिंदेवा॥
करिदंडवत पाइ अनुशासन। बासव गयो भूप अमरासन॥
इहां श्याम रजनी सुख पाई। गये भवन सँग ग्वाल अथाई॥
गोपन नृप गृहगृह प्रति जाई। बिपिन अवस्थासकलसुनाई॥
श्रीमुनि कहा सुनौ नरपाला। जो चरित्र गावा यहि काला॥
यहि प्रसंग कर वक्ता श्रोता। अधिकारी चहुँ गतिकर होता॥
चारिपदारथ बिनु श्रम पावत। जोसमोद रुचिसों यहिगावत॥
हरियश समन आन कछुताता। यह संक्षिप्त कही तोहि बाता॥
दो० मदभ्रम नाश्यो इन्द्रकर जेहि बिनु श्रमयकबार।
मंगल भूलत क्यों जगत तेहि भजु बारम्बार॥

इतिश्रीमद्विबिधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांइन्द्रस्तुतिवर्णनोनाम
अष्टविंशतितमोऽध्यायः २८॥

दो० जैसे हरिकर परसतहि तिमिर झटित लहनाश।
हरिगुणबरणत तिमिबिबुध पावत पाप विनाश॥
अथवा गंगा दरशते जिमि बिनशत अघ थूल।
गावत हरियश तिमि चतुर होत पाप अनसूल॥
मूरुख सो संसार में जो न भजै यदुराइ।
महा अपयशी पातकी होइ मुक्त यशगाइ॥
जेभूले कामादि में तेनर सदा अचेत।
भवदधि में माया तिन्हैं पाप हिलोरै देत॥
वोहित सम श्रीकृष्णयश सहजकरतजनपार।

बरणतहों आनंदमय श्यामचरितसुखसार ॥
ऋषिकह सुनु रसाधि सुचिताई। ब्रत एकादशिकिय नँदराई ॥
न्हान ध्यान जप पाठ अपारा। कीन्हादिन ब्यतीत साचारा ॥
पाइ प्रदोष जागरण ठाना। गत शर्वरी बिहान तुलाना ॥
दर्शन दंड तमस्विनि जानी। तिथि द्वादशी भूपनियरानी ॥
उठि करि प्रात कर्म नँदराजा। यमुना न्हानचले सुखसाजा ॥
अपर अनेक ग्वाल सँग धाये। सूरसुता तट भूपति आये ॥
करि प्रह्लन तिन बसन उतारे। प्रविशे आय आपुसुख भारे ॥
बरुण चारु जल रक्षक रहई। निशिनकोउअस्नानहिंलहई ॥
दो॰ जाइकहा निज नाथसन न्हात यमुन जलकोय।
महाराज हम करहिं सो जो आज्ञा तव होय ॥
सुनि आज्ञा लंघन जलपाला। बोल्यो धाइ धरौ यहि काला ॥
चले दूतद्रुत यमुना आये। गहि नँदराय बरुणपुरलाये ॥
नागपाश बन्धन दृढ़कीन्हा। शुभथल तिनहिं बासलैदीन्हा ॥
सुरभीपाल आन नृप साथा। तिन सबकहा कृष्णसोंगाथा ॥
करुणानिधिभइ अनुचितबाता। समुझतहमहिं होतदुखगाता ॥
पाथ नाथ चरगहि नँदलाला। लैगे वेगि लोक जन पाला ॥
सुनत गोप बाणी घनश्यामा। ह्वै क्रोधित अचिंत्य गुणग्रामा ॥
क्षण महँ बरुण धाम गये भूपा। अग जग नाथ धरे नररूपा ॥
दो॰ हरिबिलोकि करजोरिदोउ जलपति उठा महीश।
करिबिनती बोलत भयउ जयजय श्रीजगदीश ॥
पाइ दरश तव श्री असुरारी। पूजी मन कामना हमारी ॥
जन्म समस्त सफल भा आजू। नश्योनिकरअघजनितसमाजू ॥
बंधन पिता नन्द कर ठाना। सो यह कारण श्रीभगवाना ॥
राम लोक तुम तात गोसाईं। तुम्हरे पिता भये दुचिताईं ॥
जानत मोर धर्म्म यदुनायक। रजनी रक्षक पय मम पायक ॥
ते अबूझ निशि न्हात बिचारी। मम शासन लाये असुरारी ॥
यहि मिस भयउँकृतारथ स्वामी। होहु प्रसन्न जानि अनुगामी ॥

इमिकहि दीनवचन बहुभांती। धरी भेंट मणिगण बहुजाती॥
दो० करि प्रबोध धनजातपति पिता सहित यदुराय।
आये गोकुल मोद मय सुनु प्रवीन कुरुराय॥
निरखि नन्दपुर लोक सुखारी। भये इलापति आनँद भारी॥
वृद्ध वहिक्रम गोप सयाने। मिलिसप्रेम नन्दहि हरषाने॥
पूछिनि सकल व्यवस्था आई। वरणि पूर्ववत नन्द सुनाई॥
सुनिवैभव प्रताप हरि केरे। मुदित परस्पर सुरुचि घनेरे॥
जादिन गोवर्द्धन कर धारा। हम वाही दिनचित्त विचारा॥
नन्द तनय नर तन जन नाहीं। आदि पुरुष प्रगट्योजगमाहीं॥
सकल गोप सम्मत करि राजा। आये जहँ जनपालकभ्राजा॥
आरत गिरा कीन्ह परणामा। कहिजयजयअघमोचनश्यामा॥
दो० अमित भ्रमायो हमहिं प्रभु निज मायामहँ नाथ।
जान्यो अतुल प्रभाव अब जय जय उत्तमगाथ॥
तुमको शीशजात ह्वैदेवा। विरचत भुवन वेद दिशिएवा॥
पुनि तुमहीं वृषभध्वज होई। नाशत अखिल विश्वयहजोई॥
नारायण तुम आपु मुरारी। तीनिलोक रक्षक बनवारी॥
किंकर जानि सुपद अधिकारी। एक लालसा सुखद हमारी॥
सो पुरवहु वैकुंठ लखाई। हरि क्षणमहँ निज लोकबनाई॥
दरशायो दुखपुंज नशावन। कीरति जासुनिकरजगपावन॥
निरखत अनुभव भयउप्रकाशा। सकल मोहवाहनी विनाशा॥
क्षमाशीशधरिविनयसुनावत। प्रफुलितमुदितश्यामयशगावत॥
धन्य कृष्ण प्रतिपालक हर्त्ता। बामाजादि दिवौकसकर्त्ता॥
तव महिमा अपार गोपाला। अल्पबुद्धि हम मन्दविशाला॥
मायापति मायागति चीन्हे। मायारहित मनीषा कीन्हे॥
पारब्रह्म तुम अलख अपारा। नरवपुरच्यो हरण महिभारा॥
दो० नाशिदुष्ट भव सकल प्रभु करहु धर्म्म परचार।
ज्ञानभयउ पूरण हृदय समुझिपर्यो कर्त्तार॥
भूप गोपसब विगत विमोहा। कामक्रोध वरजित मदकोहा॥

करत निरूपण पूरण ज्ञाना। सोप्रभाव यदुपति सबजाना॥
सत्वर निजमाया बल ठानी। हरिकिय निकरगोप अज्ञानी॥
हस्यो सतोगुण निजपुरसोई। अलख अगोचर जाननकोई॥
स्वप्न समान सबन अनुमाना। प्रगट चरित्र सुप्रगटन जाना॥
नन्दराय सैमुखी निकेता। हरि मायाबशरहान चेता॥
कीन्ह सनेह ब्रजसुत जानी। प्रभुइच्छा अपार सुनुज्ञानी॥
अति अपार दुस्तर हरिमाया। जेहिंबहु अजभव पारन पाया॥

दो० सोमायापति कृष्णप्रभु दायक सब मनकाम।
मंगलतू तजिमोह भ्रम भजुतेहि आठोयाम॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांबरुणलोकबैकुण्ठचरित्रवरणनो नामऊनत्रिंशतितमोऽध्यायः २६॥

दो० कारण लिंगहु थूलहू जबन रहै कोउतत्त्व।
पंच प्राणमन बुद्धिनहिं पूरण पुरुषप्रभुत्त्व॥
व्यापिरहा ब्रह्मांड महँ परिपूरण आकास।
पारब्रह्म परमात्मा तामें करत विलास॥
ताइच्छा ते प्रगटभा नारायण जग पाल।
वाके नाभीकमल ते जन्म्यो विधिततकाल॥
तत्त्वादिक पुनि सबरचे जीवसमस्तबनाय।
पंच तत्त्वके मेलते दीन्हे सबै हढ़ाय॥
महाप्रलय में पुनिसकल मिलिहैं जामें जाय।
सोइ निरंजन अगुणप्रभु कृष्णभयो भवआय॥

रास विलास कीन्ह जसस्वामी। गोपिनसाथ परम गुणग्रामी॥
सो पंचध्यायी सुख सागर। निजमतिसरसभनौंनृपनागर॥
चीरहरण जबकीन्हा रहई। रासवचन गोपिन दियअहई॥
दामोदर जब लागिहि मासा। तबहौंकरिहौं रास बिलासा॥
गोपीतबते आश लगाये। दामोदर हेरहिं चितलाये॥
सुखद शरद आई महिपाला। मुदितगोपिकाविरहविशाला॥

पावस ग्रीषम शीत समाना । निर्मल जल भयसरवर नाना ॥
विकसे नलिन विचित्र अपारा । कुमुद् चकोर निशा मुखसारा ॥
दो० उदय छपाकर अमल लखि कोकसरज उरदाह ।
यथा निरखिपरविभव खल पावतकष्ट अथाह ॥
नाक अमल सोहत सुखदानी । जिमिहरिपायमुदित विज्ञानी ॥
तारागण निकरंब प्रकासा । सन्तसहृढ़करजिमितपभासा ॥
तटिनी सरवर निरमल बाहा । परउपकार सुयश यशलाहा ॥
पाय बाट पन्थी जन चाले । कामजीतिजिमिजनप्रणपाले ॥
तिथिराका दामोदर माहीं । कौतुक श्याम चले बनघाहीं ॥
दीख सोहावन पावन नाका । हरभूषण पूरण द्युतिराका ॥
स्रवतसोम करसोम समाना । बहत रामगति शुभ पवमाना ॥
सघनविपिनलखिउत्तम शोभा । राससुद्धि आई चितक्षोभा ॥
दो० पूरब गोपिन सों कियो हौं निबन्ध हित रास ।
सो अब पूरण कीजिये होत शरद करनास ॥
यह विचारि बंशीध्वनि कीनी । मनौंगोपिकनकहँ सुधिदीनी ॥
मुरली सरस विरह परचारा । आतुर सकल चलीं तेहिबारा ॥
परिहरि कान पिता पतिकेरी । अबलनरास अवधि हियहेरी ॥
तजिकुललाजकाजगृहत्यागी । केवल श्यामदरश लवलागी ॥
शिरभूषण भुज गल कर डारी । गईंनिकर जहँ जनसुखकारी ॥
सीमंतिन यक तजिनिजनाहा । धाइचली तेहिपति गहिबाँहा ॥
बरबस ताहि सुलाव निकेता । बिनवत नारिसो जानन देता ॥
करिहरि ध्यान कलेवर त्यागी । मिलीप्रथम सोप्रभुहि सभागी ॥
दो० देखिप्रीति साँची सहृढ़ श्री गोपाल दयाल ।
मुक्तिभई तेहि सहजहीमुनि दुर्लभ तिहुँकाल ॥
सुनि सुनि वाक्य भूपउरशंका । पूछा मुनिहिबंदि पद पंका ॥
दयाराशि गोपी उर माहीं । हरिपद प्रीतिब्रह्म रतिनाहीं ॥
बिषय बासना दृढ़ अनुरागा । दरश वियोग कलेवर त्यागा ॥
कारण कौन मुक्तभइ सोई । कहौ बुझाइ दूरि भ्रम होई ॥

हरिमहिमा नृपजान अजाना। गावत भक्ति मुक्ति कल्याना॥
जिमि अयानकृतपान पियूषा। निजगुणप्रगटतअभय अदूषा॥
बूझत सकल पदारथ जैसा। होवैकरहि धर्म्म गुण तैसा॥
हरि सनेह सब बिधि अनवाधा। दाता मोक्ष नराधम साधा॥
छं० लहैमुक्तिनर उत्तम अधम हरिचरण रतिदृढ़ लायकै।
बहुपतित उधरे अगम भवते सहज हरिगुण गायकै॥
भीलिनि जटायू नीच दोऊ ध्याव हरिशुभ भायकै।
भेमुक्त मंगल मानि मुद गोविंद भजुसुख पायकै॥
दो० तिलक मान छापा दिये जपतप किये महान।
मुक्ति पदारथ कठिन है बिन ध्याये भगवान॥
आन अनेकन भावसो मोक्षभये जेहि भाँति।
सो प्रसंग मोदक प्रथुलसुनु महीपगुण पाँति॥
यशुदा नंदसुनू अनुमाना। जिनप्रताप श्रुतिसत्य बखाना॥
प्रीतम निकर गोपिकन बूझा। कंसशत्रु सम चित्त अरूझा॥
मित्र समान गोपगणजानी। लही मुक्ति जो याचत ज्ञानी॥
पांडुजात सबजानि सनेही। पद निरवाण लहातजि देही॥
प्रबल अरातिबूझि शिशुपाला। जरामरण नाश्योमख शाला॥
यदुकुल सकल बिचारि सुज्ञाती। सहज समस्त बैठ सुरपाती॥
योगी जन मुनिवर संन्यासी। ध्यायउजानिपुरुषअविनासी॥
चारि मुक्तिमहँ जो जेहिलायक। अन्त ताहिसोदेइ यदुनायक॥
दो० गोपी हरिपद रसमतीं तरीं ध्याय असुरारि।
नहिंआश्चर्य्यमहीशसुनु कहासोतोहिबिचारि॥
नृप कह अबन रहा भ्रम ताता। रास बिलासभनो सुखदाता॥
त्रिय समूह आतुर हरि पासा। यहि प्रकार गमनी हितरासा॥
जस सैवलिनी पल नभ माहीं। सातुरस्वपतिअर्णवहिजाहीं॥
तत क्षण जससोहत गुणखानी। सो परमानहिं परत बखानी॥
निकराभूषण भ्राजित श्यामा। बिथकहिंभाबिलोकिबहुकामा॥
नटवर बेष मोहिनी साजी। सुन्दरत्व सुन्दरता भ्राजी॥

देखि मनोहर रूप बिहारी। ब्रजयोषितनसुत्तुधि गतिहारी॥
स्वागत सबहि पूछ जन पाला। उदासीन पुनि कहगोपाला॥
दो० गौर्य्यार्द्धर कारण कवन भूत प्रेत वैताल।
फिरत विपिन आयहुसखी वरणिकहौउत्ताल॥
इमिसाहसकृत त्रियहि अभावा। निगमपुराण धर्म अस गावा॥
नारिधर्म नहिं निशिपतित्यागै। आनपुरुषपहँ निजमतिखागै॥
यदपि होइ पति कायर कूरा। कुमति विवशकपटी अघपूरा॥
रूप रहित कोढ़ी चख हीना। करपदबिनाकाण अतिदीना॥
अथवा आनदोष युत होई। पतिब्रता तिय तजै न सोई॥
उचित कन्त सेवन श्रुतिभाखा। अपरकर्म वरजित श्रुतिराखा॥
सोइ कल्याणरूपिणी बाला। तजिछल पतिसेवै सबकाला॥
याहि संसार उच्च पद पावै। सपति अन्तममलोक सिधावै॥
दो० करि बंचण भर्तार त्रिय अन्य मनुज ढिगजाय।
कोटि जन्म लगि निरयपद पाय नारिपछिताय॥
कानन सघन चपा उजियारी। निरखि तीर पुत्रिकातमारी॥
पायहु दरश जाहु निज गेहा। उचित अहै तुमकहँअबएहा॥
पूजी आश दरश मम पायो। पुनिनमताअसउर फुरलायो॥
मन बच क्रम पति सेवहु जाई। दहौ लहौ त्रैताप बड़ाई॥
प्रभुमुख बचनसुनत सुधिनाशी। शव समभैंजनुमृगिहरिगाँसी॥
तत्पश्चात सुद्धि तन आई। महामलिननहिं बरणिसिराई॥
इला नखाग्र लेखि अधहेरैं। शीतल श्वास भरैं उर फेरैं॥
नीरज नयन सीप भय राजा। स्रवत बुन्दमुक्ताहल साजा॥
दो० क्लेशमग्नह्वै सकल त्रिय करहिं रुदनमहिपाल।
जोरिपाणिकह श्याम सों हौ ठगरूप कृपाल॥
प्रथम बजाई बंशिका सुनत नश्यो गुण ज्ञान।
अब भाषत करकसवचन कहौ तजैं हम प्रान॥
बंश विभूति कन्त कुल लाजा। तवलगिसकलतजीत्रजराजा॥
हैं अनाथ शरणागत स्वामी। राखशरण हरि अन्तरयामी॥

जो जन तवपद कमल सनेही। तन धन राजन भावत तेही॥
नहिं ऐश्वर्य्य चहैं प्रभुताई। दुखगत सौख्य भक्तिरसपाई॥
नाना जन्म कर्म्म के कन्ता। प्राणरूप प्रभु श्री भगवन्ता॥
गवहि किमर्थ अगारहि नाथा। जीवन तवपद नीरज साथा॥
कहहरि अबनदोष मोहिंआहीं। रुचिरुपदेश कहा तवपाहीं॥
सो न सुना तुम तज्यो गलानी। गतिमतिसबतनमनकीजानी॥

दो० यदपिअकर्तब कर्म्महै रुचि तुम्हारि अनुमानि।
करि बसमोदित रासअब संगतुम्हारा ठानि॥
करौं रास जुरि मिलिसकल अति आनंदबढ़ाइ।
सुनत सुधा साने बचन फूले तनन समाइ॥

यश उत्कर्ष सुनत अकुलानी। तसप्रफुलितभै सुनिमृदुबानी॥
सबसब सम भइ प्रथम भुवाला। अभ्यायस लहि जीवनपाला॥
घेरिगवो दधि गोप किशोरी। लखहिं मुखेन्दु प्रभाहिचकोरी॥
राजत मध्य कृष्ण कृतलीला। पुरटंबलि चहुँदिशिगिरिनीला॥
मायहि दीन्हबहुरि अनुशासन। रासकरब बिरचहुश्रुतिआसन॥
रहौ उपस्थित रास समाजा। जोजो चहैं देउ सोइ साजा॥
प्रभु रुख पाय सूरजा तीरा। अगमभूमि बिरची जड़िहीरा॥
भल रमणीय सोहावन ठामा। जोलखिबुधिभूलहिअजबामा॥

दो० बिधि मख कन्या सदृढ़ थल रंभस्तंभन साजि।
पूरण कुसुमावलिरची तिहुँपुर निरखतलाजि॥

बिरचि भाव्यथल प्रभुपहँआई। दोउकरजोरिकहिसिशिरनाई॥
छमा पयोधि काम्यरत्न ठामा। सुनत प्रसन्न चलेघनश्यामा॥
जाय रासगृह श्यामबिलोका। थलकमनीय बिलजतिहुँलोका॥
लहै गलानि सोमभा हेरी। बरणिकहौंकिमिलघुमतिमेरी॥
चमकत चहुँदिग सोहर बालू। मनोचंद्रिका बिकस बिशालू॥
बहतअनिल बिनुअनलप्रसंगा। तीनिप्रकार ताप तिहुँ भंगा॥
घन आरण्य लसत द्रुम पाता। छबिगृहमनो सुछबिसरसाता॥
जो माया निरमित सबठाऊं। हरिइच्छा किमि पूरणगाऊं॥

दो० देखि समाज मनोज मद उमहित गोपी सर्ब।
मान सरोवर नाम सर तेहि तट गईं अखर्ब॥
शुचि ह्वै रुचिर वस्त्र तिनधारे। पुनिषोड़श शृंगार सम्हारे॥
नख शिख लगि सुन्दरता खानी। कृष्णप्रियाकिमिकहौं बखानी॥
बीन पखावज ताल मृदंगा। सर्व मिलाये तान तरंगा॥
हरिढिग आइ प्रेम मदमाती। गदगदतननहिंकाय समाती॥
तजिसंकोच शोच हरिसाथा। तेहिथलभंई सकलकुरुनाथा॥
गीतनृत्य अद्भुत गति करहीं। जो बिलोकिबिधिहरमनहरहीं॥
सबै राग रागिनी नृपाला। तनधरिधरि आये तेहिकाला॥
रासमंडली महँ ब्रजराजा। द्विजसमाजजनुअत्रिजभ्राजा॥
दो० जानि सुवस गोविंदकह ज्ञान बिबेक बिहाय।
गोपिन जान्यो विषय पतिश्यामहिं सुनुभुवराय॥
प्रभु सर्वज्ञ बिश्व करतारा। जानिकुमतिमतिकीन्हबिचारा॥
सत्यकहतकबि कोबिद लोगा। सुबुधिनारिसाहिसकनवियोगा॥
निजबशहमहिंसबनपहिचाना। विषयबासनिकपतिअनुमाना॥
मिट्यो विवेक समाज अपारा। अतन प्रतापताप अधिकारा॥
अंक भरहिं मोहिं लाज दुराई। सत्य प्रेम दीन्हा बिसराई॥
होहुँतिरोहित छणयकलागी। पुनिनिरखौंकसकरिहिसभागी॥
गुप्तभयउ प्रभु अस जियठानी। श्रीराधाअधि प्रियसँगआनी॥
सार्गस्थिति लयकारक जोई। विषयभाव सो कसरत होई॥
दो० मंगल मतिके हीनजे ते समुझत कछु आन।
तूतजि राधा श्याम पद आनतत्त्व जानिजान॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांश्रीकृष्ण अंतर्द्धानवर्णनोनाम
त्रिंशतिमोऽध्यायः ३०॥
दो० अंतसमय हरिजात पुर अधिकपाप ठहराय।
तौ पावत है निरयपद और अधोगति भाय॥
जो पै सुकृतबहुहोइतौ सुरपुरलहै निवास।

पाप पुण्य दोउ समभये नरहोवै सुखबास ॥
नरकभोग पुनि जन्मको पावैगो भवमाहिं।
क्षीण सुकृत भे पुनर्जग जन्म लहै भ्रम नाहिं ॥
ये दोनों दैसकत नहिं मुक्ति पदारथ कोय।
जो ध्यावै श्रीकृष्ण पद आशु जाय दुख खोय ॥
जरामरण बंधन कटै सुनु मंगल मन मीत।
याते तू यदुनाथ भजु क्यों भरमत विपरीत ॥

बहुरिमुनीश कहा सुनु भूपा। गुप्त भये जब अकल अनूपा ॥
सब गोपिकन चक्षु अँधियारा। हरि बिनु छायगयो विकरारा ॥
महागहन बन गहन कराला। असब्याकुलगोपिकानृपाला ॥
जस मणिगतआकुल अहिहोई। अथवा यथा रंक निधि खोई ॥
अरुजिमिदुखितमीन बिनुपाथा। विरहाकुल त्रियगणनरनाथा ॥
रोदहिं बदहिं परस्पर कहईं। कितभे गुप्त कासुसुधि लहईं ॥
पलन वितीत सिरोधी बाहीं। मोरे डारिहृदय लपिटाहीं ॥
क्रीड़ा रास करत हे संगा। बहु प्रकार राचे रसरंगा ॥

दो० जातन देखाकाहु सखि बिधिदुख लिखा लिलार।
हायकृष्ण हाकृष्ण कहि विकल सकल तेहिबार ॥

अहह श्याम प्रणतारतमोचन। अज अद्वैत अगोचर शोचन ॥
प्रीतिकाल भयो संसर्गा। किमघ वियोगवृक्ष बिनुवर्गा ॥
पूछहिं काहि आलि कहँजाई। जगसमरथ न योग मनुसाई ॥
पाद चिह्ननहिं मारगहोरौ। जेहिकृत मिलैं सुकरौ सबेरौ ॥
इमि बतराय क्लेश विरहागी। कानन कुंजन खोजनलागी ॥
हायश्याम केहिदोष बिसारी। जन्म जन्म हमदासि तुम्हारी ॥
तुमसरवज्ञ अनीह कृपाला। अकला नन्तरूप तिहुँकाला ॥
सुकुल बधू हम लाज विहाई। सर्वसु त्यागि शरण तव आई ॥

दो० वियकों खोजत काननहि मिले न माधवराय।
महाबिकल जियकलनहीं कहै त्रिया यहिभाय ॥

यककह सकल खोजहमकानन। मिलेन कौनौ कृतखलभानन ॥

संत मनोरंजन खल गंजन। बूझहिं कौन मिलै दुखभंजन॥
कोउ कह सुनौ सत्य हमभाखैं। जेहि बिधिनाथ दरशरसचाखैं॥
पशु अनंत गामी द्रुम जेते। यहि थल बसहिं मुनीश्वरतेते॥
प्रभु लीला लगि जड़चरभयऊ। लखि रसरासचषनसुखदयऊ॥
इनजाने जितगये मुरारी। प्राणनाथ प्रणतारतहारी॥
सन्तनसबहिं पूछि किनलेहू। आयबताय देहिं दृढ़ एहू॥
तासु बचन सुनि हरिरस भीनी। थावरचरहिं प्रश्नअसकीनी॥
दो० हेबहुपद अहि अशनप्रभु पाकरि पिक हितकारि।
महा सुकृत बश उच्चतन पाया परहितकारि॥
दुख आतप पावस अरु शीता। परहितहितुमसहो अभीता॥
डार प्रसून फूल त्वक पाता। देत परार्थ परम पद दाता॥
तन मन धन हरि दुरे मुरारी। देखे हमहिं कहो सुखकारी॥
हे कदंब तुम विटप अनादी। देहु बताइ श्यामअविषादी॥
हे अशोक हरिपुष्प गोसांई। जात बिलोके तुम यदुराई॥
हे तुलसी आनंद विलासिनि। हरिसेवकउरभक्तिप्रकाशिनि॥
हरिवल्लभा आजु हरि देखे। प्रमुदित भई समोद विशेखे॥
निज किंकरिनि जानि तू माई। नन्दकिशोरहि देहु बताई॥
दो० अपर वृच्छ जे जगतमें पूछैं सबहि अधीर।
मृग पच्छी सबमन दुखित कहैंहरौ घनपीर॥
यहि बिधि पूछत खग मृगबेली। विरहाकुल बनफिरहिंअकेली॥
जबन मिले घनश्यामकृपाला। गहवर बन अशोचसबबाला॥
लागि प्रशंसन प्रभु प्रभुताई। शिशु ताते जो कीन कन्हाई॥
उमगत उर अनुराग अपारा। दूरि गईं तजिथल रस बारा॥
चरण चिह्न देखे तब भागी। जनु सोपान भक्तिपुर लागी॥
अंबुज जव ध्वज अंकुश सोहैं। जो बिलोकि गिरजापतिमोहैं॥
जेहि बालू ऊपर पद चीन्हा। सबयुवतिनप्रणामतेहिकीन्हा॥
जोरज सुरमुनि खोजतअहईं। स्वपनौ कोटि यतननहिंलहईं॥
दो० सोरज माथे लाय तिय चलीं अगमने भूप।

कछुक अग्र चलि चारिपद देखे त्रिय नररूप ॥
तब बिस्मित भईं नारि महाना । को दूसर हरिसँग भगवाना ॥
अल्प दूरि देखी सयनीया । मनो बिराजत दुख हरनीया ॥
कोमल कुसुम बिछे सुखदाई । तापर जड़ित दर्पणी पाई ॥
बिकलबियोग बिबश ह्वै नारी । पूछहिं तासन कुंजबिहारी ॥
उतर देत जो होत सयाना । मुकुर अजीवन उतरबखाना ॥
पूछतसखिहि आलि सुखपागी । रैनि मुकुरलीन्हाकेहिलागी ॥
सुनु जब प्रीतम चोटि सँवारी । तबन बदन प्रियदेखिमुरारी ॥
पाणि सरोज आरसी लाई । लखि प्रतिबिंबमोद उरछाई ॥
दो० सत्य मानि सम्मत करैं नारि परस्पर राज ।
अतिभागिनिसतिभक्तिनी जेहिसंगृहसुखसाज ॥
महातपस्विनि सोत्रिय आली । जेहियकांत विहरतबनमाली ॥
इत अबला मद बिरह दुखारी । विपिनपुण्यखोजहिंभ्रमहारी ॥
उतराधिका श्याम संग भूपा । विचरतिअति आनंदअनूपा ॥
निज बशजानि कृष्णमदछावा । जेहिंकृतजगनकाहुसुखपावा ॥
सकलत्रियनते अधिकबिचारा । श्रीराधिका हृदय अहंकारा ॥
प्रभुसों कहाचला नहिंजाता । बिथकिउपगमम अधिकापराता ॥
जोपै कंध धरि लेहु गोसांई । तौ तुव संग चलौं यदुराई ॥
हरि अंतरयामी नर नाहा । जनमद हरिकृत सहितउछाहा ॥
दो० आइचढ़ौ ममकांध तुम महाप्रियाहौ मोर ।
हाथ उठाये चढ़ैलगि उरसुख उदधिहिलोर ॥
प्रभु अंतरित भये ततकाला । परम कौतुकी मदहरिख्याला ॥
जौन भांति कर सरज पसारे । तिहि बिधि रही अहंपदहारे ॥
जिमिदामिनिकरिमानअपारा । पयद बिहाय दुखित बिकरारा ॥
अथवा तजिचंद्रिका खगेशा । बिकलहोय तजि रहै न लेशा ॥
ज्ञानरहित यशभक्ति नृपाला । तसराधिका बिना जनपाला ॥
गौरवर्ण जनज्योति प्रकासी । अंगारक जननी छबिभासी ॥
जात रूप अचलापर रूपा । जगत मातु अजितभवभूपा ॥

विथुर महान प्राणबिनुजैसे। चित्र रचित दारज भैतैसे॥
दो० श्रवतनयन अंबुज नृपति वपु सुबासुको पाय।
बदन शिलीमुख ग्रसतहैं सो नहिं सकतउड़ाय॥
अल्प काल बीते सुधि आई। अहहकृष्णकहिचहुँदिगधाई॥
श्याम वियोग रुदतबड़ित्रासा। ध्वनिसुनिजड़जंगमदुखग्रासा॥
विलपत खगपशु गणद्रुमबेली। गहवरबन राधिकाअकेली॥
हाहा परमनेह दधिसेतू। हागुणखानि अगुण खगकेतू॥
हास्वच्छंद अखिलखलगंजन। हात्रिपुरारि संत उर रंजन॥
शरणागत पालक सब काला। किमघ परिहरयो दीनदयाला॥
लीजिय सुधि अनुगामिनि जानी। धरमधुरंधर पूरणज्ञानी॥
इमकृत शोर सनेह विलापा। हेरत विपिन कुंजतन तापा॥
दो० तेहि अवसरही सकलसखि पहुँचीं ताढिग आइ।
लाइकंठ भेंटी सबन जानि दुखित कुरुराइ॥
जानिसश्रुकवृषभानदुलारी। अखिल सखिनतनदशाबिसारी॥
संगलाय प्रविशींघन कानन। बसत जहाँ खग मृगपंचानन॥
अवलोकी चंद्रिका जहाँलौं। ढूंढाविपिन अलीन तहांलौं॥
तिमिर निदान गहनबनमाहीं। मारगकतहुं मिलतजबनाहीं॥
हृदय हारि प्रभुध्यान लगाई। लौटीं सकल विरहतनछाई॥
हरिहरि जपत धीरधुतराजा। आय यमुन तट रास समाजा॥
बैठिरहीं मन महागलानी। कृष्णकृष्णकहिशारँगपानी॥
श्रीगोविन्द दास हितकारी। राखत मदन कतहुं बनवारी॥
दो० ऐसी प्रिय गोपी तजी मान जानि यदुराय।
मंगलतू भजु श्याम पद मान मनोज बहाय॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांगोपीविरहवर्णनोनाम
कत्रिंशतितमोऽध्यायः ३१॥
दो० परमातम अव्यक्त जो चतुरानन ह्वै सोइ।
जड़चैतनमयविश्वयहरचतमनतनुबिलोइ॥

चतुर्व्यूहह्वै आपुही पारब्रह्म भगवान।
पहुँचावत है जीविका सबको यथा प्रमान॥
पंचबदन परिणामह्वै संहारत बनिकाल।
बिधिहरि हर यहिते चतुर है एकै जनपाल॥
सोस्वतंत्र भगवान जो स्ववसविरचिनरदेह।
अद्भुतगति लीलाकरी नँद यदुपति के गेह॥
चारि अर्थदाता समुझि कीरति पर्म्मसुढारि।
बन्दिचरण निजइष्टके सो वरणौं निरधारि॥
ऋषिकहसुनुनरकुमुदिनिचंदा। कौतुक सुनि छूटै भवफंदा॥
युवती विरह विवश सरितीरा। प्रभुकृत गानकरैं कुरुबीरा॥
कहैंकिहे प्रीतम गुणपालक। जनमन रंजक खलगण घालक॥
जादिनते ब्रज आइ प्रकासा। तादिनते सुखसिन्धुनिवासा॥
रमारमण गिरिधरण कृपाला। अकलअनीहविदिततिहुँकाला॥
दासी हम तुम्हारि गुणराशी। सत्वर सुधि लीजिय उरबाशी॥
पावस जलद रूप शुभ लोना। जो अवलोकिभूल भवकोना॥
मदमदहरण निरखि छवि सोई। अब न नाथ धीरज उर होई॥
दो० बिना मोल मुरलीधरण चेरिभईं हम सर्ब्ब।
नैन शिलीमुखउरचुभे व्याकुलविरहअखर्ब्ब॥
तुम्हरे तट कौतुक घनश्यामा। फँसीं सकल हम बिरहादामा॥
अबनआश कोउ श्यामहमारी। चाहहिंप्राणतजन गिरिधारी॥
नतरु अवश्य नाथ सुधिलेहू। चितकठोर जनि परिहरि देहू॥
पायदरश परित्यागि बियोगू। अरुनव्यंगजगकहकोउ लोगू॥
यहै मनोरथ त्यागहिं देहा। भक्षत शिखिराखा कृन केहा॥
महामेघ बरषाते राखी। देव अदेव तिहूंपुर साखी॥
नन्दसूनु तुम नहिं करतारा। शिवस्वयंभु तवपद आधारा॥
त्रिदशविनयकरितुमहिंकृपाला। प्रकटायोकहिनिजदुखशाला॥
दो० यहै एक अचरजबड़ा अति अनुचित यदुराय।
निधनदास निजकर करौफिरि रक्षौ कहँधाय॥

घटघट व्यापक बिरुज अनामा। हरिअंतरयामी तन श्यामा॥
निज किंकरिनिबिचारिअघारी। दुखहर किन सुधिलेहुहमारी॥
पूरण करौ लालसा सांई। तुमसम को दासन सुखदाई॥
ललना जानि शून्यता धरहू। अनुचितउचितशोचिप्रभु करहू॥
सुधि आवत मुसुकानि तुम्हारी। जोबिलोकि लज्जितखेचारी॥
सानुराग चितवन प्रभु तोरी। समुझतहोतसुमतिमतिभोरी॥
नैन कटाक्ष बंकता तन्द्री। बूझत तिहुंपुर प्रभुता निन्द्री॥
कंठ नवनि चटकीली बातैं। लखिसुनिअतनभूजनिजघातैं॥
दो॰ सो सुधि आई जगतपति उपजत कठिन कलेश।
कुमुदिनि हम तुम ऋक्षपति दर्शत सुख लवलेश॥
जब सुरभी चारन बन जाहू। मग घेरैं हम दरशन लाहू॥
अरुणोदय ते सायंकाला। पलटत हे तुम मदनगोपाला॥
पाय दरश उर आनँद आवैं। देव याम युग सिन्धु सिरावैं॥
सन्मुख रूप त्रिभंगी हेरी। दोषहि बुधिनलिनी सुतकेरी॥
अक्ष पलक बिरचे जेहिकोरा। इकटकनतानिरखत मुखओरा॥
जो छबि बिबुधन स्वपने हेरत। चहुफलदानि त्रितापनिबेरत॥
इमि भूपाल युवति गुण गावैं। हरि बियोगउर धीर न लावैं॥
श्रीमाधव चरित्र सुखरासी। श्रवण करत जेकटभवफाँसी॥
दो॰ गोपी सोइ बियोग में गावहिं भांति अपार।
आरतमय सुनि प्रियवचन कोनबिकलतेहिबार॥
छं॰ नहिं बिकल को तेहिबार तेहिठा दुधाजावनमें भयो।
अतिकठिन कानमुरारि निजउरतदपि दर्शन नहिंदियो॥
तव मिलन आश सुराखि नारी जीव लालच नशिगयो।
अनचेतनागिरि कश्यपी कहिश्याम यहकृत काभयो॥
दो॰ प्रथम दृढ़ावत दास कहँ सदा श्यामकी रीति।
मंगलदेवतदरश पुनि जानि कमलपद प्रीति॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंगल
दासविरचितायांगोपीबिरहकथनंनामद्वित्रिंशतिमोऽध्यायः३२॥

दो० मरकट जिमि नटवर बिवश नृत्यत नृत्यअनेक।
तिमि मायावश आतमा भूल्यो ईश बिवेक॥
छूटिजाय रज मोह ते जो पलगाधिप जीव।
जाइ मिले निज यूथ महँ तौ पावै सुख सीव॥
सो उपाय नहिं करत हैं महाअधम भवआय।
नहिं सहायता चाहिये आपुहि सकत छड़ाय॥
योग पन्थ अजपा जपे धरे प्रणवके ध्यान।
यही कठिन जो नाबनै तौ करि उत्तम ध्यान॥
आराधै रुक्मिणिरमण भ्रम समस्त बहिराय।
मंगल सानँद अंत सो पूरण पद को जाय॥

श्रीमुनि बहुरि कथन कृतलागे। भूधरकुरु अधिपति के आगे॥
अंतरगति अवलोकि मुरारी। देखा सबबिधि हृदय बिचारी॥
जोन दरश गोपिन कहँ देहूं। तन परिहरैं अयश जगलेहूं॥
यदपि बहुरिहौं सकृत जिवाई। तदपि उचित भेंटौं सबजाई॥
प्रगटे तिनमहँजगपालक अस। दृष्टि बंधि हरिनटप्रगटतजस॥
प्रभु मुखछबि सुरभोग बिलोकी। सकल भई चैतन्य अशोकी॥
बिनु देखे आकुल तन ऐसे। मनुबिषधरडासिगयोतनजैसे॥
गारुड़िरूप श्याम जनु आई। अमृतमंत्र छुतिसीखिजियाई॥

दो० गौरी में सरवर तनय यथा बिकल तिमिबाल।
छत्यारक कुंडलनिरखि बिकसे अच्छ बिशाल॥

नरपति हरि आनंद बिलासी। परिपूरण निरगुण गुणरासी॥
तिनहि देखि युवतीगण राजा। समुदसकलगतबिरहसमाजा॥
इमिप्रसन्न प्रफुलित भईं नारी। थककोउ यथा तरतनिधिबारी॥
पाइ थाह आनन्दहि पावत। को कबि उपमा तासुबतावत॥
वेदसुता घेरयो घनश्यामैं। सब उपस्थित भे तेहि ठामैं॥
तब प्रभु सकल संग थलरासा। भ्राजितभे अघतूल बतासा॥
इक गोपिका उतारि खचीरा। डास्यो तहँ बैठे यदुबीरा॥
क्रोधित ह्वै चारिक व्रजबाला। बोलीं रिसबश सुनौ नृपाला॥

तुम हरि अतिकपटी मनहारी। बौरावत जग सबहि बिहारी॥
दो० देइ प्राण कोउ हेत तुव मानौ गुण नहिं नेक।
तुमसे तुमहीं जम्हकर आन को करै बिवेक॥
इमि भणि कहनपरस्पर लागीं। हम सब जासुनेह अनुरागीं॥
सो कठोर हिय अधिक सयानी। अबसमस्तगति इनकीजानी॥
गुण परित्यागि अवगुणें गहई। सदा प्रपंच रूपये अहई॥
निजमन आनै करै बिचारा। काबशतासोंचलिहि तुम्हारा॥
आन बालकहँ तू मति भोरी। निज मुखकहै बुद्धिकी थोरी॥
तोर कहा हरि मुखहि कहाऊं। तौ सखि मोरचतुर मतिनाऊं॥
अस बतराइ कृष्ण ढिग आई। करि कटाक्ष बोली मुसुकाई॥
कृपा पयोधि प्रश्न इकमोरी। न्यायकरौप्रभु गुणमतिधोरी॥
दो० एक किये बिन गुण गनै दूजे गुणफल देइ।
तृतिये गुण औगुणलखै चौथे गुणनगनेइ॥
चारिप्रकृति के नर ये स्वामी। कोउत्तम कहु अन्तरयामी॥
मध्यम अधम निषिद्ध बखानौ। प्रभु सर्वज्ञ ज्ञान नयजानौ॥
हरिकह सुनौ भिन्न करिकहऊं। भ्रम तृणतोर अग्निनयदहऊं॥
उत्तम जन गुण बिनगुण मानै। पिता पुत्र प्रेमाहिंजिमि ठानै॥
मध्यम परकृत पलटा देहीं। पूरण पुण्यनजग कुछलेहीं॥
यथाधेनु भोजन हित लागी। स्रवतक्षीरनिजस्वारथपागी॥
अधम आन गुणऔगुणलेखैं। शत्रु भाव मित्रहि जोदेखैं॥
महानीचगुण मानन आना। अघीकृतघ्नी कहत सुजाना॥
दो० सुनि हरि मुख ये बचन नृपएकद्वितिय मुखहेरि।
हँसीं सकल गोपालजा बचन कहैंवच फेरि॥
तबश्रीकृष्ण चन्द्र अकुलाने। अटपट बचन ब्यंग अनुमाने॥
कहा न मैं इनचारों माहीं। जो तुमहंसौ अबूझ सदाहीं॥
हौं पुराण पूरुष गुणरासी। जड़चर जीवनके उरबासी॥
जो बाँछा राखौ कोउ मोसन। देउँताहि तजि सर्व सकोचन॥
जोपैकहौ तुम हमहिं गोसाई। गह्वर बिपिन अदोष वहाई॥

यहिकर कारण सुनौ सयानी। करयौं परीक्षा प्रीति पुरानी॥
गुणहुनबिलगहास्यरस जानो। मोरकहाअतिहित निजमानो॥
अबसब भाँति प्रीतिदृढ़ देखी। हौंमम प्रिया सप्रेम बिशेखी॥
दो० कीन्ही मोसँग प्रीतिशुचि लीन्हा पूरण ज्ञान।
मनौरंक निधिकर गही मेट्योक्लेश महान॥
बीतराग यश गृहधन त्यागी। दुखसुख परिहरिहैं अनुरागी॥
सेवत कुबलय पाद हमारे। अंत मोरबपु लहत सुखारे॥
तथा तुम्हारि बिलोकि दृढ़ाई। रसना ममकरि सकन बड़ाई॥
नेहअखंड अलौकिक ठना। श्रुति मारगजस कहा प्रमाना॥
बिधि आयुर्बल समतन राखौं। प्रीति प्रशंसा तुम्हरी भाखौं॥
अऋण न होउ सत्य ममबानी। सुनौ निकर तुमबुद्धि सयानी॥
सोजन मूढ़ज्ञान बिनुसोई। जाहिन मोर प्रेमदृढ़ होई॥
नरनागर गुण सागर जोहैं। मोर भजन तत्पर जगसोहैं॥
दो० समाधान सबकर कस्यो इमिश्री मुख असुरारि।
मंगल तूतजिअपर श्रम भजिले श्याम मुरारि॥
इतिश्री मद्धिविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रि
यायांमंगलदासविरचितायांगोपीश्यामसंबाद वर्णनो
नामत्रैत्रिंशतिमोऽध्यायः ३३॥
दो० कुछ मूरुख संयोग करि चलेपन्थ मुदमानि।
मारगमें सरिता तरतश्रम उपज्योउर आनि॥
बूड़िगयो सरि एकजन यह बिचार सतिभाय।
गनै जौनु नहिंनिज गुनै एकहीन पछिताय॥
अल्पकाल दुख प्राप्तभे कोउपंथी गुणखानि।
न्यारे न्यारे सकल ते समुझाये जब आनि॥
तबपायो आनंदतिन तिमिबिनुहरिगुणगान।
बूड़िगयो बिषया बिबश कौन करै सज्ञान॥
तू मंगल सुनि सीखमम त्यागुमोह भ्रमभूल।
भजिले राधा बल्लभै मिटै सबनकी शूल॥

श्रीमुनि पुनर्बाक्य इमि कहेऊ। जोकरिश्रवण भूपसुख लहेऊ॥
जबश्री श्याम सरसबच गायो। शिरपरि हरिगोपिनमुदपायो॥
उठिप्रभु साथ कुतूहल करहीं। अमित भाँतिआनँद उरभरहीं॥
माया योगरूप तब ठानी। अगनित रूपअंश अनुमानी॥
चाहत सबहि दीन सुख सागर। लीला पर्म्म सनेह उजागर॥
प्रति गोपिका बपुष निरमाना। कृपाउदधि प्रभु पर्म सुजाना॥
सकल संगपुनि मंडल रासा। पुनरारंभ बिलास प्रकासा॥
बिबियुग नारि जोरि युगपानी। नृत्यतमध्य आपु सुरध्यानी॥
दो० बूझैं सब निजनिज तटहि लखैन मायारूप।
करहि प्रबिष्ट अंगुली फिरैं नारि कुरुभूप॥
इक गोपिका तदन्तरश्यामा। इदमंतर गोपिका ललामा॥
नीरद घटा तड़ित जनु राजै। बा हरि संग नीलमणि भ्राजै॥
यहिप्रकार अबला प्रभुसंगा। करैंभूप बहुबिधि रस रंगा॥
यंत्रनिकर बाजहिं रुचिनीकी। गंध्रबताल सुनत तेहिंफीकी॥
खरज ऋषभ गंधार सोहाई। मध्यम पंचम धैवट गाई॥
और निषाद सप्तसुर जोई। गावतराग देह धरिसोई॥
भैरव मेघ मलार अनूपा। दीपक श्रीहिंडोल स्वरूपा॥
मालकोश युत ये षटरागा। राज रहस्य धाम अनुरागा॥
दो० कोटिऊन पंचास जे तान कहीते सर्ब।
एक दोय युत मूर्छना सोहैं तहाँ अखर्ब॥
ह्रस्व दीर्घ अरु लुप्तसह राजैं तीनों ग्राम।
नभरसश्लोक समेतनृप तालबजैंसुखधाम॥
नृत्यहिंश्याम सकल बिधिगाई। परिपूरण बरणैं को भाई॥
त्रैपुर कर्ता त्राता हारी। तेहि रहस्यबदकिमितनधारी॥
मंगल आनँद अमित अपारा। निजतनमन सब काहूहारा॥
अंचल रहित होत कोउ गोपी। मग्न रहस्य जाननहिं सोपी॥
कतहूं मुकुट श्याम खसिजाई। बूझिन परत रासमति छाई॥
नारिनिकीशशिमोतिनमाला। टूटगई नहिं जान सुँधाला॥

प्रभु बनमाल गई अरुझाई। महा अनंद कहौं किमिगाई॥
स्वेदबिन्दु शुभ सोहललाटा। मनौ गुलिक कर सोहतठाटा॥
दो० कुमुदबंधु मुख त्रियनपर कच अलकावलि भूप।
सुधालोभ जनु पवन अरि शशि लपिटान अनूप॥
कतहूं प्रभुमुरली समनारी। गावतासु सुर सम दै तारी॥
कोउकोउनिजसुरतालसमाना। करतअलापबिलगसुखजाना॥
बंशी ध्वनि समपूरण जबहीं। कहततान गोपी हरि तबहीं॥
ठगिसे रहत आपु असुरारी। जिमिबालक आरसी निहारी॥
गानतान इमिनृत्य अलोकी। जिन निरख्योतेभये अशोकी॥
अजहूं जाहि सुनत मुदबाढ़ा। मममन मनौ भयउ तहं ठाढ़ा॥
करहिं कटाक्षहाउ पुनिभाऊ। अकथअलखहीरगोपिनचाऊ॥
भेटहिं भले लाइउर उरहीं। जोसुनिमुनिमनदृढ़भ्रमपरहीं॥
दो० धाता शिव इन्द्रादिसुर पुनि गंधर्ब सनारि।
चढ़े विमान अकाश सब देखहिं राससुखारि॥
छं० देखहिं सुखारी नृत्य गानहिं कुसुम अवली छोरहीं।
सुरबाम हँसि हँसि परस्पर आनँद निकर तृण तोरहीं॥
पुनिकहैं हे करतार हमकहँ करसि कसनहिं गोपिका।
करिरास प्रभुसंग सुयश लहतीं भईं सुरत्रिय सोपिका॥
दो० राग रागिनी तालसुर सकल सजे यहि भाँति।
यमुनाजीकी गतिथकी पवनौ मंद बहाति॥
उडुगण संयुत द्विजपति थाके। छुटे प्रबाह सोककरभा के॥
बरख्योसुर अहार दिशिचारी। गयो सोइ जगभयउ सुखारी॥
भइ षट मास केरि निशि सोई। तदपि न जान चराचर कोई॥
ब्रह्म रैनि ताकर भा नामा। यहि कारण भूपति सुखधामा॥
प्रभु उर दधिकृत रास भुवाला। उठी तरंग समोद बिशाला॥
सबहि संग लै भानुज तीरा। जाइ करत भे क्रीड़ा नीरा॥
कछुक काल कीन्ही यह लीला। प्रभु समर्थ सर्बज्ञ सुशीला॥
श्रम मिटाइ बाहर असुरारी। कहा सबन प्रतिबचन पुकारी॥

दो॰ भयो मनोरथ सकल तब रही न कौनिउ आश।
कीन्हारास अनेक बिधि दुखगा तिनहिं प्रयाश॥
निज निजभवन जाहुमुदमानी। जाइय किमितजिपदसुतपानी
जिमि योगी राखत ममध्याना। कीजौ तथा ज्ञान परमाना॥
तुम जेहि ठाम रहौ तहँ रहऊँ। जानौ सत्य मृषा नहिं कहऊँ॥
युत संतोष पाइ अनुशासन। गईं समस्त भूप निजआसन॥
जननी जनक तनय भरतारा। काहुन जान भेद तेहिबारा॥
यह बिचित्र लीला सुनि राजा। मुनिहिपूछअद्भुत गतिसाजा॥
सुनिय नाथ करुणाकूपारा। मम सन्देह करिय निरुवारा॥
प्रभु अवतरेउ हरण महिभारा। बेद धर्म जग करण प्रचारा॥
दो॰ तिनपर नारिन संग प्रभु कीन्ह रहस्य बिलास।
यह नर लम्पटकर करम बदत चतुर अनयास॥
भेदन यह जाना नरनायक। नर समानजाना यदुनायक॥
सुमिरत जाहि नशै अघरासी। पुरुष पुराण सकल उरबासी॥
दोष निकर बरजित तट जासू। जोकछुकरै सोह सब तासू॥
जलजयथा भाषिलीन्ह अलीना। आपु समानकरत सुकुलीना॥
नीर सकल शुभ अशुभ महीशा। सुरसरि संगचढ़तशिवशीशा॥
सामर्थी जो कृत जगमाहीं। दोषिककरततिनहिं सोनाहीं॥
कारण करत अशुभकृत जोई। पूत सुयश प्रगटत है सोई॥
अन्धकारि पायो रस मारा। भूषण कण्ठ कीन्ह श्रुतिसारा॥
दो॰ शत्रु धनंजय हार उर कीन्ह बिदित शुभसोइ।
निजहितकरयोउपायनहिं अरुजगकरहितहोइ॥
हरिगति सबौ भांति अपारा। निकरा लिप्त लिप्त निरधारा॥
जीव चराचर जेतिहुँ लोका। बसत सबनके उरहि अशोका॥
न्यारा बूझि परत अस भूपा। जल अरबिंदी दल अनुरूपा॥
गोपिन की उत्पत्ति जोराई। सोप्रथमहि हौं बरणि सुनाई॥
बेद ऋचा अरु शक्ति सोहाई। नारि शरीर बिरचि ब्रज आई॥
हरिदर्शन परसन हित लागी। भई सकल तेहरि अनुरागी॥

यहि विधि श्रीवृषभान किशोरी। मुदते हरि पद प्रीति न थोरी॥
लीन रहै सेवा महँ सोई। कहेउ प्रसिद्ध कथा यहगोई॥
छं० कीन्हा प्रसिद्ध पुराण यह जे चतुर सज्जन गाइ हैं।
कल्याण कीरति विजय तेनर सर्ब बिधिमुदपाइ हैं॥
हरिकर्म्म उरनहिं लाइकै सानन्द शुभयश ध्याइहैं।
निरवाणपद सायोज्य मुक्तिहि चतुर नर सोपाइहैं॥
दो० कथा रुचिर अघशशाहरि प्रभु रहस्य शरध्याय।
निज बुधिके अनुसार सो कहा भूप समुझाय॥
दो० तेसूरुखजे अमित जग त्यागि श्याम असुरारि।
तू मंगल तजि मोह मद भजिले प्रभु दैत्यारि॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांपंचाध्यायीरहस्यलीला
कथनंनामचतुर्त्रिंशतिमोऽध्यायः ३४॥
दो० अहंकार निज हृदय धरि लौन पूतरी एक।
अवगाहन निधि नीरको गई सो अतिअविवेक॥
आपुनशानी जल मिली थाह बतावै कौन।
इमिरुक्मिणिपतिचरितदधिजगमतिपूतरिलौन॥
करै कृपा जो कृपायतन तौ कछु बरणौ सोइ।
नातरु कोटिहु जन्म लगि पारलहै नहिं कोइ॥
मैं निज उर धरि श्याम पद श्यामा पादपनाय।
बरणौं उज्वल सुखद भल हरि चरित्र मुदपाय॥
श्रोता जिज्ञानी चतुर बक्ता ज्ञान निधान।
श्रुतिदै श्रुति मत श्रुतकरौ लहौ सकल कल्यान॥
मुनिगुणखानि बहुरिइमिकहेऊ। जोसुनिभूपअमितसुखलहेऊ॥
जिमि प्रभु विद्याधरहि उधारा। अरु जस शंख चूड़कहँमारा॥
सो प्रसंग अति रुचिर सोहावा। कल्पारत जो शमन कहावा॥
गोपन नन्द कहा दिन एका। श्रवण करौ सममभक्तटेका॥
जब श्रीकृष्ण जन्मभा माई। तबहौं जगदंबिका मनाई॥

प्रण कीन्हा करिहौं तव पूजा। भानु वर्ष सुत भये अरूजा ॥
सोत्साह सम परिजन बासी। मुदमंगल मय आनँद रासी ॥
सो दिन जगजननीकी दाया। आवातात अधिक सुखछाया ॥

दो० चलो सकल मिलिचलैं अब करैं तासु अरचाहि।
सुख दाता दुख हारिणी जगत मात सो आहि ॥

सो० सुनत नन्द के बैन उठे निकर गोपाल जा।
आयेनिजनिजऐनअशनपाकबहुविधिकिये॥

सामग्री लै सकल पदारथ। नंद द्वार आये अरचारथ ॥
श्री नँदराय पाय सुख भारी। दधि माखन बहुअन्नसवारी ॥
भार भराय शकट रुचि मानी। गवनेकुटुंब सहित नृपज्ञानी ॥
देवि स्थान पहूंचे जाई। सरस्वती सरिसकल नहाई ॥
कुलगुरु बोलि वेद विधि जैसी। पूजा कीन्ह महीपति तैसी ॥
अखिलपदारथ बिबिधबिधाना। धरे भूप देवी अस्थाना ॥
परिक्रमा करि दोउ कर जोरी। कह्यो नंद पुनि बचन बहोरी ॥
तुम्हरी कृपा मातु मम सूना। भयो वर्ष द्वादश मुद दूना ॥

दो० इमि बदि करि दंडवत नृप बाह्यालय पुनि आय।
सहस बिप्र निवते तुरत भोजन दीन कराय ॥

पूजत बिनवत कृत ज्योनारा। भई महीपति अधिकअबारा ॥
रैनि बास कीन्हो तेहि ठाई। ब्रजबासिन समेत नँदराई ॥
नंद तल्प तट यक अहि आई। चरणानन गहि लागचबाई ॥
हरि विलोकि व्याकुलभे नंदा। लखिस्वर्भानुबिकलाजिमिचंदा॥
विह्वल कहत कृष्ण हे श्यामा। त्राहित्राहितिहुपुरअभिरामा ॥
लहुरव सुधि लीजियजनजाता। नतुयह खलभच्छतममगाता ॥
नंद पुकार सुनत सब जागे। करि प्रकाश देखन नृप लागे ॥
अति कराल अजगरतन थूला। नरनारी बशभय अनतूला ॥

दो० यहि अवसर श्रीकृष्णजू नागबिलोक्यो जाय।
हरि ताहि शिर पगदयो सुनौ भूप मुदपाय ॥

हरिपद परसत तजि निजकाया। रूप रुचिर काकोदरपाया ॥

करत प्रद्युम्न जोरि द्वौ पानी । जयजय श्याम बदास्तवानी ॥
पूछ्यो ताहि आपु असुरारी । कौसिककरमतन रहसिदुखारी ॥
किमघ बपुष भूधर करपावा । ममपद परसि दुखौघनशावा ॥
तब शिरनाय जोरि मुखबाहा । करि विज्ञप्ति कहेउ नरनाहा ॥
क्षमाराशि सुनु अंतरयामी । गुण कालज्ञ नभगवरगामी ॥
प्रभु जानत उत्पति अवसाना । तदपि प्रश्नवत् करौंबखाना ॥
सुर बिद्याधर नाम सुदर्शन । अमरलोकनिवसौंआनँदसन ॥

दो० अहंकार निजरूपकर नहिं ममहृदय समाय ।
तव मायावश ज्ञानहत सुनुकृपाल सुरराय ॥

यानारूढ़ दिवस यक स्वामी । चल्योंभ्रमनजग अंतरयामी ॥
जहँ अंगिरा ऋषय तपसाधत । सानँदनिज आतमआराधत ॥
तिनके शिरपर ह्वै शतबारा । आयउँ गयउँनकीन्हबिचारा ॥
एककाल मुनि लखि परछाई । निरख्यो स्वामिन नैनउठाई ॥
मोहिं बिलोकि क्रोधउर छावा । ऋषिसकोपियहवचनसुनावा ॥
होहुजाय अजगरअभिमानी। पुनिनचलसिइमिमगअनजानी ॥
चक्षुस्रवातन तत्क्षण पाई । पर्यौंभूमि सुनुजगसुखदाई ॥
ममगतिलखिमुनिज्ञाननिधाना । कह्यो दयायुत मुक्तिप्रमाना ॥

दो० कृष्ण चरण रज परसिके तू पैहसि निजरूप ।
यहिकारण पद नन्दकर गहेउँ तिहूंपुरभूप ॥

ह्वै दयाल मोच्यो मोहिंआपू । मिट्यो नाथ सँचितप्रथुपापू ॥
असकहि बन्दिचरण करजोरी । परिक्रमा करि बिनयबहोरी ॥
करि दंडवत मांगिअनुशासन । विद्याधर गमनेउ सुरआसन ॥
सुर बिमान बैठेउ मुदपाई । आनकथासुनु नृपतिसोहाई ॥
वृजबासी यहगति अवलोकी । चकितचित्तजिमिरजनीकोकी ॥
प्रातबन्दि जग जननी पादा । गमने वृंदाबन अबिषादा ॥
प्रभुप्रताप उरकृत अनुमाना । कोउकोउमतिसमकरतबखाना ॥
यदपि रहत नित प्रभुसँगराजा । तदपिनजानतप्रभुकरकाजा ॥

दो० निज निज आलय सबगये मंगलआनँदपाय ।

अपर चरित मोदकमहा श्रवणकरौ कुरुराय ॥
एक दिवस हलधर हरिसाथा ।निशादेखिविकसितखगनाथा॥
गोपी निकर संग निजलीने । गावत भये राग सुखभीने ॥
तदाकाल सेवक यक्षेशा । शंखचूड़ अस नाम नरेशा ॥
सुरमणि शीश अमितबलवाना । सो आवत भे तिहिअस्थाना ॥
देखेसि यह कौतूहल तेही । हरि वैभव कछुबिदितनजेही ॥
सुताएक गोपिका ललामा । द्वितियो रहि गावतहरिरामा ॥
हृदयमग्न उन्मत्त मुरारी । निज दासन सुखदेतबिचारी ॥
सो मनमूढ़ अबुध भुवराई । अहमित निजबलमोहबड़ाई ॥
दो० अखिलनारि गहिलै चला बिलखानी सबबाम ।
त्राहित्राहि श्रीश्यामजी कोउकह हेबलराम ॥
दीनबन्धु सुनि दीन पुकारा । सत्वरचले सबन्धु भुवारा ॥
सिंहठवनि करि तरुन उखारी । पहुँचे तिन ढिग राम मुरारी ॥
अभयहोहु भयकर भय नाहीं । प्रणतारतहर अहौं सदाहीं ॥
काल कलेवर निरखि कृपाला । शंखचूड़ भाग्यो ततकाला ॥
प्राणआश खंडित भै तासू । जानसि यक्षभयउमम नासू ॥
मूशलगह युबतिन तट रहेऊ । प्रभुनकोपिताढिगचलिगयऊ॥
कचकरजीव तथा गहिलीन्हा । पकरिकेश माहि मर्दनकीन्हा ॥
मंगल मूरति शिर हरि तासू । मणिग्राही मणिधारी पासू ॥
दो० दीन्ही रामहिं आनि सो कृपासिन्धु भगवान ।
किमि वरणौं प्रभुकरचरित सुरदुर्लभजगजान ॥
बहुरि आय निजधामप्रभु करि कौतूहलसाज ।
मंगलमन सुनिसीखमम ध्याउचरण ब्रजराज ॥
इतिश्री नद्धि विधाकलिकल्मषांचकारादिनमाणि श्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासांविरचितायांविद्याधरमुक्तिशंखचूड़वध
कथनंनामपंचत्रिंशाततमोऽध्यायः ३५ ॥
दो० विषइनको चिंतन करत होत संग उत्पन्न ।
संग प्रजातक कामुहै जानत बुद्धि अखिन्न ॥

कामहि के संयोगते उपजत क्रोध महान ।
क्रोधहि सम्भव मोहहै यहवरणत बुधिवान ॥
मोह स्मृतिनाशक प्रबल ताते बिनशै बुद्धि ।
बुद्धि नशे यहिजीवकी नाशिजातहै सुद्धि ॥
यहिकारण बुध परिहरै विषय चिंतवनसर्व ।
कामक्रोधआदिक अखिल छूटिजायखलगर्व ॥
जब मनआवै बुद्धिबश तब तजिआनउपाय ।
गावै राधानाथ यश रहै मुक्ति को पाय ॥

मेदिनिपति सुनुसुरुचिकहानी । कहौं तूल पातक सुतपानी ॥
हरिसुरभी कानन नितचारहिं । जबलगिपुनरपिगेहसिधारहिं ॥
ब्रजबनिता तबलगि नँदगेहा । जुरि समस्त बैठैं हरि नेहा ॥
नँदरानिहिप्रभुसुयशसुनावहिं । प्रभुकृतबिपिनस्त्रगेहबतावहिं ॥
बाजत बंशी सुखद सुजानी । मोदत व्योम थलापा प्रानी ॥
वृंदारक सबाम खग भूले । वेद रंध्र ध्वनि सुनि उर फूले ॥
कर भूषण बासन धर धाये । मनगतिथकि विह्वलतनछाये ॥
रागसकाय बेणु सुरबासी । तजतध्यानश्रुतिसुनतउदासी ॥

दो० गावतजन बल्लभ समुद नारि पुरुष अस जोय ।
सो भूले अचरज न कछु जड़हु प्रेमवशहोय ॥

प्राचीजा जाता गति फेरी । विथकी धेनु लई तिन घेरी ॥
दाता चीर भ्रमण परिहरेऊ । हरिशिरसुखदछांहतिनकरेऊ ॥
पवनपरम त्रैनिजनिज औसर । बहे इलापति प्रभु तनऊपर ॥
जो कौतुककृतसजनी श्यामा । ते जानत निरखत वहिठामा ॥
सघनकुंज चलिगये मुरारी । कृत कौतुक पूरब बर नारी ॥
पुनि बंशीबट आइ बिराजे । लखिविनोदसुरतियगणराजे ॥
बिहरे पुनि गाइन के पाछे । घेरियमुनजल प्यावहिं आछे ॥
संध्या भवन गवन प्रभु करेऊ । रम्भत सुरभि बेणु ध्वनि भरेऊ ॥

दो० यहिप्रकार गोपाल त्रिय नितप्रति गावहिं गाथ ।
सुनौ महीपति ज्ञाननिधि पावन यश ब्रजनाथ ॥

अह निशि इमि गोपी नशाई। प्रभु प्रताप बरणहिं मुदपाई ॥
बीचहि मिलहिं श्याम कहँजाई। प्रति बासरनिशि आननपाई ॥
आनंद कंद कुमुद भव चंदा। सन्मानहिं सबकहं सानन्दा ॥
गृह गृह जाय रैनिहरि ध्यावहिं। प्रातभूतजस पुनरपिगावहिं ॥
यशुदारज मंडित प्रभु आनन। अंचलपोंछि भेंटिखलभानन ॥
कंठ लगाय अकथ सुख छावैं। उपमा कवित राज नहिंपावैं ॥
यह चरित्र हरि भानु प्रकाशू। किल्विषतिमिरहरतदशआशू॥
मेटत कुमति ज्योति तारागन। कृत भ्रमअंध उलूकसनातन ॥

दो० जगत भूत बुधि भूल बश सोवत देत जगाइ।
लागत कारज नेहहरि गुण गावत मुदपाइ ॥
मंगलते मतिहीन हैं परे बिषयके जाल।
ते भूले तोसों कहा तू भजु मदन गोपाल ॥

सो० समरथ आनन कोय राधानाथ बिहाय जग।
देहहि तो कहँसोय जो इच्छा करिहौ चतुर ॥

इति श्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्ण
प्रियायांमंगलदासविरचितायांगोपीबिनोदकथनंना
मषड्त्रिंशतितमोऽध्यायः ३६ ॥

दो० जिमि प्रसून महँ गंधिबस घ्राणेन्द्रिय चिनतात।
लखिन परतकौनौ यतन यह प्रसंग बिख्यात ॥
अथवा जिमि मेंहँदी दलन बसत अरुणताठीक।
बिनु संघटन न जानिये प्रगटै नीक न फीक ॥
तैसेही यह आतमा जानि परतहै नाहिं।
निबसत काया गेह महँ ज्ञानी यदपि कहाहिं ॥
गुरु दयाल सांचो मिलै मारग देइ लखाइ।
परखि परै तो सत्य यह सब भ्रमणा बहिजाय ॥
जो न बनै यह बात तौ ध्यावै राधा नाथ!
अंत मुक्ति पावै सही बदत बेद बुध गाथ ॥

पुनिमुनि कहेउ सुनौमहिपाला। एक दिवस हरिरामगोपाला ॥

सायंकाल धेनु सँग लाये। आयत ओर चले सुखपाये॥
तस्मिनकाल असुरबलखानी। वृषभकलेवर धर अभिमानी॥
सुरभी व्यूह मध्य मिलि आई। कठिन बज्रवत देह बनाई॥
दिवि लगिकाय भयानक राजा। शृंग प्रलंब तीव्र द्वौ भ्राजा॥
क्षतज बिलोचन पूंछ उठाये। गर्जत महि मर्दत मुद पाये॥
खनत मेदिनी खुर अकुलाई। सुमनस अम्बर चलेपराई॥
दिशापाल कम्प भयमानी। सबकोउबिकलनपरतबखानी॥

दो० थरहरात महि शेष शिर स्रवत गर्भ सुरभीन।
प्राविट घन गर्जत दनुज बरणत बनन प्रवीन॥

बिचली धेनु नीरनिधि आसा। सिमिटग्वालआये प्रभुपासा॥
करि प्रणाम कह सुनौ कृपाला। आगेवृषभ रूप रचिकाला॥
क्षीरद बृंद सकल बिचलाये। हमभयभीत भागि प्रभुआये॥
प्रभु सर्वज्ञ जानि सब भेवा। कहेउ असुर है वृषभनएवा॥
होहु अशंक काल है याको। आशुभनतहौं सब बलताको॥
अस बदि अग्र गये बनवारी। क्रुधितबचन कहवृषभप्रचारी॥
कपट शरीर बिरचि कत आयो। ममप्रतापखलसुनिउनपायो॥
किमि कृत वृथा प्रजल्प अपारा। देत किमर्थ आन दुख सारा॥

दो० आवत कसनहिं निकट मम ओकपटी मलखानि।
काल काल श्रीकृष्ण मैं तो सम खल कृत हानि॥

असकहि ताल बजाइ प्रचारा। करु सँग्रम मम साथ अपारा॥
प्रभु बाणी सुनि धावा कैसे। मघवा अस्त्र प्रबल गतिजैसे॥
जस जस हरि तेहिपाछे टारत। तसतस खलगर्जतललकारत॥
तब प्रभु गहि मर्देउ महिताहीं। पुण्डरीकअहिजिमिभ्रमनाहीं॥
म्लान असुर उठेउ बलसाजी। तर्पेउ महा प्रलय गतिगाजी॥
उभय शृंग बिचदाबि मुरारी। ग्वाल अमर लखिभयेदुखारी॥
खलाराति कौतुक पद तासू। दाबिनिजान्हिशृंगगहिआसू॥
दोबर कीन्हो दुष्ट मरोरी। करतरजकज सबसननिचोरी॥

दो० तजितन सुरपुर सो गयो प्रभु पर बरषि प्रसून।

जैजै ध्वनि भै गगन महँ करत दिवेश प्रहून ॥
बूभि मेष वृक सँग्रम करई। कुशल न बहुरि भवनपग धरई॥
लेलिह जानि भिरै मंडूका। तजै प्राण उपजै उर हूका॥
नाम जासु असुरारि कहावत। भूलि दुष्ट पुनि ताढिग आवत॥
गोप मुदित हरि यशहि बखानैं। तुम बिनु कौनु असुर असमानैं॥
वृषभासुर बध कस्यो कृपाला। सुनि वृषभान सुता तेहि काला॥
आइ श्याम प्रति बिनय सुनाई। कंस अनीति कृत त्रिभुवनराई॥
वृषभनिपात यदपि खल सोई। मारग वेद लोप जग होई॥
यहि कारण तीरथ करि आवौ। तब शरीर काहुइ पर सावौ॥
दो० श्रीराधाके बचन सुनि बोले बिहँसि मुरारि।
जग तीरथ ब्रज बोलिहौं न्हाउसप्रेमसुखारि॥
गोबर्द्धन तट जाइ कृपाला। युगल सरोवर बिरचि बिशाला॥
प्रभु इच्छा बिलोकि अघहारी। संतन सकल तीर्थ मुदकारी॥
कहि कहि निज निज नाम सुहावा। नव कुंडल जल मेलन लावा॥
गये निकर तीरथ करि सेवा। पुनि कुंडल न्हाये जगदेवा॥
तीरथ बाह्य दीन्ह गोदाना। अखिल वेद विधि सुरुचि प्रमाना॥
ब्रह्मयज्ञ करि पावन भयऊ। धेनु महत्व अधिक भव छयऊ॥
राधा कृष्ण कुण्ड वै दोई। पाइ नाम भे पावन सोई॥
अजहूं जे नर कृत स्नाना। मेटत किल्विष संचित नाना॥
दो० अपर प्रसंग प्रमोददा सुनु महिपाल सचेत।
एक दिवस मुनि कौतुकी गे नृप कंस निकेत॥
करि सत्कार सुआसन दयऊ। तब मुनीश यह बरणत भयऊ॥
जौनी बिधि माया ब्रज आई। दाऊ गर्भ यथा हरि लाई॥
हरि अवतार भयउ जेहि रीती। गोकुल गवन कहा करि प्रीती॥
नारद बचन सुनत जड़राई। बोल्यो बचन जीव अकुलाई॥
सत्य ऋषीश कहउ यह गाथा। अति कपटी यादवकुलनाथा॥
प्रथम पुत्र मोहिं हित करि दीनेसि। प्रीति प्रतीति अधिक खल कीनेसि॥
मम रिपु जानि न दीनेसि मोहीं। ठगवत ठगासि पुष्टमति ओहीं॥

असकहि बसुदेवहि बुलवावा। दृढ़ बन्धन खल तुरत बँधावा॥
दो० सरुष कृपाण स्वपाणि गहि कह सुनुकपटी कूर।
साधु जानि तोकहँ तज्यों तू छलकारक पूर॥
नन्द भवन सुत शत्रु पठावा। माया सुता यहां लै आवा॥
अंतःकरण आन मुखआना। आजुनिधनकरिहौं प्रणठाना॥
सुनुशठयेनकपट सह सोहत। जानिभेद कीजै निजकरहत॥
मंत्री भूप मित्र हितकारी। सेवक सतसंगी प्रियनारी॥
जोकर संगहानि बड़ होई। महा कृतघ्नी नरकी सोई॥
आनन मधुर बदै मन दूजी। तिनते आशाकासु जगपूजी॥
स्वारथरत परद्रोह सयाने। सजन अधमते प्रीति बखाने॥
यहि प्रकार बहु जल्पिअभागा। पुनिमुनिप्रतिअसपूछनलागा॥
दो० कृपासिंधुवसुदेव के मनकर लहा नभेव।
निफलगर्भ बलदेव भा कन्या शत्रु अमेव॥
असकहिपाणिनिधनचितआना। तबनारदमुनिबचनबखाना॥
जो बसुदेव बधै नरनाहा। अयशप्रचार होइ भवमाहा॥
यहि कारण बंधन करि राखौ। ममशिक्षानिज उरअभिलाखौ॥
जेहि बिधि रामकृष्णबध होई। करौ उपाय महीपति सोई॥
ताहि बुझाइऋषय गुणराशी। अमरलोक गमने बुधि नाशी॥
यदुपति बन्दी गेह पठाई। केशी बोलकंस अकुलाई॥
तूममहितू सत्य संग बासी। मोसम बली एकजग त्रासी॥
जो अरि रामहनै हितु मानी। तुव गुण मानौंमिटैगलानी॥
दो० पाइ रजायसुभूप कर बंदन करि सुखपाय।
केशी वृंदाबन चल्यो सुनुजोणिप चितलाय॥
पुनि कंसा सुर दुखित महाना। निज मंत्री बोले गुणवाना॥
भौमारिष्ट असुर चाणूरा। शालादिक जे अवर प्रशूरा॥
सभा जोरि कह सबन बुझाई। बैरी मोर प्रगट भव आई॥
मंत्र विनोदक चतुर विचारौ। शत्रु शाल सबों मिलि टारौ॥
भयबश सचिव मंत्र अस दयऊ। तुव बैभव समस्त जगछयऊ॥

रामपुरी समरथ नृप नाहीं। विजय करैं प्रभु जो रणमाहीं॥
राम कृष्ण बध कठिनन राजा। बुद्धि देहिं हम पूजैं काजा॥
मथुरा जब आवैं दोउ भ्राता। निधन उपाय मरण नृप ताता॥
दो॰ सरिता तट द्रुमनारि जो होइ स्वैरिणी तात।
सभयसचिवमहिपालकर नाशत वेगिहिगात॥
जेहि छल बल मथुरा द्वौ भाई। आवैं मत सो देहि बनाई॥
विरच्यौ प्रथम रंगमहि राजा। उत्तम सुफलसाजि सबसाजा॥
जो सुनि नगर ग्राम नरनारी। प्रमुदितमत्र आवैं बिबुधारी॥
हर मखता पश्चात कराइय। महिषमष हितहवन मँगाइय॥
यहसुधि पाइ अखिल ब्रजबासी। आइहि हित उपहार सदासी॥
राम श्याम आवैं तिन साथा। तब कोउमल्लबधै सुनुनाथा॥
अथवा आन बीर धरि मारै। यहि बिधिबध बांधबन बिचारै॥
यह सुनि कंस मोद मनभयऊ। मंत्रसुनत अति सुखउरछयऊ॥
छं॰ छायो महासुख मन्त्र सुनि आनन्द सो ऐसे कहा।
धनि मंत्रदा हितकारि मोरे बुद्धि तुवरणौं कहा॥
असभाषिमल्लबोलाइ दै तम्बोल अतिआदरकियो।
अपराधनिशिचरप्रवल तिन कहँबोलिअसआयसुदियो॥
दो॰ मम अनुजाजा राम अरि जब आवैं यहि धाम।
बांधि बांधियो तिनहिं तब तुम सबकरिसंग्राम॥
सो॰ चिन्ता विनशै मोरि खग ऋषि जोवर्णन कियो॥
लहौ न दुःख बहोरि विभव अकंटक होइ तब।
तिनहिंबुझाइ बोलिअहिपाला। बध्योमोदमय वयबश काला॥
तब बश कलभमत्तबलरासी। राखौ द्वार राम हरि ग्रासी॥
बरबस जब प्रविशिहिनृपद्वारा। अर्जुन अरितब करिहिप्रहारा॥
जो पलाय तौ जाइ न पावै। मल्लहनैं जो इत चलिआवै॥
जो मम शत्रु पछारै कोई। प्रतिफल भल पावैगो सोई॥
इमि समुझाइ मीत हितकारी। मखलागि लगन बदी असुरारी॥
कार्तिककृष्ण शंभुतिथि सोहर। यज्ञमहेश करौ सुमनोहर॥

सायंकाल बोलि अक्रूरा । करि सत्कार भलीबिधि पूरा ॥
दो० पुण्डरीक आसन तिन्हैं करि आसीन भुवार ।
करकरगहि बोलतभयो कालबिवशअविचार ॥
यदुकुल मध्य महागुण रासी । धरमात्मा धीर सुख बासी ॥
मानततुमहिं निकर कुललोगा । लहिदर्शन जानतसुखयोगा ॥
जस बासव हित बामन स्वामी । बलिछलिराजदयोअभिनामी ॥
तेहिप्रकार तुम मम हितकरहू । आन उपायन चितकछुधरहू ॥
वृन्दावनहिं प्रतिष्ठा देहू । सुयश दुहूँपुर यह प्रभुलेहू ॥
देवकि तनय उभय अरि मेरे । आइहिं कहे इहांलगि तेरे ॥
नीति भणत उत्तम भवजोई । परहित सहत क्लेश नर सोई ॥
तापर तुम ममंमित्र अक्षोभी । नहिंकामी क्रोधी नहिंलोभी ॥
दो० जेहिबिधि दोनों बन्धुअरि आवैं लाइय मीत ।
निधनसहज यहिठामकरि भोगोंमही अभीत ॥
प्रबल चणूर कुबलिया दोऊ । द्वैमहँ कोऊ हनैंगे सोऊ ॥
अथवा मैं निजकर बध करिहौं । पापपुण्य कछु उरनाहिंधरिहौं ॥
तापाछे निज पितहि पछारौं । कपटमूल प्रतिकूल विचारौं ॥
सुतसम नेह न अरिसम मोहीं । लक्षति अक्ष सदा ममसोहीं ॥
पुनि देवकहि पंथ धरि जारौं । सब रस मेलि दंड दै मारौं ॥
निधन करौं बसुदेव बहोरी । निज भगिनी परिहरौंनभोरी ॥
हरिभक्तन कर मूल मिटाऊं । निष्कंटक वैभव तब पाऊं ॥
जुरा पयोधि हितू सुचि मेरो । भुवन जासु भयमान घनेरो ॥
दो० नरकासुर बाणादि भट जासु सुहृद छल हीन ।
निजभय कम्पत खंड नव पौरुषराशि अधीन ॥
सो० तिनसोंमिलिकरिनेह मुदिरनाथपुरलगिबिभव ।
करिहौं याही देह यामहँ संशय नाहिं कछु ॥
जो मोसम राखत सतिनेहा । लाइय शत्रु करिय कृत येहा ॥
जाइ नन्दपुर कहियो ताता । भूपतिहर मष कृत सुखदाता ॥
रंग अवनि इषुधी यक सोहै । भंजै ताहि सुभट भव कोहै ॥

अपर कुतूहल होत अपारा। बरणत बनत न मुददातारा॥
यह सुनि नंदुपनंद सग्वाला। मेष महिष उपहार विशाला॥
लाइहि हमहिं देइ सुनुभाई। आवैं संग शत्रु द्वौ भाई॥
सुलभ उपाय बतायो ताता। करियसुहृदसोअत्रशिप्रभाता॥
तुम सज्ञान सकल गुण पूरे। उक्ति युक्ति ज्ञाता सुचि रूरे॥
दो० बनै कह्यो सो जाय तुम जेहि भलि होइ हमारि।
नीति कहत दूतत्त्वकर धरम प्रत्यच्छ पुकारि॥
सो० दूतहोइ गुण राश परकाजी निज हेतगत।
देइसकल अरिनाश बुधि प्रपंच बल आपने॥
सुनि अक्रूर जीव दुख लागा। दशदिशिसुखसुवासजनुभागा॥
अपनेमनहिंगुणतयहिरीती। केहिविधिहरिहिसकिहियहजीती॥
लवान सकत सचान संहारी। द्विजपतिसकतनहरिअरिमारी॥
खंजन पुंडरीक बधनाहीं। मेष अजारिपु हतिन सकाहीं॥
सिंधुथाह किमि पाव पपीला। जानाचहै मसक नभलीला॥
बाल मराल मेरु शिरधरहीं। किमिहरिभक्तिबिनाभवतरहीं॥
असविचारिपुनिमनअनुमाना। जोकहिखलहिंसिखावौं ज्ञाना॥
तौनकाल बशमानिहिं मोरी। औगुण थूलफूल अघ धोरी॥
दो० मीचुहकारत आपमुख कहौं कहा समुझाय।
सभासोहाती भाषियै भणत सकल कविराय॥
जहांनीति पथ लंघन होई। तहांसुनीति कहै सुचिकोई॥
शोभानाहिं मिलै अपमानू। परमचतुर भाषत यहज्ञानू॥
शीसनाइकर जोरि सप्रीती। कंसहि कहा यदुप यहिरीती॥
कृपासिंधु भलमंत्र विचारा। यहि उपाय जाइहि अरिमारा॥
संभव होत असंभव नाहीं। अमिटजलजभवबरण सदाहीं॥
मनुज मनोरथ करत अपारा। होतकर्मवशजो होनिहारा॥
मनचीती होवतन नृपाला। यहआगम शोच्यो तत्काला॥
कोपरिणाम जान कसहोई। कर्माधीन दुःखसुख दोई॥
दो० मानि रजायसु शीशनृप जाव अवश्य बिहान।

संकर्षण यदुनाथ कहँ लाउब बचन प्रमान ॥
असकहि निज आलय गये बुधि सागर अक्रूर।
मंगल भजिले श्याम पद क्यौं भटकत मनकूर ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकंसनारदादिसम्बाद
वर्णनोनामसप्तत्रिंशतिमोऽध्यायः ३७ ॥
दो॰ पारसको गुणजान किमि कोलभील बनबास।
उपलजानि पाये तजत लहतन पारसत्रास ॥
तिमि मूरख लहि चतुरनर गुणनिधि कृतअपमान।
जानेविनु नहिंदोषकछु जानत विबुध महान ॥
सुनि पछितावत अंतपुनि जानिगुणाकर रूप।
याते अधम अवुद्धजग परे विषयके कूप ॥
राधावल्लभ सुयश शुचि जानि परिहरत सोइ।
यमपुर में पछितात फिरि कहा कहौं तबहोइ ॥
तू मंगल सानन्द यशगाउ श्याम करमीत।
पावै सकल सुकामना छायरहै शुभगीत ॥
जिमि केशी व्यौमासुर मारा। नारदजिमिअस्तुतिअनुसारा ॥
सो चरित्र सुखदानि महाना। चितदै सुनौ समाद सुजाना ॥
तुरंग स्वरूप असुर ब्रजआयो। महाभयंकर जगदुखपायो ॥
कोपवलित दृगअरुणविशाला। कृत फुंकारमनौ अहिपाला ॥
कर्ण पुच्छ ऊरध गति कीन्हे। निजसुरमहिमर्दतअनचीन्हे ॥
इला चरण पटकत पविपाता। बोलत नीरद शब्दअघाता ॥
ताहि बिलोकि गोपगण भागे। आये सकल श्यामके आगे ॥
अश्व एक प्रभु रूप भयानक। आइगयोयहिठाम अचानक ॥
दो॰ लक्षतहीं भयउर छयो भयो ज्ञान को नाश।
सुनतश्याम आये तुरत खलतटनृप अनयाश ॥
पाटवास कटि बांधि मुरारी। ठोक्यो ताल सगर्ज गजारी ॥
कंस सुहृद दोहदशुभताको। वपु वाहन आयो मृतु हाको ॥

आननकहा प्रचारत नीचा। ममअविदूरि आउतजिबीचा॥
देखौं तव पौरुषखल आजू। कबलगि दीप पतंगा काजू॥
मदरज मृत्यु पासगलतेर। परो अधम आयो ममनेरे॥
सुनि दुर्नाद क्रोध उर बाढ़ा। करतमनोरथ निजमनगाढ़ा॥
आजुत्रिलोकौं हरि बलपूरा। रच्चहुं कुल अब भंजिगरूरा॥
मित्रकाज करि जाउं अगारा। चहतपर्पील अमृतनिधिपारा॥

दो० मुख पसारि धावत भयो करिजड़कोप अपार।
जनु जग भक्षक तन धर्‍यौ गहनचहत संसार॥

सो० लील यैव तेहि घात प्रथम श्याम टारत भये।
प्रभु सुखपूरणगात दैत्य देखि जलनिधि घटत॥

वार द्वितीय असुर पुनिधावा। गरजत घोरश्याम तटआवा॥
तासु बदन निज भुजअसुरारी। कुलिशकठोरकीन्हपुनिडारी॥
पेल्यौ करिबल सहज कृपाला। दिगद्वारा मूंद्यौ महि पाला॥
विह्वलह्वै कृत मन अनुमाना। भयोनिधनजाइहिममप्राना॥
यह कसिभई काल मुख चापा। बल अपारनाश्यो परितापा॥
गति भइमोरि मीन बनसीसी। निजलयमेलजीवबिनमीसी॥
तस मैं आपु कालकर भच्छा। तटनबंधु हितु करै जो रच्छा॥
शक्ति अनेक भांति बलठाना। नृप उपायकीन्हे खलनाना॥

दो० कामन आव उपाय कोउ रुन्यौ स्वासखकेर।
जठर फाटि छूट्यो रुधिर सरि धारातेहि बेर॥

सो० ग्वाल सखा सब आय यह अचरज देखनभये।
प्रभु आगे चलि जाय गंधावटप तल शोभिये॥

यहि अनमिषऋषि कौतुकरूपा। कर बीणा आये तहँ भूपा॥
अभि बन्दन सनीति करिराजे। तिहुसमाज गुण हरिकेसाजे॥
अनुकम्पा कूपार अपारा। तव प्रतापको जानन हारा॥
करण नेति कह पावन भेवा। चरितअकथकोकहिसकदेवा॥
कवि बुध चतुर आन संसारा। निज मतिसरिसकरतसुविचारा॥
परिपूरण कथि सकत न कोई। जापर कृपा जाननर सोई॥

गुण रत्नाकर तुम्हरी दाया। एक परन्तु भेद हौं पाया॥
रचि स्वतंत्र मानसवपु स्वामी। भक्त सुखद उर अंतरयामी॥
दो० इलाभार तारन निधन खल अपयशी विचारि।
सन्तरंज आपुहि भये ब्रज नरतन असुरारि॥
सदादास रंजन गुण सागर। करतसुयशतिहुलोकउजागर॥
कल्प कल्प धरिबहु अवतारा। कर सरोज धरभार उतारा॥
अबजस उचित होइ तसकरहू। दासन के कलेश प्रभुहरहू॥
विहसितिनहिं आयसुहरिदीना। नतिसति करिसुरमारगलीना॥
गोपालक जे सखा सुजाना। तिनहिंबोलि बटतटभगवाना॥
राज सभा करिखेल सचारा। मंत्री मित्र प्रधान प्रचारा॥
चमूपाल गोपाल बनाये। विभुवैभवप्रति आपु कहाये॥
न्याय शास्त्रते अधिक नियावा। गोपी नाथ समोद चुकावा॥
दो० चोरमहीचनि खेलिपुनि विरचिश्यामदैतारि।
आन चरित अब भूपसुनु भूपतिकंससुरारि॥
केशी निधन कर्यो नँदसूना। ब्योमासुरहि कहतरुट दूना॥
तू अजीत भव कलित प्रतापा। ममहित अरिहिदेहकिनतापा॥
जसहरिकाज केशरी जाता। तसतूमोहिं अखिलसुखदाता॥
शत्रु घात करु आजु प्रवीना। मोरेकाज लाज धरु हीना॥
जोरि बाहु आनन मुखबानी। सविनयनृपहिकहत अभिमानी॥
निज बश सरिस करौंहिततोरा। पर्म धर्म सेवक यह मोरा॥
यह शरीर जड़ अंतहु अंता। मीतभूपलगि तज बुधवंता॥
प्रिय जीवन स्वामी हितजीवा। लाज्जित दैनसकतअघसीवा॥
दो० सेवक बनिता धर्म यह पतिहित तजै शरीर।
चल्योप्रतिज्ञाकरि तुरत असबदिखलरणधीर॥
वृन्दाबन तट रूप गोपाला। हरिमायाबश रचि महिपाला॥
गयउ जहां प्रभु खेलत राजा। पूरुब खेल बाललै आजा॥
करि प्रणाम हरिसों कह बानी। मम मन तुवसँगखेलहुंआनी॥
निकट बोलिकहखलमदभानन। समुदयथामृग लखिपचानन॥

अन्तरगति बिचारि तेहिकेरी। कुछ न कानि मानै तू मेरी॥
निधड़क कौतुकरच्यो सुजाना। जो करतव्य कर्म्म अनुमाना॥
अकर करत करता अपलोका। प्राप्तिकहोतअमितअपशोका॥
हरषिलवा जिमि जूह सचाना। किधौं कुरंगब्यूह अहिभाना॥
दो० किधौं कलभ द्विज राजपै बृकराजी जनुमेष।
जातभयो अंतक बिवश करिउर गर्व विशेष॥
कौतुक करहु मेष बृक केरा। कह्योश्यामप्रतिखलतेहिबेरा॥
हँसिकह हरि वृक बनुतू भाई। मेषरूप मम सखा सहाई॥
बिपुल पुलकयक दुहिताभयऊ। कौतुकनिधिदूमरदिशिलयऊ॥
यक यक गहिलै जाय उठाई। कन्दगाद्रि नृप राखहि जाई॥
उपल द्वार दै बहुरौ सोई। लै मूंदे रह सखा न कोई॥
अकसर हरिहि पाइ मदछावा। बचनसमर्षित प्रभुहिसुनावा॥
आजु कंसकर कारज करहूं। यदुकुल हनौ भूप भयहरहूं॥
परिहरि ग्वाल रूप बिबुधारी। सत्य अजा रिपु काय सम्हारी॥
दो० झपट्यो कोपितश्यामकहँ कण्ठगह्योतबश्याम।
हनि मूकन भूतन धस्यो मष पशुसम तेहिठाम॥
सो० अन्तर गति भवरूप सखा गुफा ते मुक्ति किय।
मंगल तिहुँपुर भूप करतचरित अहि जम निये॥
इतिश्रीमद्विबिध किल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्ण
प्रियायां मंगलदास बिरचितायां केशीव्योमासुर
बधबर्णनोनामअष्टत्रिंशतमोऽध्यायः ३८॥
दो० सुनत मूढ़जब चित्त दै गुणिजनको उपदेश।
चतुर होत संसर्ग बश रहतन दुर्बुधि लेश॥
जिमि कुधात्त पारस परसि तजत बरण अनयास।
सुंदर काय हिरण्यलहि करत भूप शिरबास॥
द्विजसुजानसँगपढ़त ज्यों हरियशसहितसनेह।
ताप्रमाण मूरुख स्वजन होतसंगबश तेह॥
जेभरमत भवदधिकुमति तेनलहत मतसत्य।

तजिकै रुक्मिणि रमण पद पावत अंत अपत्य।
तूमन मेरी सीखसुनि परिहरु आनविचार॥
अभय ध्याउ असुरारिपद नशैसकल अघभार।
नरकुमुदिनिशशिभूपतिसुन्हू। विशदचरितहरिकर यहगुनहू॥
पूषण तिथि केशी नभ मारा। प्रात त्रयोदशि कंस जुहारा॥
आज्ञा पाय चला अक्रूरा। वृन्दाबनहिं सुमति गुणपूरा॥
रथारूढ़ सानन्द सिधाये। कृतविचारमग अमितसोहाये॥
को जपतप मख तीरथ दाना। आजुफलितभो ममभगवाना॥
जासु प्रसाद तामरस पादा। लखौंअक्ष समुद अविषादा॥
जन्म सुफल ह्वैहै अघ हीना। अद्भुत चरितआजुविधिकीना॥
कंस संग सब दिवस गँवायों। हरिकरनामसुखहि नहिंलायों॥
दो० भजनभेदनिधिजाननहिं यह संचितफलआहिं।
ता प्रसाद प्रेरित हृदय नृप पठयो हरि पाहिं॥
इमिसुखमग्न बिसरिसुधिगयऊ। आपु जीव उपदेशत भयऊ॥
निज चख हरि सारसगतिवंता। आजु विलोकौं आरतहंता॥
जीवनफल बिनुतपमख लेहौं। पूरण सुख जड़ इंद्रिन देहौं॥
जोरि पच्छ पाणी पद परसों। चरणरेणु धरिहौं शिर करसों॥
मली दलन पद्मिनि पगजोई। धिषणभर्गु ध्यावत भ्रमखोई॥
कालीभयहर जग दुखनाशन। नभगामी स्वामी शिरबासन॥
रासधाम नृत्ये अमि बरसे। जो पग ग्वालनहितकरिपरसे॥
सबरस दानिन के अनुगामी। त्रिपुरबंदनिय नवतन बामी॥
दो० सुरसरिपितुपदविदितजग रजलहि शिल भै नारि।
लोक लोक मापक सुखद हरिहित हृदय विचारि॥
ते सुर दुर्लभ चरण निहारौं। संचितकलुष सहज निरुवारौं॥
होत सगुण सुंदर सुखदाई। मृगराजिका सुदच्छिण धाई॥
बहुरि जीवभ्रम मो वश मोहा। कंसदूत समुभत चित छोहा॥
पुनिमुनिकहत पोचमतिशोचै। कसनविथुर तू ममभन मोचै॥
अंतरयामी विदित बिहारी। अरि हितु पहिचानतबनवारी॥

मोहिं प्रणामकरत लखि धावैं। निजजनजानिस्वकण्ठलगावैं॥
जलज हस्त धरि हैं शिर मोरे। मुखमृगांक निरखौं निमिषोरे॥
चष चकोर सुख लहैं अपारा। धन्य जन्म ममभा संसारा॥

दो० इमि कल्पत बहु कल्पना बृन्दावनगो भूप।
बनते मोहन राम उत आये मोहन रूप॥

बाहिर ग्राम भेट शुभ भयऊ। लखि अक्रूर यान तजिदयऊ॥
जासन सत्य प्रेम जो करई। सो तेहि लहै न संशयपरई॥
गद्गद कण्ठ मग्न पद नेहा। धावत बिसरिगई सुधि देहा॥
दंड समान चरणतल गिरेऊ। पूरण प्रीति नैनजल भरेऊ॥
विह्वल आनन आवन बानी। सत्यभई अक्रूर कहानी॥
प्रभुकर कमलधस्यो हँसिशीशा। अतिहितयुतउठायअवनीशा॥
निज निकेत लै गये मुरारी। देखिनन्द अति भये सुखारी॥
कंठ लगाय मिले उठिआसन। करिसत्कार दीन्हशुक्लासन॥

दो० उबटन लै सेवक चतुर उबट्यो सकल शरीर।
चंदनगंधि प्रकारबहु चरच्यो पुनि कुरुबीर॥

षटरस भोजन बहुरि जिमायो। अचवायो शुचिपान खवायो॥
राजे सभा पूछि कुशलाई। कहत परस्पर सकल सुनाई॥
यदुबंशिन महँ तुम गुणसागर। सतिबादी सनेह मतिआकर॥
कंस संग कस रहत गोसांई। तासु सभा गति कहौ बुझाई॥
सुनौ तात का कहिय प्रसंगा। दुख अर्णव बूड़त खल संगा॥
कंस दोष दुख प्रजहि अपारा। यदुवंशी कर किमपि उबारा॥
पशु रिपुजसगवास निरदाया। कंसप्रजहितस बिधिनिरमाया॥
तुम जानत समस्त ब्यवहारा। वृथा बकत तुम सों यहिबारा॥

दो० बिविध बारता करत नँद हित पाय अक्रूर।
बिहसत बैठे ग्वाल बहु हरि प्रसाद सुखमूर॥
सो० तू मंगल सुनि सीख आन ओर हेरै न अब।

करुरज पाप करीख मेलिकृष्णरस अर्जुनहिं ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासबिरचितायांअक्रूरवृन्दाबनगमनोनामैकोन चत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

दो० पूरक कुंभक करत बुध रेचक पवन प्रभान ।
प्राणायाम सनेम नित साधत समुदमहान ॥
प्रणवजपत अजपागुणततत्त्वबिलोकतानित्य ।
योगपन्थसांख्यहुकरत लहतगूढ़मतसत्य ॥
स्वबश जीवराखतसदा तजत देहचितचाहि ।
मुक्ति लहत सायोज्यते यामहँ संशयनाहि ॥
जे यह मगपावत नहीं कठिन कर्म अनुमानि ।
तिनहिंउचितपरिहरिश्रमहिंभजैंश्यामसुखमानि ॥
बिनुश्रम पावै मोक्षपद सत्य बदत यह कान ।
तासु अंगहू कहतयह कीजिय बिबुधप्रमान ॥

करि बारता नन्द चुप साधी । सैनहिं यदु हरि बोलिनराधी ॥
सादर मथुरा चरित सोहावा । पूछतहीं अक्रूर सुनावा ॥
दंपति तात कहौ कस भाई । जिनहिं कंस दुख देत सदाई ॥
कस्मल खानि भूपमति हीना । जेहियदुकुलहिअमितदुखदीना ॥
कोउ कलंक रुज यदुकुल घेरा । स्वबश बिथित कीन्हे चहुँफेरा ॥
जीव अदृष्टबश्य तिहुँकाला । नटबशजिमिद्रुमचरकृतख्याला ॥
तदपि सत्य अक्रूर प्रबीना । सह बसुदेव दुःख अति पीना ॥
सोमम हित यामहँ भ्रम नाहीं । कंसहि देत प्रथम गहिबाहीं ॥

दो० हमहिं गुप्तह्यां करि गये कंस जानि दुख दीन ।
चलत कहा तुमसों कछू पिता कहौ सु प्रबीन ॥

संकट बिबश सुरति कृत मोरी । अथवा कछु न कहततपधोरी ॥
त्रिपुर ज्ञान गति जानतआपू । मनुपुर उज्ज्वल प्रगट प्रतापू ॥
नृपति अनीति अभण पुरबंदा । उग्रसेनि बसुदेव निकंदा ॥
कस्यो चहत धाता गति हारा । प्रारब्धी कृत सब संसारा ॥

जादिनते ऋषि गुण पुर गामी। तुव अवतार भेद बद स्वामी ॥
तबसे दिहिंसि बन्दि बसुदेवै। कर पद कारागार करेवै ॥
अति ब्याकुलदम्पतिमनमाहीं। बदत कृष्ण हे कृष्ण सदाहीं ॥
अपर चरित जानत पै सुनहू। उचित होयतसप्रभुचितगुनहू ॥
प्रात बाम मख बाम सम्हारा। शर धर धरयोमध्य बिकरारा ॥
अरि बल्लभ सुजान अनज्ञाती। देश देश नृप नाना जाती ॥
कौतुक लागि भूप गृह आये। मधुपुर मुक्ति सुतासब छाये ॥
हमहिं इहाँ पठवा तुव हेता। कहा कि लाइय नन्दसमेता ॥
दो० अपर ग्वाल सब आवहीं देहिं आनि उपहार।
बिहँसि बंधुद्वौ नन्द सन कहासकल ब्योहार ॥
पिता तात अक्रूर सुजाना। कहत कंसबोल्यो मख ठाना ॥
गोरस अजामेष पितु लीजै। भेंट नराधि यज्ञ महँ दीजै ॥
गोप निकर लै चलिये ताता। नृप निदेश मेटत अज्ञाता ॥
अखिल प्रकार बुझाय बखाना। समुझिनन्दकहभलिसज्ञाना ॥
बोलि चतुर चर सम्मत भाखा। मत समग्र बद गुप्तन राखा ॥
आयसु समसेवक गण धाये। गृहप्रतिमबहिसहजसमुझाये ॥
रसानाथ मख प्रात करैहैं। नाना देश प्रजानृप ऐहैं ॥
हमहिं लेन आये अक्रूरा। चलौ समस्त लखैं मखरूरा ॥
दो० भेंट हेत प्रति भौनते गोरस मेष अजान।
पाय शासना नन्दकी सब लाये गुणवान ॥
जल माखन अज मेष अपारा। महिषादिक आये नँदद्वारा ॥
शकट भार केतिक नँदराई। चले संगलै ग्वाल अथाई ॥
हरिनीलाम्बर सुहृद समाजा। यानारूढ़ भये सुनु राजा ॥
भये नन्द उपनन्द अगारी। अनुगामी सबके शकटारी ॥
युवतिन सुन्योश्याम बलरामा। मथुरहिजातनृपतिमखधामा ॥
बिकलभईजसमणिबिनुब्याला। किधौंतिमिंगिलबिनुकीलाला ॥
अथवा प्राणहीन तन भयऊ। बिरह शोक सबके उरछयऊ ॥
प्राबिट घन जस हरिबश धावैं। तिमिपरिहरिगृहहरिपहँआवैं ॥

दो० झटित झपित त्रिय राधिका दिग्दश हरितटआय ।
घेरयोरथ हरिचंद्र जनु गण चकोर उठि धाय ॥
करहिं बिनय जोरे द्वौ पाणी । कलितकलेशग्रलित दुखबाणी ॥
त्यागत हमहिंकासुहित स्वामी । प्रीति उदधि प्रभुअंतरयामी ॥
सरवस तज्यो लाज कुलकेरी । केवल प्रीति कमल पद तेरी ॥
साध सुजान सनेह कृपाला । अक्षयसदाजिमिशरिकीलाला ॥
हस्तरेख जस रहत सदाहीं । तसकुलीन हितुगुणमनमाहीं ॥
मूरुख प्रीति नाशातिन लहई । अंजलि नीर नहीं थिररहई ॥
कोटि यतनकोउ करै सुजाना । मूढ़ सनेह कहा परमाना ॥
स्वारथ मीत जौन भव माहीं । जानत कहा नेह धर माहीं ॥
दो० पावसमें दृढ़रहत नहिं जेहि प्रकार मरुभीति ।
तथा कृपानिधि बिदित जग नीच मूढ़की प्रीति ॥
को अगास हमसौंभा नाथा । पृष्ठि देत जेहिअघयदुनाथा ॥
पुनि अक्रूर ओर लखि नारी । कहत समर्षिबचन दुखभारी ॥
को ज्योतिषी बुद्धि गुण हीनो । जेहिअक्रूर नामतोहिं दीनो ॥
हमरी जानि क्रूर बड़ तूहै । तोते अधम आनको भूहै ॥
जासु दरश बिनुप्राण अनाथा । निजसँगलियेजातब्रजनाथा ॥
व्याज मूलभा हम कहँ आई । किमि अक्रूरकहौ यहि माई ॥
धूमकेतु त्रिय परोहित भयऊ । कोरथ मूढ़अलख दुखदयऊ ॥
इमि कटुबचन बदैंतजि बासा । गह्योकृष्णरथ्यादिग्पतिआसा ॥
दो० अबला मथुराअति सुमुखिसुनसखितिनहिं बिलोकि ।
बहुरि श्याम किमि आइहैं असकहि रहीं सशोकि ॥
तब न सुरति करि हैं ब्रजकेरी । परी बिपति यहआलिघनेरी ॥
बड़भागिनि मथुराकी नारी । निरखहिं नैनन रामबिहारी ॥
जपतप भजन भावकोउ चूका । पर्‍यो प्रसिद्ध उठतजेहि हूका ॥
बिछुरत त्राता प्राण बिधाता । त्रियराजी बिलपत कुरुताता ॥
प्रभुप्रति सविनयबहुरि बखाना । गोपीनाथ नाम जगजाना ॥
फिरिकेहि कारण तजतगोसांई । लेतसंगकस हमहिं न लाई ॥

बिनु देखे मुख बिधु सुख राशी। कोकजीव जाइहि मुदनाशी॥
प्रथम प्रीति जोरयो का लागी। अबकाअघहिप्रीतिपरित्यागी॥
दो॰ यहिबिधि युवतिबिछोहबश अतिअधीरबतराइ।
दुखसागर महँ बूड़हीं हरिमुख दृष्टि लगाइ॥
यकटकनिरखैंश्यामदिशि जिमिचकोरशशिओर॥
दृगजलजनुझरनाझरत उतब्रजभायह शोर॥
नरनारी समस्त अनसाथी। ब्याकुलचलेयथा शारिपाथी॥
यशुदाकरिसनेह निरब्याजा। कंठलाय भेंटत ब्रजराजा॥
रोदत कहत पुत्र प्रिय प्राना। आयहु बेगि तात अस्थाना॥
जेतिक दिवस लगैं बदि दीजै। भोजन सुरस संग धरिलीजै॥
दोहद हां न कर्यो काहूसन। ममसनेह राख्यो अपनेमन॥
तबहीं जान त्यागि रसराई। जननीआदि सकलसमुदाई॥
करि प्रणाम मातहि चढ़ियाना। मथुरहि चले राम भगवाना॥
तेहि अवसर रोदहिं तिय ठाढ़ी। प्रभु बियोग अनुरागहिबाढ़ी॥
दो॰ भुज पसारिराधा हितू कहा सबन समुझाय।
दिवसदीपके अंतरहि हौं ऐहौं यहि ठांय॥
ऐसे रुदत बदत द्वौ ओरा। गयो दूरिरथ नन्दकिशोरा॥
जानकेतु भा अलख महीशा। गिरींअचेतयुवतिधुनिशीशा॥
हाहा कृष्ण प्राण धन स्वामी। तेरहसुरपति चरण नमामी॥
गौरी बिनुपय धाम कहौं हौं। किधौं दीप बिनु गेह लहौंहौं॥
गुणबिनु द्विज मंडली बताऊं। जल बिनु मीनहिं उपमापाऊं॥
रहितस्मृति अबला धरपरहीं। चेति उठहिं पुनिपुनिथरहरहीं॥
अवधि आश कीन्हींगृह आई। रहीं सत्य पद प्रीति दृढ़ाई॥
बिश्वपाल पशुपाल नृपाला। यमभगिनी तटगे तेहिकाला॥
दो॰ कीन्हो राम बिरामरथ बटतट सुनु नरराय।
हरि आयसु अक्रूर तब यमुना गयो नहाय॥
जनकहि नाथ कहा तुम चलहू। पाछे हौं आवत सँगबलहू॥
न्हाय लेइ पितु तात सुजाना। सुनत नन्दकिय अग्रपयाना॥

बसन उतारि धोइकरपादा। करिआचमन बेद मरयादा॥
डुबकी मारि ठाढ़ ह्वै पूजा। तरपणजप कीन्हों छलदूजा॥
पुनि जलमध्य खोलिदृग हेरा। सरथश्याम देखे तेहि बेरा॥
शिर उठाय द्रुम दिशा बिलोका। लखेतहां हरिबिधु जगकोका॥
अधिकाश्चर्यित मन तेहिकेरा। रथपर दूरि श्याम बल हेरा॥
पय बिचपुनि लक्षत यह कैसी। केहिहरिकिहौंकिबुद्धि अनैसी॥

दो० मनशोचत अक्रूरबहु हरि रचि श्रुति भुजरूप।
दयो दरश तेहि कृपा दधि प्रभुगतिभूपअनूप॥
गदापद्म अरु कंबुयुत चक्र सुआयुध चारि।
सुर किन्नर गंधर्बमुनि सकल संत हितकारि॥
दरशायो अक्रूर कहँ अद्भुत चरित कृपाल।
जोबिलोकि भ्रमबश अधिक भयेयदुकुलततकाल॥
मंगल करि दाया अधिक दास जानि सुखदाय।
दयोदरश भजुताहि तू दुस्सह बिपति नशाय॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांअक्रूरबिष्णुरूपदर्शनो
नामचत्वारिंशोऽध्यायः ४०॥

दो० चेष्टितचुम्बक होतजिमि लोह देखि बिनुप्राण।
अरुबिलोकिअत्रिजबढ़त राकादधिअप्रमाण॥
कामीजनलखिकामना लेत मुदित मनमानि।
आनबस्तुनिरखतनहीं तजत जानिदुखदानि॥
पूषण लखि कुबलय यथा बात आतपी देह।
सुख पावत तिमि जीवतू करिले श्यामसनेह॥
स्वारथ बिनकरि दोहदै ध्याउ सूनु बसुदेव।
जीवत सुख संपति लहै अंत समय पुरदेव॥
बातनसों मुनिसम बने दंभगालित भवलोग।
तजि पाखंड बिबाद भजु हरियहतोकों योग॥

शुकाचार्य राजहिपुनिकहह्यऊ। यदुनायकसबरस भ्रमिरह्यऊ॥

मेधा चकित बिचक्षण ज्ञाना। हरिमायावश भयो सुजाना॥
सर्वोबिधि बिचारि हिय हारा। दुधा लक्ष यदुनाथ कुमारा॥
निपटाकुल हरिपद तेहि ध्याये। मतिसममनमहँहरिगुणगाये॥
हरि कर रीति बिदित यहवेदा। दासहि देखि सकतनसखेदा॥
मध्य स्मृत सुज्ञान उरछावा। प्रेरित श्यामकुमतिबहिरावा॥
पहिचान्यो गजारि गामीको। परिपूरण तिहुँपुर स्वामीको॥
पानी पाणी बाँधि बखाना। प्रणतिसहित अष्टांगप्रमाना॥

दो० सुत इंदीवर आपु प्रभु निरमानत भव सर्व।
कलभ शत्रुध्वज बहुरिहै पालतजीवअखर्व॥

धूरजटी शरीर बनि नाशत। सबगुणवलितआपुपरकाशत॥
सतरजतम कछु बनत न गाये। नेतिकरणबदि पदशिरनाये॥
सेवक बंधु दास दुख जानी। बिरचितवपुभवनिजबशआनी॥
खल घालक पालक जनसाधा। ध्यावन तवपद सदाअबाधा॥
देव तीनि कन्या देबारी। लोकपाल सुरपाल खगारी॥
द्विज द्विज राज राज अरुरंका। बिप्रनीच कादर भट बंका॥
मुनि ज्ञानी ध्यानी बिज्ञानी। दाताकृपणसुमतिमतिप्रानी॥
गज पंचानन गजगजराजा। जड़चरचरतीनिपुरभ्राजा॥

दो० तत्त्वादिक जो लखिपरत सब बिभूति त्रैधाम।
उपजे तुम्हरे अंशते जे समग्र नरवाम॥

सो० अंत मिलत तुव रूप शूरकरावलि हंसजिमि।
बिषताजि अमृतभूप मिलत बलाहकतनबरषि॥

अथवा गगन पक्षसुत जैसे। चीन्हत ज्ञाति आपु जगतैसे॥
महिमा नाथ अनूप अपारा। कबिकोबिदकोउलहतनपारा॥
रूप विराट प्रगट पुरतीनी। लखतनबिषयकबुद्धिमलीनी॥
शिरनभपवन श्वाससुखआगी। सुधाबीज पद क्षमासभागी॥
सरिपति उदर नाभि गंभीरा। बीस लक्ष रोमावलि तीरा॥
करण दिशाचषशशि अरुभानू। मुदिरनाथभुजअजबुधिज्ञानू॥
अहंकार शंकर सुख कारी। बचनोच्चार मेघ ध्वनि भारी॥

दिवस रैनि खैचलनि निमेखी । अपर बिभूति अंगबशलेखी ॥
दो० जो बिभूति तिहुँ लोक सो बसत आपु तन माहिं ।
लिंगरूप धारे रहत परिपूरण भ्रम नाहिं ॥
को पहिचानै तुमहिं प्रभु अलख अरूप अनूप ।
ब्यापक चौदह लोक तुम जल थल एकै रूप ॥
छं० एकै स्वरूप बिराज तिहुं पुर काज दासनके करौ ।
सर बाग पूरण ज्योति माया करतजोईचितधरौ ॥
निजदासजानिकृपाल मोहनशरणअपनेकीजिये ।
शुभभक्तिअनुपायनदयानिधि जानिकिंकरदीजिये॥
दो० यहि बिधि अस्तुति करत बहु नृप अक्रूर प्रबीन ।
मंगल तू तजि श्याम किमि होत आनतट दीन॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांअक्रूरस्तुतिबर्णनोनामैक
चत्वारिंशोऽध्यायः ४१ ॥
दो० धूमकेतु दाहत नहीं अर्जुन सकत न भोरि ।
शस्त्रा बाधित ब्रह्म लव सबरस सकत न बोरि ॥
द्विज क्षत्री नहिं बैश्ययह शूद्रन अंत्यजआहि ।
भयो न है अरु है नहीं आगेहु होने नाहि ॥
अर्थबसतजिमिवाक्यमहँसमुझतकरतप्रकास ।
सुरसरि सूर सुता बिषे यथा शारदा बास ॥
अबिनाशी पूरण कला ब्रह्म अंश यह जीव ।
मायाबशभूल्योनिजहि आप आपु सुखसीव ॥
तूमनमंगल सीख सुनि पहिचानै किनआप ।
ध्याउ सदा रुक्मिणि रमण नाशलहै त्रैताप ॥
महाराज नटवर नट माया । करि जलमें निजरूप दिखाया॥
अमित बिभूति दिखाय समेटी । कौतुक दधि जेहि मायाचेटी ॥
तब अक्रूर तीर सरि आई । कृत प्रणाम अति नेह बढ़ाई ॥
श्री हरि पूछ तात बड़ि बारा । कियो न्हात बरनिय मतसारा ॥

शीतल छीर धीर कस धारी। कहौ प्रसंग समस्त बिचारी॥
पितु गय दूरि संग परिवारा। प्रबिशि नीरको ज्ञान पसारा॥
काआश्चर्य्य बिलोक्यो ताता। हमहिं बदौ गुण पूरणगाता॥
यह चिंतमन अमित मन मोरे। निरबारहि बरणे सो तोरे॥
दो० जोरि पाणि यादव कहत तुम सर्वग सर्बज्ञ।
नीक दरशपयमधिदयो लखतज्ञाननिधिअज्ञ॥
बर्णि सकत नहिंदीखजो तुव चरित्रजनपाल।
दृढ़ भरोस छायो उरहि मथुरहिचलियकृपाल॥
अब न बिलम्ब करिय सुरपाला। चलिय शीघ्रकारजमहिपाला॥
सुनत बिहँसि हांक्योप्रभुयाना। सहज सनेह बिबश भगवाना॥
नन्दादिक सब गोप सुभासा। बाहर नगर कस्यो सुखबासा॥
निरखत भीम बन्धु हरिकेरा। चिन्तत नंदादिक तेहि बेरा॥
कृत स्नान लाग्यो बहु काला। आये अबलग नहिं गोपाला॥
तस्मिन समय सकल सुखसूला। आवत भये लखे गत शूला॥
सविनयनीतिमिलितमृदुबाणी। कह अक्रूर जोरियुग पाणी॥
ममनिकेत पावन प्रभु करहू। चरण कृपाकरिगृह लगुधरहू॥
दो० निज दासन दीजिय दरश होय मूलआनन्द।
सुनि सनेह सानेबचन बोले श्री नँद नन्द॥
प्रथम भूपकह सुद्धि करावौ। तापश्चात स्वगेह दिखावौ॥
बिनय समग्रसबन की कहहू। निजप्रणप्रतिफलनृपसन लहहू॥
तुरत चले यदु सुनिअनुशासन। सत्त्वर गये कंस नृप आसन॥
आवतलखि हरिआसनत्यागी। मिल्योयदुहिगतसुखदुखपागी॥
सादर कर कर गहि सिंहासन। बैठास्यो पूछयो इमि तासन॥
समुद तात आयउअरु गयऊ। समाचार कहुब्रजजस भयऊ॥
सुनु रसाधि ब्रजमहिमा भारी। किमि बरणौंलघु बुद्धिहमारी॥
महासाधु नृपनन्द सुजाना। तूनिदेश मान्यो परमाना॥
दो० राम कृष्ण संयुत निकरभूप गोप सँग भीर।
भेट सहित आवत भये उतरे सरिता तीर॥

यह सुनि कंस मुदित मन कैसे । कीटपतंग दीप द्युति जैसे ॥
कीन्ह काज तुम अकथ महाना । यहिप्रतिफलनबुद्धिअनुमाना ॥
ममद्रोही लाये भल करेऊ । तवकीरति प्रणगुणजगभरेऊ ॥
अब गृह जाइ करिय बिश्रामा । सुनत गये यदुपतिनिजधामा ॥
कंसासुर मन अमित बिचारा । अंतक विवश ज्ञान बलहारा ॥
इत हरि राम पितासन भाषा । देखिय नगर हृदयअभिलाषा ॥
सुनत प्रथम मिष्टान खवाई । पुनि कहजाहु अश्रुकद्वौभाई ॥
आयहु बेगि बिराम न होई । बनै बात कीजिय सुतसोई ॥

दो० पाय रजायसु तातकर ग्वाल सखा सँगलाय ।
चले नगर देखन प्रभू उर आनन्द बढ़ाय ॥

फलककुभा सबनगर बिलोका । बनउद्यान निरखि हरशोका ॥
नाना बरण सुमन फल राजी । सोहत वृक्ष सुकृत परकाजी ॥
सर जल अमल मलीहर सोहैं । कंजावलिससून मन मोहैं ॥
चंचरीक रस राग भुलाने । गूँजहिंअधिकन परत बखाने ॥
सर तट सारस बिबिधबिराजैं । मंजुरूप किलकहिं कलगाजैं ॥
सदाचार डोलत गुण रूपा । शीतल गंध मंद युत भूपा ॥
उपबन मध्य सुरंग प्रसूना । नाना जाति लसत षट जूना ॥
इमि शोभा बिलोकि बन बागा । उपज्योहृदय अधिकअनुरागा ॥

दो० अखिल सखा सँग लाय प्रभुचले नगर कहँ भूप ।
ताम्रकोट दिशि चारिहू खाईं सरि अनरूप ॥

रतन जटित सस्फटिक सोहाये । चारिद्वाररचि गुणिन बनाये ॥
अष्ट धातु मय लाग कपाटा । चमू चमूप सोह चहुँ बाटा ॥
नील पीत धौरे अरुणारे । धवल धाम रचि सुघर सवाँरे ॥
निरखत ग्रीव पृष्ठि कहँ धावै । मेघ घटा सम उपमा पावै ॥
गृहप्रति स्वर्ण कलशअससोहैं । बिद्युत छबिकहँ निंदतजोहैं ॥
श्वेत ध्वजा बग पांति बखानी । बरषत मनौं सुगंधि उड़ानी ॥
द्वार द्वार युत फल रम्भातर । धरेकलशशुचिललितसबनतर ॥
बंदनवार बांधि प्रति धामा । बाजत कलरव बाजन तामा ॥

दो० भूप भवन शोभा अकथ लखिद्युति अंग लजात।
गोप सखन श्री मुख प्रभू सकल बुझावत जात॥
सो० नगर कुलाहलभूरि हरिआगम सुनि चारिदिशि।
शीत धूप दुखचूरि धाये नर नारी निकर॥

छन्द भुजंगप्रयात॥

कहैं बामबामानसोंयोंसुनाई। सखीश्यामऔरामलीनेअथाई॥
पुरीमें चहूंओर शोभाबिलोकैं। चलौदेखिये चन्दभूनैनकोकैं॥
तजेभोज्यकोऊचलीधाइनारी। कोऊन्हातऔखातहीतेसिधारी॥
मतीप्रेमकोऊ तजी शीशबेनी। गुहीसोगुही वैसही बाटलीनी॥
निराभूषणै भूषणै जो सम्हारैं। उदैचन्द जैसे चकोरैं निहारैं॥
जहांसोतहांसेचलींभावहीसों। दशाक्योंबखानौंसुजानौंनहींसों॥
मनौं प्राविटी निम्नगापूरपूरी। चली चन्द वापै महामोदरूरी॥
रईप्रेम श्यामैं तजे कानिभारी। अटापै कोऊद्वार है रैंबिहारी॥
कोऊ बीथिकासंगहीसंग डोलैं। लखैंरूपशोभा बिकैंतेअमोलैं॥
बतावैं सुपंथै भुजाको उठाये। इतैबाट है जू नहीं भूलिआये॥
कहैं एक सों एक ऐसे बुझाई। धरेपीतबासांसिसोहैं कन्हाई॥
जोनीलाम्बरंगैंधरेचित्तमोहैं। बलीबिक्रमी मूशलीआलिसोहैं॥
यही भूपके भानजे भू बखानैं। इन्हेंभूपलोकेश के ईशमानैं॥
महाबीर संसार में और कोहै। करै युद्ध जो शुद्ध चित्तैबिमोहै॥
बिभौजासुकोहोसुनोकालबीते। लख्योरूपसोआजुहौंनैनहीते॥
महापुण्य पीछे करी सो सहाई। लहोदर्श गोपापपुंजैनशाई॥

दो० इहिप्रकार नर बामसब कहत बुद्धिसमबात।
मग्नहोतसुखभानिरखि जिमिअर्णवनिजजात॥

जेहि रथ्या श्रीश्यामसरामा। निकसत सुनहुंभूपगुणधामा॥
चंदन अगर अवनि मधिनारी। छोड़त धामन ते पिचकारी॥
कुसुमावलि अनेकतियतजहीं। हरिछबिलखिअनंगबहुलजहीं॥
इत हरिकहत सखन समुझाई। रहौ संग भूल्यो जनिभाई॥
जो कोउ अम्येजाउ बिश्रामा। यहिप्रकारपुर निरखतश्यामा॥

बाहर नगर रजक गण देख्यो । कंसबसन ताढिगप्रभुलेख्यो ॥
गावत कंस सुयश मदमाते । जड़ता बिबशन अंगसमाते ॥
दाऊ बसन लेहुसब याते । पहिराइय गोपनसुखजाते ॥
दो० आपु देह कछुधारिये । शेष लुटावहु आजु ।
वृथा न घूमिय नगरते यह करिलीजै काजु ॥
रजक अधिपतिहिसों हरिभाषा । पहिरियभूप बस्त्रअभिलाषा ॥
कंसहि मिलि आवैं पुनिलीजै । पहिरावनिआपनिकहिदीजै ॥
जो कछु भूप देइ उपहारा । लवसम लीजियजगव्योहारा ॥
हँस्यो रजक तबसुनिप्रभुबानी । घरी बनाय लेइ सज्ञानी ॥
पलटिबसन लीजिय बिनदीन्हें । शशाभाग हरिलालचकीन्हें ॥
कानन सुरभी बत्स चरावो । रोमपाट ओढ़ौ सुख पावो ॥
नटवत रूप धारि ह्यां आये । भूपति बस्त्र चहत तनलाये ॥
आये नृपहि मिलन धरिमोहा । भेंटलेन करहै चित छोहा ॥
दो० जीवन आश गवांइहौ भूप द्वारको जाय ।
गेह जाउ निजप्राणलै मम शिक्षा उरलाय ॥
हँसि कह श्याम सूध हमभागैं । तेरे बचन कठिन उरखागैं ॥
बस्त्र देत कछु हानि न तोरे । कीरति कलितरजकहितमोरे ॥
क्रोधित भयो रजक सुतुचाहा । कह्योरिसाय बयननरनाहा ॥
निजमुखलखहुप्रथम गोपाला । पाछे पहिरहु बसन नृपाला ॥
जो तुम चहत आपुकुशलाई । मम सन्मुखते जाहु पराई ॥
बचन कठोर तासु सुनिराजा । मारयोताहि स्वकर ब्रजराजा ॥
हितू तासु अनुगामी भागे । जाइ पुकार कीन्हनृप आगे ॥
नाथ श्याम सब बस्त्र लुटाये । हन्यास्वामिहमप्रभुभगिआये ॥
दो० प्रभुसबबसन मँगाइ करि पहिरे आपु बनाय ।
बन्धु मित्र सबसन कह्यो लेहु बस्त्र सुख पाय ॥
पहिरन लगे ग्वाल मुद मानी । बसन भेद पावतनहिं जानी ॥
अंग बस्त्र पद पहिरत सोई । पागकसत कटि गोपजकोई ॥
सूथनि करमेलत बनबासी । देखत प्रभु बिहँसे सुखरासी ॥

चलत अग्र सूजी यक आयो। बिबिधप्रकारबसनसो ल्यायो॥
कहिसिसनीति बचन करजोरी। इच्छा एक नाथ बड़ि मोरी॥
दास तुम्हार बिदित तिहुंकाला। पायो कृतफल आजुदयाला॥
पहिराऊं बागे गुण राशी। लहौंभक्ति सुखदादुखनाशी॥
जानिदास कह किन पहिरावैं। पावन सत्य मनोरथ पावैं॥
दो० पहिराये सानन्द तेहिं सब कहँ बसननृपाल।
भक्ति देइ सँग लैचले ताकहँ मदनगोपाल॥
बहुरि मिल्यो मारग चतुर माली नामसुदाम।
कुसुमावलि पहिराइयो बजी बधाई धाम॥
मंगल यहिबिधि कृत चरित दास सुखद भगवान।
क्यों न भजै ताके चरण दायक सुख गुणज्ञान॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांश्रीकृष्णचंद्रमथुराप्रवेशबर्णनो
नामद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२॥
दो० कपट कलेवर जे पुरुष बरही सम संसार।
मधुर बचन अहिअशन कृत स्वाभाविक व्योहार॥
छली जानि संगति तजै बली जानि संग्राम।
लोभ जानि दानहिं तजै भोगजानि निःकाम॥
क्षेम जानि क्रोधहि तजै प्रीति जानि छल भाव।
दंभ जानि सत गुण तजै अरु विवेक रस ठाव॥
मदत्यागै यह सकलगुणि पदलहि कुलकीकानि।
त्योंलहि पूरण ज्ञान बुधि करै कलुषकी हानि॥
मूल तिहूँपुर ज्ञानको राधा रमण सनेह।
तीनिउ फल जीवतलहै सुरपुर त्यागे देह॥
देखि प्रीति माली कर राजा। दियोभक्तिताकहँ सुखसाजा॥
आगे जाइ लख्यो मन मोहन। कुब्जाखड़ी बीथिका सोहन॥
घिसिश्रीखंड मेलि सुरप्यारी। धरे मध्य ठाढ़ी वह नारी॥
लखि तेहिश्याम पूछतूकोहसि। कहांलिये गवनीचंदनघिसि॥

दीनानाथ कंसकी चेरी । संज्ञा भव कुब्जा प्रभु मेरी ॥
कंस काय लेपौं नित चंदन । रुचिरशृक्तिआपनिजगबंदन ॥
मनसा बाचा कर्म समेता । तव गुणगावतसुरुचिसुचेता ॥
सत्य प्रीति महिमा जग छाई । ताबश मिल्यो आपु यदुराई ॥
दो० जन्म जगत स्वार्थिक भयो चष सुखलह्यो अपार ।
पाद परसि कर मुदलहैं रच्यो शोचिकरतार ॥
सो० अनुशासन जो होय तौ बिलेप मर्दौं तनहिं ।
जाइ पन्थ श्रम खोय होहु प्रफुल्लित प्रभुमनाहिं ॥
देखि अब्रीड सनेह मुरारी । कह बिलेपु ममतन श्रमहारी ॥
सुनि कुबिजा प्रसन्न भैकैसे । इष्टदेव पाये नर जैसे ॥
अतिबिनोद सहमनक्रम बानी । कस्यो बिलेप विलेपन आनी ॥
मगश्रम हस्यो रामहरिकेरा । भये प्रसन्न अमी दृग हेरा ॥
देखिनेह पूरण प्रभु तासू । पद पदचापिचिबुककरआसू ॥
खैंचि कस्यो सुंदर तनवाको । रतिशतकोटिलजैंलखिजाको ॥
हरिकर परसत भई सुपूता । संचित पाप नश्यो तननूता ॥
तब करपल्लव जोरि बखाना । आरतहरणसुनियभगवाना ॥
दो० जेहिबिधि बपुरूरो अमल कियोमोर जगदीश ।
तेहिप्रकार चलिगेहमम करियपूत बिसबीश ॥
करिबिश्राम मोहिं सुखदीजिय । पुनिआपनिदासीप्रभुकीजिय ॥
हँसिकरगहि कह श्रीगोपाला । तैंसुखअमित दयोमोहिंबाला ॥
चन्दन चरच्यो ममतन नीको । रूपसुफललखिरतिबपुफीको ॥
दोहद मोर तोर अनुरागा । मिलितभयोमनकोदुखभागा ॥
कंसहि मारि आइ गृह तोरे । बिरमौं भाव तजौं नहिं भोरे ॥
इमिबुझाइ कुबिजहि असुरारी । चले सप्रेम सबंधु अगारी ॥
कुबरी निज निकेत नृपजाई । रच्यो मलयज चौक पुराई ॥
प्रभु मिलाप उरहढ़ अनुरागा । करत मंगलाचार सरागा ॥
दो० पुर अबला आई तहां कहैं अचंभितसोइ ।
धनितुवकुबरीभागिनी जाकरहरिहितुहोइ ॥

कोतप अमित करालविशाला। साध्यो सखीभूत हीं काला॥
दुर्लभदरशहमहिं सखि भयऊ। तोकहँ अंगलाय प्रभुलयऊ॥
यहिबिधि सखीकहैंकुबिजासन। देखत नगर फिरैं गरुड़ासन॥
इमिहिं बिलोकत नगर निकाई। धनुष धरा तहँगे दोउ भाई॥
सिंधुर शत्रुठवनि चलि आये। लखि धाये रिसाइ रख वाये॥
कहत कहां आवत हौ भूली। पन्थ इहां न धरा धनु शूली॥
कामतिभंग भई बश काला। जानत हौं नहिं द्वार नृपाला॥
कर्‌यो न कान बाणितनश्यामा। आतुर प्रविशिगये धुनधामा॥
दो० राम तार लम्बा जहां धर्‌यो कार मुकराय।
निरखिकौतुकहिंजगतपति लीन्हींताहिउठाय॥
आकर्ष्यो भंज्यो सुर साईं। बिनु श्रम अहि मरालकीनाईं॥
रक्षक अखिल देखि धनुभंगा। जिमिखगेशलखिबिपुलभुजंगा॥
सहजहिकौतुकनिधिसुखखानी। मर्‌यो सबहि क्रोध उरआनी॥
पुरबासी यह चरित बिलोकी। ठगिसे रहे यथा निशिकोकी॥
धरि धीरजहिं परस्पर कहहीं। अब न असुरजगजीवतरहहीं॥
दुबिधा त्यागि भजो भयभंजन। दाससुखदप्रभुखलमदगंजन॥
कंस महीपति मृत्यु बोलाई। हमरी जान न नृप कुशलाई॥
येदोउ बन्धु महाबल सागर। कीरतिबिशदबिदितगुणआगर॥
दो० देवन हने निशान निज कुसुमावलि बरषाय।
कंस शब्द धनुभंग सुनि पूछत दूत बोलाय॥
तेहि अवसर भग्गुल अगण रक्षहुकहत पुकारि।
राम श्याम इत आइप्रभु अधिकमचाई रारि॥
इष्वामन बिभंजि चर मारे। ठाढ़े शर धर मन्दिर द्वारे॥
सुनिसकोपि बहु खग्ग बोलाई। बांधौ राम श्याम कहँ जाई॥
पौरुष छल बल कीजियसोई। जेहि विधि मृत्युलहैं वै दोई॥
अस्त्रशस्त्र लै खलगण धाये। जिमिहरिनिगराजीघिरिआये॥
कटुबच बदत निकर खलराजा। प्रभुसमीपगयसहितसमाजा॥
आयुध बिबुध तजे तिनधाई। लीलयैव मेले यदुराई॥

ब्याकुल सखा बिलोकि मुरारी । निमिषमध्य सब हतेसुरारी ॥
जबन कंसचर रह तेहिठामा । तब रामहिंकह श्रीमुखश्यामा ॥
दो॰ बार भई दाऊ चलिय ह्वै हैं तात उदास ।
असभणिसखालगायसँग चले तुरतअनयास ॥
छं॰ अनयास गये विश्राम धामहिं मिले नंदहि जाइकै ।
कह देखि आये नगर शोभा तात हम सुख पाइकै ॥
लखि बास नृप तबनंद बोले प्रकृति तुम्हरी नहिंगई ।
कीन्हों उपद्रव कंस पुर ब्रज नाहिं यह कैसी भई ॥
दो॰ यहाँ उपद्रव मति करौ नन्द ग्राम ब्रज नाहि ।
पूत सीख सतिउर गुनौं उचित करौचित चाहि ॥
क्षुधापिताब्यापी भषदीजिय । रुचिरुपदेशगुणयोसुनिलीजिय ॥
सुनिदियअशन रसनकहिपरई । जोबिलोकिबिधिहरमनहरई ॥
बन्धु सुहृद भोजन हरिकरेऊ । खरभर उतहि नगर यहपरेऊ ॥
भंज्यो शंकर चाप कन्हाई । अब न नराधिपकीकुशलाई ॥
सुनि बारता कंस उर शंका । उठि बैठत पुनि परत प्रयंका ॥
ब्याकुलतनमन बड़ पछितावा । अतिकलेशकाहुइनसुनावा ॥
अंतर दारुकीट जिमि रखैं । जानत सोइ आननहिं देखैं ॥
तिमि चिन्ता उपजे तनछीजै । बुधिबलपौरुष नाशलखीजै ॥
दो॰ अति चिन्ताबश तल्प निज सोयोजाइ नृपाल ।
निद्रा भयबश आवनहिं देख्यो स्वप्न कराल ॥
रामयाम यामिनि जब गयऊ । तबस्वपनायहनिरखतभयऊ ॥
शिर बिनुतन निजदीखसुरारी । नृत्यत रेतमध्य धर भारी ॥
खर आरूढ़ कलेवर नांगे । प्रेत सहाय संग तेहिलागे ॥
अरुणकुसुमश्रकसोहतग्रीवा । शिखिप्रज्वलितनिरखिअघणेवा ॥
स्वप्न बिलोकि चौंकिदुखपाई । चल्यो सभाकहँ उरभ्रम छाई ॥
नीति निकेत मंत्रिहितु बोली । कहिसिबुझाइबोलिचरटोली ॥
रंगभूमि करि शुद्ध सँवारौ । नन्दादिक ब्रजलोगहँकारौ ॥
यदुबंशी बसुदेव समेता । बैठारौ बोलाय करि चेता ॥

दो० नाना देश नराधि जे आये हैं यहि ठाम।
सादर तिनहिं बोलाइकरि बैठारौ मखधाम॥
पाछे मैं आवत हौं भाई। चले सकल नृप पाइ रजाई॥
रंग कुंभिनी सचिव समाजा। आइ शुद्ध कीन्ही सुनु राजा॥
अगर सुगंधि छोरि पटुडासी। तोरण ध्वजपताक परकासी॥
भाँति भाँति शुभ बजे निशाना। बहु नृत्तकी करैं कल गाना॥
सकल बोलाय राउहितु लोगा। आसन दिये सबहिपदयोगा॥
मंचावली बिशद गजरदकी। उपमालखखगगनपतिपदकी॥
साभिमान आयउ नृप कंसा। करत जासु बहुभूप प्रशंसा॥
निज आसन राज्यौ मदछायो। जिमिसुरपतिसुरमंडलिभायो॥
दो० वृंदारक दिशि तीनि बुध यानारूढ़ सुनाक।
कौतुक देखहिंतेहिसमय दुबिधाबश रिपुपाक॥
मंगल देखौ मोह की यह महिमा संसार।
कंस यथा बैठ्यो समद तू भजु नन्दकुमार॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकंसस्वप्नदर्शनोनाम
त्रैचत्वारिंशोऽध्यायः ४३॥
दो० बिशदपक्ष अत्रिज यथा होत समृद्ध मयूष।
सुजनप्रीतिताबिधिबढ़त नितप्रातिकलितअदूष॥
अपर पच्छ छीजितउड़प क्रमहि कलाबलिहोत।
नीच नेह तैसे सदा अथिर भणत गुण पोत॥
कुटिलभाव परिहरि चतुरभजिले मोहनश्याम।
सत्य प्रीति निजहृदय धरि जोदायकमनकाम॥
जबलागि दुबिधा नहिंनशै तबलागिहोयन ज्ञान।
ज्ञान बिना ध्यानौ नहीं नेह मूल अनुमान॥
यहि कारण दुबिधा तजै लहै भक्तिको भाव।
सदारहै सुख सों जगत श्रीहरि भजन प्रभाव॥
जबनन्दादिक भूप सुजाना। गयेरंगमहि सजिसजियाना॥

तबप्रभु नीलाम्बर प्रतिभाषा । देखियरंगअवनि अभिलाषा ॥
गोपसखा सबगये गोसाँई । शेष संगलै गवनिय भाई ॥
सभा समाज बिलोकिय चलहूं । जो रोकै ताकहँ कर गलहूं ॥
सुनि हलपाणि मुदित भेठाढ़े । गजगणसुनिहरियशमुदबाढ़े ॥
कहा ग्वाल मीतन समुझाई । चलौ रंग महि लखैं निकाई ॥
पाय रजाय गोप गण चाले । जे प्रभु हितू कालत्रै बाले ॥
हलधर जस बरकरि नटवरतन । लखतनगर मारगनरतियगन॥
दो० रंग भवन के द्वार पर गये सबन्धु सखान ।
जहांकुबलियानागदश सहसप्रबलजगजान ॥
बल मद मत्त नाग अभिमानी । जासु भरोस कंस अज्ञानी ॥
देखि ताहिबल कहगजपालहि । टारु द्वारते अहिबशकालहि ॥
नृपति सहोदर हमहिं बोलावत । तू किमर्थ द्वारहि अटकावत ॥
जानदेहु सुनि सीख हमारी । नतहरि जाइहि गजहिँसँहारी ॥
खोरिन मोरि कहत हौं टेरे । हरि स्वामी तीनहुँ पुर केरे ॥
दुष्टदलन हित नर तन धारा । हरि हैं निजकर मेदिनभारा ॥
सुनि बलराम बचन अहिपाला । रोष सहित बोल्यो तेहिकाला ॥
गाइ चरावत जन्म सिरान्यो । त्रिभुवन पतिनीकेहमजान्यो ॥
दो० तेहि मद हम सनरारि कृतइषुधी लखौ न तात ।
दशसहस्र अहि बलबलित यहमंतगाबिख्यात ॥
जबलगियहिसन समरन ठानो । प्रबिशबकठिनभवनअनुमानो॥
अमित सुभट मरद्यो निजपानी । आजु परैगो पौरुष जानी ॥
ममगजते जो तुम बचिजाहू । तौ जानो त्रिलोक पतिआहू ॥
कोपकराल बलित बलरामा । कह्यो ताहि सुनुरे अघधामा ॥
पञ्छी पञ्छी समहि मरोरों । तृणवत मूढ तोर शिर तोरों ॥
बारन जानु कुमति बशतू है । हरि प्रताप पूरित नभभू है ॥
निधन यूथपति ह्वै है आजू । सुधरिहिअधम तोरको काजू ॥
ममशिख मानि सकुंभि पलाहू । लैनिजजीव त्यागिमगजाहू ॥
दो० छोभक्षुभित खल तुरत द्विप प्रेर्यो प्रभुकी ओर ।

चल्यो द्विरदबल रामपै हाथी ज्यों लखि मोर॥
मुष्टिक एक ताहि बलमारा। भाग्यो बारणकरि चिक्कारा॥
अतिबलबलबिलोकिनृपपायक। भयेबिकलव्पुलखिखलघायक॥
कहत समर मंडिहि को इनसों। सिंधुर प्रवर पलावत जिनसों॥
कोबपुरे हम बलन हमारे। असबिचारिसबनिजहियहारे॥
करीपाल व्याकुल मन शोचै। लेइ उसास नैन जल मोचै॥
जोन आजु मारौं द्वौ बालक। तौ बध मोर करै नरपालक॥
अरु ये महाबीर बलखानी। दुहूँ ओर दुख मृत्यु तुलानी॥
अंकुश मारि गयंद चलावा। बहुरो राम श्याम तटलावा॥
दो० कुंजर धायो रोष युत दाब्यौ द्विज द्विजकेतु।
लखिसुरमुनि परिजनसखा भ्रमबशइतउतचेतु॥
करिकर गहि कृत बूत अपारा। सूक्षम रूप तुरत प्रभु धारा॥
रदन मध्य राजत सुखदाई। काँपत सुर नर नारि अथाई॥
पुनि उठिकेसरि सुरहि प्रचारा। सुनत करी निज पौरुषहारा॥
प्रभुहि बिलोकि बिबुधबहुहरषे। हनि निशानकुसुमावलिबरषे॥
है सचेत पुनि धाव मतंगा। आयो सरुष होनचह भंगा॥
दबके उदर तरे असुरारी। जानाजग भगिगये बिहारी॥
तब पाछे हरि ताहि प्रचाख्यो। नीलाम्बर आगे ललकाख्यो॥
दंतिहि खेल खिलावन लागे। पाछे आपु सोह बल आगे॥
दो० कौतुक द्रष्टा तासमय भये अचंभित सर्ब।
शोचतखल मोदितभये हरिजन ऋषयसुपर्ब॥
कतहुँ रामकरिकर गहि लेहीं। झटकिद्विरदकहँअतिदुखदेहीं॥
कहुँ गहि पूँछ श्याम करकरषैं। चलतनहरिबिशालखिसुरहरषैं॥
जब रिसाय धावत गण स्वामी। दूरिजात बिबिसुत गुणधामी॥
ताहि खिलावत भे बहुबारा। जिमिबच्छनकहँनन्दअगारा॥
जानि समय अंतक अहि भूपा। खींच पूछगहि पाणिअनूपा॥
बसुधा मर्यो सहज कृपाला। मुष्टिक पुनि हरिहन्योकराला॥
प्राण रहित तब भो शुण्डाला। हरषे सुर भये असुर बिहाला॥

रुचिर दंत लखि लीन्ह उखारी। गजमुख चली रुधिरसरिभारी॥
॥ दो० मृतक देखि गजराज गज पालक धायोराय।
॥ ताहूको श्रीकर सरज निधन कर्यो तेहिठाय॥
बिहसत त्रिबिभ्राता नर नाहा। गजरदयकयकगहिकर माहा॥
रूप त्रिभंगी अतिहि मनोहर। भूषन रसुरादिक तनमनहर॥
रंगालय जब गये बिहारी। लख्योसबनतवरुचिअनुहारी॥
मल्लन महा मल्ल अनुमाना। नृप अधिराज महीपनजाना॥
सिखिरसनाबूझहिं निजत्राता। ज्ञाति बांधवन जानसुभ्राता॥
सुरभी पालन सखा बिलोका। नंदादिकशिशुसमगतशोका॥
पुरबासिन सुंदरता खानी। बालक फिरहिंबालसँगजानी॥
कंसादिक खल शमन कराला। काल बिबश देखत महिपाला॥
दो० साधूजन हेरत भये पूरण पुरुष प्रबीन।
॥ जोसुख लखि बसुदेवलह सोअकत्थसुकबीन॥
हरिहि बिलोकि कंसअकुलाई। कह्योसकलखल मल्लबोलाई॥
निजबल युगल बंधु धरिमारौ। अथवा रंग अवनिते टारौ॥
नृप आयसु सुनि मल्ल अनेका। गुरुसुत शिष्य एकते एका॥
चले सकल जुरि हरिदिशिभूपा। बलनिधान पुनि नानारूपा॥
ठोंकत ताल महाबल रासी। चारिओर लीन्हों हरिगाँसी॥
मल्लग्राम निरख्यो प्रभुकैसे। सदल गज रदनायक जैसे॥
करिप्रणाम मन तब चाणूरा। प्रभुप्रति भणत भयो बचरूरा॥
आजुनराधिप कलुक उदासा। तेहिकारण पठवा तुवपासा॥
दो० मल्लयुद्ध हमसों करो लखिनृप होहिं सुखारि।
। बिद्यानिधि बनबासकरि डारबार सँहारि॥
तजिद्वबिधा हमसों रण मांड़ौ। देखै सकल समाज अखाड़ौ॥
बड़ि दाया करि हमहिं बोलावा। नृपहितहोय सो करौ बनावा॥
बाल बहिक्रम युद्ध न जानै। हमबलवान चित्त नहिंआनै॥
बीर पराक्रम समर सुज्ञाता। यह कंस बात कहत अज्ञाता॥
जो सम्बन्ध बैरु अरु प्रीती। ऊंच नीच करि करै अनीती॥

सो अपलोक लहै न सँदेहा। हमहिं हेरि हेरौ निजदेहा॥
भूप सुनै नहिं कहिय बुझाई। बाल मल्ल सँग कृत रौताई॥
मिलि खेलहु राखहु जगलाजा। होय प्रसन्न बिलोकत राजा॥

दो० करिदाया शिशु जानिकै लीजिय हमहिंबचाइ।
पटकि न दीजिय आपु बल धरम युद्धके भाइ॥

सो० हरिबाणी सुनि भूप भयबश कह चाणूर अस।
तुवगतिअगमअनूप जानिसकततिहुँलोकको॥

दो० शिशु बपु तुम मानस नहीं महाबली हौ दोउ।
धनुषभंग कीन्होंसुखहि गजबल निधिहनसोउ॥
युद्धकिये नहिंहानि कछु हमरे तुमसों तात।
जेसुजान पंडित जगत ते जानत यहबात॥
मंगलदेखु बिचारि हिय हरि प्रताप चहुँओर।
त्यागिभूलभ्रम सत्यभजु प्रभुपद यह मतमोर॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांकुबलियाबधवर्णनो नामचतुःचत्त्वारिंशोऽध्यायः ४४॥

दो० चातक जैसे प्रेम दृढ़ करत स्वातिके संग।
पान करत नहिं गंगजल यदपि होय तन भंग॥
बधै बधिक शर सों चहौ राग सुनाइ कुरंग।
तदपि न त्यागै नेह बुध नित नूतन हित अंग॥
चितवत जैसे चंद्र दिशि दुखसहि सदृढ़ चकोर।
ऐसी साँची प्रीति जब करै एकही ओर॥
आदि अंतलों एक रस प्रीति निबाहै कोइ।
चतुर साधु पंडित गुणी है कुलीन जग सोइ॥
भवभव पावै बिभव युत मुक्ति पदारथ अंत।
दृढ़ सनेह सों पुरुष तिय ध्यावै रुक्मिणि कंत॥

यहिबिधिअमितबारताकीनासि। नृपचाणूर इंश सम चीन्हसि॥
जीवत कठिन मुक्तितन त्यागे। को पौरुष हमार तुव आगे॥

भिरयो श्यामसन तब चाणूरा। राम साथ मुष्टिक अघभूरा॥
मल्लयुद्धकृत अति गति सोई। निरखत सभा बैठ नृप जोई॥
भुजसों भुज शिरसोंशिर मारैं। पद पद कर कर धरि ललकारैं॥
चौ चष एक दृष्टिभयराजा। चकितसमरलखिसकलसमाजा॥
कहतपरस्पर होत अनीती। बालकसकैं मल्लकस जीती॥
कुलिश कठोर मल्लबलवाना। कोमल अंग राम भगवाना॥
दो० जोबरजैं तौ नृप भुकै चुपकृत धर्मकि हानि।
सभात्यागियेउचितयह कहतचित्तअनुमानि॥
जहां नस्वगुण चलै नय कहईं। तहां न चतुर एक क्षण रहईं॥
अति पछितात साधु मनमाहीं। दुष्टहृदयलखि लखि हरषाहीं॥
उत असुरारि राम रण करहीं। अखिल प्रकार मल्लगतिलरहीं॥
अमित भांति रण खेल खिलाई। दोऊ मल्ल हने दोउ भाई॥
मल्ल राजिका तब नर नाहा। घेरयोहरिजिस नग हरिकाहा॥
लखिखल अनीप्रबलबलखानी। क्षण महँ हत्यो कोपउरआनी॥
रण थल मल्ल रहित जबभयऊ। बुधजयकहि निशानखठयऊ॥
फल पितुराजी साजि अपारा। वृष्टि करत नभते तेहि बारा॥
दो० जयजय ध्वनिहरिजन करत अतिप्रसन्नमनभूप।
सभयअसुर तेहिक्षणअपर निरखतकालस्वरूप॥
कंस कहत निज चरन रिसाई। हनत निशान मोद उरछाई॥
भावत तुम्हैं श्याम जय काहै। जानत हितू मोर उर दाहै॥
चञ्चल अन्याई ये दोऊ। बाँधि सभा बहिरावो कोऊ॥
अरु बसुदेव देवकिहि लाई। घात करौ मम सन्मुख भाई॥
तापाछे इनहूँ को हनहू। सुकृतपाप कुछ चित्त न गुनहू॥
करो अकंटक राज सकेली। सुनि प्रभुबचनचले खलपेली॥
मर्दत असुर समूह नृपाला। आतुर धाइ चले नँद लाला॥
पहुँचे भूप मंच तट जाई। बैठ कंस अहमित अधिकाई॥
छं० अहमित अमित करचर्म असितन कवच शिरटोपीदिये।
बूझतनभ्रम बश अधम बुधिबिनु कालकर चोटीलिये॥

लखि काल काल कराल मोहन कंसतन कंपत भयो ।
उठिमंचपर ठाढ़ोभयो अंतक विवश गुण गण गयो ॥
दो० अति सभीत ह्वै जीवतब चहत पलावन सोइ ।
लज्या बशनहिं भजिसक्यो जीवनआशहि खोइ ॥
मंडलाग्र घातत भ्रमसानी । लीलावत रोंकत सुरध्यानी ॥
अपरअस्त्र नृपकरत प्रहारा । करतश्याम सहजहिं निरवारा ॥
तेहिक्षणविबुधतीनि दशजाती । देखिसमर शोचत बहुभाँती ॥
धर्मसेतु भवदुष्ट ढहावा । जेहिकरि तुवदासन दुखपावा ॥
ह्वै भयमान पुकारत भयऊ । यहिलघुबुधन अकथदुखदयऊ ॥
अब न खिलाइय यहि असुरारी । हतौ बेगि सुनि बिनयहमारी ॥
सुनि सुर गिरा बार अनुमानी । समय मृत्युकर ताकरजानी ॥
सबहि दुखित लखि कुन्तलपानी । गहिआकर्षिसुनहुनृपज्ञानी ॥
दो० सिंहासन से पटक महि ऊपरकूदे आपु ।
भयो जीवबिनु कंस नृप जाकर अधिकप्रतापु ॥
छं० भयो जीव बिनु नृप कंस लखि नरनारि यहै पुकारहीं ।
हरिहन्योकंसहिकुमति बश मन जानिजयतिउचारहीं ॥
अस्तुति करत सुरबृन्दसानँद कुसुम अवली बर्षहीं ।
नभ दुन्दुभी बाजहिं घनी सुनि सेवकादिक हर्षहीं ॥
दो० नगरनारिनर मुदितमन कृत बिनती चहुँ ओर ।
प्रभु आनन बिधुमा निरखि प्रफुलित मनोचकोर ॥
कंसभरत बसु सोदर ताके । बीर प्रसिद्ध समर रस छाके ॥
ते समस्त आयुधकर धारी । क्रोधित घेरत भे बनवारी ॥
रोष बलित प्रभुतिनहिं पछारा । अपर निशाचर कटक संहारा ॥
कंस हितू सेवक अघ खानी । जबनरहाकोउखलअभिमानी ॥
तबनृप तन मृतक द्वौ भाई । यमुना तट लैगये नृपराई ॥
तहाँ लीन द्वौ बन्धु बिरामा । भाबिश्राम घाट तहि नामा ॥
भूप मरण सुनि ताकर नारी । व्याकुलकृतबिलापध्वनिभारी ॥
कृष्णा निकट कृष्ण तटआई । लिये मृतक राजत यदुराई ॥

दो० लखिमुख निजपति नारिगण रोदतमहा कराल ।
गुण गण बरणत दुख मगन उराशिरमर्दिनृपाल ॥
प्रमदा बिकल देखि खलहारी । आवतभये जहां गण नारी ॥
मधुर बचन कह सबहि सुनाई । देहु तिलांजुलि नेह बढ़ाई ॥
शोक परिहरो ज्ञान बिचारी । जीवत सदा न कोउ तनधारी ॥
यह संसार असत्य असारा । बेद शास्त्र सब करत पुकारा ॥
मात पिता सोदर सुत नाती । प्रमदा हितू सुबंधु सुज्ञाती ॥
परिहरि तनु पुनि धरैं शरीरा । सुनो सकल जैसे घन नीरा ॥
जबलगि जासन रह संबंधू । तबलगि मीत सगाशुभ बंधू ॥
प्रभु उपदेश सुनत सब नारी । धीरज धरि तरप्यो तिलबारी ॥
दो० दाह कंस निज कर कस्यो श्री गोविंद कृपाल ।
मुक्ति दई उत्तम जगत मुनिन कठिन त्रैकाल ॥
दायकसुख जो शत्रुकह ताहि तजत मतिहीन ॥
मंगल त्यागि अपारभ्रम भजु हरिपदछललीन ।
इतिश्रीमद्विबिधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकंसासुरबधबर्णनोनाम
पंचचत्वारिंशोध्यायः ४५ ॥
दो० काम कल्पना नारि रत कल्पत द्रव्यहि लोभ ।
मनचाहत मद नित्य प्रति हिंसा क्रोध सछोभ ॥
मोह सबन में लिप्तता मन अशुद्ध सब बात ।
बुद्धि बोधिनी बुध कहत जीव शुद्ध बिख्यात ॥
इन सबही को एक करि बुद्धि संग बुधमेलि ।
चीन्है पूरण आतमा तृष्णा पापिनि भेलि ॥
जल थलनभ बासीन में मंडि रहा जो कोइ ।
ज्ञान योग ज्ञाता बदत लखै हृदय महँ सोइ ॥
कहत कठिन दुर्लभ करब गेहाश्रम दुखरूप ।
राधा बल्लभ ध्यान सों पावै मुक्ति अनूप ॥
नृप बांधव त्रिय करत पुकारा । जात महीपति भई अगारा ॥

दोनों बंधु राम अरु श्यामा। गये बसुदेव देवकी धामा॥
करिप्रणाम बंधन कटवाई। बारबार बिनवत त्रिबिभाई॥
रूप मनोहर जन दुख हारी। लखिदम्पातितनदशा बिसारी॥
उपज्यो ज्ञान ब्रह्म पहिचाना। पूरण पुरुष सत्य करिजाना॥
मन शोचे ये तिहुँपुर सांई। निज इच्छा प्रगटे भुवआई॥
क्षमा भारकर कमल उतारि हैं। असुर रहितकरि धर्म प्रचरिहैं॥
इनकर चरित को जानन हारा। सृष्टा जटी लहत नहिं पारा॥
दो० अंतरयामी जान यह उपज्यो पूरण ज्ञान।
निजमायाप्रेरयोहरयो उत्तम ज्ञानसुजान॥
ब्रह्म बिबेक नशत सुत जाना। तबश्रीहरि इमि बचनबखाना॥
ममहित दंड सह्यो तुमभारी। बिपुल काललगि रहे दुखारी॥
अहिरजनी हिय सुरति हमारी। करत रहे प्रभु बश्य सुरारी॥
दोष हमार तात कछु नाहीं। अमिटबरण अजभूप सदाहीं॥
जब ते नंद गेह करि आये। हमकहँ पिता मोद उर छाये॥
तब ते परबश रहे कृपाला। शोच यहै मनरह सब काला॥
जिन दशमास गर्भ महँ धारा। कंस दंड पुनि सह्यो अपारा॥
तिनहिन सौख्यरंचहमदीन्हा। बय ब्यतीत परघरहीं कीन्हा॥
दो० हमहुं न देखा बालसुख पितु निकेत दिन एक।
बृथा जन्म भवभव भयो गावत नीति बिबेक॥
सुत सपूत सोई भव अहई। जेहिकरि तातमात सुखलहई॥
जननी जनकपुत्र जो सेवै। दोनोंदिशि शुभ कीरतिलेवै॥
सो उद्धार लहै भ्रम हीना। ऋणी रहे हम भयबय क्षीना॥
सुनतअब्याज नीतिभयबानी। दम्पति महामोद उर आनी॥
कंठ लगाय युगल सुत भेटे। अघदुख भूतकाल के मेटे॥
कह सपूत तुम समको आना। हन्यो कंस नाश्यो दुखनाना॥
पितहि प्रबोधिचले बिबिधाता। उग्रसेन पहँ गय हरषाता॥
जोरि उभयकर कह मृदुबानी। नाना करिय राज सुखमानी॥
दो० आजुलग्न खगऋक्ष भल योग करणसुनुतात।

राजकरो मन मोद धरि परिहरिशोक सुगात ॥
उग्रसेन सुनि श्याम रजाई । पर्‍यो नृपाहि सरज दलआई ॥
करि विज्ञप्ति कह्यो करजोरी । दयाधीश सुनु बिनती मोरी ॥
कंस सबन्धु जौन बिधि मारा । अपर तमीचर कटक संहारा ॥
भक्त सुजन सुख दयउ अनंता । प्रभुतुमअज अनादिश्रीकंता ॥
जस बसुदेव बंदिते मोच्यो । कृपासिंधुजिमिममनरोच्यो ॥
तिमि सिंहासन राजिय नाथा । करहिंराज्यअभिषेक सुमाथा ॥
मधुपुर बैभव पति बिभु होहू । पालहु प्रजा नाथ करिछोहू ॥
वृद्ध बैस यहि लाभहि पाऊं । सकलकलुष निजहाथबहाऊं ॥
दो० बिदित जगत यदुबंश महँ नाधिकार अभिषेक ।
सुनहु तात इतिहास भल भाषौं सहित बिबेक ॥
नृपति ययाति पितामहँ जोई । जेठर बहिक्रम भयजब सोई ॥
यदु अणु तुर्व सुद्रुह्य सुजाना । अरुपुरु तासु तनयशरनाना ॥
प्रथम बोलि यदु कहँ समुझाई । लै मम बैस देहु तरुणाई ॥
सुनि पितुबचनशोचमनमाहीं । देहुँ आयु कछु संशय नाहीं ॥
मैं परंतु पाछे पछिताऊं । पाप समृद्धि घोर गति पाऊं ॥
तरुण होय पितु करिहैं भोगा । अपकीरति यह कर्मअयोगा ॥
ताते तरुणाई नहिं देहौं । जनककोप शिरधरिसहिलेहौं ॥
द्वौ करजोरि भएयो सुनु ताता । हमसन बनिनपरिहियहबाता ॥
दो० सुनि ययाति अतिकोपकरि यदुकहँ दीन्होशाप ।
नृपन होय तुव बंश मम शापन लंघन पाप ॥
अपर सुवन उठि चले पराई । पुरु करजोरि जनक तटजाई ॥
सविनय सानुराग बदबानी । मम बयलेहु जीव मुदमानी ॥
भावत मोहिं न बय दुखदाई । बृद्धापन सुख लहौं सदाई ॥
यह शरीर जड़ वृथा कहावै । धन्य गुनोंजु काम तुव आवै ॥
बालापन जिमि तात सिराना । तिमितरुणतासु करिहिपयाना ॥
अति प्रसन्न तब भये ययाती । पलट्योबय निजउर हरषाती ॥
आशिष पुरुहि दीन्हमनमानी । महिपति होइहि तवसन्तानी ॥

यहि कारण नृपता अधिकारी। हमनहिं निजमनदीखबिचारी॥
दो० सानँद तुम बिभुता करो दुबिधा तजिसब काल।
आनकाज हम सबकरैं आयसुवत महिपाल॥
आज्ञा भंग करिहि जोतोरी। सहिहि सो घोर ताड़नामोरी॥
प्रजा पालिये नृप सहनीती। परिहरि सकल शोचयुतप्रीती॥
कंस त्रास जे बहु यदुताता। गये बिदेश शोकमय गाता॥
खोज लागिचर अमित पठावो। झटित काज महँबारन लावो॥
मधुपुर सबहि बसाइ सुखेनू। प्रतिपालौ गुरु महिसुर धेनू॥
जन मनरंजन आयसु पाई। उग्रसेन बोलेउ शिरनाई॥
तुव अनुशासन मानि अघारी। करब राज हम सदा सुखारी॥
हरिआसनतेहि च्चणहि बिराजा। कीन्हो राजतिलक ब्रजराजा॥
दो० राम श्यामकर चमर लै ढारत भये महीप।
कीरति यहछाई अवनि प्रतिथल जम्बूद्वीप॥
पुरबासी अतिशय मन हरषे। नभ ते सुरन फूल बहु बरषे॥
यहि बिधि उग्रसेन कहँराजा। देइचले जहँ नन्द समाजा॥
बसनाभूषण बिपुल मँगाई। प्रफुलित हृदयभूप दोउभाई॥
नन्दराय तट जाइ बिहारी। कारे प्रणामकल गिराउचारी॥
तात तुम्हारि प्रशंसा भारी। किमिकहिसकलघुबुद्धिहमारी॥
शेष सहस रसना करि गावैं। तदपिन तवगुण पारहिपावैं॥
हमसों कहत बनत नहिं कैसे। निर्गुण गुणगणअर्थहि जैसे॥
कीन्ह तात निर्व्याज सनेहा। सुत समान पाल्यो मम देहा॥
दो० आठ यामकरि प्रीति बड़ि प्रतिपाल्यो सुदुलार।
यशुदा मात सनेह युत सब दीन्हे सुख सार॥
अधिक तनय ते नित प्रतिपाला। अखिलप्रकारमेटिदुखजाला॥
जानन आन सूनु मनमाहीं। निजबालकसम पालसदाहीं॥
उदासीन सुनिके मम बानी। पितान होहु सुनहुमुदमानी॥
जननि जनकतुम दम्पतिअहऊ। जानि वियोगमहँउरदुखलहऊ॥
मथुरा रहौं कछुक दिन ताता। भेटौंअखिलमुदितयदुजाता॥

यदुकुल उत्पति शुभ इतिहासा । सुनोबसोनिज पिताअवासा ॥
पितु बसुदेव देवकी माता । लहैं मोद सुनिसुनिममबाता ॥
हमरे हित कलेश अति पावा । कंस त्रास तव सदनपठावा ॥
दो० नृपति जानि करिबंदि पुनिदीन्हो दण्डमहान ।
अबकछुदिन आचरण मम देखिलहैं कल्यान ॥
अस कहि बसनाभरण नृराई । नन्द अग्र धरि कहयदुराई ॥
उदासीन बोले घनश्यामा । मातासों पितु कह्यो प्रणामा ॥
तुम निष्कपट राखियो प्रीती । नीति बिचारिपुराकी रीती ॥
सुनत नन्द व्याकुल अतिभयऊ । रंक ग्रंथि पारस जनुगयऊ ॥
गज सम स्वासभरैं सुधिनासी । नीरज सुख तुसार बत्रभासी ॥
ग्वाल सखाश्रम बश तेहिकाला । सुनतअचंभितबचन बिहाला ॥
कहत श्याममति कसभइधाता । कुलिश कठोरबदतकटुबाता ॥
बूझिपरत मधुपुर अब रैहैं । बहुरि न नन्दग्रामकहँ जैहैं ॥
दो० सखा सुदामा जोरिकर कहत सुनो नँदलाल ।
ग्रामवाक्य केहिलगिबदत तुमप्रबीनतिहुँकाल ॥
बध्यो कंसयह अतिभलकीन्हा । गोद्विजादिसाधुनसुखदीन्हा ॥
अबचलि नंद संग गुणराशी । तुवकीरतिजगसकलप्रकाशी ॥
वृन्दाबन बैभव पति होहू । प्राण प्रिया परिहरोन छोहू ॥
राज लोभ कीजै न गोसाँई । अनुगामी तुम्हारि प्रभुताई ॥
जस आनन्द निकर वहिठामा । मथुरा तस न लहो हरिरामा ॥
यह प्रभुत्व नीरद करि छाया । सथिरनतातमुनिनअसगाया ॥
सूरुख भूलत राजहि पाई । बुधन मनहिंलावतभ्रमभाई ॥
गज तुरंग पुनि बाहन नाना । अंतसंग नहिंचलहिंसुजाना ॥
दो० वृन्दाबन तजिहेत बिनु इहां रहो जनिबीर ।
मधुऋतु घन बन जमीतट रहत बहतत्रिसमीर ॥
बृंदाबन सुख तजि हठ करिकै । बसिहौ इहां लोभउर धरिकै ॥
मात पिता परिहरिहितु मोहन । मथुरा रहत ससुखरिपुद्रोहन ॥
को बड़ पद पावहुगे आगे । नृप सेवा महँ रहिहौलागे ॥

निशिदिन चिंताबसिहि शरीरा। सेवा कर्म निषिद्ध अधीरा॥
जाहि राज दीन्हो तेहि बन्दौ। पराधीन किमितात अनन्दौ॥
तुव मरयाद अधिक अपमाना। सहौ किमर्थ कहौ दृढ़ज्ञाना॥
ममशिख उत्तम निजउर धरहू। नृपता लोभ दूरिकिन करहू॥
नन्दलहैं दुख होत बियोगा। चलियसंगसबबिधियहयोगा॥
दो० ब्रज सरितासर बिपिनमग कीजियश्यामबिहार।
धेनु नेह नहिं त्यागिये सुनिप्रभुबचन हमार॥
नातरु ब्रज परिहरि हमस्वामी। होउबसब तुम्हार अनुगामी॥
इमिबतरायबिबिध बिधिग्वाला। हरिसँगमें कछुसखानृपाला॥
नन्दहि कहत सखा समुझाई। सबहि संगलै गवनहु राई॥
रामश्याम कहँ साथ लवाई। पाछे हम आवत सुखपाई॥
ब्याकुल अपर गोप सुनिबानी। बिथक्योज्ञान सुबुद्धिनशानी॥
प्रभु बियोग अहि काहुइकाटा। जीरण पट सनेह जनुफाटा॥
चित्र लिखित जसिपूतरिकोऊ। जानत हरिगति बिथुरितसाऊ॥
क्लेश ग्रासितनन्दाहिअनुमानी। कृतप्रबोध हरिमूशल पानी॥
दो० तात वृथाउर दुखसहत समयशोक करनाहिं।
कछुक दिवसरहि मधुपुरी हमआउबतवपाहिं॥
निरखत मरकट ध्वज दुखपूरी। यशुदा मातु होइ भ्रमभूरी॥
चित धीरजधरिहैं सुधिपाई। यहि कारण गमनोमुदलाई॥
हम अनुचरपितु बिबिधप्रकारा। वैभव बिपुल प्रतापतिहारा॥
अबकी बारसंग सुत चलहू। अलखचरितबूझतजानिछलहू॥
भेटि सबहि आवहु असुरारी। सुनिसनीतियहबिनयहमारी॥
सरित बियोग अपार अगाधा। नेहावर्त्त भ्रमित चहुकाँधा॥
नन्द जीव पन्थी परदेशी। पस्योकुघाटबिकल अलवेशी॥
आनन भाभा रहित नरेशा। बुद्धिथकितरह ज्ञाननलेशा॥
दो० प्रभुपद सरितट परतभो सजलित अच्छ अधीर।
कहत कृष्ण हे कृष्ण नृप हरो बिषमतन पीर॥
हरि सर्वज्ञ अमाया ज्ञानी। अतिशयबिकलपिताहितजानी॥

मम बिछोह सरि बूडहिं आजू। अपयश अमित होइ मनकाजू॥
मोहन माया घाट लगाऊं। कीरति विशद सुगम भवपाऊं॥
प्रीति हराणि माया प्रभु प्रेरी। कीन्ह कठोर सुमति सबकेरी॥
माया बिवश बिचारि नृपाला। सन्तामृत बचबद गोपाला॥
शोक किमर्थपिता कृत भूरी। मधुपुर ते पुर केतिक दूरी॥
जब चाहौ तब मिलो अत्रासा। समुझि कालगति तजिये आसा॥
ह्वै हैं दुखी तात पुर बासी। तुमहिं देखि सुखलहैं सुपासी॥
दो० मर्म बचन निरमोह सुनि नन्द जोरि कर दोउ।
कह्यो करौ निज रुचि सरिस बरजक दूसर कोउ॥
तुव अनुशासन शिर सबहीके। कृपासिंधु धन जीवन जीके॥
राख्यो प्रीति कृपाल हमारी। अकथ चरित तुम हौ बनवारी॥
गोपन सहित चले नँदराई। फिरे बन्धुद्वौ तिनहिं पठाई॥
नन्द महर मन शोच अपारा। मनो रंक धन पाइ बिसारा॥
ग्वालसखा इमि दुखित भुवाला। सर्ब सुहार ज्वारि जसख्याला॥
चेत अचेत चलत मग माहीं। लटपटं चरण धरत सुधि नाहीं॥
फिरि पाछे देखैं दुख दाहा। अवद दशाको कथन रनाहा॥
पाय सुद्धि धाये पुर लोगा। युवतीपुरुष सुयोग अयोगा॥
दो० सुनि यशुदा आतुर चली भेटन मोहन लाल।
जब न दीख घनश्याम कहँ भई अमित बेहाल॥
अहह कंत सुत प्राण हमारे। सत्य कहौ तुम कहां बिसारे॥
पट भूषण लै घर कहँ आयो। जग जीवन तजि अमृत पायो॥
अत्तहीन पारस जिमि पावै। उपल बिचारि तुरंत बहावै॥
जब गुण सुनै धुनै शिर सोई। तिमि बालक पति आयउ खोई॥
बसनाभरण पलटि सुत लाये। मगादिय मुदित काँचकरपाये॥
सुत बिनु तन धन करिहौं काहा। बिहरत उरहरि बिनु सुनु नाहा॥
बुद्धि रहित मूरुख तुम भयऊ। बिछुरत कस न फाटि हिय गयऊ॥
तूबावरि त्रिय बकत अकाजा। ग्वाल न श्याम बने यदुराजा॥
दो० कंस निधन करि पास मम आइ कह्यो यह बात।

निठुर बचन माया रहित जो सुनि दुख ममगात ॥
कहयो कि हम बसुदेव कुमारा। पोषण कर्म बताव हमारा॥
यह अचरज की बात सयानी। सुनिबिस्मितभोमनक्रमबानी॥
अब न सूनु करि जानु अघारी। ईश्वर जानि प्रीति करुनारी॥
नारायण हम प्रथमहिं जान्यो। मोहबिवशबालक करिमान्यो॥
पति मुखबचनसुनत भ्रमभयऊ। हरि माया सनेह हरिलयऊ॥
पुत्र शोच आवत मन कबहूं। यशुदा नृप रोवत चाणलवहूं॥
काहू काल लाय उर ज्ञाना। जानत आदि पुरुष भगवाना॥
गावत यश सानन्द सुजाना। मेटत दुख धरि उत्तम ध्याना॥
दो० ब्रज बासी सब नारि नर घूमत हरिरसलीन।
बरणिसकतनहिंबुद्धि मम सुनु महिपालप्रबीन॥
मथुरा चरित सुनो अब राजा। जुरयो जहां सुखसदनसमाजा॥
बल हरि सखहि पितहि पहुंचाई। गये बसु देव भवन मुदपाई॥
दम्पति युगल तनय सुखदेखी। निरखत नृप परि हरे निमेखी॥
जो बसुदेव पाव आनंदा। कहिनसकतसोअजशिरचंदा॥
उपमाबिनु प्रबोधनहिं होई। तपफल जिमि तपसीलहकोई॥
पुनिबसुदेव कहा निजबामै। नन्दगेह निबसत हरिरामै॥
बीतेदिन बहु देखु बिचारी। खायो ग्वालन संग बिहारी॥
यदुकुल धर्मजान नहिं दोऊ। कीजिय सो जेहिहसै न कोऊ॥
दो० बोलि गर्ग सम्मत करिय उचित कर्म जगमाहिं।
ज्ञानवान उनते अधिक दूसर सुनु पति नाहिं॥
तब कुलपूज्य गर्गऋषिबोली। कलित मनोहर इच्छाखोली॥
नाथ हृदय मम यह सन्देहा। राखिय कृष्ण कहौ कृतकेहा॥
को उपाय जप तप मख पूजा। कह प्रभुतव तजिहितूनदूजा॥
प्रथम निमंत्रहु निकरसज्ञाती। बिप्रादिक कृतज्ञ शुभजाती॥
करि कुल धर्म उचित सुखदाई। मखउपवीत करौ द्वौ भाई॥
दोष रहित बालक बिबितोरे। सदाशुद्ध जगमय मत मोरे॥
तदपि लोक कुल रीतिहि करहू। मनअसमंजससहजहि हरहू॥

ऋषिशासनसुनि चरन हँकारी। मृदुल सनयशुभ गिराउचारी॥
दो० क्षमा बिदौता ज्ञाति जन देहु निमंत्र सम्हारि।
दूतन तुरताहि नगरमहँ न्योत्या गृह प्रतिझारि॥
बसुधा देवबृन्द चलिआये। ज्ञाति बन्धु सब मोदहिपाये॥
जाति कर्म प्रथमहिं अनुसारा। बेदबिदितकरि कुलब्यवहारा॥
बाण द्विगुण सहस्र क्षीरोदा। दानकीन्हयहिबिधियुतमोदा॥
मढ़वाये अष्टाबद शृंगा। ताम्र पृष्ठ पदरजत सुरंगा॥
रोम पाट पाटित महिपाला। संकल्पी हरि प्रसवत काला॥
भयउ मंगलाचार निकेता। श्रुतिवतमखकीन्हा कुरुकेता॥
राम श्याम कहँ दीन्ह जनेऊ। हरषे ज्ञातिबन्धु द्विज तेऊ॥
पठइ सबन पुनिसुतन बोलावा। सोपहार गुरु गेह पठावा॥
दो० ऋषि संदीपन ज्ञान निधि नृप अवंतिका बासि।
तिनकीशाला बिदितभव बिशदठाम पुरकाशि॥
तिनहिं युगल सोदर सानंदा। जोरिहाथ कीन्हों अभिबंदा॥
आरत गिरा बद्यौ यदुराई। विद्यादान देहु द्विज राई॥
देखि मिथुनसुत रूप निधाना। संदीपन अतिशयसुखमाना॥
सानुराग राख्यो निज गेहा। शिक्षा करहिं सप्रेम सनेहा॥
अल्पकाल महँ वेद सुमंदा। तर्क शास्त्र पढ़ि गये मुकुंदा॥
विद्या निधि विद्यामनु सीखी। सुनो नाम जेबदत मनीखी॥
ब्रह्मज्ञान[१] ज्योतिष[२] व्याकरना[३]। जूप[४] कोक[५] धनुर्धर[६] जलतरना॥
स्वास[७] वैद्य[८] चौर[१०] नटकर्मा[११]। अश्वारूढ़[१२] प्रबोधन[१३] धर्मा॥
दो० अपर रसायन[१४] सहित नृप सिखत भये यदुराय।
तंत्र मंत्र पौराणहू काव्य करण मुद पाय॥ ॥
तब करजोरि गुरूसन भाषा। सुनौनाथमम दृढ़ अभिलाषा॥
नीति कहत विद्यागुरु जोई। सबते अधिक जगतमहँसोई॥
सकल बस्तु बिद्याकरिजानिय। मूरुख बिनु विद्यापहिचानिय॥
कोटि प्रकार देइ धन कोई। विद्या गुरुते अऋणनहोई॥
करुणा निधिमम शक्तिबिचारी। गुरुदक्षिणा भणौ अघहारी॥

सोदै सदन जाउँ द्विजराई। तव प्रसाद विद्या सब पाई ॥
यह सुनिबिप्रभवन निजगयऊ। प्रभुगुणप्रियहिसुनावतभयऊ॥
राम कृष्ण बालक जो दोई। आदि पुरुष मानुषनहिं सोई ॥
दो० धरा भार टारन करन भक्तन को प्रतिपार।
अकल अनीहस्वतंत्रहरि लीन्हमनुजअवतार ॥
विद्यानिधि अपार जग जाना। कोअस जानि सकैपरमाना ॥
जन्म अनेक परिश्रम करई। विद्या सिंधु तदपिनहिं तरई ॥
येबिबि तात गये तरि पारा। ताते आदि पुरुष अवतारा ॥
जो चाहैं सो करैं अछोभा। मांगिय सो देहैं बिनु लोभा ॥
जो कहु सोगुरुदक्षिणा मांगौं। भव अरणवहिपारजेहिलागौं ॥
अल्प काल जो सुत मृतुपाई। गयो शमन पुर मांगो जाई ॥
प्रमदा सहित श्याम तट आये। दीन बचन द्विजराज सुनाये ॥
कृपा उदधि मोरे यक सूना। निरखत सुख पावौंप्रति जूना ॥
दो० सा कुटुम्ब यकबारगा पर्ब योग निधि न्हान।
न्हातसमयनिधिबीचिका सुत बहिगोभगवान ॥
ताकर शोक अमित यदुनाथा। अहनिशिदाहशोकसतपाथा॥
गुरु दच्छिणा देहु सुत सोई। जो पै नाथ कृपा बड़ि होई ॥
करिप्रणाम गुरु कहँ द्वौ भाई। पुत्र काज गवने कुरु राई ॥
सिंधु श्यामकहँ जानि सरोषा। बिरच्यो नर शरीर नृप चोषा॥
सभय अधीर लिये उपहारा। प्रभुसन्मुख आयउ तेहिबारा ॥
साष्टांग करिदण्ड प्रणामा। भेट राखि भाख्यो निजनामा ॥
सबिनय कहत भाग बड़ मोरा। त्रिपुरनाथ दरशन लहतोरा॥
केहि कारण आयउ सुरपाला। सुनि बोलतभेदीनदयाला ॥
दो० एकसमय परिवार युत आये मम गुरु देव।
तिनके सुतकहँतुम हस्यो सुनु आगमकरभेव ॥
जो निज कुशलचहौ जनपाला। लाय देउ तौ श्रीगुरु बाला ॥
शीशनाइ कह सुनुजनपालक। जानतमैंनहिं तुवगुरुबालक ॥
भुवन वेद दिशिगुरु तुमस्वामी। कृपा उदधि तवचरणनमामी ॥

रामचन्द्र बपु बाँध्यो मोहीं। अतिशयत्रसितनाथमैंतोहीं॥
निज मरयाद सहित नितरहऊँ। तवशरसुतपद सुमिरतश्रहऊँ॥
जो पै तू न हरसिको हरसी। देह बताय दुराय न करसी॥
शंखासुर कृत कम्बु स्वरूपा। रहत मध्य मम सुनुसुरभूपा॥
जलचर जीवन सो दुख देता। मनुजादिक न्हाते हरिलेता॥
दो० जो कदाचि लै गयउ वह तौ खोजिय यदुराय।
प्रविशे दधि मधि सुनतहरि नृप आनंदबढ़ाय॥
लखत निपात्यो शंखासुर को। उदर फारि हेस्यो सुत गुरुको॥
मिल्योन तब कह बलहिसुनाई। बध्यो निरर्थ याहि हमभाई॥
तात दोष नाहिंकर यहि धारो। शंख महत्त्व जगत बिस्तारो॥
बधि गरुड़ासन आयुध कीन्हा। बहुरिमोच्चपदअसुरहिदीन्हा॥
सम्मत करि बिबिबाँधव धाये। सानँदसमन निकेतहिआये॥
जहाँ धर्म बैभव पति राजैं। जाहिबिलोकिअघीगणलाजैं॥
आवत प्रभुहि देखि यमराजा। उठिधायो नृप सहितसमाजा॥
करि प्रणाम लायो निज धामा। हरि आसन राजे हरिरामा॥
दो० पादोदक लै समनयह कस्यो धन्य मम गेह।
जहाँ दरश तुव पाव प्रभु पूरण प्रगट सनेह॥
भयउं कृतारथ कृपा निकेता। भाषिय नाथ निजागमहेता॥
धन्य जानि सो करों गोसांई। सुनो हेतु आगम यह भाई॥
संदीपन मम गुरू सुजाना। दीन्हो हम कहँ बिद्या दाना॥
गुरु दक्षिणा मांग्यो मृतु सूना। बार न करो देहु यहि जूना॥
आतुर महिषध्वज सुत दयऊ। करि प्रहून पुनिबोलत भयऊ॥
तुव दायाप्रथमहिं यह जाना। आइहि सुतआनै भगवाना॥
करि बहु यतन राखसुरपालक। उपजायोन धरा यह बालक॥
लै गुरु तात यान बैठाई। प्रमुदित चलत भये यदुराई॥
दो० क्षणमहँ हरि पुर आइ हरि गुरुपद कस्यो प्रणाम।
दयो पुत्र पूरण पुरुष बजी बधाई धाम॥
पुनि करिप्रणति बद्यौ गुरुपाहीं। कोआयसु कहिये मनमाहीं॥

सुतबिलोकिबड़िद्यो अशीशा। द्विजवर नरवर नायउशीशा॥
अबन मनोरथ कोउ मन रहेऊ। बालकपाइ अकथ सुखलहेऊ॥
जस प्रताप प्रगट्यो पुरलोका। अवनिकेतसुतजाहुअशोका॥
आयसु पाय बंदि गुरु पादा। चले सबंधु कुशल मरयादा॥
मथुरा निकट पहूंचे जाई। सुनि धाये पुर लोग लोगाई॥
उग्रसेन अगमन चलि आये। सबसुदेव बहु करत बधाये॥
भेटि सदन लाये घनश्यामें। बजी बधाई पुर प्रतिधामें॥

दो० होत मंगलाचार पुर आनँद कहा न जाय।
मंगल तू भजु श्याम पद दुबिधा मोह बहाय॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांशंखासुरबधवर्णनोनाम षट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

दो० चषनिरखत जिमि रूप कहँ सूरप्रकाशहि पाइ।
तिमि पूषण भासित चतुर ब्रह्म प्रकाशप्रभाइ॥
नवंदशंहरनखंद्विगुणतिथिं चारिसहितचौरासि।
जलचरनभचरकृमिबिपिनपशुनरयोनिप्रकासि॥
भासित सबमें एकरस परमात्मा सुखमूल।
द्वैतभाव बिनु कृपा निधि कारण सूक्षम थूल॥
निरगुण सगुण स्वतंत्रही होत आपुही आय।
यह दुबिधा मन छोड़िके तू भजु यादव राय॥
पूरण सुख पावै जगत अर्थ धर्म अरु काम।
मोक्ष अंत प्रयास बिनु बदत सकल गुणग्राम॥

वृन्दाबन कीजिय सुधिभूपा। कर्योदयानिधिअकलअनूपा॥
अरुजस ऊधो गयउ सिखावन। सुनु प्रसंगनृपसोअतिपावन॥
एक दिवस हरिबल प्रतिकहेऊ। तात एक चिंता उर दहेऊ॥
वृन्दाबन बासी दुख कोरी। लहतहोहिंगे करिसुधि मोरी॥
कारण अवधि बीतिगइ ताता। सखाप्रियाक्लेशित पितुमाता॥
चतुर बिचारि दूत गुण धीरा। समाधान हित पठइय बीरा॥

ऊधो ते गुण बलित न कोऊ । योग कर्म जानत हैं दोऊ ॥
बोलि कहा वृन्दाबन जाइय । सबहिबुझायतातफिरिआइय ॥
दो० एक सखा तुम सत्य मम दूसर ज्ञान निधान ।
धीरमान धरमज्ञ पुनि भाषत सकल सुजान ॥
यशुदा नन्दहि ज्ञान बतावो । गोपिन पूरण योग सिखावो ॥
मातु रोहिणी आदिक लाइय । बारन करिय बेगिअतिजाइय ॥
ज्ञान योग हरि नीति बताई । दई पत्रिका लिखि सुखराई ॥
शुभ सन्देश कहेउ असुरारी । सबसन ऊधो कह्यो बिचारी ॥
बस्त्राभरण मुकुट निज दीन्हेउ । निजरथबहुरिअरूढ़ितकीन्हेउ ॥
करि प्रणाम हांक्यो रथ राजा । ऊधो चल्योमुदितनिरख्याजा ॥
अति आतुर बाजी रथ धाये । ऊधो नन्दग्राम तट आये ॥
गहन गहन फल दानव शाखा । द्विजबाणीलाजतद्विजभाखा ॥
दो० अमृत दानि राजी बिपुल पीत श्वेत अरु नील ।
चारत गोप समोद गुण हरि गावत युत शील ।
प्रभु बिहार थल अनुपम शोभा । मन ऊधोकर निरखत लोभा ॥
करत प्रणाम सप्रेम अपारा । ग्राम निकट पहुँचे जेहिबारा ॥
हरि रथ देखि गोप यक आई । ऊधो नाम पूछि नरराई ॥
नन्द समाज तुरत चलि गयऊ । कहिजयजीवबदतअसभयऊ ॥
महाराज प्रभु यान अरूढ़ा । संज्ञा ऊधव पुरुष अमूढ़ा ॥
मथुरा ते आयउ पुर पासा । पूछत नाथ तुम्हार अबासा ॥
सुनत नन्द धाये मुद छाई । जिमिचक्रीगतमणिसुधिपाई ॥
श्याम सखा भेट्यो उर लाई । कुशल पूछि ले चले लवाई ॥
दो० अति आदर सन्मान करि लाये नंद निकेत ।
पग धुवाय आसन दयो राजे पूरण हेत ॥
भोजन कर्यो मोद उर छाई । पुनि शय्या राज्यो सुखपाई ॥
पंथ परिश्रम बश गये सोई । जागे जबहिं नींद नृप खोई ॥
ऊधो तट आये तब नंदा । कीन्ही प्रश्नललित सानंदा ॥
कहौ तात बसुदेव प्रसंगा । इष्ट मित्र हमरे छल भंगा ॥

सा कुटुम्ब हैं कुशल क्षेमा। राखत हृदय सत्य मम प्रेमा॥
पुनि अबकुशलकहौ यदुबरकी। सुधि आये बुधिहोतअतरकी॥
सुहृद् तात उनके तुम सांचे। हरि अरि याम श्यामरसरांचे॥
कवनौ काल करत सुधि मोरी। अकथ अगोचर गुणगणधोरी॥
दो० अपनी दशा कहा कहैं बिकल सकल नर नारि।
आवन अवधि ब्यतीत भइ आयेनहिंअसुरारि॥
हरि जननी माखन नित धरई। अकलभूमि रुदिबदिनितपरई॥
अपर योषिता हरि रस माती। दिवसरैनि ब्याकुलसबभांती॥
काहुकि सुरति करत गिरिधारी। अथवा सब कहँदीन बिसारी॥
पूछि कुशल भये मग्न सुनंदा। प्रभु रस सर अथाह कुरुचंदा॥
धरि हरि ध्यानअवाकितभयऊ। पुनचैंति इमि भाषन लयऊ॥
बैभव अमित कंसहति पावा। यहि कारणहरिमोहिंबिसरावा॥
यशुदा सुधि बुधि देहँ गवाँई। मन मारे ऊधव तट आई॥
समाचार पूछ्यो हरि हरिके। रोदतिप्रभु कर्तबसुधिकरिके॥
दो० ऊधो हम बिनु श्याम हरि मथुरा दिवस अनेक।
रहे कवन बिधिसो कहौ शुभ प्रसंग सबिबेक॥
को संदेश कहा बनवारी। आइहियहिपुर कबहुं बिहारी॥
समय बिचारि पत्र हरि केरा। नंदहि दयउ समुद तेहि बेरा॥
नंद रंक धन पाती पाई। चूमि शीश दृग हृदय लगाई॥
गद गद कंठ कह्यो ऊधो सन। पढ़ौ तात यह कह प्रसन्नमन॥
बांचि सुनायो दंडप्रणामा। यथायोग सबके पढ़ि नामा॥
पूरुबतप बर सम हम कीन्हा। मथुरा बास हेत यहि लीन्हा॥
करो नेह मम ब्रह्म बिचारी। तज्यो न सुरति कोउनरनारी॥
वृंदाबन निवास बसुयामा। जानो मोर सत्य गुण ग्रामा॥
दो० ऊधो कह्यो सप्रेम पुनि सुनौ नन्द ममबैन।
धन्य तीनि पुर जानि मम दूसरकोउ अहैन॥
जिनके आयत जनमन रंजन। बाल चरितकीन्होखलगंजन॥
अकथ सौख्य दीन्हो असुरारी। महिमाविदितअखिलसंसारी॥

पद्मिनि जापद्मिनिरिपु जापति। कौनोबिधिनहिंबूझतजागाति॥
आदि पुरुष पूरण अविनाशी। जननीजनकरहितगुणराशी॥
ताहि पुत्र तुम जानत ताता। नित्यराग नितराखत गाता॥
रागा राग अशुचि शुचि कोई। राधा रमणहिं ध्यावै जोई॥
लहै मुक्ति बिनु युक्ति कराला। प्रभुप्रसाद उत्तम त्रैकाला॥
आगम निगम पुराण बखाना। सत्यभाव बशश्री भगवाना॥
दो० दासन हित विरच्यो बपुष निजबश दीनदयाल।
मित्र शत्रु जाके नहीं सुनुपुर कृत प्रतिपाल॥
ऊँचनीच अबला नर कोई। ध्याव मोक्ष सानुराग लहसोई॥
जिमि भृंगी कीटहि लैजाई। आपु समान करत मुदपाई॥
अरु जिमि चंचरीक तियराई। पुंडरीक बश निशि ह्वै जाई॥
गूंजत अलिरजनी शिरवाके। तजतनेहनहिंनिज सुखताके॥
यहि प्रकार प्रभु आठो यामा। दाससंग डोलत गुणग्रामा॥
अन्त चतुरभुज रूपहि देहीं। आपुहि माँझलीन करिलेहीं॥
अबतुमहरिहिसूनु जनिजानो। ममसिख मानिब्रह्म पहिचानो॥
अंतरयामी जन सुखकारी। देहैं दर्शन तुमहिं बिहारी॥
दो० परिहरि चिंताजीवकी ध्यावौं लक्ष्मीकन्त।
सकल मनोरथ जीत तेहि पूरण मुक्तिसुअंत॥
इमि बतरात निशा गतभयऊ। खदधिमथनचारिदिशिछयऊ॥
ऊधो कह्यो नन्द प्रति बानी। ऊषाकाल भयउ सज्ञानी॥
आयसु होइन्हाउं रबिजाता। मेटों अघ संचितनिजगाता॥
नन्द बद्यौबिलम्ब जनि करहू। संध्याजाप न्हाय अनु सरहू॥
चढ़िरथ ऊधौ तुरत सिधाये। पूषण सुतातीर चलि आये॥
शौच कर्म करि रजशिर धारी। जोरि हाथ बिनती बिस्तारी॥
करिआचमन बहुरि प्रविशेजल। तर्पणकरिध्यायउहरिनिरछल॥
न्हाय पुनः आये बहिराया। कस्यो शुद्ध मन पूरण जाया॥
दो० तेहिअवसर तियप्रतिभवन लगींमथन दधिभूप।
खचीरद छायोअपर नूपुर ध्वनि ध्वनि रूप॥

दधिमथिपुनिगृहकारजकीन्हा। भई सुचित्त महीप प्रबीना॥
जुरि बहुनारि चलीं जल हेता। गावत जाहिं सुनो कुरु केता॥
अंग अंग प्रति हरि रसमाती। प्रभुगुणबदतन हृदय समाती॥
बिसरी प्रभुबियोग सुधितनकी। करत बारता जीवन जनकी॥
कोउ कहहमहिं मिले असुरारी। भयेगुप्त कोउ कहैं निहारी॥
करमम गह्यो प्रेमबश श्यामा। को असहित अपर त्रैधामा॥
ठाढ़े तूल नीप के मूला। रूप त्रिभंगी लखिगत शूला॥
दुहत धेनु हम लखे मुरारी। देखे गोगण साथ बिहारी॥

दो० चारत सुरभी हम लखे कोउ कहै मुरली हाथ।
हँसचेत जलमें धसो चीर हरैं यदुनाथ॥
चित्त चोर मोहन अबहिं आवैं धाइ मुरारि।
नेक चितै तनमन हरैं सबही बिधि सुखकारि॥
जोपै रोकैं बाट हरि तौन पाइहैं जाय।
श्याम बिरह गोपाल जा कहैं बचन बहुभाय॥
सत्य प्रेम जस गोपिका सखहिं मोहन साथ।
मंगल तू मनबचकरम तिमिहिं ध्याउ यदुनाथ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांऊधौवृन्दावनआगमनोनाम
सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७॥

दो० पंडित दुर्गामी चतुर हठी गुणी दुरराम।
विधवा निरत कुकर्म पुनि हंस गहैं गुणकाम॥
सधन कृपिण कुलवान नर तजे होय कुलरीति।
बन्धु नेह बिनु मीत जो करै कपट युत प्रीति॥
संन्यासी लोभी नृपति कादर मूरुख दास।
त्रियाबिरोधिनि नीचशुचि तपसीकृतधनआस॥
जैसे ये सब वृथा जग गावत नीति प्रबीन।
तैसेही बिनु हरिभजन नर शरीर अघ लीन॥
बारबार बपु मनुज कर लहत न कोउ संसार।

तातें तू मन श्यामभजु सुनि शुभमंत्र बिचार ॥
नृप सुनु ऊधौ न्हाय सुखारी । बसना भरण सजे तट बारी ॥
नन्दालय दिशि रथ चढ़िचाले । प्रफुलित तनएणावलिबाले ॥
गोपिन जान दूरिते देखा । भयउ सबन के चित्त परेखा ॥
शीघ्रागमन लालसा उर में । झटितचलीं सुखदुख द्वौपुरमें ॥
यानाकार वहै सखि देखिय । होय न क्रूर अक्रूरहि लेखिय ॥
दैव न आव होय खल सोई । हरि लैगयो जगजीवन जोई ॥
मथुरा निवसाइसि मम प्राना । हतआइसि कंसहि जगजाना ॥
यह बिश्वासघाति फिरिआवा । अबधौं का ब्रजकरिहिबनावा ॥
दो० प्रथम प्राण प्रियलैगयउ छलकरि यहखलआलि ।
अब धौं प्राणहु लेइगो कपटी खोटी चालि ॥
बकत झकत बहुभाँतिहीं शिर घट धरे उतारि ।
तबलगिरथ आयोनिकट त्रियगण रहींनिहारि ॥
लखि ऊधवहि परस्पर कहईं । यहतौ अपर सखी कोउअहईं ॥
श्यामबरणचषजलजशुभासन । मोरमुकुट पीताम्बर वासन ॥
विष्णु वेष हरिरथ असवारा । लखतओरयहिकरत बिचारा ॥
एक कहत पाछिल दिनआवा । ऊधौनाम नन्दगृह छावा ॥
प्रभु पत्रिका नन्द कहँ लायो । अरु हरिकर सन्देश सुनायो ॥
गोपिनहूं का लाव सँदेशा । चतुर सुजान किये नर वेशा ॥
सम्मत करि तजि सकुचअपारा । ऊधौ निकटगईं तेहिबारा ॥
घुत पाटीर पटल सुख देखी । कीन्हदंडवत त्रियन विशेखी ॥
दो० प्रभु अनुरागी जानि त्रिय पूछ्यो कुशलक्षेम ।
चहुँदिशि करजोरे खड़ीं उर उमड़ान्यो प्रेम ॥
बामावली सनेह बिचारी । ऊधौ रथ परिहर्‍यो सुखारी ॥
नारिन सहित दलीतल राजीं । चहुँदिशिबनितासोहबिराजीं ॥
कहौ तात केहिकारण आये । प्रभु अवदात सँदेशा लाये ॥
सुनि प्रसन्नभईं सकलसयानी । बात प्रशंसा सहित बखानी ॥
बड़ि करुणाकरि आयउ ताता । इंद्वानन अनुसारौ बाता ॥

निजमाता पितु हेत पठावा। आन सनेहनिकर बिसरावा॥
लज्जादिक त्यागी हरिहेता। अरप्योतननिजप्राण समेता॥
स्वारथ हितू भये बनवारी। बिनुदूषण त्यागी ब्रजनारी॥
दो० समरथ कहँ नहिं कहत कोउ तज्यो प्रीति बिनुदोष।
कल्पतुल्य अहि निशिकटत जीव लहत नहिंतोष॥
प्रीति धर्मजस नीति बखाना। प्रभुसँगतसहमकीन्हसुजाना॥
काहू बिधि न कस्यो दुर्भावा। निजकृतकर्मसत्य फलपावा॥
सारसजिमि जलहित सरतजई। बहुरि न कधरद्वार कहँभजई॥
यथाफलीद्विजबिनुफलत्यागै। अलियशअरसकुसुमलखिभागै॥
मृगपरिहरजिमिप्रफुलितकानन। तैसेहमहिंतज्यो खलभानन॥
हमन निरस रस कबहूं कीन्हा। आपनदोषस्वल्पनहिंचीन्हा॥
पूरण राग भाग बश जाना। मुख्य पुरुषध्यायउ भगवाना॥
पारस पाथर गुण दातारा। कर्म बिबश भाजग करतारा॥
दो० जीवन भरिहम प्रीति को यकरस करब निबाह।
चातृक जिमि घनरसचहत यदपि तृषाउरदाह॥
गोपिन केरि प्रीति लखिभूपा। भाअबाक दारज अनुरूपा॥
प्रेम मगन चाहत पग परसन। अकरकरत कसऊधौ करसन॥
तेहिक्षण एकभ्रमरतहँ आवा। पियतकुसुमरस फिरतसोहावा॥
ताहि बिलोकिकहत यकनारी। सुनुमधुकर मृदुगिरा हमारी॥
माधव चरण कमल रसचाषा। मधुकर नामतोर बुधभाषा॥
तू कपटी कर मित्र कहावै। मूढ़ प्रपंच तोहिं भलआवै॥
सो विचारि माधव छलकारी। पठवा दूत तोहिं गुणिभारी॥
कुटिल कलेवररचि ब्रजआवा। जानि अबुधअबला भ्रमछावा॥
दो० चंचरीक यक गंधलहि राधातन शुभगीत।
पद परसतटारत कराहि भाषतबचनबिनीत॥
सो० तू कपटी कर भीत पद परसन के योगनहिं।
ऐसे बदत अभीत अतिप्रपंच नहिं चलिसकैं॥
श्याम बरण की नहिं परतीती। रंचक नहिंजानत मगु प्रीती॥

असित रंग पीतांबर धारी। तुव सदृश चीन्हे असुरारी॥
व्याल यथापाले कोउ नीको। पान करावै पय सुरभीको॥
तदपि श्यामता बश गुणजाती। विषबिवर्द्धकतहुँकडासिखाती॥
बायस पालत शावक पीका। करिसनेहनिर्व्याजक जीका॥
प्रौढ़ होत तजि काग निकेता। निजकुल बंधुनकहँ सुखदेता॥
कज्जल कलित पात्र पट धरई। नेम सहित रक्षातेहिं करई॥
तदपि कलंकरहित नहिं त्यागै। जानिचतुरकोनिजमतिखागै॥
दो० प्रति प्रसूनकर जौन बिधि तू लेवतरस धाइ।
प्रीतम साँचा होत नहिं काहू कर सतिभाइ॥
नन्दलाल तैसे मिलत हित सों तजत अदोष।
अथिर प्रीति चंचलन की मननलहत संतोष॥
पुनरपिअपर भ्रमरयकआवा। तेहिलखिललिताबचनसुनावा॥
अबन हमहिंमधुकरपतियारा। प्रगट्योछलअबसकल तुम्हारा॥
मधुपुर लेहु जाइ रसआली। जहँ कुबिजागृहहैं बनमाली॥
जन्म जन्म छद्मी असुरारी। जानीतिहमसबदशा तुम्हारी॥
कुटिलशिलीमुखसुनुहरिकरणी। कबिन भलीबिधिसोंतेहिबरणी॥
देशकोश बलि सर्बसु दयऊ। बपुदातव्य बहुरि प्रण लयऊ॥
तदपि पताल निवास्यो वाको। रंचक अघ न रहै भव जाको॥
सीतासती सकल गुण खानी। जेहिसमनाहिंमघोनिमृडानी॥
दो० बिपिन बासताकहँ दयो गुर्बिणि बिनु अपराध।
ऐसे के तुम मीतहौ बिरचे भूषण साध॥
ऊधौ प्रति कर जोरि बखाना। हमव्याकुलबिनुदयानिधाना॥
दशादिशि दीखन सूझत कोई। सँगलै चलिये तुवयशहोई॥
तब ऊधो कह सुनो सँदेशा। जेहिहितमोहिंपठवाहृषिकेशा॥
करिएकाग्रचित्तश्रुति कीजिय। शिक्षावत मारगगहिलीजिय॥
भोग आशातजि योग बिचारौ। नवली त्राटक कर्म पसारौ॥
बत्ती धोती नेती साधौ। शुद्ध शरीर करौ मन बाँधौ॥
यमोनियम आसनशुचि करहू। प्राणायाम चित्त निज धरहू॥

प्रत्याहार धारना ध्याना। युत समाधि अष्टांग प्रमाना॥
दो० इड़ा पिंगला सुखमना आदिक जौन बिहार।
तत्त्वादिक निरख्यो बहुरि भेदौ चक्राकार॥
त्रिकुटी सदन त्रिवेणी धारा। कहां निरंजन ज्योति पसारा॥
लखौताहिपुनि गगनहिं धावौ। अजपा प्रणवमंत्र चितलावौ॥
जो यह करतहोइ कठिनाई। तौमम भजन करौ मनलाई॥
जेहिफल कतहुं न होइ बिछोहू। जानिब्रह्म ध्यावौ तजिमोहू॥
यहौश्याममोहिंचलत सुनावा। गोपिन समन कोउतिहुँठावा॥
आठौयाम ध्यान मम करहीं। मोरे उरते दूरिन परहीं॥
पुनिकहआदिपुरुषअबिनाशी। अजअद्वैत अकल गुणराशी॥
करयौ निरंतर तासन प्रीती। सत्य सनेह पन्थ जसनीती॥
दो० अलख अगोचर जानिश्रुति गावत सुयश सदाहिं।
कहौकान्त निज तिनहिं तुम पूरणहित उरमाहिं॥
महिशिखिजलअरुपवनअकाशाजेहिबिधितनमहँकरतबिलाशा
निरमाया निरगुण अबिकारी। सहजहिंतुवमधिबसत मुरारी॥
जो स्वछंद अद्वैत कहायो। तासुराग निज उरदृढ़ लायो॥
सदाभक्ति बश दीन दयाला। रक्षत सुजनसदा तिहुँकाला॥
नितप्रति संग बसत हित हानी। दूरिनिवास कीन्ह यहजानी॥
रास चरित मोहिंश्याम बतावा। कह्योसमय यक बेणुबजावा॥
सकल गोपिका बिपिन बुलाई। रासरच्यौ बड़ि प्रीति दृढ़ाई॥
मदन अन्धभई जब सब नारी। भयउंगुप्ततब कुरुचि बिचारी॥
दो० पुनिजब पूरण ज्ञानसों कीन्हा ध्यान हमार।
प्रगट्यौ तिनके मध्यहौं तब तुरंत तेहिबार॥
ऊधौ बचन सुनत रिसबाढ़ी। कहैं गिरा बिरहानल दाढ़ी॥
योग ज्ञान बिज्ञान बतायो। रस छुड़ाइ आकाश लखायो॥
क्रीड़ाबिबिध करयो हम संगा। तिनकर अलखबदत परसंगा॥
सुखआबालहिते जिन दयऊ। सोअजअविनाशीकसभयऊ॥
रूपराशि गुणसदन कृपाला। कसअरूप निरगुणनँदलाला॥

प्राणहुते प्रिय मोहन श्यामा। तुत्र उपदेश सुने को बामा॥
अपरकहै सखिकरु मनुहारी। अस सन्देश न कहत बिहारी॥
कुबिजा छलकरि याहि पठावा। यह विपरीत सँदेशा लावा॥
दो० सुनैकौन त्रिषसम बचन सुनत नशत बुधिगात।
दहत हृदय ममकाकरौं पुनि पुनि मन पछितात॥
करौ योगसब भोग बिसारी। जीवतपतिहिभूतिकिनधारी॥
धर्म बिरोध बचन यह कहई। यहुआचरणकन्त बिनुअहई॥
जप तप संयम तीरथ सेवा। ब्रता चार अरु अर्चन देवा॥
यह न सोहागिलकर ब्यौहारा। युगयुग जीवहिनन्ददुलारा॥
मलयज शिखिसम दाहत देहीं। गरल लेप भावतकृत केहीं॥
नेम धर्म हमरे हरिपादा। को अब करै बाद अनुबादा॥
दोष न ऊधौकर कछु जानिय। कुबिजासीखप्रपंचक मानिय॥
मीन कमठ सिख नीरन त्यागै। मृगमृग कहे तजतनहिं रागै॥
दो० ऐसे दूत सहस्र नित आवहिं शिक्षा काज।
को मानै हरिचरण तजि सखिध्याइय निर्व्याज॥
भाव भवित नारिनकी बानी। सुनि ऊधौ करधी बौरानी॥
अतिगलानि अधशिरकरिलीना। बहुरि न कछु उत्तर नृपदीन्हा॥
लज्जितजानि कहै यक गोपी! दाऊ कुशल कहौ किनसोपी॥
उनके मन कछु सुद्धि हमारी। सत्य बदौ ऊधौ हितकारी॥
बीचहि अपरबाल इमि भाषा। तुम्हरे सखीवृथा मन माषा॥
बुद्धिरूप बिनु ग्वाल किशोरी। मधुपुर नारि रूप गुणधोरी॥
करत बिहार तहाँ असुरारी। अब कैसे सुधि करैं तुम्हारी॥
जबते मथुरा कीन्ह निवासा। तबते हम त्यागी पति आसा॥
दो० जो प्रथमैं यह जानतीं तजि हैं नेह मुरारि।
तौ नहिं देतीं जान हम निजकृत भईं दुखारि॥
अवधि आश त्यागौसब आसा। बिधिकृतमिटिहिनहोउउदासा॥
को पछितावसमय तजिआली। वृथा जीव दंडहि बाचाली॥
महि बननग बसु मास भरोसा। राखत मेघ करत पुनिपोसा॥

हरिपद प्रीति नित्य चित करहू। तौ परिणाम दरशिसुखभरहू॥
सुयशबिशदहरिकिय कहकोपी। मार्‌यो कंसासुर प्रणरोपी॥
अब किमर्थ वृन्दाबन आवैं। परिहरिबिभव बिपिनमगुधावैं॥
चिन्ता बिनशै होत निरासा। अवधिआशत्यागौअनयासा॥
कोऊ सुनत कहत बिकलाई। हरिआशा तजिये किमिमाई॥
दो० जहँजहँ प्रभुलीला करी तहँतहँ लखिदुख होत।
बिसरत नाहिं यशुदातनय दुखसागरकर पोत॥
वृन्दाबन भा उदधि कलेशा। बोहित शुभगनाम हृषिकेशा॥
कस गोपी पति गोपी भूले। नामलाज पेलन नहिंभूले॥
मनमन ऊधव कहत बिचारी। तिहुँपुरअधिकधन्यब्रजनारी॥
लोक लाज तजिदृढ़ धी श्यामैं। ध्यावैं सदा सकल गुणग्रामैं॥
करत प्रशंसा मन बहु भाँती। अन्तर राग प्रगट बहिराती॥
उठीं नारि सब बिकल बिचारी। ऊधौको बिनती अनुसारी॥
सादर कर गहि चलीं लिवाई। सपदि मुदित निकेत लै आई॥
देखि प्रीति ऊधौ हरषाने। भोजन कर्‌यो मोदमनआने॥
दो० निशाबास करिश्याम यश सबहि सुनाव सप्रेम।
युवती सुनि प्रफुलितभईं जिमि नेमी सुनिनेम॥
ऊधव कहँ पूज्यो सह नेहा। भेट दीन्ह पुनिसहित सनेहा॥
सबिनय बोलीं बचन बिनीता। कहियोतात सन्देश अभीता॥
करगहि बिपिनफिरौतबस्वामी। लखिब्याकुलहोवतमतिकामी॥
अब ठकुरत्व पाय बिसरावा। दासीसंग सनेह बढ़ावा॥
सम्मततासु लिख्यो प्रभु योगा। अघुरनारिकिमित्यागैंभोगा॥
दृढ़ आबाल प्रीति तुव साथा। को बिरागकी मानै गाथा॥
आपु आइ इत योग सिखाइय। किमिसन्देशनयोगदिखाइय॥
हरिसों कहियो तात बुझाई। जातजीवकिन लेहु बचाई॥
दो० असकहि गोपी ध्यानहरि धारि भईं सब मौन।
ऊधव उठि दंडवतकरि भूपति कीन्हों गौन॥
नन्दालय दिशि चले सुखारे। गोपी प्रीति बिवशमनमारे॥

जात सराहत नारि निकाई । पहुँच्यो गोबर्द्धन तटजाई ॥
कृष्णस्थल बिहार जहँ जाहीं । कर्योबासादिनप्रतितहँताहीं ॥
नन्दभवन पुनि आयउ राई । कह्यो सनीति बचनशिरनाई ॥
तवसत्कार बिलोकि अपारा । केतिकदिनब्रजकीन्हबिहारा ॥
गौनौं मधुपुर होइ रजाई । मगु निरखत ह्वैहैं यदुराई ॥
पुण्यासन यशुदा तब दीन्हा । यहिबिधिपुनिबचभाषनकीन्हा ॥
यह दीजौ हरि रामहिं जाई । अरुदेवकिहि कह्यो समुझाई ॥

दो० पठइ देइँ ममसूनु दोउ क्यों राखे बिरमाय ।
असबदिबिलपतक्लेशयुत क्षिमिदुखबरणिजाय ॥

बहुरिनन्दकह बचन बिचारी । देखत ऊधौ दशा हमारी ॥
तुमहिं बुझाय कहिय का ताता । ज्ञान बिबेक निपुणसज्ञाता ॥
सपदि श्यामब्रजआय बिलोकै । गोपिन सहितहरैं ममशोकै ॥
बिथुर बिकल रोवै नँद लागे । रोवत अपरहु ग्वालसभागे ॥
तब सब कहँ ऊधौ समुझावा । रथ रोहिण्यादिकहि चढ़ावा ॥
भेंटि सबहि ऊधौ गुणखानी । मथुरहिचले मोद मनआनी ॥
सातुर आवत भे प्रभु पासा । महामुदित मुखभा परकासा ॥
लखि हरिराम आशु उठिधाये । पूंछिकुशल निज कंठलगाये ॥

दो० नन्दादिक ब्रजजननकी पूंछिकुशल सुखपाय ।
गोपिनकेर बृतान्तपुनि पूछि सुथल बैठाय ॥

ब्रजमहत्त्व नारिन कर नेहा । बरणि न सकतनाथयहिदेहा ॥
तुव पदकंज ध्यान बसु यामा । तीनिआयु पूरणगुण ग्रामा ॥
भजत यथा निस्पेही ज्ञानी । तसगोपिका प्रेमकी खानी ॥
प्रभु उपदेशक योग सुनावा । भजनभाव गोपिनसन पावा ॥
अंतरयामी तुम भगवाना । अधिककहा करिकहौंसयाना ॥
थिर चर दुखित नाथ ब्रजबासी । अवधि कपाट जीवगृहग्रासी ॥
सुनि निज सेवक सदुखकृपाला । शोचतबन्धुसहिततेहिकाला ॥
ऊधौ करि दंडवत महीपा । जातभये बसुदेव समीपा ॥

दो० कह्यो तिनहिं समुझायतब यशुदानंदसँदेश ।

ऊधौनिज मंदिर गये उर ध्यावत हृषिकेश ॥
राम श्याम मिलि रोहिणी रही आपनेधाम।
मंगल सुनिकेसीखशुभ भजुकिनमोहनश्याम ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांगोपीसंबोधनऊधौआगमन
वर्णनोनामाष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥
दो० बिनाभाग्य सतसंग नहिं भाग्य सुकर्माधीन।
धर्माधीन सुकर्म है धर्म दया पद लीन ॥
शांतिबिबश दाया सदा तोषाधीन सुशांति।
ज्ञानाधीन सुशांति पुनि सो दुखके बहिरांति ॥
नर शरीर दुर्लभ जगत ता महँ उत्तम बर्ण।
तामहँ बिद्या निपुणई भव अमोल दुख हर्ण ॥
ताहू में चतुरत्व बुध ज्ञान चतुरई मोह।
कठिन होब ज्ञानी भुवन यह बरणत कबिनोह ॥
ज्ञान पाय संन्यास मत ध्यावै आतम आप।
अथवा राधारमण पद ध्याय मिटावै पाप ॥
मुनि कह सुनु नर कुबलयशूरा। जो प्रसंग सुनि बिनशैक्रूरा ॥
हरि बिचारि कुबिजा अनुरागा। निजप्रण पालन पूरणभागा ॥
ऊधौ संग लाय यदुराई। कुबिजा सदन गये सुखपाई ॥
कुबरी हरि आगम अनुमानी। पाटाम्बर डासे मगु आनी ॥
कर्यौ दरश सत्वर चलि आगे। बढ़यौ सुकृत अघपूरुब भागे ॥
नवलासन नवलांग सोहाये। पंथासन ऊधौ बैठाये ॥
धवलधाम अंतर प्रभु गयऊ। अद्भुत कौतुक देखत भयऊ ॥
रच्यौ बिचित्रित उज्ज्वलशाला। तहँप्रसूनमय तल्प बिशाला ॥
दो० तापर राजे जाय हरि सानँद सागर शील।
कुबरी तन उबट्यौ इतै मद्यौ गन्धि अढील ॥
नख शिख रचि षोड़श शृंगारा। चलीश्यामतट असतेहिबारा ॥
यथा अनंग बाम पति पासा। प्रथम भेट उर लाज बिलासा ॥

मुग्धा मष्ट यकान्त बिराजी । पटअंतर कटाक्ष गति साजी ॥
बचन प्रमाण श्याम करपरश्यौ । कंठ लगाय इंदुलयदरश्यौ ॥
तासु मनोरथ सम प्रभु कीन्हा । पूरण सुख कुबरी कहँदीन्हा ॥
उठि ऊधौ पहँ आवत भयऊ । अधचष किये लाजउरछयऊ ॥
ताहि प्रतोषि श्याम गृह आये । कुबिजा बहुबिधि करतबधाये ॥
नीलाम्बर प्रति यक दिन भाषा । तात सत्यसुनुमनअभिलाषा ॥

दो० यह निबंध अक्रूर सन करयौ प्रथमही तात ।
तुव आलय हम आइहैं पूरण कीजिय बात ॥

नर शरीर धरि बचन प्रमाना । करहिं न सो जीवत सबमाना ॥
प्रथम भेटि पुनि कहिय बुझाई । जाहिं हस्तिनापुर यदुराई ॥
समाचार पाण्डव कर लावैं । जोसुनि निबिड़कलेशनशावैं॥
युगल बंधु हरि ठवनि सोहाये । चलि अक्रूर निकेतहि आये ॥
दूरिते तासु दृष्टि हरि परेऊ । धाइचरणरज निजशिरधरेऊ ॥
सविनय बदत जोरि द्वौ हाथा । दयाधीशजन करयौसनाथा ॥
सानु कोश आयो मम धामा । पावनकरयौ सदनगुणग्रामा ॥
तुम न प्रशंसा करौ हमारी । सुतसेवक निजहृदयबिचारी ॥

दो० बालक दोष न चितधरहिं तात गुरू पितु मात ।
अरु न प्रशंसाहू करत यह प्रसंग बिख्यात ॥

पुनि कह तुव पद कंज प्रसादा । निहते खल दुखदामनुजादा ॥
एक चिंतमन रह उर मोरे । निपटिहि नाथ निवारे तोरे ॥
कहिय प्रसंग तात जो करहू । छोहक मम चिंताप्रभु हरहू ॥
कह अक्रूर होइ अनुशासन । कछुमिषकरबकरतनहितासन॥
सुन्यौपांडु निजतन परित्यागी । सुदिर नाथ पुर गये सभागी ॥
तिनके तनय अकथ दुखपावत । जड़ दुर्योधनउनहिं सतावत ॥
कुन्तीमातु दुखित है भारी । समुझावौसुनि विनयहमारी ॥
यह चिन्तमन तजौ तुम ताता । जाउपांडुगृह शिरधरिबाता ॥

दो० सबहि बुझाय समोद पुनि समाचार सब लाय ।
तुमहिं सुनाऊं कृपानिधि दुबिधा देहु बहाय ॥

सदा दास रच्छा करत यदुनायक सुख देय।
मंगल मन आनंद युत कसन ताहि भजिलेय ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषांधकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांकुबिजाकेलिवर्णनोनाम
ऊनपंचाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥

दो० अलख अगोचर ब्रह्म है माया रहित मुकुंद।
अज अबिनाशी शत्रुहा हरत सकल दुखद्वंद ॥
बृन्दारक क्लेशित निरखि बिरच्यो मनुजशरीर।
जाहिभजत नहिं अधमनर जगमग फिरतअधीर ॥
इतकदेन बहुबिधि लहत उतहि अधोगति बास।
माया बशपरपंच करि द्वौ दिशिरहत उदास ॥
धृक जीवन बिनु हरिभजन भ्रमत वृथाभवआय।
बार बार दुखही लहत रहतन थिरता पाय ॥
चतुर सुजान प्रबीन जे तेपरिहरि सब भूल।
ध्यावत रुक्मिणि नाथपद कंज सकल सुखमूल ॥

सुनौ रसाधिप चरित सोहावा। जब अक्रूर रजायसु पावा ॥
चल्यो यान चढ़ि गज पुरसोई। मिथुन तातगृहगे सुखभोई।
कछुक दिवस मारग महँबीते। नागनगर गये श्याम परीते।
कौरव सभागये यदुराई। द्वार यान राख्यो सुनुराई।
हरि आसन दुर्योधन वैसा। सहितकायअभिमानसुजैसा।
जाय सभा भूपतिहि जुहारा। देखि उठ्योधृतराष्ट्र कुमारा।
मिल्यौ सभासद करि सन्माना। जस सत्कारकरत बुधिवाना।
बैठार्यो नृप आपु समीपा। पूछ कुशल कौरवकुलदीपा।
दो० शूरसेन बसुदेव हरि उग्रसेन बलराम।
सानँद सब नारिन सहित कहौ तात गुणग्राम ॥
उग्रसेन जड़ता बश भारी। करतराज निज तनय सँहारी।
साभिमान मानत नहिं काहू। बैभव बिपुल कृष्ण बललाहू।
मीत बन्धु सुधि दीन्ह बिसारी। को गुरुता उन पासहमारी ॥

भै॰ अक्रूर मौन सुनिबानी । यहिप्रकार निजमनअनुमानी ॥
दुष्ट प्रकृति यह अखिलसमाजा । इहाँ निवास मोर नहिं काजा ॥
खल मंडली अनीति कहानी । कहिहैं मोहिं सुनाय कुबानी ॥
अनुचितसुनिदुखउरमोहिंलागिहि । बृथाक्रोधउरअंतरजागिहि ॥
लै रजाय सँगबिदुर लगाई । पांडु निकेत गये यदुराई ॥

दो॰ तहाँ जाय देख्यो बिकल कुंती पति के शोग ।
कृत बिलाप संतापमय कृशतन बाल अयोग ॥

निकट जाय कह ज्ञान बुझाई । गहनबिपुलकृतकेहिहितमाई ॥
इन्दीबरज लेख बश लोका । संगासंग मोद अरु शोका ॥
अमर मरत मृतु धारि शरीरा । जड़ जंगम कोउभो न सुथीरा ॥
स्वप्न बिभव जागत सबुनासै । तेहिबिधिजग असारयहभासै ॥
को पितु मात तात सुत नाती । बाम दहिन पंथी सम जाती ॥
पंचतत्त्व मिटि तत्त्व समाहीं । देहीं अबिनाशी नश नाहीं ॥
यह बिचारि धीमान अशोचा । तीनि काल कृत चिन्तामोचा ॥
संशय करत मोद कर हानी । सुखी न होत सचिंतक प्रानी ॥

दो॰ सुनि शिक्षा अक्रूरकी कुन्ती शोकहि मोचि ।
कुशल क्षेम पूछत भई मथुरा की मनरोचि ॥

जननी जनक बन्धु बसुदेवा । रहत प्रसन्न कुटुम्ब सतेवा ॥
मुरली मूशल धर आनन्दा । हैं कहुँ यदुकुल कैरव चन्दा ॥
कतहूं सुधि अजात रिपु आदी । ममतनुजनकर कृतअबिषादी ॥
दुख सागर बूड़त बश भूपा । उडुप रूप बिषदानि स्वरूपा ॥
अति धृतराष्ट्र जात दुख देता । पार करहिं प्रभु क्षमासमेता ॥
असह क्लेश दुर्योधन सम्मति । लहतजातममसुनुयदुबरमति ॥
बधन हेत नित करत उपाई । लेत महेश भवानि बचाई ॥
भीमहिं बिष दीन्हा कित बारा । पचयो कृष्ण कृपा बिकरारा ॥

दो॰ शत बांधव मन शत्रुता राखत भूधर याम ।
यहिपुर निवसत तातसुनु दंडअमित परिणाम ॥

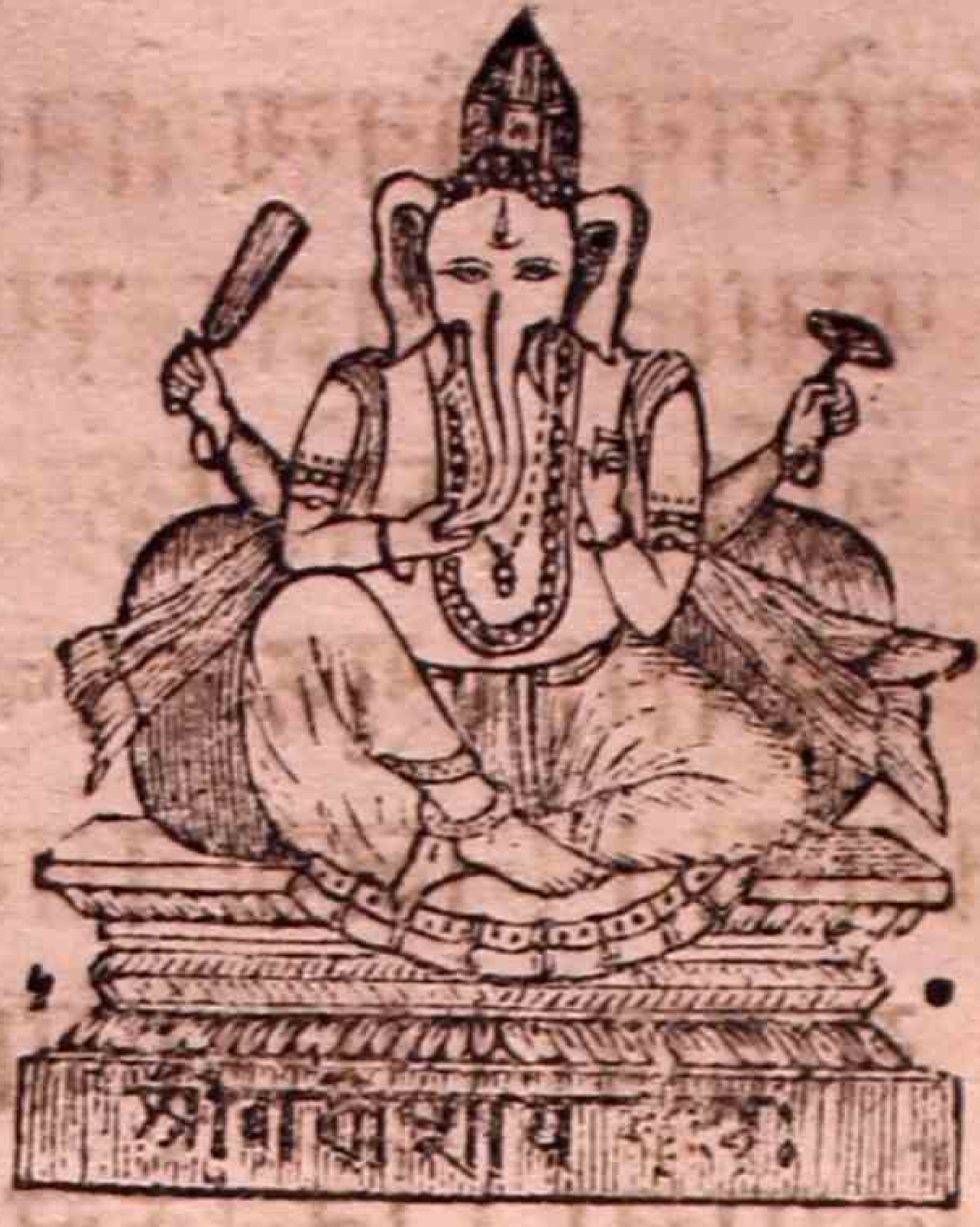
हरि तजि दूसर हितू न मोरे । कहियो तात बिनय करजोरे ॥

मोचौ दुख निज बंधुन केरा। चहुंदिग सूझत कालबसेरा॥
पीड़ित भो सुनि कुन्ती बानी। मृदुल गिरा करजोरि बखानी॥
नेकहु शोक करिय जनिमाई। यदुबर आठौ याम सहाई॥
बली बिक्रमी यशी प्रबीना। पुत्र तुम्हार सगुणछलछीना॥
करिहैं निजकर शत्रु निकंदा। पक्षी काल तीनि यदुचंदा॥
यह सँदेश दै मोहिं पठावा। सुनितवदशाअमितदुखछावा॥
धीरज धरैं तजैं सब पीड़ा। गहन हरौंहौं आइ अब्रीड़ा॥
दो० बहुबिधि ताहि बुझाय नृप चले रजायसु पाय।
बिदुर संग धृतराष्ट्र पै गे अक्रूर सुभाय॥
करि जोहार कह तिनहिंबुझाई। कस अनीति कृत धर्मबिहाई॥
निजसुत बश सुत बंधु सतावौ। कोसुलोक यहि लोकहिपावौ॥
धर्मशास्त्र कोउ रच्यो नवीना। करतअनीति जासुआधीना॥
ऊरधांध अंतर चष देखौ। कुल बिनाश बशपातकलेखौ॥
पांडु राज बिनु अघ तुमलयऊ। धर्मादिकन अमितदुखदयऊ॥
कह धृतराष्ट्र करिय का भाई। दुर्योधन सन कछु न बसाई॥
निजमति सरिस करत प्रभुताई। मूरुख हमहिं कहत मदछाई॥
यहिते हरिहि यकान्त मनाऊं। तात सभाहौं भूलि न जाऊं॥
दो० सुनत बचन दंडवत करि रथचढ़िचले नृपाल।
मथुरा नृप बसुदेव सन कह्यो जाय उत्ताल॥
उग्रसेन बसुदेव दुखारी। गजपुर दशा सुनत भयभारी॥
पुनि अक्रूर गयउ प्रभुठामा। मोदमिलितकियदंडप्रणामा॥
कह करजोरि नागपुर नाथा। तव पितुभगिनीपरमअनाथा॥
देखि ब्यवस्था बुद्धि सिरानी। बरणत बनत न दुखकरखानी॥
अंतरयामी आपु कृपाला। कारक हारक तुम प्रतिपाला॥
पुनि कुंती कर कह्यो संदेशा। सुनिहरिमनकछुउपजकलेशा॥
आयसु लै अक्रूर सिधाये। निज निकेत भूपति तबआये॥
बल अब इलाभार सब हरहू। उत्तम बुद्धि चित्त यह धरहू॥
दो० जो चाहत सोई करत ऐसे दीनदयाल।

ब्रजबनमथुराचरितयहहौंबरणयोमाहिपाल ॥
निजमति सरिस गुरू परसादा। ब्रजरहस्य बरणयो अबिषादा ॥
काव्य भाव बिद्या बुधि थोरी। छम्योसकलकबिलखिकै खोरी ॥
बालक बचन अबूझ अपारा। गुरुजनबुधसमुझतसबिचारा ॥
मैं कायस्थ बरण मतिहीनो। निजरुचिसमहरियशकहिदीनो ॥
शाहजहाँपुर नगर सोहावा। सरही ग्राम बसत तेहिठावा ॥
राजाराम सुबुद्धि बिशाला। तिनकेसुतगणेश गुणपाला ॥
उनके तनुज बिहारी लाला। ते गुणखानिहितू प्रतिपाला ॥
बकसी राम तनय तिनकेरे। चतुर सुजान जनक ते मेरे ॥
छं० तेजनक ममयश बिदित भव पितुतात ऐसे शुचिगुनी।
निजकुलजरठजन मुखनहौं उज्ज्वलसुकीरतिशुभसुनी ॥
रुचिभई बरणौं श्याम यश यह दशम मतसुंदर महा।
यदुनाथ चरण प्रतापसों दुख मूलहौं मानौ दहा ॥
दो० जेजन साधु प्रबीणजग पढ़ैं बिचारि सप्रेम।
कृष्ण कृपा उतरार्द्ध हू करिहौं है यह नेम ॥
जय राधाबर कृष्णकी जयजनपालक एक।
दुखनाशौ सुखदेहु प्रभु मांगतसहित विवेक ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासबिरचितायांअक्रूरहस्तिनापुरगमनो नामपंचाशत्तमोऽध्यायः ५० ॥

इतिश्रीदशमस्कंधपूर्बार्द्धसमाप्तंशुभम् ॥



अथ कृष्णप्रिया उत्तरार्द्ध ॥

सोरठा ॥

बिघ्न हरण गुणखानि लम्बोदर आनन कलभ।
करौदया जनजानि तव प्रताप शिखिअघशलभ ॥
गुण गण करण प्रकाश विद्या दा गुरु ईश सम।
पूरण कीजियआश सकल बिघ्न हरिनाथ मम ॥
श्रीस्वामी कपिराज खल जवास जलधार जस।
राख्यो जनकी लाज छंद भंग पुनिरुक्ति रस ॥
कवि कोबिद सुर साध चतुर्भाग चतुरासपुर।
आशिष देहु अवाध उत्तरार्द्ध अब बदौं फुर ॥
सत्यमीत जे मोर तीनिकाल उर रूप धर।
तिनसों करतनिहोर आशिषदीजिय सिद्धिकर ॥

भुजंगप्रयात ॥

नमो पूतना भंगकारी मुरारी। नमस्त्वं अघाबच्छाविध्वंसकारी ॥
नमोगोपिकासौख्यदाश्यामरूपं। नमोकालिमद्भंगकारीअनूपं॥
नमोकेशिव्योमादिहंताकृपालं। नमोकंसचाणूरनाशं दयालं ॥
नमोविश्वपालंनमोविश्वकारी। नमस्त्वंरमानाथदुःखौघहारी ॥
दो० जानिदास राधारमण बुधि दीजिय दुखहारि।

तवयशगावों मोदमय भवअघदेउ निवारि ॥
श्रीशुकदेव नृपति प्रति गावा। विशदचरित पापघ्न सुनावा ॥
सुनु नरेन्द्र पांडुर शुचि गाथा। दुखहारक सुखदायशपाथा ॥
जेहि प्रकार यदुनाथ कृपाला। जरासन्ध भूपति मदघाला ॥
अरुजिमिकालयमनकहँनाशा। पूरण लोकलोक परकाशा ॥
नृपमुचकुन्दमोच्छजिमिकीन्हा। व्यूहशिखंडी शीतल चीन्हा ॥
तिमि मथुरा द्वारिका बसाई। कीन्हे तहँ बहुकृत यदुराई ॥
चितदैसकल श्रवण नृपकीजै। मुक्ति पदारथ करतल लीजै ॥
उग्रसेन नृपता अधिकारी। हरि हलधर नृप आज्ञाकारी ॥
दो० करत नीतिमयराज सो प्रजा सुखी दिशिचारि।
दोष शोक बिनु नारि नर रह्यो मोद विस्तारि ॥
सानँद नृप चहुंबर्ण अथाई। केवल कंस बधून विहाई ॥
निशिनिद्रादिनछुधा न व्यापै। कंत शोक अर्जुन उर तापै।
उदासीन त्रिय रहैं नृपाला। अतिशयबिकलग्रसितदुखजाला ॥
कहैं परस्पर इमि द्वौ नारी। भूप बिना जिमि प्रजादुखारी ॥
शशिबिनुनिशिअदीपनिशिधामा। शोभालहतनसोपरिणामा ॥
तिमिकामिनिबिनुकन्तअभाती। पतिवियोगविहरतअतिछाती ॥
उचित रहबनहिं इहां अनाथा। नैहरपितुहिकहियदुखगाथा ॥
काटिय काल जनकपुर माहीं। मथुराहमहिं सौख्यकोउनाहीं ॥
दो० अस बिचारि चढ़ि यानते चलीं जनक अस्थान।
मगध देश गृह राजमहँ पहुचीं भूप सुजान ॥
भेटि पिता मातहि नरपाला। निजदुखकरसबकह्यो हवाला ॥
जिमि हरिराम असुर सहकंसा। सहजहि मथुराकीन्हविध्वंसा ॥
पूरबवत दुख मग्न बखाना। सुनतजुरानिधिअतिदुखमाना ॥
सभाजाय क्रोधित नृप सोई। कहत भयो मंत्री मुख जोई ॥
महाराज कारण को आही। आननक्रांतिमलिनदरशाही ॥
कहाकहिय यह अकथकहानी। सत्यझूठ नहिंजात बखानी ॥
को बलवान भयो यदुबंसी। असुरसैन सिगरी जेहिध्वंसी ॥

हन्यो कंस चाणूर प्रतापी। निज मरयाद कंसपुर थापी ॥
दो० विधवा दुहिता करेंसिमम यहकलेश बड़मोहि।
दल बटोरि मथुरहिचलों बधों समरमहँ ओहि ॥
बधि यदुकुल पुरसकल उजारों। रामकृष्ण निजकर संहारों ॥
मंत्रिनहूके मन मत भावा। करिय नाथ यह बेगिबनावा ॥
तुरत पत्र दिशिचारि पठाई। भूपन कहँ यह सुद्धि जनाई ॥
दलयुत सब आवो ममपासा। कीन्हचहतहौं यदुकुल नासा ॥
कंस बैर लेहौं सुखमानी। भ्रष्टकरौं सिगरी रजधानी ॥
जरासन्ध कर पाइ सँदेशा। देशदेश के अखिल नरेशा ॥
कटक समेत राज गृह आये। चारों ओर नगर के छाये ॥
जरासन्ध निज चमू बनाई। अस्त्र शस्त्र तन त्राण सजाई ॥
दो० बाजे बाजे समर के रव छाये चहुँ आश।
चल्योजुरानिधिनृपनयुत रजमंड्योआकाश ॥
तीनिविंश अक्षोहिणि साथा। असुरमनुजदलदुबिधिसनाथा ॥
का प्रमाण अक्षोहिणि स्वामी। कहौ नाथ तवचरण नमामी ॥
नंभ मुँनि गजँबिधु नैनँसुजाना। जुरैं रथी जहँ बीर महाना ॥
रथी प्रमाण गजपती सोहैं। शत्रु समरमहँ लखिमनछोहैं ॥
खेंषुँगुँणखँनिँधि शंशिपदवारा। प्रबल धनुर्द्धर समर जुझारा ॥
खँनभँ गगँन रसँतँर्क सवारा। भूप पदाति जुरैं यकबारा ॥
यह अक्षोहिणि केरि प्रमाना। बदतचतुरकबिमुनिबुधिवाना ॥
ऐसी चमू तीनि अरु बीसा। मथुरा लैगो नृप मग धीसा ॥
दो० तिनमहँ असुर महाबली बरणत बनत न सोइ।
सुरपतिकम्पतकटकलखि बिकलधरणिधरजोइ ॥
बरुण कुबेर आदि दिगपाला। भयबशकम्पितसबतेहिकाला ॥
बिकल सुपर्व दशौ दिशि धाये। मेदिनि दबतिभार अतिपाये ॥
पशु पक्षी मारग खग भागे। ध्वनिनिशानसुनिमुनिवरजागे ॥
जुरा पयोधिकैक दिन माहीं। मथुरा गयो मूढ़मद साहीं ॥
नगर निरोध कस्यो चहुंद्वारा। गर्जत तर्जत असुर अपारा ॥

लखि यहदशा बिकल पुरबासी। अतित्रासितसुस्मृतिधीनासी॥
आरत बदत श्याम शरणाई। आये नृप नर नारिअथाई॥
कृपा उदधि यम धारि कराला। निजसँगलाइमगधमहिपाला॥
दो० आतमभूमुख सुता पुर करयो निरोध कृपाल।
इषुधी पति सूझतनहीं कित जाइययहिकाल॥
सुनत पुकार सबहि समुझावा। धीरज गहौ शोच उरछावा॥
करत बिचार कंस आराती। भृकुटिभंगलखिकालसकाती॥
तेहिक्षण तहँ नीलांबर आये। बचन विनीत सनीतिसुनाये॥
महाराज प्रगट्यो भवमाहीं। भक्तन हित हित दूसरनाहीं॥
बसुधाभार हरण यदुराई। असुर चमू नानाविधि आई॥
नीलकंठ बपुधरिय गोसाईं। खल तृण भस्म करौ यहिठाईं॥
चुपकिरहै कर औसर नाहीं। सुनतचले प्रभु भूपति पाहीं॥
उग्रसेन प्रतिकह सुनुराजा। मगधराज लै सकल समाजा॥
दो० मथुरापुर घेरयो अबहिं आज्ञा देहु नृपाल।
संगर ठानैं लषण सँग तुम कीजिय पुरपाल॥
नृप आयसुलहि पितुगृह गयऊ। पुरबासी तहँ आवत भयऊ॥
कहतत्राहि प्रभुखल बनपावक। रक्षहुनाथजानिनिजशावक॥
दम्पति कहत कालकी धारी। नगर चारिदिशि घेरअघारी॥
असउपाय कीजिय खलभानन। नशौंअसुरजन बचैंशुभानन॥
भयवश नगर जानिजनपाला। सकलप्रबोधे पूरुष बाला॥
कृत चिंतमन किमर्थ अकाजा। मृत्यु विवशयह दुष्टसमाजा॥
तुम देखौ यह घन कस छाया। थिर न रहैंक्षणदुष्ट निकाया॥
अथवा जल बतास जिमि होई। आशु होत पयरूपी सोई॥
दो० अखिल बुझाये नारिनर पितुप्रतिशासन पाय।
युगलबंधु रण होत नृप चलतभये सुखछाय॥
सकल वराक ब्यमानारूढ़ा। इंद्रादिक जे अखिल अमूढ़ा॥
अवसर जानि उभय रथसाहर। सायुध बिबिधंबिचित्रमनोहर॥
प्रभुहित समर भूमि पठवाये। सन्मुखमिथुनजानिचलिआये॥

सब उर पुरबासी कृत ज्ञाता । नरबपु तीनिलोक पितुमाता ॥
भये व्यमानारूढ़ महीपा । विबिभ्राता यादव कुलदीपा ॥
हलधरश्याम आशु नरनाहां । असुर कटक जहँ गवनेताहां ॥
जुरापयोधि निकट चलिगयऊ । लखत दुष्ट भणत इमि भयऊ ॥
हेकंसारि तोरि मतिनासी । लाई मृत्यु डालि गलफाँसी ॥
दो० जोजीवन निज चहसितू बेगिहि जाहु पलाय ।
ममसमान तू अहसिनहिं साभिमान कहराय ॥
नीलाम्बर यद्यपि बलथोरा । तदपिसमरममसाहिहिअघोरा ॥
प्रभुकह ओ मूरख अभिमानी । कहतअबूझितयहकसबानी ॥
समरथबीर समरजित जोई । जल्पत वृथा मूढ़नहिं सोई ॥
कादर कूर भीर अविचारी । बदतसुयशनिजशत्रुप्रचारी ॥
बीरबृती रण पंडित ज्ञानी । कहत न करतयुद्धसुदमानी ॥
करणी बिदित जल्पना नाशा । नीतिशास्त्रअसन्यायप्रकाशा ॥
निजमुख आपनि करणीकहई । गतसुलोकअपलोकहिलहई ॥
जोघन अति गाजत घहराई । बरषत अल्प सोहयह भाई ॥
दो० केहिकारण सुनु मगधपति बकतअहित जिमिभेक ।
उद्यम संगर शीघ्रकरु कुमति त्यागि सविवेक ॥
अस कहिं चले नाग रिपुगामी । जरासन्ध क्रोधेउमतिबामी ॥
हरि पश्चात धाव मतिहीना । इमि भाषत कटुबचन प्रबीना ॥
कहँ अबजात सुतापति घाती । प्रबलशत्रुलखि बिहरतछाती ॥
निज जीवन आशापरिहरहू । कसन दुष्टममसन्मुख लरहू ॥
कंसगयो जहँ सैन समेता । तुमहिं पठैहौं तौन निकेता ॥
बहुदिन कंस राज तुमभोगा । भयो तासुफल मृत्युसँयोगा ॥
का शोचेउ अपने मनमाहीं । जग जितभये कंसबध ताहीं ॥
बैनतेय ते अहि बचि जाई । मम तट शत्रु बचब कठिनाई ॥
दो० करौं भूमि यदुबंश बिनु यह प्रण मैं मन कीन ।
उग्रसेन इत्यादि खल बधौं आजु मतिहीन ॥
कटु बच सुनत दुष्ट कर भूपा । फिरे श्याम क्रोधित हरिरूपा ॥

खल सन्मुख आये बनवारी । आयुधअखिलजलजकरधारी ॥
हल मूशल समर्षि निज पानी । चले राम गहि रोषित ज्ञानी ॥
निकटमूढ़दल जेहिक्षण आवा । घोरशब्दकरि सबहिसुनावा ॥
आसी बिष सहल लखि जैसे । हरि धावत धाये हरि तैसे ॥
चले बाण दुहुँदिशि नरनाहा । असिवरअग्निज्वलितरणमाहा ॥
विपुल निशान बजत रणमारू । मेघाघात होत हहकारू ॥
नीलबरण खलदल दिशिचारी । नीरद समनृप परत निहारी ॥
दो० शर बरषा जल वृष्टिवत चहूं ओर कुरुकेतु ।
युगल बंधु मुखक्रांति जो सोइ तड़ितछबिदेतु ॥
समर होत जनु प्राविट काला । देखत युद्ध देव सुरपाला ॥
अपर दिवौकसगुण महिजाती । बधुन समेत लखत रिपुघाती ॥
हरि प्रताप बल यशहि बखानैं । अमितप्रकार सुमनझरिठानैं ॥
जयजय बदि हरि जयमनचाहैं । प्रभु बोधहि सुरारि दल दाहैं ॥
उग्रसेन यदुबंश अथाईं । उतमहिपाल मनहिं पछिताईं ॥
चिंतत बिबिध भांति यहकहईं । बिनुबुधिहम समस्तह्यांअहईं ॥
राम कृष्ण कहँ समर पठावा । कछु न शोच हमरे उर आवा ॥
दुष्टअनी बिकराल अपारा । परमात्मा बिनु को रखवारा ॥
दो० कह बसुदेव न शोचहू कृष्ण आपु करतार ।
क्षणमहँ दलबधि आइहैं को जग जीतनहार ॥
समर होत बीता कछु काला । मिटिगइसकलसैनमहिपाला ॥
मूशल पाणि सरोष सिधाये । बांधि जरासन्धहि लैआये ॥
नागपाश बंधित लखि वाहीं । भन्योकृष्ण दाऊप्रति ताहीं ॥
जीवत तात तजौ तुम याहीं । बधै योग यह नरपतिनाहीं ॥
जीवत भवन जाइ जो पैहै । तौ पुनि अमित असुरलैऐहै ॥
तेबधि हरिहौं बसुधा भारा । जेहिहिततात लीनअवतारा ॥
असुर पलाय समरगे जोई । याहि बधे बचिजैहैं सोई ॥
दाउहि इमि समुझाइ मुरारी । दीन छुड़ाय प्रबलविबुधारी ॥
दो० छूटि जुरानिधि जातभो निज सैना मधि तात ।

अनीभंग दिशि चारि लखि कहत सचिव प्रतिबात ॥
तात चमूमम सकल सिरानी। मोहिंभईअतिशयगिल्यानी ॥
यहि लज्जा त्यागिय नृपताई। तपकीजिय गहवर बनजाई ॥
सचिव महीपहि बयो बुझाई। तात अयोग तजिय कदराई ॥
समर जाय जयविदित बखानी। कालाधीन बदत विज्ञानी ॥
ज्ञानवान नृप तजै न देशू। सुनो कृपाल उचित उपदेशू ॥
आजु अजय आगे जय होई। सैन जोरिये चिन्ता खोई ॥
चलि निकेत करि समरबनावा। अंतवंत त्यागिय पछितावा ॥
बहुरि राम श्यामहिं बधकीजै। स्वर्गबास यदुकुल कहँ दीजै ॥
दो० इमि मंत्री समुझायकरि लैआवा निज धाम।
कटक बटोरयो भूप पुनि सजि उद्यम संग्राम ॥
रामश्याम इत रणमहँ हेरी। रुधिर तरंगिनि बहचहुँफेरी ॥
मृतक गयंद सोह दुहुँकूला। शूरबीर तरु परे समूला ॥
उडुप तुल्यरथ काग सवारा। खत्रक पवन करत सरिपारा ॥
कोउ कोउ गजबिच धारसोहाई। नगरूपी उपमा छबिछाई ॥
झरत रुधिर तिनते जनुझरना। सोहावर्त चक्रकर तरना ॥
इषुधी सर्प रूप उतराहीं। मत्स्यतुल्यअसिखड्ग दिखाहीं ॥
चर्म मनौ कच्छप दरशाहीं। भूत प्रेत योगिनी नहाहीं ॥
तहाँ शम्भुयुत गण महिपाला। करत अनंद समोद बिशाला ॥
दो० मालामुंड बनायतन पहिरत भूत पिशाच।
शंकरसहगण भूषिये लखतमुदित सुरपाँच ॥
प्रेतबधू योगिनी समेता। रक्त पियत भरिखप्पर लेता ॥
वायस गृद्धादिक जो शृगाला। भषत मान्स सानन्दनृपाला ॥
यह कौतुक बिलोकि असुरारी। हूंकहि चले पूज्य त्रिपुरारी ॥
हरिइच्छा आयो पवमाना। अहिबाहननर मृतक महाना ॥
सकल बटोरि करे यकठांई। जलजतेज निजदीन जराई ॥
पञ्चतत्त्व निज अङ्ग समाने। जीवकर्मबश त्रिबिधभुलाने ॥
आवत जात लखे नहिं काहू। जननीजनकादिक सुहिताहू ॥

यहि प्रकार बधिसैन सुरारी । कृपासिन्धु हरिजन हितकारी ॥
दो० उग्रसेनपहँ जायकरि युगल बन्धु सुखपाय ।
करि प्रह्वन बोले वचन सुनौ धन्य नरराय ॥
तुम्हरे पुण्य प्रताप गोसाईं । बधे असुर भै जय यहिठाईं ॥
विभव अकंटक भूपति कीजै । अमितप्रकारप्रजाहि सुखदीजै ॥
सुनि प्रभुवचन नृपति आनंदे । समुद श्याम पदमनमहँबंदे ॥
सब बिधि निजपुर कस्यो बधावा । गृहप्रतिपुरहरि जययशछावा ॥
धर्मराज युत नीति सदाहीं । उग्रसेन कृतमन भ्रमनाहीं ॥
यहि प्रकार बीते कछुकाला । कोपिचढ़योपुनिमगधनृपाला ॥
काल पत्त्र क्षोहिणि दल लायो । समाचार यह यदुवर पायो ॥
क्षणमहँ सकल सँहारे धाई । मगध भूप भाग्यो पछिताई ॥
दो० स्वर्ग भूमिधा मगधनृप गुणचष क्षोहिणिसैन ।
लायभिस्यो यदुनाथप्रति जय न लही दुखऐन ॥
जाय जुरानिधि निज रजधानी । बहुरि सैन जोस्यो अज्ञानी ॥
अंतर कथा सुनौ कुरुराई । जो सुनि मोद लहौ समुदाई ॥
सुनि कौतुकी सकौतुक धाये । आकस्मात यमनपुर आये ॥
कालयमन जहँ पालत क्षोनी । महाबलिष्ट बुद्धि अतिलोनी ॥
लखि देवर्षिहि उठ्यो महीपा । कस्यो दंडवत जाय समीपा ॥
पांडुर आसन मुनि बैठाई । जोरिपाणि कह बचन नृराई ॥
कोरथ गृह पवित्र मम करेऊ । संचित कलुष नाथ सबहरेऊ ॥
मुनिकह सुनु नरपाल मनीषी । तुव असिसदा समरमहँतीषी ॥
दो० मथुरा महँ बलराम हरि भये प्रबल जगजान ।
सुहद जुरानिधि तात तव हास्यो सत्रह ठान ॥
उनहिं बधै नहिं तुमहिं बिहाई । विदित तीनिपुर तुव प्रभुताई ॥
अमर बलिष्ट समर विज्ञानी । तवमहिमाकोनहिंजगजानी ॥
बालक राम कृष्ण रण पंडित । जानौनृपतुम समरअखंडित ॥
कह नृप कहा कहौ मुनि तोहीं । मित्रअजयसुनि दुखभामोहीं ॥
अवशिराम श्यामहिं रणहनहूं । समर अजितहै भीरुन बनहूं ॥

चीन्हरंग अरु रूप बतावौं। जोबधि युद्ध मोदहौं पावौं॥
मेघबरण कुबलय चषसोहर। बिधुमुख आनहु अंगमनोहर॥
पीत बसन बासित तनमाहीं। सोइकृष्ण तुवहितु रिपुआहीं॥
दो० तोहिंबधे बिनुतज्यो जनि यद्यपि समर पलाय।
शिक्षादै यमनाधिपति गये स्वर्ग ऋषिराय॥
कालयमन बाहिनी बनाई। महामलेच्छ कोटि गुणराई॥
रूप भयानक परत न जोई। भुजप्रलंब बड द्विज खलसोई॥
वेषमलीन केश शिरभूरे। नैन कृष्णता रूपक पूरे॥
अतिपापिष्ट गत्रास अपारा। जगदुखदानि बुद्धि विकरारा॥
बजत निकर संग्राम निशाना। मथुरानगर भूप नियराना॥
सिन्धुसुतापुर करसि निरोधा। सदल असुर युद्धहित क्रोधा॥
समाचार पाये असुरारी। तबनिजमनयह बुद्धिबिचारी॥
दुष्टअनी आई चहुंओरा। महाप्रबल जगविदित प्रघोरा॥
दो० पत्यशुद्धि निज मीतकी आइहि मगध नृपाल।
प्रजापाइहै बिबिध दुख तजिय नगर यहिकाल॥
सो० अस बिचारि यदुतात बोलि बिश्वकर्मंहि कह्यो।
सुनौतात ममबात करौ अवश्यहि काजयह॥
निज माया जलनिधि के तीरा। रचौ नगर हरिगृह जटिहीरा॥
जहँ यदुवन्श रहैं सुखसेती। सकल सुपर्व सपर्व समेती॥
निज गृह जानैं लहैं न भेदा। बसहिंजहाँतिहुंकाल अखेदा॥
पुनि पलमांझ सबहि पहुँचावौं। वेगि करौ जनिबार लगावौं॥
आयसु पाय सिन्धु तटजाई। पुरपुनीत बिरच्यो भुवराई॥
चक्र सुदर्शन ऊपर सोहै। योजन भानु देव मनु मोहै॥
जस प्रभुबद्यो रच्यो तेहि तैसा। नाम द्वारिका हरिपुर जैसा॥
प्रभुपहँ बहुरि आय जगकारी। भनो समस्त वृतांत बिचारी॥
दो० सुनि मोदे प्रभुकह्यो पुनि आशु सबहि लैजाय।
जानि न पावहिंनारिनर तेहिपुर देह बसाय॥
आज्ञा पाय झटित सुनु राजा। उग्रसेन बसुदेव समाजा॥

अखिल बिवश माया मतिभोई। लैगो नगर द्वारिका सोई॥
हरिबल साथ गये सब केरे। अखिलायत निजनैनन हेरे॥
यहि अवसर दधि शब्दसुनावा। जगे सकल मनसंभ्रमछावा॥
कहत दैव मथुरानिधि काहा। जागतस्वप्नलखतमनमाहा॥
अत्याश्चर्य्य बिवश पुरबासी। लहत न भेदबुद्धिभ्रमपासी॥
यहि प्रकार प्रभु सबहि बसाई। कह्योबन्धुप्रतिबचन सुनाई॥
अब चलि मथुरा रक्षाकीजिय। कालयमनकहँसुरपुरदीजिय॥

दो० युगल तात सानंद नृप आये मथुरा धाम।
मंगल भजिले श्यामपद तजिके दुबिधा काम॥

सो० सदा कृष्णकीरीति पालतदास अनेक विधि।
करौं कमलपद प्रीति मम पालन कीजै प्रभू॥

इतिश्रीमद्विबिधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायांमंगल
दासाविरचितायांजरासंधपराजयद्वारिकाबासकालयमन
आगमनवर्णनोनामैकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१॥

दो० ज्यों अकाशके अंतहित द्विजगण उड़तअनेक।
पौरुषीय पौरुष रहित करिनहिं सकत विवेक॥
तिमि निरन्नके भेदहित कल्पत बहु भव भूत॥
असुर अमर इत्यादि बुध नर पशुपूत अपूत।
जासु नाम भवअकर अज प्रभु स्वतंत्र गुणराशि॥
निजबशनरतन भवधस्योजगयश रह्योप्रकाशि।
ताहि भजे बिनु सर्बथा हानि चारिहू ओर॥
ध्यावत पूरण पद मिलत नाशत पाप कठोर।
मंगल के मत कृष्ण तजि मुक्तिदानि नहिंआन॥
जन सुखकरजीवत सकल अंतमोक्ष कल्यान।

मथुरा आय श्याम सुनु भूपा। करत भये यह चरित अनूपा॥
बलहि नगर रक्षाहित त्यागा। कालयमन बधमुदउर जागा॥
रैनिवरण धारे बपुबासा। शृंगारित तनभादिग आसा॥
द्विज नायक गति चले कृपाला। गये दुष्टदल मधि नरपाला॥

कालयमन सन्मुख चलिगयऊ। पुनि परोक्ष मारग प्रभुलयऊ॥
हरि स्वरूप लखि यमन भुवाला। निजमनकृतबिचारतेहिकाला॥
मेरि जान कृष्ण यह आहीं। नारद बदे चिह्न तन माहीं॥
सम्यक् चिह्न लखतहौं नैना। अहै कृष्ण यह कछुभ्रमहैना॥
दो० कन्स बध्यो यहि सुहृद दल योंमन करि अनुमान।
कहत भयो पुनिश्यामप्रति कत पलात बलवान॥
बीरवृती रण पंडित जोई। संगर पृष्ठिदेत नहिं सोई॥
जीवघात निज मन अनुमानो। मोसों तात समर अबठानो॥
कन्स जुरानिधि हौं न महीपा। करौ समर निरछल यदुदीपा॥
मैं प्रण कस्यों हनौं यदुवंशी। रणकीरति मम जगत प्रशंशी॥
असकहि साभिमान तजिसैना। हरिपश्चात धाव कटु बैना॥
अति पौरुष चांडाल अबूझा। त्रिपुरनाथ चपहृदय न सूझा॥
अग्रामगत श्याम खल पाछे। हस्तान्तर खलमगमत आछे॥
भागत भागत भूप निदाना। बिपुल दूरिगय कृपानिधाना॥
दो० प्रविशे प्रभुगिरि खोह महँ तिमिर पूरतेहि माहि।
एक पुरुष सोवत पस्यो हरि निरख्यो जब ताहि॥
वाहि उढ़ायो पीतपट आपुन रहे लुकाय।
दुष्टगयो पश्चात तहँ हरिगति विदित नराय॥
पीतवास वासित लखि ताही। इमिशोच्योखलनिजमनमाही॥
हरि प्रपंच सोयो यह श्यामा। बधौं आजु याकहँ यहिठामा॥
सरुढ़ चरण मद्यौं तन तासू। कटुबाणी खल कस्यो प्रकासू॥
कपटी धूर्त्त कहामिष साधा। बन्यो साधु आई जिय बाधा॥
उठिकरु समर अमरपति तूहै। विदित प्रबलता तुव सबभूहै॥
असकहि पीताम्बरहि उतारा। जग्योमहीप चौंकि तेहिबारा॥
युतामर्ष निरख्यो खल ओरा। कह्यो न नृपमृदु बचन कठोरा॥
भस्मीभूत असुरपति भयऊ। मन महीप सुनिचिन्ता छयऊ॥
दो० कह्यौ जोरिकर सुनौ मुनि कृपासिंधु गुणग्राम।
को पूरष जेहि देखतहि जस्यो असुर बलधाम॥

सरवर प्रापक तापस कोई । तासु प्रसंग कहौ प्रभुसोई ॥
मान्धाता सुत नृप मुचकुन्दा । महाबली अरुदासमुकुन्दा ॥
अरिदलदलन विदितयशजासू । नंद खंड पूरित दश आसू ॥
एक समय सुपर्व दुख लीन्हा । असुरनतिनहिंदण्डबहुदीन्हा॥
सकल उदासित निपट निरासा । रहित अमरपुरबिगतबिलासा॥
नृप मुचकुन्द पास सब आये । दीन बचनकरिबिनयसुनाये ॥
महाराज बहु खल जग बाढ़े । निज क्रोधानल सबसुरडाढ़े ॥
तुम बिनको अब करै सहाई । प्रबल न कोउतुमतेअधिकाई ॥

दो० पुराकाल ते रीति यह आवत चली सुदेश ।
सुर मुनि ऋषि लखि दुखित तब रक्षाकरहिंनरेश ॥

सुनि नृप चल्यो संग सुरवृन्दा । जुरयोजङ्गनसँगजायअनन्दा॥
कृत संगर बहु युगचलि गयऊ । जयदुर्नाद समर नृप लयऊ ॥
तब वृन्दारक नृप तट आई । मृदुल मनोहर गिरा सुनाई ॥
हमरे हेत अमित श्रम कीन्हा । निकरअमरगणकहँसुखदीन्हा॥
अब बिश्राम काहु थल कीजै । निज जीवहि महीप सुखदीजै॥
अमित काल बीते नरनाहा । रहा न बंश धाम तुव ताहा ॥
ताते अवध पुरहि जनि जाहू । आनकहूं लीजिय सुख लाहू ॥
नृपकह सुनौ अमर गण बानी । तुमसब भांति सकलसज्ञानी ॥

दो० ठाम यकान्त बिचारिकै दीजिय मोहिं बताय ।
सोऊं जहां अचिन्तहौं कोउ न जगावै जाय ॥

भूप बसहु धवलागिरि खोहा । सुथल सुधाम हेत तुव जोहा ॥
सोइय तहां अचिन्त महीपा । कोउनजगाइहिहरिकुलदीपा॥
चारि खानि महँ जीव जोकोई । तुमहिंजगाइहि बलबुधिखोई ॥
सो तुव दृष्टि होइ जरि छारा । सत्य बचन यह भूपहमारा ॥
नृप मुचकुन्द नाम हो सोई । कालयमन नाश्योतेहि जोई ॥
अग्र कथा अब कहिय कृपाला । मिटिगा सकल मोहभ्रमजाला॥
श्रीहरि मेघबरण शशिआनन । अम्बुजचषप्रभुखलबलभानन॥
रूप चतुर्भुज आयुधचारी । अहिर किरीट पीत पट धारी ॥

दो० मकराकृत कुंडललसत उरबनमाल बिराज।
दरश दयो मुचकुन्दको जोदुर्लभ ऋषिराज॥
हरि स्वरूप लखि उठ्योनरेशा। विह्वल मन आनँद अलवेशा॥
जोरि हाथ किय दंड प्रणामा। बोल्यो सुबच भूप गुण ग्रामा॥
कृपासिन्धुमुखकांति बिलाशा। जेहिंबिधिकरयोगुफापरकाशा॥
तेहिप्रकार जनजानि गोसांई। कहिय नाम निज मोहिंबुझाई॥
जानि भेद नाशौं भ्रम मूरा। करौं भजन तुवमन चित पूरा॥
जन्म कर्ममम अमित प्रकारा। को पुर तीनि करै निरधारा॥
यहितन भेद कहौं नृप तोहीं। सुनु चितलाय जानुपुनिमोहीं॥
यदुकुल महँ बसुदेव सुजाना। जनम्यों तिन गृहहौंभगवाना॥
दो० बासुदेव मम नामहै मथुरा खल बधकीन।
कंसादिक कर भू।र सुनु जानत सकल प्रवीन॥
मुनिशशिबार समर करिभारी। हार्यो जरासंध बलधारी॥
प्रतिधा गुणचषक्षोहिणिलायो। हमसन सो नृपयुद्धपलायो॥
अरु यह कालयमन बलराशी। मथुरा खलदल लैकरि ग्रासी॥
काल कोटि मलखानि कुरूपा। तुम्हरी दृष्टि जरयो सो भूपा॥
मधुर मनोहर सुनि प्रभु बानी। नृपमुचकुन्द भूप बड़ज्ञानी॥
जान्यो नारायण जनपालक। अद्भुत बपुष धरे तुम बालक॥
अनुकम्पा पयोधि करतारा। तुव मायाभव बिदितअपारा॥
जावश लोक लोक सब प्रानी। निजबलरहितबिदितबिज्ञानी॥
दो० बुद्धि स्मृति चर अचर की दृढ़ता गहत न नाथ।
क्रिया करत सुख हेत हित तद्यपि होत अनाथ॥
जिमिसुष्कास्थि श्वान मुखचावै। निजलपक्षतजस्वादबहुपावै॥
आनँदगत दुखहै परिणामा। मुखक्षत पीर पाय श्रृणु श्यामा॥
तिमि नर बिषय भोग रत होई। बन्धसक्त माया बश जोई॥
यहि जग अंध कूप गृह धर्मा। वहिरागम तन नरबहुकर्मा॥
क्षमा राशि अनुकम्पा हीना। बिषय भोग सोदक नर मीना॥
अहोरात्रि बिस्मितहौं रहऊं। किमि नरधार भवँर भवलहऊं॥

आशुसुलभ मोहिंपरतजनाई। दृढ़ उपाय मोहिं देहु बताई॥
सुनु नृपभवभय जालअपारा। जस तू बदत कठिन निरधारा॥
दो० हौं परन्तु तुव मोक्षहित बदौं उपाय महीप।
सानँदकरिलहु मुक्तिभव कंह असयदुकुलदीप॥
भूमिधरणि तियसुत हितराजा। अधिकाधार्मिक कीन्होकाजा॥
तप बिनु तेन नशत सुनुभूपा। ताते सुनु उपदेश अनूपा॥
राजराजकन्या दिशि जाहू। करि तपतन तजिलै सुखलाहू॥
ऋषि गृह बहुरि जन्म तू पैहै। भक्ति पदारथ लहि तरि जैहै॥
हरि निदेश सुनि भूप बलिष्टा। प्रभु मूरति हिय धरि करि इष्टा॥
आगम कलि बिचारिमनमाहीं। करि दंडवत चल्यो दुखनाहीं॥
बद्री बिपिन तपस लागि गयऊ। मथुरा प्रभु तब आवत भयऊ॥
नीलाम्बर प्रति यों वचगावा। कालयमन सुर भवन पठावा॥
दो० बद्री दिशि मुचकुन्दगे अबन रहाभ्रम नेक।
अखिलम्लेच्छबाहन बधौ करिमनसमरविवेक॥
शीघ्र चलिय खलदलबधकीजै। क्षमा भार भारित हरिलीजै॥
युगल बन्धु पुरबाहर आये। संहारक बपु उभय सोहाये॥
असुर अनीजहँ रणमहँ सोहै। जोबिलोकि सुरपतिमदक्षोहै॥
संगर करनलगे दोउ भ्राता। अतिबल नारायण सुरत्राता॥
रण बिस्तार कथा बढ़िजाई। दुष्टसैन यमसदन पठाई॥
मधुपुरतात द्रव्यसब लीजे। द्वारावतिहि पठइ अबदीजै॥
सम्मतकरि बिबि बांधव राई। पुरसम्पति बहुभार भराई॥
द्वारावती पठइहरि दीन्ही। इतनृपमगधसैनसजिलीन्ही॥
दो० पूर्वोक्तदल साथलै मथुरा कस्यो निरोध।
उभयबन्धु पुर बाहिरे आयेलहि यह शोध॥
जातभये जब तट मगधीशा। बलप्रतितबइमिकहजगदीशा॥
सत्रहबार अजय नृपपाई। यहपावै सुख चलिय पलाई॥
असमत आनिचले भगिभूपा। जगत सुखद त्रैकाल अनूपा॥
हरिहिपलात सचिव लखिबोला। देखुकृपानिधि समर अडोला॥

तुवप्रतापदिशिबलित बिलोकी। कोबलवान सकै रणरोकी ॥
रामश्याम दोउबन्धु पलाने। तजिधनधामप्राणप्रियजाने ॥
त्रासितत्राण बिनापग भागे। स्वल्पहुनहिं रण उद्यमलागे ॥
मंत्रदवाक्य सुनत सुखपावा। लैनिजचमू भूप पुनिधावा ॥

दो० क्यों पलात परिहरि समर अमरनाथ जगजान।
बिह्वलतन सुधि बिनुभये अबनहोइ कल्यान ॥

प्रफुलित मगध राजमनभयऊ। प्रभुहिपलातसमरलखियऊ ॥
जोमुद भो ताके उरमाहीं। अनुपमकथिनसकतकविताहीं ॥
हरिआगे पाछे नृपजाई। बिपुल दूरि चलिगये नृराई ॥
गिरिगौतम ऊंचा योजनहर। चढ़जाय हरिबल नृप तापर ॥
शिखा शिखर सोहतद्वौ भाई। लखतसुर्व शोक अधिकाई ॥
तब नृप मगध बदत असटेरी। श्रृंगशिखा देखौ हरि हेरी ॥
अग जग सिंधुसुताहि निरोधौ। दारु पुंज काननमहँ शोधौ ॥
नगयुत भस्मकरौ यहि काला। भागिजायअबकहँ गोपाला ॥
चरवर नृप निदेश सुनिराई। घेरिअद्रि बहुकाष्ठ मँगाई ॥
घृत तैलादि लाय गिरि रोपा। जरासन्ध के उर बड़ कोपा ॥
जलज प्रचार कस्यो तत्काला। प्रगटीशिखीव्यौमलागिज्वाला ॥
बिकलभयेलखि सुरमुनिज्ञाता। प्रबल धनंजय कथी न जाता ॥

दो० गुप्तभये बिबि बन्धुनृप मर्म न जाना काउ।
अलखअकथ इंद्रियअबुझ श्रीयदुनाथ प्रभाउ ॥

गिरिवर छार भयो ताही क्षन। मगधभूप आनन्दित भोमन ॥
भस्मीभूत बूझि द्वौ भाई। मथुरहि चल्यो घूमि नरराई ॥
आइनगर सब निजबशकीन्हा। राज कोष आपनकरिलीन्हा ॥
उग्रसेन बसुदेव निकेता। सकल नशाये तब कुरुकेता ॥
निजजन राजपाद परथापी। गयो राजगृह जग सन्तापी ॥
इमि नृप जुरानिधिहि भरमाई। गये द्वारका यादव राई ॥
जेखलहरिहि मनुजकरिजानत। पूरणपुरुष सत्यनहिं मानत ॥
ते मतिमन्द दुष्ट चाण्डाला। उनकरसंगतजिय तिहुंकाला ॥

दो० तीनिलोक आनन्द दा दास दुखन कृत दूरि।
मंगलतजि संशयसकल भजु हरिजीवनमूरि॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासविरचितायांकालयमनवधमुचकुंदउद्धारमथुरापरित्यागवर्णनोनामद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२॥

दो० कोटि बिघ्न तुरतै नशै जब ध्यावै ब्रजराज।
परमहंस यह गति लखत आनँदमय सबसाज॥
निजरिपुकोसबकोउडरत बिदितबात यहआहि।
अपरनशत अहिडसतही अहिरनशतपै नाहि॥
ज्ञान जानियो कुमतिसब आपुहिजात पलाय।
ज्योंपारदलखि अनलको जानतबुधचितचाय॥
मननिजबशकरि सुजनजन ध्यावत राधानाथ।
आन ओर हेरत नहीं होवत अन्त सनाथ॥
तूमंगल परिहरिकपट भजिले मोहन श्याम।
बर्णन कुरु सुन्दर यशहि सुख पावै द्वौ धाम॥

सुखद चरित द्वारावति केरे। नाना भाँति बिचित्र घनेरे॥
ते अब श्रवण करौ कुरुराई। जे सुनि मोह चमू विनशाई॥
पूरुब कौतुक करि यदुराई। गये द्वारका अति मुदपाई॥
हरि बिलोकि यदुबंशी हरषे। नभते सुर प्रसून बहु बरषे॥
प्रत्यायत भा मंगल चारा। मंगल नाद गीत झनकारा॥
उग्रसेन आदिक सुख छाये। हरिमिलिबहुतककालबिताये॥
एक दिवस जुरि बहुयदुजाता। उग्रसेन आगे सुनु ताता॥
करि प्रहून कह सुनो कृपाला। सब लायकभे रामगोपाला॥

दो० अब उत्तम गृह जोइ करि करिये रामबिवाह।
भूपति सुनिकह कह्योभल सम्मतदा उत्साह॥

बोलि एकद्विज ज्योतिषज्ञाता। कह्यो तात तुमजाहु प्रभाता॥
उत्तमकुल समता निजपाई। करिय बिप्रबल राम सगाई॥
असकहिनिशिअक्षतधनदीना। नारिकेर फलसहित प्रवीना॥

द्विजशिरकरि अभिषेक पठावा । चल्योविप्र कछु बार न लावा ॥
करि बिचार अर्णता प्रदेशा । रेवत नृपपुर कस्यो प्रवेशा ॥
जाय सभानृप कह समुझाई । निज आगम वृत्तान्त बताई ॥
कन्या तासु रेवती नामा । सकलसुलक्षणलक्षित बामा ॥
तासँग बल बिवाह ठहराई । लग्नपत्रिका शुद्ध लिखाई ॥
दो० तिलक बस्तुनृप बिप्रसन द्विजवर चल्यो लवाय ।
उग्रसेन पहँ आइ नृप कह्यो बृतांत बुझाय ॥
सुनि हरषे सब यदुकुल लोगा । जानिबिवाहसकलविधियोगा ॥
उग्रसेन शुभ घरी सुधाई । लयो तिलक उरआनँद छाई ॥
मंगल गान करैं कल बैनी । गृहप्रति त्रियमृगशावकनैनी ॥
करि सत्कार विप्र बर केरा । बहुधन दै रेवत पुर फेरा ॥
पुनि सजि सुन्दर भूप बराता । संग सकलहितुयदुकुल जाता ॥
नृप अर्णता देश महँ जाई । करिबिवाहबिधिजसश्रुतिगाई ॥
दाउहि व्याहि चले सुखपाई । आयेपुर द्वारका नृराई ॥
यहि प्रकार करि हलधर व्याहा । महामोद मय भे नरनाहा ॥
दो० पुनि हरि दाउहि साथलै कुंडिनपुर में जाय ।
हरिलाये नृप रुक्मिणी रण शिशुपाल हराय ॥
निज आयत कीन्हो उद्वाहा । सुनियहचक्रतकहयोनरनाहा ॥
कुंडिन पुर नृप भीष्मक भारी । तासुतनयमुनि समर विहारी ॥
अरुशिशुपालबलीजगजाना । तिनहिंअजयकरिजिमिभगवाना ।
लैआये रुक्मिणि ऋषिराई । निकर प्रसंग बदौं सुखपाई ॥
देश विदर्भ विदित महिपाला । कुंडिनपुर तहँ नगर बिशाला ॥
निवसततहँनृपभीष्मकज्ञानी । जेहियशवलितदिशादशजानी ॥
ताके भवन शक्ति श्री सीया । जन्मीजाय दानि कमनीया ॥
प्रसवतही द्विज ज्योतिष ज्ञाता । बोलि पूछि भूपति यहबाता ॥
दो० लग्न मुहूरत ऋक्ष दिन शोधि कहौ द्विजराय ।
अखिल दोष गुण सुताकर रहौं मोदको पाय ॥
विप्रन लग्नादिक लिखिराजा । ज्योतिषमतशोध्योशुभसाजा ॥

कह्योनाम रुक्मिणिनृप कहऊ। बड़भागी महपि जग अहऊ॥
शील स्वभाव रूपकी रासी। सुता सुलच्छणि भैकमलासी॥
आदिपुरुष उद्वाहित होई। नृपगृह भूप कहत हमजोई॥
क्षमाविदौत बाणि सुखसानी। श्रवणितभूपसुभाग्य बखानी॥
मंगलचार सहित उत्साहा। करवाये निजगृह नरनाहा॥
दै बहुदान समोद सुजाना। द्विजबर बिदाकिये गुणवाना॥
वृद्धति सुता कला शशि तूला। नितनव लहतभूप सुखमूला॥
जा.दिनते निवसी जगमाता। बसुधादिक सबगृह सरसाता॥
कृषीवणिज फलदायक सबही। त्रियनरंसकलशीलयुतनवही॥
कुंडिन पुर श्री पुर निधिछाई। परिपूरण नहिं बरणि सिराई॥
सिन्धुजात जहँ बसत नरेशा। वरणिसकतजगकौन कवेशा॥
दो० तनया नित प्रति नृपति सुनु विरचत बाल चरित्र।
लखिहरषत जननी जनक लीला परम पवित्र॥
संग सखी सम वैसानि सोहैं। लीला निरखि देव कुलमोहैं॥
प्रौढ़त प्रौढ़ कर्म चतुराई। निज सहेलि सँग कृतनरराई॥
यकदिनचोरमहीचिनिख्याला। रच्यौसुतान समोदविशाला॥
रुक्मिणि सँग जहँजायँलुकाई। सुखभा द्वितिय चंद्रिकाराई॥
देखि प्रकाश सखी अनखाई। रुक्मिणि हमन तोरसंगजाई॥
आनन क्रांति करावलि सोमा। खेल नशात उठत भय रोमा॥
तिमिरनाशमुखछबिलखि तेरी। विस्मितआलिहोत मतिमेरी॥
लुकिनसकत हम काहुनिकेता। तुवलप क्रांति बताये देता॥
दो० यहि प्रकार खेलत नृपति प्रभा अमित लपतासु।
देखि सुलच्छण बुधिनिपुण सबदुखलहत विनासु॥
मुनिकौतुक कारक गुणखानी। स्वारथ गत परमारथ ज्ञानी॥
एक दिवस भीष्मक पुर आये। रुक्मिणिदेखि महामुदछाये॥
आतुर पूरण पूरुष पासा। मुनिगयभूप गूप अनयासा॥
ऋषिहि बिलोकि उठे यदुराई। करि आदर शुभथल बैठाई॥
पूछ्यो आगम चरित बिशाला। तबनारद इमि कह्योहिवाला॥

सबके उरबासी असुरारी। सुनौ ध्यानयुत गिराहमारी॥
भीष्मक सुता रुक्मिणी नामा। कमलासम सोनाखिलामा॥
सब लक्षण परिपूरण ताके। हस्तरेख पति हौ तुम जाके॥
दो० असकहि सुरपुर ऋषि गये प्रभुयहि सुद्धिहिपाय।
प्रीति परोक्ष अपार कृत सुनु कुरुपति चितलाय॥
यहिविधि नृप सीता अवतारा। जान्यो यदुपतिजगकरतारा॥
रुक्मिणिजिमिघनश्यामैजाना। सो चरित्र शुचिकरौंबखाना॥
देश देशके मागध सूता। कुंडिन पुर गयनृपकबिनूता॥
हरियश पूरब कृत बहुगायो। नृपतिसभामहँसबहिसुनायो॥
बसुधा भार हरण अवतारा। यदुबंशी बसुदेव अगारा॥
जन रक्षक बहु असुर सँहारे। कंसादिक रणभूमि पछारे॥
मथुरा त्यागि द्वारिका आये। मुनि महिधामगधीशपलाये॥
प्रभु चरित्र सुनि पुर नर नारी। बदत परस्पर बचन बिचारी॥
दो० जासुबिशद यश मुदितमन आजु सुन्यो दुखहार।
निज नैनन मूरति वहै कब देखब करतार॥
समाचार सुनि सब रनिवासा। चढ़्योधवलगृहहरियशआसा॥
पूत चरित सुनि रहीं लुभाई। तन मन बचन सुनै मुदपाई॥
रुक्मिणि सुन्यो श्यामकरतूती। जागिउरप्रीति नारिगृहसूती॥
अंकुर प्रेम उरस्थल जामा। मनमन रटै लागि हरिनामा॥
क्षणक भये बिहवल भव माता। हरिगुण बुद्धिहरी तेहिगाता॥
वादिनते जग कुछ न सोहाई। अलख प्रीति हरिपदउरछाई॥
जामभेक अह गौरी वाको। श्याम ध्यानमग दूसरथाको॥
कान अवस्था कान्ह सनेहा। कोद्वितीय भावत नहिंदेहा॥
दो० प्रभुयश गावत मगन मन लगन दरशउरमाहिं।
याँचत हरिसों काल तिहुं बेगमिलत कस नाहिं॥
प्रात गौरि मूरति रचि सोई। षोड़श बिधि पूजतभ्रमखोई॥
करि बंदना जोरि दोउ पाणी। यह मांगत महीप मृदुबाणी॥
दया राशि प्रिय भार्ग भवानी। देहुमोहिं बरदासी जानी॥

देवकि तनय होइ पति मोरा। तुव महिमा प्रसिद्धचहुंओरा॥
यहि प्रकार नित राज कुमारी। ध्यावत प्रभुहि प्रपंच बिसारी॥
एकदिवस निज सखिन समेता। करत बिनोद समोदनिकेता॥
नृप भीष्मक तेहिअवसरआयो। तनया लखिउर शोचबढ़ायो॥
भै उद्वाह योग तन जाया। करिय बिवाहमनहिंअसआया॥

दो० मुग्धा कन्या जासु गृह पुण्य तासु को चीन।
नरक पिता पावत अवशि भोमन नृपति मलीन॥

सतरज तम देवै त्रै दाना। अफलसकलऋणसुतामहाना॥
कन्या ते पावै उद्धारा। सो जग साधु सुयशबिस्तारा॥
अस बिचारिगा सभानृपाला। ज्ञातिज सचिव बोलितत्काला॥
सबन बुझाय बद्यो नरनायक। अब दुहिता भइब्याहबलायक॥
कुलबलगुण स्वरूप निधि होई। रुक्मिणि योग तात बरुसोई॥
हृदय बिचारि कहौ सब भाई। जहँ तनुजाकर करौं सगाई॥
निजमतिसरिसअनेकअनेका। बरणे महिप एकते एका॥
भूपति मनहिं न कोउबरआवा। तबहिं रुक्म अस बचनसुनावा॥

दो० चन्देरी नृप अति बली जासु नाम शिशुपाल।
सकलभांति समतालहत आपनि तात कृपाल॥

जग भल कहै मोर मन माना। करिय बिवाह तात सज्ञाना॥
लोक सुलोक बिशद तुवछावै। कीरति बिपुल देवपुर पावै॥
पै न भूप मन भाई बाता। रुक्म केश बोल्यो लघुजाता॥
कृष्णचरित उज्ज्वलजगजाना। पार्टी जटी धरत दृढ़ ध्याना॥
रुक्मिणि ब्याहकृष्णसँग कीजै। त्रिपुर मनोहर कीरतिलीजै॥
लघुसुत बचन सुनत नृप हर्षे। जिमि चातक बारिद हितुबर्षे॥
साधु सुजान सुसम्मत भाषा। श्यामदरश ममउरअभिलाषा॥
बुधबद आयु बड़न बुधि भाई। तुव सम्मति सबबिधिसुखदाई॥

दो० कहत चतुर लघु बड़न नर पूछि करै जो बात।
सबको सम्मत सारले सो न जगत पछितात॥

भीष्मकपुनि इमिबचन बखाना। रुक्मकेश बालक बुधिवाना॥

शूरसेन यदुबंशिन माहीं। यशी प्रतापी बिदित सदाहीं॥
भये तदात्मज शुचि बसुदेवा। ऋषियोगीश चहत जेहिसेवा॥
आदिपुरुष पूरण अबिनासी। भवनिशिकीर्त्तिचंद्रिकाभासी॥
सुरमुनि महादेव करि जाहीं। ध्यावत सकल समाधियमाहीं॥
कबिशापति तीनों गुण जासू। तेहि सुतह्वै तिन गृहकियबासू॥
समराजित बलखानि प्रसिद्धा। कंसादिक मलराशिनिषिद्धा॥
निज बल बधे हस्यो महिभारा। यदुकुलयश जग सकलपसारा॥

दो० प्रजा हित गोत्रजन कहँ दयो मोद बहु भाय।
ऐसे श्रीपति कृष्ण हैं करिय बिवाह सचाय॥

यहि पुर अति आनँद को पाऊं। अंत देव पुर मोद बढ़ाऊं॥
सभा बिराजक सुनि नृप बानी। कह्यो धन्य महिपालसुज्ञानी॥
यहि बिवाह भल प्रभु सबहीका। हमरे नाथ भाव तो जीका॥
असघरबर न मिलिहि पुरतीनी। यह मति सकल साररसभीनी॥
सुनि सबकी सम्मति नरपाला। क्रोधित रुक्म भयोतेहिकाला॥
कामति मंद बकत अन्यायी। कहत अबूझित बात अभायी॥
कृष्ण चरित्र जानि बौराने। पशुवत बचनकहतअनजाने॥
षोड़श बर्ष बस्यो नँद धामा। ग्वाल कृष्णताकर तहँ नामा॥

दो० रोमबस्त्र तनपरधरे बन बनचारीगाय।
ग्वालनसँग भोजन कस्यो छत्रीधर्म बिहाय॥

गोपजात जानत सब कोई। सो सम्बन्ध योग कस होई॥
जाकर मात पितानहिं जानिय। औरकहा कुलज्ञातबखानिय॥
नन्दग्वाल सुत कोऊ बतावै। कोउबसुदेवतनय कहिगावै॥
पैसतिभेद जाननहिं जाता। काकर तनुज श्यामकोमाता॥
यदुकुल निंदनीय नृपताई। जग बिभुता कासों अबपाई॥
उग्रसेन कर सेवक श्यामा। यदुबंशी बसुदेव सरामा॥
कछुक दिवसते भै बलदाई। कहाभयो लघुता प्रभुताई॥
कोयश लहहबतासु सम्बन्धा। जुरेसकल तुमबुधि चषअन्धा॥

दो० रिपुताहित सम्बंधजग करिय समानहिं पाय।

करत कुलाकुल बुधबदत अयशरहै जगछाय ॥
जोपैपिता सुता तेहि देहौ । अपकीरति समस्त भवलेहौ ॥
देश देशके क्षोणिप ताता । सुनिहँसिहैंयहअनुचितबाता ॥
कुलकलंकलागिहियहिब्याहा ।जगशिशुपालबिदितनरनाहा ॥
सबबिधि समरथ चतुर महाना । नृपतातिलक सदाजगजाना ॥
लोकप रसपत्रसत जेहित्रासा । आन ओर पितु होइ निरासा ॥
सुतासुलक्षणि तेहि उद्वाहौ । जो आपनिशुभकीरतिचाहौ ॥
उत्तमयहै अयोग बिचारा । कृष्णहि कहत जगत कर्तारा ॥
तासुनाम त्यागै भ्रम खोई । ग्वालन त्रिपुरनाथ भवहोई ॥
दो० सबके सम्मत खंडिके मम कहनी नृपमानि ।
देतनया शिशुपालकहँ सबबिधि समता जानि ॥
सुतहि बिरोधित जानि नृराई । कछु न कह्यो शिररह्यो नवाई ॥
रुक्म ज्योतिषी बोलि सुजाना । भूपसमाजमनहिं पछिताना ॥
लग्नपत्र तुरतै लिखवाई । बोलि पुरोहित द्रव्य बँधाई ॥
सामग्री अभिषेक अपारा । दईसंग द्विजके तेहिवारा ॥
गमन्यो शीघ्र बिप्रबर राई । चन्देरिहि मनमोद बढ़ाई ॥
नगर पहुँचिगा राज समाजा । उठ्योसभासदद्विजलखिराजा ॥
करिबंदन पांडुर दिय आसन । पूछ्यो तबहिइलपब्राह्मणसन ॥
अनुकम्पा रतनाकर देवा । निज आगम कर भाषियभेवा ॥
दो० कहिय मनोरथ द्रुत द्विजप करौंशक्ति अनुमान ।
आशिषदै महिसुरकह्यो सुनु क्षितिपालसुजान ॥
भीष्मक नृपदै तिलक पठाये । नृप अभिषेक साजहमलाये ॥
सोलैकरिय बरात बनावा । सुनतरसाधिअकथसुखपावा ॥
निजकुल पूज्य बोलाइ भुदेवा । करिदंडवत कह्यो सब भेवा ॥
शुभघटिकाबिचारिज्योतिषमत । लईलग्न सानंदित दुखगत ॥
दानदेइ महिसुरहि घुमावा । पुनिबहु भूपन नेवति पठावा ॥
जरासंध इत्यादि नृपाला । सहसहाय गमने ततकाला ॥
चमूपाल शिशुपाल हँकारी । सजौसैन यह कह्यो प्रचारी ॥

जबअनेक क्षोणिप चलिआये। तबशिशुपालअमितमुदपाये॥
दो०. सकल बनाई निज अनी ब्याहचार करवाय।
कुंडिनपुर कहँ चलतभो सुनु कौरव कुलराय॥
भीष्मकसों इत द्विज कहआई। करिआये अभिषेक नृराई॥
अब उद्वाहिक करिय बनावा। सुनिमहीप मनभा पछितावा॥
निपट उदासित शोच अपारा। बहुरि धरापति गयउ अगारा॥
समाचार रानिहिं समुझावा। नृपबच सुनि सुंदरिसुखपावा॥
कुल वृद्धा बैश्यका बोलाई। तुरतहिं मंगलचार कराई॥
ब्याहसाज साजन त्रियलागी। दुबिधा अखिल जीवतेभागी॥
सभा महीश आइ पुनि बैसा। सोहत धर्म धर्मपुर जैसा॥
कहि बुझाय मंत्रदा प्रधानहिं। जो बिबाहकारजकरिजानहिं॥
दो० सकल बस्तु उत्साह की यकठौरी करि देहु।
किंचिन्मात्र न घटिपरै कारज कीजै एहु॥
पाय रजायसु तत्तत् काजा। जनु करि राख समग्रसमाजा॥
यह चरचा सम्यक पुर छाई। रुक्मिणि अरुशिशुपालसगाई॥
राजा चहेउ कृष्ण कहँदीन्हो। रुक्मदुष्ट बिपरीतिहि कीन्हो॥
सुनि पांडुजपुर नर त्रियशोचै। बिनु स्वारथ नैनन जल मोचै॥
राजभवन बहु बजति बधाई। प्रफुलित नृप नर नारिअथाई॥
क्षोणी देव कान सम भाखैं। कोऊ कर्म्म गुप्त नहिं राखैं॥
दुंदुभि बजत महीप दुवारा। मागध सूत सुयश बिस्तारा॥
मंडफ रच्यौ बरणि नहिंजाई। जो बिलोकि कबि बुद्धिभ्रमाई॥
दो० राजसदन शोभायथा तथा नगर प्रतिधाम।
द्वार द्वार हरि कलश युत तरु रंभादि ललाम॥
बंदनवारि बँधी प्रतिधामा। पुरस्थ्या स्वाच्छित सब ठामा॥
पाटम्बर डासत पुरबासी। प्रफुलितयुवतिपुरुषगुणरासी॥
मिलि द्वै चारि सखी कलबैनी। रूप मृगांक मनोहर नैनी॥
रुक्मिणि निकटजाययहभाषा। सुनुसखिबिधिपुरई अभिलाषा॥
सँग शिशुपाल तोर उद्वाहा। करत रुक्मपुर बड़ उत्साहा॥

सुबुधि सुलज्ज होहु अबरानी । सुनिरुक्मिणिबोलीमृदुबानी ॥
मन बच क्रम हरि मोरअधारा । दूसर पतिको कृत करतारा ॥
महा शोच बिकलित नृपजाता । बोलिएक द्विज सबगुणज्ञाता ॥
दो० करि प्रहून सबिनय सुबच बिप्रहि कहा बुझाय ।
मम सँदेश लै कृपा दधि अवशि द्वारकाजाय ॥
श्रीगोविन्दहि सुबुधि सुनाई । पश्चिमा निधि लाउलबाई ॥
जन्मप्रयन्त तोर गुण मानौं । हरिबरदानि तात अनुमानौं ॥
देवि बेगि किन कहिय सँदेशा । नगर द्वारका दूरि प्रदेशा ॥
बोधि बोधदा त्रिपुर सयानी । तब संदेश सप्रेम बखानी ॥
बरुणा जनक बारुणी श्यामा । अंतरयामी सब गुण ग्रामा ॥
मानि प्रीति जो मम सँगऐहैं । तौ तुव दुख भ्रम दूरि बहैहैं ॥
सुनि प्रिय बचन दशनबरकेरे । लिख्यो पत्रिका प्रेम घनेरे ॥
बिहँगराज कर दीन्ही पाती । बत्ननबघो सुप्रीतिअधिकाती ॥
दो० श्री हरिसों करजोरि द्विज कहियो बैन बिचारि ।
घट घट बासी आपु हैं अंतरयामि सुरारि ॥
जन लज्जा तुम राखन हारे । जन्म जन्म के कंत हमारे ॥
दरशदेइ अघओघ नशाइय । निमिषमात्रनहिंबारलगाइय ॥
चल्यो क्षमामस्कारिहरि ध्याना । दिशिद्वारकाकस्वो प्रस्थाना ॥
दूरि देश महिदेवन जाना । क्षणमहँगा द्वारका सुजाना ॥
नहिं आश्चर्य कृष्ण प्रभुताई । राम समय जनपति यदुराई ॥
रतनाकर मधि नगर सुहावा । देखि सुपर्व इला सुख पावा ॥
बन उपबन चहुँओर बिराजैं । दंताबिपुलकलध्वनितहँ भ्राजैं ॥
सरवर नलिन मिलित जलपूरे । डोलत चंचरीक मन रूरे ॥
दो० सरतट जलचर बहुबसहिं भाबरणै कबि कौन ।
शेष शारदा मतिभ्रमै गायक हरिगुण जौन ॥
द्विजबर अग्र जाय पुर देखा । हरि पुर ते पूरण मन लेखा ॥
चारिओर दृढ़ कोट सोहावै । करण द्वार बहु शोभा पावै ॥
जटित मणिन कपाट तहँलागे । भूसुर प्रबिशिलख्योपुर आगे ॥

रजत शूर मंदिर सुखदाई। जोबिलोकिविधिबुधिचकिजाई॥
धवल धामभा अकथ नृपाला। जोलखिमोहलहत सुरजाला॥
सध्वजपताक कलश सबधामा। सिंचीसुगंध नृपति सबठामा॥
आयत प्रति बहु मंगलचारा। बरणि न जायँ सहितबिस्तारा॥
पुर रक्षक बसुयाम सुदर्शन। करिनसकत खलनगरस्पर्शन॥
दो० देखत शोभापुर द्विजप राजसभा महँ जाय।
दै आशिष पूछत भयउ कहँ राजत यदुराय॥
कोउ नृप सेवक ब्राह्मण जानी। हरि निकेत दरशायो आनी॥
द्वारपाल लखि द्विज पदबन्दे। पूछ्यो बचन सप्रीति अनन्दे॥
स्वारथ देश बदौ सुखपाई। जोहौं प्रभुहिं सुनावौं जाई॥
हौं द्विज कुंडिनपुर ते आयों। भीष्मकसुता पत्रिका लायों॥
अंतःपुर चलि जाइय ताता। हरि आसन राजत सुरत्राता॥
तब नृप सदन गयो चलिसोई। उठे कृष्ण मुख महिसुर जोई॥
करि प्रणाम सादर बैसाई। पादोदक निजभवन सिंचाई॥
कुशलप्रश्नकरिसुरुचिकृपाला। सुनौ महीप बहुरि सुरपाला॥
दो० इष्टदेव सम सेवकरि पुनि अस्नान कराय।
रसरसभोजन नेह युत नृप द्विज बरहिजिमाय॥
दैतम्बोल सुथल शुचि धामा। बहु सुगंध सींचिहि तेंयामा॥
छपरखट्ट पर बिप्र सोवाई। आपुन पास बैठ यदुराई॥
मन शोचत कब भूसुर जागै। कहै बचन रुक्मिणि रसपागै॥
जबनजग्यो तब तेहि पगदावा। चौंकिउठ्योमहिसुरभ्रमछावा॥
कहो तात निज आगमभाऊ। जिमिअजानपूछततातिमिराऊ॥
कोस्वारथ दरशन मोहिंदीन्हो। पदजलसदनपूत प्रभुकीन्हो॥
कुंडिनपुर भीष्मक नृपताई। बसत जहां चहुँबरण अथाई॥
दुहिता तासु रुक्मिणी आहीं। तवयशसुनिप्रफुलितमनमाहीं॥
दो० निशिदिन तव पगध्यानकृत यह लालस उरतास।
निज सेवामहँ राखिप्रभु मेटिय सब अघ त्रास॥
भीष्मकहू यह कस्यो बिचारा। सबके सम्मत करलै सारा॥

रुक्मिणि तुमहिं देइ अनुमाना। पैजड़ रुक्म आन मतठाना॥
नृप शिशुपाल तिलककरवावा। व्याह हेत शुभ साज पठावा॥
सो व्याहन आवत यदुराई। रुक्मिणि महाहृदय पछिताई॥
यह पत्रिका मोहिं प्रभु दीन्ही। अरुबड़िबिनयजोरिकरकीन्ही॥
लैपत्रिका समोद कृपाला। समाचार बांच्यो तेहिकाला॥
बिप्रहि कह्यो प्रसन्नित बानी। होहु अचिन्त धीर बिज्ञानी॥
अवशि चलतहौं तुम्हरे संगा। सकल दुष्टदल करिरणभंगा॥

दो० पूरण इच्छा तासुकी हौं करिहौं बिनु खेद।
असकहिमनचिंततकछुक प्रभुअचिंतनिभेद॥
प्रीतिबिबशहरि कालतिहुं बिदित जानिमनमाहिं।
मंगल तन मन बचनतू हरिध्यावत कसनाहिं॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायां श्रीकृष्णप्रतिरुक्मिणिसंदेश
बर्णनोनामत्रैपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३॥

दो० पारवती शशि छबि लहत तारागण सुप्रकाश।
पै प्रगटतही रश्मि के निर्छबि लसत अकाश॥
योंहीं प्राणी पाप रत शोभित पाप समाज।
धर्म्म सभा महँ दुष्ट नर अमित उठावत लाज॥
याभव भूप अपार मग चलत प्रकृतिबश आहिं।
बुधहरिजननिजधर्म्म मय जड़ मूरुखतेहिनाहिं॥
श्वानादिक जे जीव हैं ते उत्तम ममजानि।
वा नरते जो हरिभजन करतनहित चितआनि॥
सुखदायक दुख हरसदा राधा नाथ सनेह।
सो परिहरि तू क्यों भ्रमै छूटि जाय यह देह॥

किल्विष तिमिरसहसकरबानी। पुनि बोले मुनिवर बिज्ञानी॥
इमि ब्राह्मणहि भूप परबोधी। कहइमिपुनिहरिबाक्यविरोधी॥
जिमि काढ़त शिखि संघटदाशा। खलदलमलिहमताहिप्रकारा॥
सुन्दरि कहँ लाउब द्विजराई। असभाणि सभागये सुखपाई॥

करि प्रणाम कह सुनौ महीपा । कुण्डिनपुर भीष्मक नृपदीपा ॥
निज दुहिता मोहिं देबे काजा । पठवा पत्र हस्त द्विजराजा ॥
अकसर हमहिंबोलाव गोसाँई । का आयसु कहिये समुझाई ॥
उग्रसेन कह दूरि बहूता । जानकहौं किमि तात अदूता ॥
दो० राज समग्र समाज तहँ व्याभितरारि अपार ।
समाचार को हमहिं पुनि कहिहि आइतद्वार ॥
चिन्तनवृथा न भूपति कीजै । अवशिजाउँ आज्ञामोहिं दीजै ॥
जोपै जाव अवश्यक जानिय । तौ तजि हठ सैना सँगआनिय ॥
मूशल पाणि चमूप समेता । जाहु तात अनुशासन देता ॥
करि बिवाह आतुर गृह आयो । काहू प्रति न बिरोध बढ़ायो ॥
अग्र जात मैं तात सुजाना । पाछे सदल बंधु प्रस्थाना ॥
पितु प्रति पुनि प्रभु पायरजाई । दारुक निज सारथी बोलाई ॥
बेगि यान सजि लाइय ताता । किमपि न बार होइविख्याता ॥
आयसु पाय लाव सो याना । भूसुर सहित चढ़े भगवाना ॥
दो० स्वयं सिद्धि मिति बदि चले कुंडिन पुर दिशिभूप ।
पुर बाहिर भे सगुणशुभ सब बिधि सुखद अनूप ॥
दक्षिण दृश्य मान मृगचक्रा । कृतक्रीड़ा बिहाय गति बक्रा ॥
सन्मुख हरिपतनी युतजाई । निजभय आनन लीन्हेराई ॥
देखि सगुण ब्राह्मण इमिकहई । सिद्धि मनोरथममयत अहई ॥
हम महिसुर सेवक गुणवेला । सगुण अगुणबूझत सबखेला ॥
सगुण रूप अवतार हमारा । अनुगामी गुण तीनि प्रकारा ॥
पवन बेग हय सूत चलाये । नाना नगरदेश चलि आये ॥
कुंडिनपुर पहुंचे असुरारी । यह चरित्र देख्यो बनवारी ॥
ठाम ठाम प्रति श्याम निहारा । सामग्री बिवाह चहुंद्वारा ॥
दो० चच्छ प्रतोली बिबिध बिधि चर्चित शुचिपाटीर ।
नारिकेर पुंगी कनक हरित पात युत नीर ॥
प्रति निकेत बन्दनवारी अस । गीतानंद होत सुरपुरजस ॥
नृप उपबन उतरे यदुनायक । राज तरु छाया सुखदायक ॥

बिप्रराज कन्यहि सुधिदेहू। निज करतबकर प्रतिफललेहू॥
बहुरि मोहिं वृत्तान्त बताइय। बेगिजाहु द्विज बारन लाइय॥
नाथ बिवाह प्रथमदिन आजू। जुर्‌यो राजगृह अखिलसमाजू॥
पायएकान्तरुक्मिणिहिस्वामी। कहिहौंतुव आगमद्विजगामी॥
असबदि चल्यो द्विजप कुरुराई। आन वृतांतसुनौ चितलाई॥
यहिप्रकार प्रभुतहाँ बिराजे। उत शिशुपाल बरातहिं साजे॥

दो० जरासंध इत्यादि नृप संगसमोद बिशाल।
असुर कटक अगणितचल्यो प्रबलदुष्ट बिकराल॥

बोझिन बोझ अनन्त महाना। कच्छपकोलहृदय अकुलाना॥
पुरअबिदूरि बराती आये। समाचार भीष्मक नृपपाये॥
सचिव गोत्रज हित अगमानी। नरपतिगयोसबहिसँगआनी॥
सादरभेंटि सबहि पहिराई। रत्न जटित भूषण नरराई॥
दै बहु पारसीक द्विरदाना। पुरलाये करिबहु सन्माना॥
उत्तमथान दयो जनवासा। जहँ सबोंबिधि भूप सुपासा॥
सामग्री अहार मँगवाई। उचित महीपन पास पठाई॥
अंतर चरित तात अबगाऊं। मोदकसबबिधितुमहिसुनाऊं॥

दो० हरिजब इत मारगलियो तबजुरि बहु यदुजात।
करिप्रणाम तब भूपसन कह्यो सुनौ बरबात॥

सुधिस्पृष्ट यह सुनी नृराई। मगधराज शिशुपाल सहाई॥
अपर अमित खल युत सेवकाई। सब प्रकार निज साजबनाई॥
सोत्साह कुंडिनपुर आये। नृप दुहिता ब्याहन मुदछाये॥
अकसरश्याम गये बड़िशंका। बहुशिशुपाल जगत आतंका॥
उरशत्रुता राख मगधीशा। ह्वैहै समर सत्य अवनीशा॥
यहिकारण अनुशासन दीजै। जानितात कसअपयशलीजै॥
सुनि भूपति शंकित उरभयऊ। बोलिराम अस आयसु दयऊ॥
संग बिरुत्थी सैन पलाई। कुंडिन पुरहि बेगि किनजाई॥

दो० बोधिश्याम कहँ तात तुम लै आवो सुखपाय।
नृप आयसु सुनि रामतब सैनालई बोलाय॥

यदुबंशी जुरि रस इषु कोरी । कुंडिन पुरहि चले गुण धोरी ॥
प्राबिट किधौं बाहनी राई । कलभव्यूह बरणिय मेघवाई ॥
नकुल पंक्तिद्विजमदकल सोहैं । शब्ददमाम रसध्वनि रोहैं ॥
बिद्युल्लताशस्त्र छबि देहीं । नृपनृत्यकजनु जलद सनेहीं ॥
बिबिध प्रकार बीर बर बोलैं । षटपद मंडुक सुबुधि किलोलैं ॥
बासव बाण धारि धनुबीरा । आक जवास शत्रु उरपीरा ॥
मुदित मीनजनदेखिसुकाला । क्लेशितद्युतिकरखलश्रुतिबाला ॥
दलशोभा बिलोकि सुर वृंदा । यानारूढ़ गगन सानंदा ॥
॥ दो० बरषत सुमन अपारते नभमारग मुदपाय ।
पुलकित गावत श्यामयश कहिजैजै यदुराय ॥
हरिपश्चात सदल बलरामा । कुंडिन पुर पहुंचे सुख धामा ॥
रुक्मिणि यहन नेक सुधिपाई । महा बिकल अतिउरपछिताई ॥
मुखछबि महा मलिन कुरुकेता । बिधुकर प्रात तथा छबिदेता ॥
उच्च सदन चढ़ि चहुं दिशिहेरैं । काहि कहै चिन्ता निरवेरैं ॥
जल प्रबाह बाढ्यौ चषतासू । महा बिकलमन निपटउदासू ॥
निजमन बदत कहतइमिराजा । तीनि समय रच्चकजनलाजा ॥
को कारण बिलंब बिधि भयऊ । मम दोहद बिसारिहरिदयऊ ॥
अंतरयामी अघहर श्यामा । स्वर्पाताल व्याप्त सुखधामा ॥
दो० अथवाद्विज ह्वाँनहिं गयो वाकुरूप मोहिं जानि ।
प्रीति प्रतीतिन हरिकरी को दृढ़ कहै बखानि ॥
प्रह्लादिक हित बारन लाई । कहि अबदैव कृष्ण बिसराई ॥
खल बाधक साधक प्रणदासा । सुनि मगधेशकरी उरत्रासा ॥
कालिह करिहिशिशुपालबिवाहा । जात मोर प्रण उरदुखदाहा ॥
बिनु हरिप्राणरहिहि किमिधाता । जाउँ कहां अतिबिथुरितगाता ॥
बहु जप नेम धर्म ब्रत साधे । निष्प्रपंच हरिपद आराधे ॥
कोउ न सहायकभो यहिकाला । जो बिलम्ब कीन्होगोपाला ॥
देखि दुखित इमि सखी बखाना । नगर द्वारका दूरि महाना ॥
बिनु पितु बन्धु रजायसु आली । केहि प्रकार आवत बनमाली ॥

दो० आनसखी कह धीर धरु अंतरयामी श्याम।
आवहिंगेहरिअवशिसखि करुकछुकालबिराम॥
मेरे मन प्रतीति दृढ़ होई। कहन चहत आये हरि कोई॥
तदनंतर द्विज दर्शन दयऊ। रुक्मिणिशोकउरगभजिगयऊ॥
दै आशिष भल अवसरपाई। प्रभुआगमकहसुबुधि बुझाई॥
नृप बाड़ी महँ राजतश्यामा। आवत सदल पिछारी रामा॥
बिप्रबचन सुनि अमी समाना। आँनदरुक्मिणिलहाअजाना॥
करि बन्दन पद रुक्मिणिभाखा। कृपासिंधु ममजीवन राखा॥
जो न होत तुव आगम आजू। प्रातहोत सब भाँति अकाजू॥
सुधि प्रतिफल न तीनि पुरकोई। भूसुर तुमहि देउं मैं जोई॥
दो० इंद्र भवन सम्पतिहु दैहोउं अऋण नहिंतात।
असकहि मौनित सुख गलित होत भईनृपजात॥
सुनि प्रिय वचन तोष द्विजपाई। प्रफुलितगयउ महीपअथाई॥
हरि आगम यकान्त कहराजै। आद्योपान्तत्यागिजगलाजै॥
हरष्यो भूप सुनत द्विज बानी। भीष्मकचल्योआशुनृपज्ञानी॥
राम श्याम शोभित तहँ आयो। करिप्रणामबाड़िबिनयसुनायो॥
पुनि कह मैं मन बचअरुकाया। कन्या तुमहिं देत यदुराया॥
दुष्टन मत बिपरीत बिचारा। अभिमतलहलहिदरशतुम्हारा॥
शुचिस्थान प्रभु बास कराई। निज आयत महीप गाराई॥
चिंतत अकथ कर्म हरि केरे। को जानै कस होय सबेरे॥
दो० युगल बंधु राजत जहाँ पुरबासी तहँ आय।
करत प्रशंसा त्रिबिध बिधिकरि प्रणाम शुचिभाय॥
आपस में इमि सब बतराहीं। रुक्मिणि योगकृष्णबरआहीं॥
हमरे पुण्य प्रताप बिधाता। श्याम ब्याह नृप करैंप्रभाता॥
चिरुजीवन जीवहिमतिदायक। जोयहि ठामलाव यदुनायक॥
हरिकह चलौ नगर बलदेखिय। पुरशोभानिजनैनन्रिलोकिय॥
चले कुमार रूप गुण राशी। प्रबिशे पुरबीथिनद्युतिकाशी॥
जेहिमग जात बन्धु दौ राजा। जरत बिपुलनरनारिसमाजा॥

गंधसार अबीज जल मेली। चरचहिं प्रभुहिंनारिसतकेली॥
पुष्पावलि अपार उर डारैं। आपस में इमि मंत्र बिचारैं॥
दो० नील बास बासित सुहरि पीताम्बर धरश्याम।
कुंडलश्रुतिशिरमुकुटलस अंबुजचषगुणग्राम॥
भूपति प्रथम इनहिं बर शोधा। दुष्टरुक्म सुनिबचन बिरोधा॥
खल शिशुपाल सगाईकीनसि। देवशिरोमणिहृदयनचीनसि॥
पुर शोभा देखी कटकाई। जरासन्ध शिशुपाल अथाई॥
निज आसन राजे पुनि आई। उत नृपरुक्म सुबुधि यहपाई॥
आमर्षित पितु पास सिधावा। बैठिसभा इमिबचन सुनावा॥
अन्यायी हरिबल द्वौभाई। केहि सम्मत आये यहिठांई॥
दुठा निमंत्रन काहू दयऊ। अनुचितपिताव्याहसुखगयऊ॥
व्याह काज उत्सव गृह माहीं। भयउ उपद्रव संशय नाहीं॥
दो० महाप्रपंची कुटिल मति उत्पाती द्वौ तात।
निजभल जो भूपतिचहौ बदौभेद विख्यात॥
प्रति उत्तर न राउ कछु दयऊ। तब उठिरुक्म तहांचलिगयऊ॥
जहँ शिशुपाल जुरानिधि सोहै। जिनहिंबिलोकिलोकपतिछोहै॥
बैठिकह्योमहीपसुनिलीजिय। गुणिनिजमनउपायदृढ़कीजिय॥
चक्रपाणि नीलाम्बर दोऊ। आये इहां बोलावन कोऊ॥
सावधान पुर की रखवारी। कर्योभूमिपतिसमयबिचारी॥
मनबिकलितसुनिभोशिशुपाला। बचनबद्योइमिमगधभुवाला॥
कठिन उपद्रक बिदित सुजाना। नहिंपरिणाम रुक्मकल्याना॥
बल सागर प्रपंच जल राशी। बध्योकंस बहुअसुर न त्राशी॥
दो० बाल बाहिक्रम प्रबल अति कृत अपार संसार।
समर अजय पूरण पुरुष है दूसर करतार॥
तू न जान मैं जान प्रभाऊ। इन कर भेद जान नहिंकाऊ॥
स्वर्ग चंद्रधा समर पलाना। गयउ पुराण बार अकुलाना॥
क्रोधित मोहिं निरखि द्वौ भागे। हमहू रुक्म गये सँग लागे॥
आदि अरूढ़ भये द्वौ भाई। धूमध्वजानग दयो जराई॥

ब्याजक उभय अंतरित होई । गये द्वारका जान न कोई ॥
को त्रिलोक इनते बलखानी । कर्तब्यअलख विदित बिज्ञानी ॥
कारणगत आगम ह्यां नाहीं । कौतुकीय रस भंग कराहीं ॥
यहिते रुक्म सो करो उपाई । जेहिकृत हमरी पति रहिजाई ॥
दो० क्यों शोचत मनभूप तुम रण अबूझ वै दोउ ।
नृत्ये बनबन त्रियन सँग बनबासी कह कोउ ॥
रावत कृत प्रभाव अज्ञाता । कहा भयउ नृप कंसहिघाता ॥
क्षणभरि संगर संगम ठानौं । मिथुनजिह्मकर नृपधरिआनौं ॥
इमि धीरज धराय महिपालै । गयो महीप रुक्म प्रभुतालै ॥
चिंततगत रजनी भा प्राता । इतउतब्याहसाज कुरुजाता ॥
रुक्मिणि द्विज हरिपासपठावा । शुभसँदेश यहप्रभुहिसुनावा ॥
दिवस विवाह केर प्रभुआजू । सजे अखिल उत्साह समाजू ॥
जब दिन शेष दंड युग रहई । दिव्यार्चन सुहूर्त तब अहई ॥
पुरप्राची जग मात निकेता । आउब तहां सखीन समेता ॥
दो० मम प्रण लाज तुम्हारकर राख्यो दीनदयाल ।
आन प्रसंग सुरंग शुचि सुनु चितदै नरपाल ॥
त्रियनरुक्मिणिहि उबटिन्हवावा । सुथलचौकमधिपुनिबैठावा ॥
स्वर्ग बधून सुलेत चढ़ायउ । बहुरिउबटिन्हवाय सुखपायउ ॥
भूषण रचि षोड़श शृंगारा । करि बैठाय यकान्त अगारा ॥
पूजन समय सखिन सँग लाई । चली रुक्मिणी प्रेम बढ़ाई ॥
बाजत बिबिध तूर्य्य सहनाई । खग्ग अनेक सुभट चहुँधाई ॥
यहसुधि पाय भूप शिशुपाला । बिपुल सुभटबोले तेहिकाला ॥
हरिभय त्रसित रक्षिबे काजा । पठये सकल बजावत बाजा ॥
निकरायुध योधा करधारे । भयेभूप रुक्मिणि रखवारे ॥
दो० त्रियसमाज उडखल घटा मधिरुक्मिणि बिधिरूप ।
जगतमात लक्षित सगुण कथि न सकत कबिभूप ॥
पहुंचीजब जगजननिनिकेता । तब धोयेकर चरण समेता ॥
करिआचमन द्विजसुबिधि पूजा । हरिपद आशतजे मतदूजा ॥

बिप्रबधुन पुनि दै ज्योनारा। पटभूषण पहिराय अपारा ॥
दै दक्षिणा बन्द पग राई। अभिमतदानि आशिषा पाई ॥
परिक्रमा पुनि करियुत नेहा। हरिपद रति यांच्यो बरएहा ॥
बाह्यालय आई नृप जाया। चहुँदिशिदरशनहरिकरपाया ॥
बिकलितगमनभवनचहकीन्हा। तेहिअवसर हरिदर्शन दीन्हा ॥
रथारूढ़ प्रभु निपट अकेले। खलदल मध्य आशुही पेले ॥

दो० प्रियबादिनिकह रुक्मिणिहि आये लखु जनपाल।
देखिध्वजा रथ मुदितमन भई दशा आबाल ॥

अंग अंग प्रति तेहिमुद बाढ़ा। हरिपद कमल नेहभा गाढ़ा ॥
बिहँसत चली सखिन सँगसोई। छबि बिलोकिछबिउरभ्रमहोई ॥
प्रभुप्रेरयो भवमोहनि माया। सबकरबुधिबलहरयोनिकाया ॥
इत रुक्मिणि निजबदन उघारा। गयचकचौंधिअखिलरखवारा ॥
रहित स्मृतिगत सुधितन सोई। जीवत सब शव चेतककोई ॥
दारज चित्र पुत्रिरक्षक गन। हरिरुक्मिणीगही आनँदमन ॥
यानारूढ़ित जब हरिकरेऊ। रोमांगित रुक्मिणि थरहरेऊ ॥
तजि जगलाज चली हरिसाथा। प्रगट प्रीति बैषानसगाथा ॥

दो० नेम यज्ञ ब्रतफल लह्यो नृपजा हरिपद पाय।
देखत खल नहिंकहतकछु अकथकथा कुरुराय ॥
पुंडरीक हरिसदल ते जिमि अहार लैजाय।
त्यों रुक्मिणि हरि हरिचले दुंदुभिदीन्ह बजाय ॥
सैन सहित रेवतिरमण आइ मिले कुरु भूप।
मंगल भजु यदुनाथ पद कर्तब अकथ अनूप ॥

इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारादिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांरुक्मिणीहरणबर्णनोनाम
चतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

दो० बनसुत सुतकर बरणलिपि कारक लसत अनीक।
तद्विपरीतन होत भव ज्यों पाहन की लीक ॥
मनुज उपाय अनेक कृत पौरुष तुल्य सुजान।

सुख न लहत संसार में बुधि बिपरीत अमान ॥
मुनि जन भाषत रोपि प्रण यह कर्तब्ब मतिधीर।
हरिपद ध्यावै प्रेमयुत नशै अखिल भवभीर ॥
परिहरि राधारमण रति पूजत देव अपार।
सिद्धान्त मत मुक्ति तेहि होत अंत संसार ॥
अकरकरयो जग सर्ब जेहि पूरणपुरुष अनादि।
कृष्णरूपजन्म्यो सुब्रज तेहिभजुतजिभ्रमबादि ॥
मुनिवर कह्यो सुनौ कुरुराई। कछुक दूरि पुरते हरिजाई ॥
संकोचित लखिरुक्मिणिभाषा। कतशोचतलहिफलअभिलाषा॥
कम्बुध्वनि हौं करत सुजानी। निजबलकरैंसुनतअभिमानी॥
तिनहिंजीतिश्रुतिवततोहिंब्याहौं। अखिलशोकद्विजजनकरदाहौं
असबादितेहि निजश्रंकपहिराई। बामभाग रोचित बैठाई ॥
पंचजन्य फूंक्यो जनपालक। जासुशब्दअघखलगणघालक॥
मगधराज शिशुपाल समाजा। सुनतशब्द चौंके कुरुराजा ॥
नगर कोलाहलचहुंदिगछयऊ। नृप दुहिताहरि हरि लैगयऊ ॥
दो० कह्यो रक्षकन चरित यह निज भूपहि समुझाय।
सुनिश्रामर्ष्यो मगधनृप सहशिशुपाल सहाय ॥
कवचबर्म करि बपुष नरेशा। आयुध लिये सक्रोध कुबेशा ॥
कटक समेत रोष मन आनी। प्रभुपश्चातचल्योअभिमानी॥
जिमि यूथप हरि बालहि धावै। नहिं परिणाम कुशलतापावै ॥
निकटजाय कह हरिहि प्रचारी। सुनुत्रियचौरमनुजअविचारी॥
कत पलात तजिरणमहिआजू। क्षत्री ह्वै न गहत उर लाजू ॥
बीर समर्थ समर जित जोई। संगर पृष्ठि न देवत सोई ॥
कठिन बचनसुनि प्रभुकहताही। महा अबूझ मूढ़ तू आही ॥
जानि अमृत पावत कस मूढ़ा। मम कर्त्तब त्रैकाल अगूढ़ा ॥
दो० असकहि प्रभुआज्ञादई फिरे अखिल यदुजात।
क्रोधभरे दोउ ओर ते करै लगे निज घात ॥
छं०तो०लागे चलै बहुबान। फुंकरत ब्याल समान ॥

उरशोच रुक्मिणिनारि । करतारका होनिहारि ॥
प्रभुताहिब्याकुलजानि । यों कह्यो बचनबखानि ॥
क्योंवृथा कीजियशोचु । दुखदानि उरते मोचु ॥
धरभारहरमोहिंजानि । यहबचन जी अनुमानि ॥
क्षणमें हनौं सब बीर । जिमिचक्रिहरत अहीर ॥
इमिताहि प्रभुसमुझाय । रण में रहे रुपिठाइ ॥
सुरसाजि ब्योमबिमान । आये सुरण बलवान ॥
निरखैं महा संहार । जड़ लरतकरि इहकार ॥
यदुजात प्रबल महान । मर्दत करत बिनप्रान ॥

छं० मर्दतखलन यदुजात बहुबिधि पूरिशर अवलीमहा ।
धर मुंडकर पद महिपरत कटि जात नहिं कौतुककहा ॥
बाजत दमामे सूत बोलत सुयश दुहुं दिशि मुदभरे ।
गजपाल गजपति सों भिरे पायक सु पायक सों अरे ॥
कृतसमर रथपति रथपतिन सँग अश्वपतिसँग तुरिपती ।
रणभूमि बीर अपार गर्जत तर्जि कृत संगर अती ॥
कादर पलावत जीव निज लै क्षतन युत घूमत बली ।
धावत कबंध अनेक रणमहि मारु धरु पूरित थली ॥
मेदिनिमड़ी बहु रुंडशिरमय रुधिरसरित सोहावनी ।
गज मृतक किधौं करारसोहत खड्गकबि सफरी भनी ॥
बहुचर्म कच्छप मानराजहि जान मृतक बिराजहीं ।
खग पंथितिन चढ़ि पारधावहिं देखिसुर सुखसाजहीं ॥
बैताल भूत पिशाच योगिनि सरित तट पुरजन बसे ।
जल पान क्षतज ते करतबहुबिधि देखिरण शंकरहँसे ॥
श्रकमुण्ड पहिरतमुदितमन निजसैनयुतकल्याणमय ।
बायस शृगाल अपार श्वानसुमान्स भक्षत मगनवय ॥

दो० निरखि समर बिकराल अति कोपे मूशलपानि ।
क्षणमहँखलमर्दैसकल धरिउर अधिकगलानि ॥

राम शिशिररण तरु खल पाना । देश बिदेश गये चहुँथाना ॥

कछुकक्षतनयुतनृपशिशुपाला । सहमगधीश भगे तेहिकाला ॥
अल्पक दूरिजाय भय ठाढ़े । अतिमनत्रासितशोकउरबाढ़े ॥
कह शिशुपालसुनौमगधीशा । अपयशतिलकचढ़योममशीशा ॥
यहिकारण जीवन धृग मोरा । भयो क्लेशयह कुलिशकठोरा ॥
करिरण मरौं रजायसु देहू । नततप हित काननमग लेहू ॥
धन परिवार राज तन धामा । गत बहोरिपावत परिणामा ॥
पतिगत मिलत न कौनौं काला । जीवनवृथाबदत शिशुपाला ॥

दो० तुम प्रवीण सबभाँति नृप कहा कहौं गुणज्ञान ।
अज्ञानी शोचत विपुल नहिं बिखलतधीमान ॥

लोक अलोक कार करतारा । अवशिमनुजकृतकृत्यअपारा ॥
ईश स्वतंत्र सुवश सुन भाई । पराधीन यह जीव सदाई ॥
नटनागर जिमि पूतरि दारा । स्वबशनचावतबिबिधप्रकारा ॥
तिमि अदृष्ट बश जीव बिचारौ । निजबशगत त्रैकाल निहारौ ॥
दुख सुख पाय बिबुधयाहिकारण । शोकनकृतकरिदोउ निवारण ॥
यथा स्वप्न सम्पति जग राई । तथा समस्त त्रिपुर प्रभुताई ॥
त्रैबिंशति चोहिणिदल साजा । गा मथुराहरिअजयककाजा ॥
हन्यमानभा मुनि महिबारा । यहिहरि मद्यौ कटक हमारा ॥

दो० हाथी धरणी धा समर संग्रह कस्यो बहोरि ।
जयति युद्धमहँ पाय भल द्वौ भागे रणछोरि ॥

तबकदेन पुनि सौख्यन पावा । सहज स्वभाव संगहौं धावा ॥
नगारूढ़ लखिघृत तृण दारा । रोपि जलज प्रेरयो चहुँबारा ॥
भस्मित जानि घूमिहौं आवा । दैव जानको इनहिं बचावा ॥
अद्भुत गति माया धर दोऊ । इनते प्रबल त्रिपुरनहिं कोऊ ॥
काटै वय नहिं काल कटावै । चतुर सुजाननीति असगावै ॥
उचित अहै राखिय नृप प्राणा । जग परिणामहोइ कल्याणा ॥
पालक देत मनोरथ सबहीं । तीनिकालमहँ कबहिंनकबहीं ॥
ज्योंहौं अजय जयति द्वौ पाई । परिहरि हठ गृह चलियनृराई ॥

दो० सुनि शिक्षा धीरजधस्यो चल्यो भवनयुत शोक ।

यदुबंशी प्रफुलितसबै शशि बिलोकि जिमिकोक॥
उत शिशुपाल जननि भुवराई। पुत्रागम बिचारि सुख छाई॥
लागी करन मंगलाचारा। असगुन ताहि भये बिकरारा॥
यहि अन्तर यह सुधिदे काहू। दुलहिनि लैगय यदुकुलनाहू॥
समर सैन युत सब बिधि ठयऊ। पुनिपलाय गृह मारगलयऊ॥
चित्र लिखित अवाक सुधिपाई। अब प्रसंग सुनौ कुरुराई॥
रुक्म अजय सुनि द्वौ नृप केरी। कहो सभा इमि नैन तरेरी॥
मम सन्मुखकिमि हरिबचिजाई। अवशि ताहि मर्दौं खताई॥
लै रुक्मिणी बरौं शिशुपालै। पूरब प्रण पूरण प्रतिपालै॥
दो० जो न करौं यह कर्म तौ बसौं न पुनि यहिधाम।
एक चोहिणी सैनसँग चल्यो बिजय रणकाम॥
बेगि धाइ प्रभु दलखल रोका। प्रबल धनुर्द्धर कृष्णबिलोका॥
कहोरुक्म निज अनिहिप्रचारी। बधौ सकल तस्कर करधारी॥
जीवत चौर बांधिहौं लाऊं। तुव देखत यमपुर पहुँचाऊं॥
खलमुख सुनियदुजाकटुबानी। फिरे समस्त समर बिज्ञानी॥
पूरब पावस बरषेउ बाना। बहे असुरतृण चहुंदिगनाना॥
रथबढ़ाय प्रभुतट खल आवा। व्यंगबाक्य इमिप्रभुहिसुनावा॥
ओकपटी दुबंश जग जाना। का जानै महीप सन्माना॥
रम्भापाल बाल वय रहेऊ। करिचोरी घृत माखन लहेऊ॥
दो० सो बुधिउरधरि मूढ़मति हरी बाल ह्याँ आय।
गोपन हमतुम कालकर यों बादिपुनि कुरुराय॥
इष्वासन चढ़ाय गुणवाना। प्रभुचिन्हित त्यागे अज्ञाना॥
ते शर खंडे मध्य कृपाला। सरुढ़ रुक्म अलिहनउत्ताला॥
खग दिशिचारि पूरि नृप रहेऊ। तब हरितोमर शरधर गहेऊ॥
अमित शिलीमुखरणमहँत्यागे। जड़सैनप त्रैदिशि नृपभागे॥
आन असुग मारे कम्बोजा। रथसारथी कस्यो बिन खोजा॥
बहुशिरासन भंज्यो तासू। पुनि बहुअस्त्रहरे प्रभु आसू॥
असिकर गहि तब धावतभयऊ। गदा घात रथ ऊपर ठयऊ॥

आशुश्यामतेहिबंधनकीन्हा । रुक्मिणिसबिनयइमिकहिदीन्हा ॥
दो॰ तुव सेवक मम बंधुयह जानि मार्‌यो असुरारि ।
परमात्मा प्रभुअजय तुम किमिखलसकतविचारि ॥
तुमअनादि योगेश्वर ज्ञानी । वाणीपति भोगी धरध्यानी ॥
सेवक सुखद स्वबशतन धारा । तुवकृत तीनौं काल अपारा ॥
मूरुख बन्धु कि जानै योगा । प्रभु आधीन बुद्धि उद्योगा ॥
सुबुधिसन्त मूरख अपराधा । क्षमत सदाप्रभुबुद्धिअगाधा ॥
मरदेयाहिअलोकबिलोकिय। किमिकीजियममभ्रातसशोकिय ॥
अजय निरंजनप्रभुकर्त्तारा । सम्बन्धी बध हृदय बिचारा ॥
यह अयोगकृत करिय न स्वामी । क्षमा राशितुव चरणनमामी ॥
जनक मोर सुत बध दुख पैहै । प्रभुकेहि काज प्रीति तुव ऐहै ॥
दो॰ परसि चरणरज पतित जग पावतमुद सबभाँति ।
भीष्मकहावैशोकमय यह अनुचित न सोहाति ॥
भल हित सम्बन्धी संग कीन्हा । बाँधिखड्गबधहितकरलीन्हा ॥
अस कहिपुनि तनकंपज नावा । बंधु बंध लखि चखजलछावा ॥
द्वौकर जोरि चरण गहि मांगा । बधियनप्रभुकरिममअनुरागा॥
आरत गिरा सुनत आरत हर । कोपशांत कीन्हो तेहिअवसर ॥
सैन देइ प्रभु सूत बुझावा । चौर कर्म तेहि तेहि करवावा ॥
दाढ़ी मूछ मुंडि नृप ताकी । कसिरथरुक्मचल्यो सोहांकी॥
रेवति रमण मारि खल सैना । चले श्याम पहँ भूप सुखैना ॥
मर्दिभद्धि सरसुत हरि जैसे । मिलै युत्थ निज हरिगयतैसे ॥
दो॰ निकट जाय बंधन रुकुम देख्यो मूशल पानि ।
कह्यो कुचालि न जाततव राखत नाहिं गलानि ॥
खंड्यो तात स्वकर व्यवहारा । बाँध्यो रुक्मनकर्‌यो बिचारा ॥
उज्वल यदुकुल तीनौं काला । अनुचितकसकीन्होगोपाला ॥
जेहि बिरिया रणहित तुवपासा । आवायहअहमितबुधिनासा ॥
कसनबुझाय तबहिं गृह फेर्‌यो । तद्दय तात मोहिं नहिंटेर्‌यो ॥
अस बदि बंधन ताकर मोचा । करिसत्कार सुमनकहँ रोचा ॥

पुनिरुक्मिणिप्रतिकहसुनुत्राला। लेखकबरणअमिटतिहुँकाला॥
बन्धन सोदरलखि न गलानिय। कर्माधीन त्रिपुरअनुमानिय॥
संचित परारब्ध क्रिय कारा। त्रिविध अदृष्ट भोग संसारा॥
दो० पुनि क्षत्रियकर धर्म रण लहै जयाजय दोउ।
दुखरूपी यहि जगतमें सुख देखिय दुखसोउ॥
माया बिबश जीव निज भूला। भव रथ्याबिचरत मनफूला॥
सम्पति बिपति दुखादुख जानत। योग बियोगजयाजयमानत॥
अनुजबिरूपबिलोकिनशोचिय। अनुभवबूझिअखिलदुखमोचिय
नित्य अमर अज आतम देही। कौनोबिधिन नाशजगतेही॥
तनपतिगत न जीवपति जाई। दृष्टादृष्ट दुविधिभव गाइ॥
नीलाम्बर बाणी सुख सानी। सुनिरुक्मिणिनृपतजीगलानी॥
कहत सब्रीडसैन मधि श्यामहिं। हाँकिय कन्त बेगिरथधामहिं॥
प्राण प्रियाकी सुनि प्रभुबाता। चले द्वारकहि जनसुखदाता॥
दो० इतै रुक्मनिजसैन मधि जाय मिल्यो महिपाल।
कहत भयो क्लेशित बचन महाबिकल बेहाल॥
प्रण अमोघगा अपयश भारी। निजपतिगतअबयहैबिचारी॥
परिहरि गेहाश्रम धनधामा। बैखानस ह्वैहौं परिणामा॥
तबकोउ सचिवकहत असभयऊ। यह अबूझप्रण कसनृपठयऊ॥
बिभुयश्वी तुम प्रभू प्रतापी। महाबीर रण रिपु गणतापी॥
समय निषिद्ध न शोचिय राई। भाग्य बिबश बचिगे द्वौभाई॥
द्विजपथमे आमी बिषबचई। तब सन्मुख रिपुरणनहिंरचई॥
बिजय अजय द्वौ समर प्रधाना। बयबल नहिं चिन्ततसज्ञाना॥
अति ब्रीड़ापति प्रण गतभयऊ। तुब उपदेश शीशधरिलयऊ।
दो० पितु पुर जाउँ न जन्म भरि यहै बिचारी बात।
ग्राम बसायो भोजकट तहाँ रह्यो नृप तात॥
प्रभुसराम द्वारावति आये। समाचार भूपति तब पाये॥
सिक्तामय अम्बर चहुँ द्वारा। पुरबासी धाये अबिचारा॥
पुर शोभा बिरचैं शुचि चारा। जाबिलोकिबुधिपतिमतिहारा॥

युवती पुरुष चहूँ दिग आये। अत्यानंद उमग तनछाये॥
उग्रसेन लै निकर समाजा। आगे आय मिले कुरुराजा॥
बैदिक लौकिक बिधि व्योहारा। करिमहीप लै चल्यो अगारा॥
जेहि अनमिष पुर कस्यो प्रबेशा। सगुण अखिल पायेबहुबेशा॥
नरनारी चहुँ ओर बिराजे। लौकिक सब मंगलतनसाजे॥
दो० कोउ आरती उतारहीं कुसुमावलि पहिराय।
होत कुलाहल चारिदिशि उपमा कही न जाय॥
कृत परितोष सबनकर श्यामा। निज निकेत पहुँचे युतरामा॥
आनँद मगन सकल रनिवासा। निरखिरुक्मिणीकांतिप्रकासा॥
यहिप्रकार कछु काल व्यतीते। यक दिन सभागये जनप्रीते॥
नृप पितु बन्दि बद्यो भगवाना। सुनौतात श्रुतिबाक्यप्रमाना॥
समर जीति त्रिय लावत जोई। राक्षस व्याह कहावत सोई॥
तब कुल गुरु नृप तुरत बोलावा। हरिबिवाहहित दिवससुधावा॥
सचिव सुसेवक पुरजन जेते। सामग्री बिवाह कृत तेते॥
लिखि पत्रिका निमंत्र पठावा। कुरुपांडव आदिक न बुलावा॥
दो० सुद्धि पाय भवभूपतहँ आये सहित समाज।
कवि कोबिद चारण लिये बान्धवादि सुनुराज॥
भीष्मक नृप बिवाह सुधिपाई। यौतुक बिबिध दयो पहुंचाई॥
आयुध भूषण पाटित बासा। स्यंदन करभ तुरग बहु दासा॥
कन्यादान भवन मन कीन्हा। द्विज द्वारा पठाय नृप दीन्हा॥
इतबहु अवनिप निवते आये। द्वारावती चारि दिशि छाये॥
उतयौतुक लै महिसुर आवा। महा मोद यदुजातन पावा॥
पुरशोभा जस रची नृपाला। कहिनहिंसकतकोटिपातिव्याला॥
आदि शक्ति त्रैपुर कर तारिनि। जेहि पुरभई महीप बिहारिनि॥
अरु जहँ ईश ब्रह्म करतारा। पुरुष पुराण धाम सुख सारा॥
दो० तेहिपुर की शोभा बदत शारद बुद्धि भ्रमाय।
किमिप्राकृतिकोउ कहैतेहिअरु बिवाहदिनराय॥
अष्टसिद्धि नवनिद्धिनृप बिरचि मनुज तनआय।

सकल सौख्यसब कहँदये क्योंबय बरणी जाय ॥
दिवस बिवाह आव जब राजा। सजे सबन बहु मंगल साजा ॥
जग श्रुति रीति प्रथम करवाई। धर्म प्रबंधरहै जेहि छाई ॥
प्रभुरुक्मिणिहि सँवारि सरीती। मंडफ तल बैठार सप्रीती ॥
सुमनस त्रिदश जातिनर देही। कौतुक हित आये वय तेही ॥
लखिहरि रुक्मिणिरूप अनूपा। नमत अजादि देव कुरुभूपा ॥
यदुबंशी नृप नाना जाती। यथा उचित बैठे बहु पाँती ॥
गर्गाचार्य आदि मुनि आये। श्रुतिवतअखिलकर्म करवाये ॥
बेद ऋचा बहु बिप्र उचारैं। शुद्धशब्दसुनि बिधिहियहारैं ॥
दो० भांवरि फेरैं बेद बिधि बजैं तूर्य डफ ढोल।
देववधू नृत्तहिंगगन डोलहिं बिबुध खगोल ॥
छं० डोलहिं बिबुध शुचि कुसुम बर्षहिं दुंदुभी बहुबाजहीं।
सिद्ध साधक यक्ष चारण गंधर्वादिक भ्राजहीं ॥
देवांगना कल गान मंगल सुनत मुनि ध्यानै तजैं।
इत चंद्रबदनी मकरनैनी अकर गुण गानै सजैं ॥
वामांग हरिके डारि भामरि रुक्मिणिहि बैठाइयो।
कुलदेव पित्रादिकन के पद बंदना करवाइयो ॥
लखिरुक्मिणीतनरुक्मउज्ज्वलकोटिरतिछबिलाजही।
श्रीकृष्णछबिअतसीकुसुमवत्कथअकथसककोकही॥
कुल वृद्ध ब्राह्मण देव मुनि जोरी अनूप निहारि कै।
बहु देहिं आशिर्बाद सुखमय शुद्धचित्त बिचारि कै ॥
बसुदेव तोषे याचकन जनु मीन बरही भेकही।
गज बाजि रथ पट द्रव्य जल बर्षाय प्राविट टेकही ॥
दो० बहुरि सबहि ज्योनार दै षट्रस चारि प्रकार।
ज्ञाति बन्धु तोषे सकल करि आदर सत्कार ॥
सो० देश देशके भूप बिदा होय निज गृहगये।
यह नृप चरित अनूप पढ़ै सुनै जो चित्तदै ॥
दो० अश्वमेध मख जौनफल और त्रिवेणी न्हान।

सोफल ताको देय हरि भक्ति मुक्ति कल्यान ॥
मंगल हरियश ब्यालसम नाशत कलिमखभेक ।
क्यों नहिं गावत डुचित तजि करिनिजचित्तबिवेक ॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकार दिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां मंगलदासबिरचितायांरुक्मिणीबिवाहचरित्रवर्णनो नामपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

दो० योगीजन शुचि ध्यानयुत ध्यावत प्रेम बढ़ाय ।
करिकरणी हठयोगकी लहत पर्म पदभाय ॥
सुमिरण पूजन बंदना प्रीति श्रवण दासत्त्व ।
पदस्परश कीरतनहू आतम निवेदन तत्त्व ॥
जेहि ध्यावत नव भजनकरि चहुज्ञाता सुखरूप ।
सोइ निरंजन दासप्रिय भयोमनुज यदु भूप ॥
ताहि भजिय तजि दुर्मतिहि यहैज्ञान को मूल ।
मुक्तिलहै संशयनहीं बदत साधु अनुकूल ॥
मंगल के मत तीनिपुर अपरबस्तु कोउनाहिं ।
परिहरि हरियश मुक्तिदा बुधिशोचियमनमाहिं ॥

सुनु कौरवमणि रुचिर प्रसंगा । एकसमय निजगिरिधरगंगा ॥
कंजासन आरूढ़ीशाना । तजिदुभेदकृत आतम ध्याना ॥
आकस्मात बारिचरकेतू । गयउ समाधि जगावन हेतू ॥
हन्यो कुसुम शर सबलित मारा । मनक्षोभ्यो तब रुद्र भुवारा ॥
कामकेलि मन आवत भयऊ । पुनिचहुंदिशिबिलोकिअसठयऊ ॥
अंतरयामी प्रभु त्रिपुरारी । दाह्योकाम क्रोध करिभारी ॥
पावक बिजयचहै जिमिदारा । तथा मारखल कर्यो बिचारा ॥
कंतनाश लखि रति अकुलानी । बिकलपरीमहिउरहनिपानी ॥

दो० अहि मणिबिनु निशि चंदबिनु ज्यों पाठीनकहीन ।
तथानारि पति बिनु जगत रतिइमि बदत मलीन ॥

दयाराशि हर सहज सनेही । बिकल बिचारि दीन्ह बरतेही ॥
द्वापर बिष्णु कृष्ण तन धरिहैं । बहुप्रकार कौतुक भवकरिहैं ॥

तिनकेगृह जन्मिहि पति तोरा। सत्य जानु ममवाक्य प्रघोरा॥
नाम प्रद्युम्न होइहै तासू। संबर हरि लै जैहै आसू॥
डारिहि जाय राशिकी लाला। मकर भक्षिहै तेहितहँ बाला॥
पुनि संबर गृह आइहि सोई। ज्ञात भविष्य नारिहौं जोई॥
मम आयसु बसुतू तेहि गेहा। मिलिहि तोरपति कर्तब एहा॥
प्रतिपाल्यो तेहि सहित सनेहा। बधिसंबर तोहि लैनिजगेहा॥

दो० द्वारावति महँ आयपुनि क्रीड़ा करिहि अपार।
तोषीरति यह बचन कहि तुरत सो चली भुवार॥

बिरंचि युवति तन संबरधामा। आयबसी सुंदरी ललामा॥
नृप उत रति नित मारगेहेरैं। मिलैकंत प्रियदुःख निवेरैं॥
इतरुक्मिणि तन गर्भ सोहावा। पूरणकाल जन्म सुतपावा॥
तब महीप ज्योतिषी बोलाई। पुत्रजन्म बेला समुझाई॥
बिप्र बिचरि कहैं सुनुराई। भयउसूनु गुणनिधि सुखदाई॥
बल बिक्रम श्रीमान सुजाना। एकबात बिपरीत महाना॥
बारिनिवासिहि सुत आबाला। शत्रुमारि आइहि सहबाला॥
नाम प्रद्युम्नकाम अवतारा। यहनृपज्योतिषशास्त्रबिचारा॥

दो० असबदि द्विजबर गृहगये लै दक्षिणा अपार।
भूप सदन ततक्षण भये अमित मंगलाचार॥

ऋषि नारद संतत शुचि भाऊ। संबर भवन गये सुनु राऊ॥
का सोवत सुख नींद अचेता। तवअरिजग जन्म्योझषकेता॥
प्रद्युम्न नाम कृष्णके धामा। करुउपाय नत दुखपरिणामा॥
अस उपदेशि देवऋषि गयऊ। ताकेहृदय शोच अतिछयऊ॥
अलख रूप द्वारावति आयउ। श्यामधामनिर्बुद्धिसिधायउ॥
रुक्मिणि सुत पय पान करावै। मन आनंद सुबुद्धि बढ़ावै॥
करिमाया आसुरी कराला। शिशुहरिसंबरचल्यो नृपाला॥
नारि वृंद कोउ जान न भेदा। भयउसबहि बालकबिनुखेदा॥

दो० प्रभुजाना जड़ कर्म नृप पैन कह्यो कछु बैन।
बिधि कर्तब पुनि काल खल जान्यो पंकजनैन॥

रुक्मिणि इत्यादिक त्रिया रोय उठीं तेहिबार ।
रुदन शब्द सुनि नारिनर बहुगे नृप आगार ॥
करत बिचार बिपुल यदुजाता । लहत न भेद सूनु हरताता ॥
मुनि नारद आये तेहि काला । समुझायेसब जानि बिहाला ॥
पुत्रशोच जनि तुम कोउ करहू । सुनिममबाक्यशोकपरिहरहू ॥
मैं बिधि बरण बिचारेहीमें । तासु काल नहिं तीनिपुरीमें ॥
सानँद रहिहि देश पर देशा । कहत न पैजानत हृषिकेशा ॥
प्रौढ़भये निज प्रिय सँगलाई । प्रद्युम्नसबहिमिलिहिपुनिआई ॥
हौं जानत हैं जेहि थल सोई । पैन कहत बिधि कर्तब जोई ॥
यहि प्रकार नर नारि बुझाई । खपुर गये नारद ऋषिराई ॥
दो० उत संबर लै अतन कहँ पय निधि बोरयो जाय ।
मत्स्य प्रथुल भछयो तुरत बिधिकर्तब अतिताय ॥
केवट सोइ मत्स्य गहिराई । दयो भेंट सम्बर कहँजाई ॥
पाकालय सुरारि पठवावा । पाककार झषउदर चिरावा ॥
ताते एक श्यान प्रथुगेमा । निकरी नृपउज्वलप्रतिसोमा ॥
तासु जठरते एक कुमारा । प्रगट्यो जासुबदन पतितारा ॥
श्यामबरणजनुद्वितियगोपाला । बनजचक्षुउर बाहुबिशाला ॥
बिस्मित भयउ देखि भष फारा । दीन्होरतिहिसोझटितकुमारा ॥
यह सुधिपायअसुर चलिआवा । सुत बिलोकिबड़आनँदपावा ॥
सानँदरतिहिकहयोप्रतिपालौ । अहरजनीशिशु रखलखिचालौ ॥
दो० लैबालक आलय गई रति अतिमोद बढ़ाय ।
कौतुक दृष्टा मुनि कह्यो रतिहि भेदु सबु आय ॥
मानि प्रतीति करै प्रति पाला । प्रफुलित नारितीनिहूं काला ॥
कलाबृद्धिजिमि सित मृगअंका । बृद्धति सूनुतथा निरशंका ॥
रूप प्रकाश प्रभामुख देखी । हृदय लगावत प्रीतिबिशेखी ॥
अक्षानन कहुँ चूम कपोला । कंधर लावत कहि मृदुबोला ॥
धन्य बिश्वकर्म्मा सुखदाई । मीनउदर पति दीन्ह मिलाई ॥
बिशद क्षीरनित लाय पियावै । कहै कंतबहु बिधि दुलरावै ॥

जबभा पुत्र बयसशर वर्षा। अलंकार पहिराव सहर्षा॥
मनहिं प्रबोधत लखिशुचि रूपा। लहत अलौकिकसुदकुरुभूपा॥
दो० कहत सुनौ पति चित्त दै पूरुब कथा सहेतु।
जारि तुमहिं अतिक्रोधकरि मोहिं बरदिय वृषकेतु॥
रति निवसौ सम्बर गृह जाई। मिलिहितोरपतितेहिथलआई॥
चितवत पंथ रहिउँ तमि आही। तुमहिं पाय दीन्हो दुखदाही॥
धनुर्वेद पुनि ताहि पढ़ावा। थोरेइ काल निपुणता पावा॥
यक दिन रतिकहसुनौगोसांई। रहत धाम यहि अबनसोहाई॥
तव पितु त्रिपुरनाथजग जाना। चलौ बसिय द्वारावति थाना॥
जननी रुक्मिणि दुखितमहाना। प्रभुतुव बिननतासुकल्याना॥
दुखित पयशिवनिबिनु सुतजैसे। अंबा रहत द्योस निशितैसे॥
बधिजड़संबरमोहिंसँगलीजिय।दरशनजननिजनककेकीजिय॥
दो० यहिबिधि नित प्रतिनारिसो उपदेशत नरनाह।
सुनत चित्तदै कृष्णजा कृत बिचार मनमाह॥
प्रौढ़ भये यकदिन रतिनायक। हितअनहितसबकेसुखदायक॥
संबर सभा गये मुद पाई। लीनअबनिपतिहृदयलगाई॥
सुतसम जानि उछंग बिठावा। यह प्रसंग माधसभाचलावा॥
पुत्र तुल्य पोष्यो सुत एहा। प्रतिपालिहिपरिणामस्वदेहा॥
सुनि सरोष कह यदुपति बानी। हौं तुव शत्रु करौं तनहानी॥
करि रण दुष्ट देखु बल मोरा। सुवन न जानु कालहौं तोरा॥
रज अनुराग बध्यो मुसुकाना। द्वितिय प्रद्युम्न भयउ सज्ञाना॥
पय पियाय का पाल्यो नागा। हमसों समरकरनसुत लागा॥
दो० अस्त्र हाथलै उठ्यो शिशु कहा सुनौ महिपाल।
करौ युद्ध मम संगतुम जानि आपनो काल॥
हँसि कामारि कहा सुनु सूना। ग्रस्यो कालतोकहँ यहिजूना॥
प्रद्युम्न नाम मोरही नीचा। बोरयोउदधि हनौं क्षणबीचा॥
शमनरूप लखु तू मोहिं आजू। तजु पितु तनय नातबेकाजू॥
क्रोध्यो सुनत कामरिपु राई। आयुधअमित लिये तेहिधाई॥

सहज बैर जाग्यो उर तासू। काली यथा देखि अहिनासू ॥
सजि सहाय बहुखग्ग बोलाये। बिस्तृतठाम तहां चलिआये ॥
लैकर गदा सरोष सिधावा। शब्द बलाहककृत रणआवा ॥
श्यामहिं कहत तोहिं को राखै। अपर कुबचन कालबश भाखै ॥
दो० गदाघात कीन्हीं असुर सो भंज्यो यदुराय।
जलज बाणप्रेरयोबहुरि सकलजगतदुखदाय ॥
बरुण बिशिखहति ताहिनशावा। सदाचार तोमरहि चलावा ॥
भंज्यो तेहि गजारि नाराचा। युद्ध सुरासुर मंड्यो सांचा ॥
सम्यक् अस्त्र शस्त्र खल घाते। मघवा हितुते अखिलनिपाते ॥
भयउ निरस्त्र भिर्‌यो बरियाई। मल्ल समर गति बरणिनजाई ॥
वृन्दारक समेत रिपु पाका। कौतुक हित छाये सब नाका ॥
गहिसंबरहि उड़्यो शिव द्रोही। गयउ अनंततज्योनहिंओही ॥
असिबर घाति तासु शिरकाटा। पर्‌यो भूमितल रुण्डलिलाटा ॥
पुनरपि आय असुरदल नासा। कंतबिजयलखिरतिहिहुलासा ॥
दो० मघवायस सुरधाम ते आयो रुचिर विमान।
तदारूढ़ रति काम द्वौ पितु पुर कर्‌यो पयान ॥
बिद्युल्लता सहित जीमूता। सोहत तस तिय संग हरिपूता ॥
चणमहँकनकनगरचलिआये। यानत्यागि पितुसदनसिधाये ॥
अकस्मात सब नारि निहारी। कहहिं श्याम लाये कोउनारी ॥
प्रद्युम्न कहँ न काहु पहिचाना। बादि बदैं आवत भगवाना ॥
आय प्रद्युम्न कहा कहँ माता। सुखसागर कहँ यदुपति ताता ॥
रुक्मिणि सखिसों कहतप्रचारी। अलिकोआहिश्यामअनुहारी॥
मोरीजान तोर सुत आली। सुनतबचनसाविमणिप्रतिपाली॥
छुटीउरजते अमृत धारा। शकुन अंग फरक्योबहुबारा ॥
दो० सुत भेटन हित चित चहै डरै पतिव्रत धर्म।
तौने काल सुरर्षि तहँ कहा आय सब मर्म ॥
तबरुक्मिणिनिजहृदयलगावा। चूमिशीश अतिशयसुखपावा॥
पाय सुद्धि आये बनवारी। पर्‌यो सूनु पितुपद सुतबारी ॥

बेद बिहित करि कर्म बिवाहा। रति प्रद्युम्नकरकियउद्बाहा॥
पुर नर नारि मुदित सबभयऊ। गृह प्रतिसुतमंगलनृपछयऊ॥
जेहिबिधिनृप प्रद्युम्न अवतारा। अरु जिमिरिपुसंबरकहँमारा॥
प्रियसमेत जिमि पितुपुर आये। सो चरित्र परिपूरण गाये॥
प्रभुअजअमरत्रिपुरयश छायो। लोक लोक मर्याद बँधायो॥
मूरख तेहि ध्यावत जग नाहीं। भ्रमत फिरत बहुबीथिनमाहीं॥
दो॰ मंगल साँचे मग चलिय तजिबीथी भयकार।
भजिय सदा रुक्मिणिरमण भक्ति मुक्तिदातार॥
इतिश्रीमद्विविधाकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांप्रद्युम्नस्यउत्पत्तिसंबरबधवर्णनो
नामषटपंचाशत्तमोऽध्यायः ५६॥
दो॰ काम क्रोधत्याग्यो नहीं भूति लपेटे अंग।
सिद्धि लह्यो नहिं कोटिकृत बरणे बिबिध प्रसंग॥
काया बन खोज्यो नहीं तरुबन फिरे अपार।
परमातम मृगहै नहीं यों बुध करत बिचार॥
इन्द्रीजित श्रद्धा सहित करि मन निज आधीन।
शोधत आतम आपनो साधू चतुर प्रवीन॥
करणी कठिन न बनिपरत कलि कुयोग चहुँओर।
कपटत्यागि हरियशगुणे सबविधि भल मन तोर॥
कीरति विमल यशोदजग गिरिधरकी दिशिचारि।
ताहि गाय दुर्भाव तजि दुहुँ पुर लेह सम्हारि॥
मुनि कह सत्राजित यक रहई। सो मणिचोर श्यामकहँकहई॥
पुनिप्रभुविभवसमुझिमनमाहीं। हरिहिदीन्हनिजसुताविवाही॥
को सत्राजित मणि कहँ पाई। तस्करता क्यों प्रभुहि लगाई॥
पुनिकाजानि सुता निजदीनी। कहौ मुनीश्वर कथा नवीनी॥
यक यादव सत्राजित नामा। बसत महीप द्वारिका धामा॥
तपस मित्र कृचित ब्रत साधा। जानि ईश तन मन आराधा॥
तप कराल लखि हरण निहारा। दैमणि पुनि इमिवचनउचारा॥

सुत सीमन्तक यहिमणि नामा। सुख सम्पति यामहँ विश्रामा॥
दो॰ मम सम तेज प्रताप चित जानि ध्याइये याहि।
अभिमतफल सुत पाइहौ यामहँ संशय नाहि॥
यह मणि रहहि जौनआगारा। तहाँन दुखगण करिहिप्रचारा॥
करि प्रहून मणि लै गृह आवा। नितप्रतितेहिपूजनचितलावा॥
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावै। हंस समान जानि मुद पावै॥
प्रतिदिन रुक्म लहै बसु भारा। रहै प्रसन्नित बिविध प्रकारा॥
अर्चनकाल एक दिन भूपा। मणिभासुखदविलोकिअनूपा॥
शोच्योयहमणिप्रभुहिदिखावों। मान अखिलयदुकुलमहँपावों॥
कंठ बाँधि मणि सभा सिधावा। यदुबंशिन लखिअचरजपावा॥
श्यामहिंकहहिंसुनिययदुनायक। जीव चराचरके सुखदायक॥
दो॰ तुव दर्शनकी लालसा आवत पूषण देव।
सत्य बात यह श्याम जी अति प्रकाशहै एव॥
तुम अनादिअजबिनु पितुमाता। ध्यावत तुमहिं देवसुरधाता॥
कमलादासी तुव गति वाना। अलखचरित पूरणभगवाना॥
गुण अनंत बिधि हरिहर कारी। गुप्त रूप प्रगटे असुरारी॥
हरिकह यह न प्रभाकर होई। सत्राजीत भ्रम्यो जनिकोई॥
तपफल मणियहिदीन दिवाकर। सो प्रकाशकर कहाकृपाकर॥
सभा मध्य आवा मद छावा। सबकेउर मणि मोह जनावा॥
निमिष रहित अनमिष तेहि हेरैं। कौनौ ओर न मुख कोउफेरैं॥
प्रभुकुछमणि दिशिदेखनृपाला। विस्मितभयोनिरखिमणिपाला॥
दो॰ बिदा मांगि नरनाहते गयउ गेह निज सोय।
नितप्रति आवै बांधि मणि सभहिन अंतरहोय॥
प्रभु प्रति यदुजातन इमि कहेऊ। एक मनोरथ उर महँ छयऊ॥
मणिलैनाथभूपकहँ दीजिय। बिशदसुलोकजगतमहँलीजिय॥
सत्राजीत योग मणि नाहीं। नाथ विचारि देखु मनमाहीं॥
हँसि हरि ताहि कहा यहिभांती। यहमणितातनतुमहिंसोहाती॥
देहु महीपहि जग यश लेहू। गवनो गेह बचन सुनि एहू॥

निज सोदर प्रति कहसिबुझाई । मणि मांग्यो यादवकुलराई ॥
दयो न तात अनीति बिचारी । सुनि प्रसेनजितभयउदुखारी ॥
सायुध मणि निज कंठ लगाई । चल्यो अहेर अश्वचढ़िराई ॥
दो० घोर बिपिन महँ जाइकरि मृगया कस्यो अपार ।
मृग भाग्यो यक भूप लखि कस्यो प्रसेन पछार ॥
गयो गहन बन बनचर राई । अनुगामी प्रसेन जितजाई ॥
अति बिकराल गुफाअंधियारी । प्रबिश्योतेहिमृगजीवदुखारी ॥
क्रोधित प्रबिश्यो ताहि प्रसेना । निपट निहारन सूझतनैना ॥
पंचानन लखि मणि उजियारा । धायसतुरँग प्रसेनहिं मारा ॥
लै मणि बस्यो कंदरा ताही । अतिप्रकाशभातेहिथलमाही ॥
जामवन्त संयुत परिवारा । रहत गुफातेहि सुनौ भुवारा ॥
लखिप्रकाशहरितटचलिआवा ।तेंहिबधिमणिगहिभवनसिधावा ॥
दुहिता पालन बांध्यो जाई । भयो प्रकाश गुफा सबठाई ॥
दो० मणिइमि लैगयो भालुपति बधिप्रसेन छितिपाल ।
संलग्नी भट तासुके आये भवन बिहाल ॥
सत्राजीतहि बद्यो बुझाई । तुव बांधव बन गयउ हिराई ॥
कानन सम्यक् खोजत थाके । कौनौ चिह्न न पाये ताके ॥
बन्धुतासुसुनिसुमतिभुलानी । दुखितभयउजिमिझषबिनुपानी ॥
निंदनीय मन कस्यो बिचारा । बन्धु प्रसेन कृष्ण बन मारा ॥
याँच्यों तब न दयो हौं वाही । घाति सहोदर मणिहरिग्राही ॥
कोद्वितीय समरथ भव आना । जो प्रसेनकर करत निदाना ॥
अब निश्चित पाप मणिभयऊ । जगत प्रसंश निंदकृतठयऊ ॥
गौरी अखिल शोचबश बीती । दुःख अधिकृतगुणतअनीती ॥
दो० अरुणोदय उहि नारि प्रति भरयो भेद समुझाय ।
बध्यो प्रसेनहि कृष्ण बन मणि हित रोष बढ़ाय ॥
यह चर्चा सत्राजित नारी । कह्यो परोसिनि सखी हँकारी ॥
अरुकह कह्यो नकाहुइ आली । ममपति वद्यो भेद यहकाली ॥
उठि सखिवृन्द स्वभाव सिधाई । चर्चा यहै करत गृह आई ॥

कोउत्रियप्रभुरनिवास सुजाना। यहै प्रसंग अयोग्य बखाना ॥
सब युवतिन मनभा बिश्वासा। बध्योप्रसेनश्याममणिआसा ॥
कहहिंसर्वहरिभलनहिंकीन्हा॥मणिहितहन्योस्वकुलनहिंचीन्हा ॥
यहसुधि पाय कोऊअनुगामी। बन्दिप्रभुहिकहसुनुजगस्वामी ॥
बधप्रसेन मणि ग्रहण कलंका। लाग आपु कहँ पुर आतंका ॥
दो० कछु उपाय करि नाशिये सुनि चिन्ते भगवान।
जाय सभानृप ताताहितु सब सन कियो बखान ॥
सबकोउकहतश्याममणिग्राही। निधन प्रसेन कियोभ्रमनाही ॥
खोजिय ताहि जो होय रजाई। अकृत कलंक कृपालनशाई ॥
बंदि पतिहि बहुभट संगलाई। सत्राजीत द्वार नृप आई ॥
लीन्हे संग प्रसेन के संगी। दिशि उद्यान चले तिरभंगी ॥
सघन बिपिनगिरिवर तटजाई। चिह्न तुरँग पदलखे निराई ॥
गुफा द्वारतन मृतक बिलोका। युत पारासिक प्रसेन बिशोका ॥
पुंडरीक मर्ध्यो हरि जाना। अग्यागमन कर्यो भगवाना ॥
कौतुकनिधि प्रभु अंतरयामी। नरलीला कृत द्विजबरगामी ॥
दो० अहि रिपु मृतक बिलोकि मन चिंते यदुकुल चंद।
खोज न मणिकर मिलत बिधि होत न मनआनंद ॥
कोअस प्रवल जीवभा कानन। याहिथल हतो आइ पंचानन ॥
अचरज बिबशभये यदुजाता। हरिप्रति वद्यो सपुटकर ताता ॥
महाभयानक कंदर एहा। त्यागि लोभमणिबहुरियगेहा ॥
बन्दनीय शिवअज तुम एका। बढ़े कलंक सोचइ अबिवेका ॥
पुंडरीक शिर अपयश भयऊ। जानईश मणि कोलै गयऊ ॥
अग्र चलौं यह गुफा ढँढोरैं। घातक सिंह गहैं मणिचोरैं ॥
देखत सकल होत भय भीता। नहिं समर्थप्रविशाबखलजीता ॥
मानिबिनय हठतजियगोसांई। चलियनिकेतत्यागिदुचिताई ॥
दो० पुर महँ सबसन कहहिं हम बध्यो प्रसेन गजारि।
गुफा दुरयोकोउ ग्राहि मणि बलीमृगेन्द्रहिमारि ॥
खोजत अमित भये गिरि माहीं। तासु खोज पायउ कछुनाहीं ॥

प्रभु अंतरयामी अवनीशा। सम्यक गति जानीजगदीशा॥
दिनदश तुमसब यहि थलरहऊ। मम मग हेरिपंथ गृह गहऊ॥
मणि महँ लाग मोर मनआही। प्रविशि गुफा खोजौंहौं ताही॥
बिकट दरीभूत चले अकेले। रुचिर रूप तिहुँपुर पर हेले॥
नेक दूरिचलि लख्यो प्रकाशा। पहुंचे जामवंत के पासा॥
सोवत भालुनाथ भय हीना। बुधि सागर बय बहु कालीना॥
त्रेता रहेउ राम सँग जोई। बिदित प्रसंग जान सबकोई॥

॥ दो॰ तासु नारि निज कन्य कहि पेलन रही भुलाय।
मणि बांधी ता पालने अच्यो दृग यदुराय॥

हरिहि देखि त्रिय कर्योपुकारा। जामवंत जाग्यो तेहि बारा॥
धाय श्याम तट गयउ सरोषा। जानसिनाहिंत्रिपुर प्रतिपोषा॥
मल्लयुद्ध कर कर्यो पसारा। बरणि न जायसमरव्यवहारा॥
रण कर्तव करि हारि रहोई। चल्यो उपाय न ताकर कोई॥
शोच्यो मन ये मनुज न देवा। पूरण पुरुष करौं पदसेवा॥
रावणादि दुर्नाद अनेका। हौंजीते रिपु समर कितेका॥
ममबल तुल्य जगत को दूजा। युद्ध मनोरथ इन संग पूजा॥
उपज्यो ज्ञान प्रभुहिं पहिचाना। कहकरसपुट त्राहि भगवाना॥

दो॰ सबिनय आरत बाणिकह अब मति नाहिं भुलाय।
इलाभारहर अवधपति भये आपु यदुराय॥

त्रेता सुरऋषि यहि थलआये। कह्यो मोहिं अधिकारी पाये॥
मणिकारण आइहहि भगवाना। दरश होइ मम बचन प्रमाना॥
मुनि बरबाक्य मृषानहिं होई। इष्टरूप मम धारिय सोई॥
प्रीति सत्य लखि यदुपति राजा। रामरूप भय सेवक काजा॥
इष्वासन करशर शुभरूपा। सुर दुर्लभ दिय दरश अनूपा॥
देखिरूप पूजी मनकामा। साष्टांग किय दंड प्रणामा॥
आरत गिरा बिनीत सनीती। बद्यो क्षितीश भालसह प्रीती॥
जो आयसु पाऊं असुरारी। निजअभिलाषकहौंखलहारी॥

दो॰ बिहसि श्यामकह कहसि किन निजअभिलाष सनेह।

सुनौ पतित पावन अकल अज अबिनाश अदेह ॥
तनुजा जामवंति यहमेरी । कीजिय पद्म चरण की चेरी ॥
मोर सुलोक लोक गति याकी । सेवततुमहिं अजादिपिनाकी ॥
किमपिन बारकरिय हरिदासा । पूरणकरियआशु अभिलासा ॥
अनुशासन पावत मुदबाढ़ा । भयउ अवाक प्रेमबपु गाढ़ा ॥
संज्ञाप्राप्त पूज बिधि जैसी । पुनिकियव्याहरीति भवकैसी ॥
कन्यादान समर्पि तेहि दीन्हा । जन्मसुफलतबआपन चीन्हा ॥
सास ससुर ते पाय रजाई । सतिय गमन किय यादवराई ॥
जे यदुनाथ कंदरा द्वारे । प्रथमहिं सेवक नृप बैठारे ॥
दो० अष्ट विंश दिन तिनहिंभे नहिं आये भगवान ।
चलेद्वारकहि दुखितसब करत बिबिधअनुमान ॥
रोदत बदत बिथुरता भारी । कहतकृष्ण हा कृष्ण पुकारी ॥
यह सुधि पाय नगर नर नारी । भये चराचर जीव दुखारी ॥
जीवन बृथा बदत सब लोगा । धृकयहवपुभाश्यामबियोगा ॥
जननी आदि सकल पटरानी । अकथदशाभूपतिअकुलानी ॥
फणि बिन बिषधरमीन निरापा । तथा सकल बहुकरैं बिलापा ॥
सकृश बपुष मन महा मलीना । तजिमंदिर त्रियचलीप्रवीना ॥
प्रभु प्रभुत्व कहि राम बुझावा । तदपि न बोध काहुउरआवा ॥
गौरि निकेत नगर ते दूरी । महिमाजासुअखिलजगभूरी ॥
दो० क्लेश मग्न हर बाम प्रति कहहिं बाम महिपाल ।
पूजनीय सुर मात तुव बिदित तीनहूं काल ॥
श्यामकुशल कहुआदिभवानी । जगदम्बिका अमरपतिरानी ॥
उत युवती सेवहिं मृड बामा । उग्रसेन बसुदेव स्वधामा ॥
महा शोचमय धीय हेरानी । सबहि प्रबोधहिं मूशलपानी ॥
अमर अनादि अरूप कहावै । काल काल त्र्यंबक नशावै ॥
तीन काल तिहुँ पुर को ताता । सुर नर नाग करै हरिघाता ॥
तदनन्तर सँग ऋक्षकुमारी । आये सभा हँसत अघहारी ॥
जीव मृतक लहि तथा सुखारी । भेसब द्विज मुखचंद्र निहारी ॥

जननी आदि पाय सुधि धाई। पूजि गौरि आतुर गृहआई॥
दो० भये मंगलाचार पुर अकथ अलौकिक राय।
सत्राजीतहि तुरत हरि लीन्हो सभा बुलाय॥
बैठ सभाकरि सबहि जोहारा। हरिमणि ताहि दई तेहिबारा॥
हमहिं कलंक वृथा तुम दयऊ। यह मणिजामवंत बनलयऊ॥
सुता समेत समर्प्यौ मोहीं। मिटै कलंक दयउहौं तोहीं॥
लै मणिलज्जितचल्यो निकेता। मुख मलीन चिंतत कुरुकेता॥
हरि सर्वदा काल निरबाधा। कहा तिनहिंहौं युतअपराधा॥
भइ शत्रुता तुच्छ मणि काजा। नाशै बैर करौं सोइ साजा॥
सतिभामा हरि संग बिवाहौं। अघ समस्त पूरबकृत दाहौं॥
इमि चिंतमित धाम चलिआवा। सबप्रसंग निजत्रियहिसुनावा॥
दो० मुदित नारि कह प्राणपति यह भलकस्यो बिचार।
देहु सुता श्रीश्याम कहँ लेहु सुयश दुहु द्वार॥
सबकर सम्मत पाय सप्रेमा। द्विजबर बोलि समोदसनेमा॥
लग्न सुदिन सानन्द सुधाई। तिलकसाज तेहिदयउपठाई॥
ब्याह दिवसजबआव क्षितीशा। जुरी बरात सुजाति छजीशा॥
ज्ञाति बन्धु धर अधिप मुनीशा। हरि उद्वाहन गे कुरु ईशा॥
प्रथम बेद कुल रीति कराई। पाय गर्ग ऋषि केरि रजाई॥
पुनि भामरि फेस्यो सुख पाई। अतिप्रमोदनहिंबरणिसिराई॥
यौतुक मध्य धरी मणि सोई। बाहर कस्यो नैन हरिजोई॥
यह निरर्थ नहिं काज हमारे। राखिय आइहि काज तुम्हारे॥
दो० कठिन तपस्या सूर की करि पाई मणि तात।
हमरे कुल भगवान तजि आनन देव सुहात॥
तेहिते अपर अभर कर दाना। लेतन चित बूझिये सुजाना॥
लाज्यो सुनत श्याम मुखबानी। गये सधाम भवन धनुपानी॥
अखिल शकुन हरि आज्ञाकारी। लखियप्रगटचहुंओर निहारी॥
सतिभामा संयुत गृह गयऊ। महामोद गृहपति पुर छयऊ॥
मुनिवर मम जिय शंकाएका। कहतकुमतिबशनिजअविवेका॥

पारब्रह्म हरि तिनहिं कलंका। लग्योकृपालहृदय ममशंका ॥
चौथि चंद्रनृप नभ शशिताता। लरुयोलग्योतेहिअपयशताता॥
लोक बेद मर्यादन नाशै। प्रभुयुगयुग शुचिधर्मप्रकाशै ॥
दो० चौथि सुधाधर जो लखै सुनै चरित यह सोइ।
मिटै दोष जग यश लहै मम बच मृषा न होइ ॥
शत्रु मित्र जानत नहीं मानत दास सनेह।
भजु मंगल पूरण पुरुष पाय सुभग नर देह ॥
इतिश्रीमद्धिविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांजामवंतीसतिभामाबिवाह
वर्णनोनामसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥
दो० पर तियगामी जीव हा गणिका रत मतिहीन।
नृपाधिप अरु अनृत बद छलकारी अप्रवीन ॥
मिथ्यासाखी बादि नर परधन हर निर धर्म।
स्वर्ण चौर बिश्वासि छल हितु द्रोही बिनुकर्म ॥
श्रुति बंचक गुरु संत श्रुति निंदक अघकी खानि।
अनृतीमनबशलोलुपौ कुटिल पिशुनअनदानि ॥
गुरु प्रीतमत्रियगामि नर त्रिय पति बंचक जोइ।
वेद बदत ये अखिल नर नरक निवासी होइ ॥
मंगल मन दृढ़करि भजै ऐसेउ पतित गोपाल।
मुक्ति लहै संशय नहीं बदत बिपुल गतिकाल ॥
शतधन्वा सत्राजित मारा। लैमणि चोणिप गेहसिधारा॥
यह प्रसंग बड़ मोद बढ़ावन। हरिजनहृदयसुमतिहुलसावन ॥
एक बार बलराम सुखेना। गजपुर गये बन्धु सुधि लेना॥
समाचार श्यामहि कह आई। जो अनीति किय कौरवराई ॥
बिरचि लक्ष गृह अंधकुमारा। अलखअग्निमयताहिसम्हारा ॥
ता महँ बसे पाण्डु सुत जाई। अर्द्ध रैनि सुतिजात दिवाई ॥
रथ चढ़ि चले सुनत सुधि हेता। श्री रुक्मिणिबरबंधु समेता ॥
सूत स्यंदनहि बेग चलावा। अलपकाल हरि पुर पहुँचावा ॥

दो० उतरि यानते बन्धु दोउ गये कुरुप दरबार।
मन मलीन बैठे सकल गत नृपता व्यवहार॥
दुर्योधन कछु निज मन शोचै। भीषम छीरधार चष मोचै॥
बुद्धिचक्षु गुरु बांधव रोवैं। तिनसँग बिदुरवृथादुखजोवैं॥
गंधारी आदिक त्रिय जोई। महा शोकमय देखी सोई॥
शोच ग्रसित आनहुं सब देखे। जरे पांडु सुत उनके लेखे॥
आवत हरि हलधर नृप जानी। उठ्योसभासदमानिगलानी॥
सादर हरि रामहिं कुरुनायक। दीन्हसिंहासनसबबिधिलायक॥
पांडव समाचार अनुसारा। पै न भूप कछु बचन उचारा॥
गंगजादि कोउ भेद न दयऊ। जानि भेद हरिमौनितभयऊ॥
दो० मन बिहँसत यदुपति कुरुप जीवन मरण बिचारि।
आन चरित सुनु अंतरित कुरुबर भवभय हारि॥
यादव यक शतधन्वा नामा। हरिपुरबसत सुनौ बुधिधामा॥
सतिभामाकी प्रथम सगाई। वासँग कीन्ह रहै मणिस्वांई॥
तासु सदन कौतुक उर धारे। कृत ब्रह्मा अक्रूर सिधारे॥
भेटि कह्यो हरि रेवति नाथा। अहिपुर गये धरे धनु भाथा॥
सत्राजीत तोर अपमाना। कियोबिदितजगसकलसुजाना॥
प्रथमहि कीन्हसि तोरि सगाई। दुहिता हरिहिबिवाहिसिजाई॥
बधनिजशत्रुत्यागिभ्रमभूला। हरिबिनुभाबिधितोहिंअनुकूला॥
कोनभ्रमै सम्मत करवाई। मूरुख को शिशुबुधिभ्रमिजाई॥
दो० आमर्ष्यो सम्मत सुनत कह्यो मताभलकीन।
रजनीगहि आयुध क्रुधित तेहिगृहगयो प्रवीन॥
द्वार जाइ कटु बचन उचारा। करि छल समरताहि संहारा॥
मणि लै शतधन्वा गाधामा। हरिभय मनचिंत्योपरिणामा॥
कृष्ण बैर मनभा पछितावा। कत अक्रूर मोहिं भरमावा॥
सज्जन कहै कपटयुत बाता। तासों बलका चलै बिधाता॥
चिंता मग्न मनहिं समुझावै। अजआखरकिमिकोउमिटावै॥
सत्राजित त्रियपति मृत देखी। बिलखी उरदुख भयउबिशेखी॥

हाहाकंत प्राण प्रिय स्वामी । मोहिं त्यागि भे सुरपुरगामी ॥
तासु रुदन सुनि जन परिवारा । आये बिपुलबिकलतेहिबारा ॥
दो० पिता मरण सुनि दुखित अति सतिभामातहँजाय ।
प्रथम बिकल पुनि धीरधरि बोधे लोग लुगाय ॥
जानि मृतक पितु तेल धराई । रुचिर मनोहर यान मँगाई ॥
तदारूढ़ हरि नगरहि आई । जहँ राजत थिरचर सुखदाई ॥
देखि यान अनुमानि स्वनारी । मृदुल सुखद हरिगिराउचारी ॥
कुशल क्षेम त्रिय प्रिय संकेता । तुम यहिथलआई केहिहेता ॥
पुटित बाहु लय आरत बानी । सतिभामा नरनाह बखानी ॥
कौशल चरण पंकरुह साथा । शतधन्वा पितुहन्योअनाथा ॥
लैमणि आलय करत बिलासा । मैं पितुमृतक तैलदियबासा ॥
भइउँ अधैरज दया सुमंदा । आइउँ तुवढिग देव मुकुंदा ॥
दो० यों बदि बैकल प्रेम पितु बिलपी कठिन नरेश ।
तासु रुदन सुनि बंधुदोउ भये उदासी वेश ॥
लौकिकरीति दुखितजगस्वामी । बिधि कर्त्तब बूझतद्विजगामी ॥
प्रिय समुझाय ज्ञान बहुभाषी । गये निकेत शोक दुखनाषी ॥
बाम दुखित लखिदीनदयाला । कियोतासुबध प्रणतेहिकाला ॥
श्रवणितशतधन्वाहरि आगम । जीवतासुभा अमितपरिश्रम ॥
चिंतनीय कृत किय हौं मूढ़ा । आन भुलाये मृत्यु अगूढ़ा ॥
प्रभुप्रणसुनिअतिशयअकुलाना । आयो कृतब्रह्माशुभथाना ॥
करिप्रणाम बिज्ञप्ति अपारा । राखु शरणइमि बचनउचारा ॥
सत्राजीत बध्यौं तुव आयसु । उचितनीतियुतकरियरजायसु ॥
दो० श्याम कोप रक्षक त्रिपुर दृश्यमान नहिंजान ।
हरिहर अज इन्द्रादि सुनु राखत जिनकोमान ॥
कृष्ण शत्रुता जेहि उरबासी । परी सदृढ़ तेहि लगमृतुपासी ॥
भजत चराचर पद जलजाता । जानि तात तूभा अज्ञाता ॥
आन कहे कृत करै जो कोई । निन्दक होय जगतमहँसोई ॥
प्रथम शुभाशुभ काज बिचारै । तेहि पाछे कृत अकृत पसारै ॥

तू अबिबेक अजित रिपुमारा। श्यामकोपनहिंहृदयबिचारा॥
जानि समानित कृत खताई। जे प्रवीण मानस भवभाई॥
मोरेबल न रहो तुम ताता। लोकचतुर्दशनहिं कुशलाता॥
प्रभु सँग रिपुता जगमहँकरऊं। शरणराखितोहिं नर्कहिपरऊं॥
दो० मित्रशत्रु यम जनक हितु ब्याल तूल तेहिहोत।
हरि प्रतिकूलित भूपजग अपयशकरत उदोत॥
महामलिन तजि जीवनआसा। गाबहोरि अक्रूर अवासा॥
सनति जोरिकर ताहि बखाना। मोर बधनप्रण यदुपतिठाना॥
तव आज्ञा सत्राजित घाता। राखुशरणआपनिमोहिंताता॥
यदुनायक तुम पूरण साधा। हरौ दीन जनकी बहुबाधा॥
धर्म धुरंधर आरत पाला। सबबिधिमानततुमहिंगोपाला॥
जीवदान दीजिय जन जानी। पाहिपाहि यदुबर शुचिज्ञानी॥
बड़ मूरुख तू निपट अयाना। रचिसकतकोउ रिपुभगवाना॥
भूर्भुवः स्वः तोहिं न ठाऊं। शरण राखिकहँ तोहिलुकाऊं॥
दो० सुमन समानस तपससब स्वारथ मीत बिचारु।
तवहितुता अब शत्रुता यहै जीव निरधारु॥
कुसमय सखा शत्रु की करणी। करत यथालखिरिपुसुतहरणी॥
रिपु उपदेश मृदुल कटुपाछे। मधु मृदुपान कालकृत आछे॥
पितु पालत सुत सेवक जोई। कुसमय भक्षिजात द्विजसोई॥
अब जीवन आशा परिहरऊ। तजिदुबिधा हरिपद उरधरऊ॥
प्रभुप्रण मृषा न ह्वैहै ताता। जैहौं अवशि भवनहरिजाता॥
स्वारथ रहित गहौ परमारथ। वृथा चिंतमन काल अकारथ॥
अग्रशोच पश्चातहु शोचा। बुध पंडित मूरुख मनरोचा॥
प्राणतजहुं करिपच्छ तुम्हारा। जाहुसदन बशनाहिं हमारा॥
दो० परुष बचन दुःकृत सुनत जानि काल तिहुंबाल।
मणिदै श्री अक्रूरकहँ स्यंदन चढ़ि तेहिकाल॥
चल्यो पलाय नगर तजिराई। समाचार सुनि रोष बढ़ाई॥
बाहन आरूढित प्रभुधाये। तत्पश्चात हलग्रह आये॥

शत योजन भाग्यो महिपाला । पाय निरोध करो गोपाला ॥
तिरहुति प्रविश्यो यान बिहाई । दयो सुदर्शन कृष्ण पठाई ॥
भंज्यो तासु तासु शिर राजा । मृतक समीप गये मणि काजा ॥
खोज्यो अंगबस्त्र अरुयाना । मिलीन मणिपै सुनौसुजाना ॥
भ्रातहिकहतमिली मणिनाहीं । बध्योयाहि करि रुढ़ मनमाहीं ॥
आनपुरुष प्रतिहै मणि सोई । ताते तात परी नहिं जोई ॥

दो० छपिहि न कोटि उपायसो प्रगटैगी परिणाम ।
यहि कारण गृह जाहुतुम हम खोजें सबठाम ॥

बंध्वायसु सुनि तिहुं पुरकर्ता । देव देव थिरचरके भर्ता ॥
पोषण भरण करण कृतस्वामी । जानतमणिहिंसुअंतरयामी ॥
तदपि न कारण कारण खानी । नीलाम्बरसनकह्योबखानी ॥
हरिपुर हरि गमने सुखराशी । पूरण पुरुष तमारि प्रकाशी ॥
रेवति रमण शोध मणिकाजा । गये देश देशन सुनुराजा ॥
धरा प्रजटन करत मुदपाये । अवधपुरी सादर चलिआये ॥
दुर्योधन नृपता अधिकारी । हरिसुधि पाय मोद उरभारी ॥
अग्रभेटि पाँवड़े बिछाई । बिशदासनशोभितकियजाई ॥

दो० बहुबिधि बिनती करासि नृप बिनती युत शिरनाय ।
भोजन चारि प्रकारषट हरिहि करायो आय ॥

कंठिर बासन पुनि बैठावा । जोरियुगलकर बचन सुनावा ॥
निजआगम कारणयदुनायक । कहियकृपाकरममकृतलायक ॥
देखि सनेह सत्यबल ताको । बद्योवृतांत अखिल रमनाको ॥
कृपा उदधि मणि भावन आनै । बिभुहिबिभातिबिभवपरमानै ॥
पुनिकहअमितक्षमाप्रभुकीन्हा । पतितदासकहँ दर्शनदीन्हा ॥
लोप्यो कलुष जन्म बहुकेरा । पायउँ चारिलाभ यहिबेरा ॥
जसयहथलपवित्र कियनाथा । रहिकछुदिनतसकरियसनाथा ॥
सेवकजानिशिष्यप्रभुकीजिय । गदायुद्ध उपदेशहि दीजिय ॥

दो० ताहि शिष्यकरि समर बिधि उपदेशी बहुभांति ।
करि प्रवीण तेहि संगरहि चले निलय मुदशांति ॥

प्रथमहि कृष्ण नगर कहँआये । पाछे हलधर दरश दिखाये ॥
मृतकअजितअरिनिजकरिदाहा । करबे कर्मसबयदुकुल नाहा ॥
सम्मत कृतब्रह्मा अक्रूरा । निजमनशोचकियोयहपूरा ॥
हरिहि बन्दितजि नगरपलाइय । अवशि प्रशंसा ताकलुपाइय ॥
प्रभुपहँ आय सो मणि दरशाई । सबिनय सोहरि गिरा सुनाई ॥
यदुबन्शी धनमद बौराने । इंद्रीभोगहि बिषय भुलाने ॥
रावरभजन तज्यो बिधिचारी । दुखित नाथलखि बुद्धिहमारी ॥
धृगधनतियजग भोग अनेका । जो नपङ्कपदनाथ बिबेका ॥

दो० मणि मिष त्यागि निवास हमसहपरिवार पलाव ।
बसत मूढ़ पुर साधुकर होवत दुष्ट स्वभाव ॥
तुमसनीति शुचि भक्त मम सबके भलकी चाह ।
जो भावै चितसो करो कह्यो जोरिकर बांह ॥

जबसब दुखितहोयँ तुव ध्याना । मन बच कर्म करैंयुतज्ञाना ॥
तब बहोरि तुव पाय रजाई । निवसब आय नाथयहि ठांई ॥
महा भक्त मूरति बिज्ञाना । यश अक्रूर बिदितजग जाना ॥
सुठि सम्मत मोरे मन माना । करियताातयहअवशिबिहाना ॥
प्रभु अनुशासन पाय सिधाये । बरणतबिमलकीर्त्ति गृहआये ॥
कृत ब्रह्मा समेत परिवारा । अर्द्ध निशापुर तज्यो भुवारा ॥
मर्म न जान काहु पुरबासी । यहचर्चा प्रभात पुर भासी ॥
कृतब्रह्मा अक्रूर समेता । गयेभागितजिशुभगनिकेता ॥

दो० जानि परत मणि लै भगे कारण दूसर नाहिं ।
इत चर्चा यह भूप सुनु प्रचरित सबपुर माहिं ॥

प्रथम प्रयाग गये अक्रूरा । तहां करायो कर्म प्रक्रूरा ॥
न्हाय त्रिबेणी पमरि बँधाई । गये बहोरि गया मुद पाई ॥
पितृश्राद्धतहँ बिधिवत कीन्हा । उत्तमदान द्विजनकहँ दीन्हा ॥
पुनि सहप्रेम लौटि भुवसाई । बाराणसी रहे द्वौ छाई ॥
तपजप करैं सहद्द बिज्ञानी । भेटहिं ऋषय भूपतहँ आनी ॥
बहुदिन भये तजे पुर जाना । प्रभुअक्रूर मिलन अनुमाना ॥

रामहिं कह्यो तात सुनु बानी। अब अक्रूर बोलाइय ज्ञानी ॥
कहिभल हलधरमौनित भयऊ। सुनौनगर बिपदाजस छयऊ ॥
दो० त्रिज्वर बिषम त्रयताप नृप पांडुत्तयी शिरपीर।
कुष्ठ जलंधर शूल दुख मृगी भगंदर भीर ॥
कंठमाल खांसी अतिसारा। सन्निपात शीतांग विकारा ॥
अपर अनेक रोगगद आदी। थिरचर जीवनके जु बिषादी ॥
हरिमाया बश नगर प्रचारे। भये अखिल नर नारि दुखारे ॥
अरु जबते अक्रूर सिधारा। बरष्यो जलद न एकौ बारा ॥
तृण अन्नादि भयउ कछुनाहीं। त्रिधाजीव दुखलहहिं तहांहीं ॥
बड़ दुर्भिच्छ रोग प्रभु छावा। त्राहि त्राहि चहुंओर कहावा ॥
कर सम्मत बहु नर सुत बाला। हरि शरणागत गये नृपाला ॥
अति आरतमय विनय सुनाई। महाबिपतिबश बरणि नजाई ॥
दो० जोरिहाथ बिनती करत सुनु अवनीपति सोय।
जेहि रीझै रुक्मिणिरमण अमित दीनताजोय ॥
छं० नमो स्वदास बल्लभं। नमामि देव दुर्लभं ॥
नमस्त्वमेक सद्गुरुं। नमामि भंजनं सुरुं ॥
नमो शिवाज कारकं। नमो अघौघ हारकं ॥
निरूप रूप धारकं। अपार भक्त तारकं ॥
अनाम नाम यद्विभुं। अकाम कामवत्प्रभुं ॥
निरीह सेह दृष्टितं। सुरारि व्यूह भ्रष्टितं ॥
त्वयं हतं दुखार्णवं। त्वतुल्यअन्यकिम्भवं ॥
सकष्ट शर्णत्वं बिभूं। त्रिलोक मेकत्वं प्रभूं ॥
दो० जानि दासरुक्मिणिरमण हरियदुकाल कुरोग।
बिस्मयमय सुनि सुरअसुर यहननाथ पुरयोग ॥
रावर स्वामि सुचर हम ज्ञाता। कोअघक्षिपतिबदियविख्याता॥
सदा रीति यह हरिकर भाई। निज सेवक कहँ देत बड़ाई ॥
सुनौ जौन पुर हरिजन त्यागैं। मोदक निकर तहांते भागैं ॥
क्षोभक दाहक पीड़क बासा। तौन नगर होवत अनयासा ॥

ज्ञानवंत निवसैं जहँ साधा। नाशत आपु तहां ते बाधा॥
बासव मुदिर नाथ जन नेहा। मानि समय बर्षावत मेहा॥
जबसे पुर अक्रूर बिहावा। तबते नगर दुःख गण छावा॥
बिनजाने अपयशकोउ दीन्हा। पूरणभक्त हिये नहिं चीन्हा॥

दो० कृपासिंधुकह सत्य तुम भयो हृदय बिश्वास।
सुफलक पितु अक्रूर कर बिदित जगतहरिदास॥

जेहिथल बसत पिता सुत दोऊ। आवत तेहिथल बिपतिनकोऊ॥
सुकृत सींव बुधिगुणदधिसेता। धर्म अवधि परिवार समेता॥
यक इतिहास सुनिय चितलाई। बदत जरठ यह कथा सोहाई॥
समय एक काशी पुर ताता। दारुण दुर्भष भागति धाता॥
काशिपद्विजगणस्वथलबोलाई। पूछ दुकाल ब्यवस्था राई॥
क्षोणिप साध जितेन्द्रिय जोई। षट बिकार बिनु हेरिय सोई॥
यहि पुर चरण रेणु निज धारै। सब दुर्भिक्ष भूमिपति टारै॥
सुफलक नाम चंद्र कुल माहीं। बड़साधू भव दूसर नाहीं॥

दो० सुनत भूप बड़ि बिनययुत सुफलक लियेबोलाइ।
तिनके आवतहीं चतुर मिट्यो काल दुखदाइ॥

दुहिता निजनृपसुफलकसाथा। उद्वाही करि श्रुतिवत् गाथा॥
ताकर तनय सुजन शिरमौरा। भाअक्रूर भक्त पद रौरा॥
यह वृतांत प्रथमैं हम जाना। भयबशनाथनतुमहिंबखाना॥
अब जस होय तुम्हार निदेशू। तस कीजिय यह मिटै कलेशू॥
शोधहु सकल साधु द्वौ जाई। यहि पुर बहुरि बसावहु आई॥
चले अनेक पाय अनुशासन। चतुराशा खोजत शुचिआसन॥
बाराणसी मिले हरिदासा। करतकठिनतप परिहरिआसा॥
चरण सरज बन्दे सुख पाई। बहुरि जोरि कर गिरासुनाई॥

दो० राम कृष्ण तुम बिन बिकल पुरबासी तिहुंकाल।
चलिय कृपानिधि धाम अब मिटै निकरदुखजाल॥

सुख समूह हरिजन अनुगामी। बिनु हरिदासकालगति बामी॥
यदपि बसत पुर पोषण हारा। तदपि दुकाल परयो बिकरारा॥

सेवक बश्य सदा असुरारी। निगमागमअसनीतिबिचारी॥
हरि संदेश पाय मुद छावा। पुलक शरीर नैन जलआवा॥
चले सजन कृत ब्रह्मा संगा। प्रभुदर्शन लालसा अभंगा॥
नगर निकट आये सुधि पाई। रामश्यामअगमन चलिजाई॥
कंठ लगाय भेंटि सन्माना। बड़ सत्कार कर्यो भगवाना॥
लाय नगर शुभधाम बसावा। उग्रसेन सुनि अतिसुखपावा।
दो० तिनके आवतहीं नृपति गये अखिल दुखनाशि।
जलबरष्यो शुभकालभा मंगल मोद प्रकाशि॥
जिनकी महिमा अस बड़भाई। धन्य साधुजन जगसुखदाई॥
समय पाय अक्रूर बोलाई। मणिचर्चा कीन्ही यदुराई॥
नीति बदत परधन जो पावै। आशु तासुके पास पठावै॥
सो न होय तेहि सुत कहँ देई। परधन अघ गृह भूलिन लेई॥
अथवा बन्धु गुरू सुत होई। देइताहि श्रुतिधर्महिं जोई॥
यहिकारण मणिलाय गोसांई। मम तियतनय देहु मुदपाई॥
झटितलायमणि हरिकरदीनी। पुनिमहिपालबिनयबड़िकीनी॥
क्षमिय मोर अपराध कृपाला। मणिलै यह प्रभुदीनदयाला॥
दो० स्वर्ग प्रगट सो नाथलै व्ययतीरथ मगकीन।
सोपिक्षमा प्रभु तुमकरौ प्रभुकह सुनौं प्रवीन॥
नीक कर्यो तीरथ गये मन में भयो सुखारि।
तोष्यो इमि अक्रूर कहँ निज मुख आपमुरारि॥
मंगल को हरि सम जगत दास बड़ाई दानि।
ध्याउश्यामपद भूलतजि यहशिक्षामन आनि॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्विषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासबिरचितायांशतधन्वाबधवर्णनोनामाष्ट
पंचाशत्तमोऽध्यायः ५८॥
दो० बिद्या धरत न क्षीणभल मूरुखनहिं तनपीन।
शुक सादर पक्षी जगत गिद्ध सुआदर हीन॥
बिद्या बिन लखि परत नहिं धर्म कर्म मर्याद।

सो पाइय श्रीगुरु कृपा भूषण तन मनुजाद ॥
बाल अवस्थहि सीखिये गुण चतुरई अनेक ।
प्रौढ़भये बिषयी रमण होत न चित्त बिवेक ॥
सर्ब सिद्धि मय जानिये बिद्या हरि गुण लीन ।
बिद्या बिनु यहि भवभवँर द्वितिय न आनतरीन ॥
बिद्यालहि सुंदर सुभग त्यागि रिझाउब लोक ।
तन मन सेवै श्यामपद जाते होव विशोक ॥

तिमिरापत्ति मित्र शुचि गाथा । श्रवणकरियतनमनकुरुनाथा ॥
एक काल जगपाल कृपाला । जनमन मानसरुचिरमराला ॥
चले करभपुर आति रुचिमानी । भक्त बन्धु आरतहरज्ञानी ॥
बहु यदुजात संग भट भारी । पहुंचे पाण्डु सदन बनवारी ॥
पाय सुद्धि पांडव चलि आये । भेटि समोद हरिहि गृहलाये ॥
बिधुगोती रचि वेदी रेखा । कुंती द्रौपदि त्यागि परेखा ॥
रत्नजटित तहँ इभरिपु आसन । तेहिथलधर्योचर्चिशुचिबासन ॥
प्रभुहित दोपर सुरुचि बिठाई । आरति कर्यो प्रेम उर छाई ॥

दो० बिबिध बधाई बाजि गृह बरणत बनत न सोय ।
नृपता लहि नररंक तिमि तिनमन आनँदहोय ॥

भोज्यभक्ष्यलिह्यचोष्यकहावा । चारि प्रकार सुभोग करावा ॥
निकट बैठि भोजन कृत जानी । कुंती पूछ्यो सुधि मृदुबानी ॥
मम पितु बंधु आदि कुशलाई । कहिय सप्रेम मिटै दुचिताई ॥
तुम्हरी कृपा कुशल तिहुंकाला । दशदिशिरक्षकजनजनपाला ॥
पुनिकह जबजब बिपति हमारे । दारुण सहज परी अबिचारे ॥
अनुकम्पा अर्णवत बधाई । रक्षौ है प्रभु आपु सहाई ॥
श्येनब्यूह जिमि श्रासितलावा । किधौंसिंहदल बिचइभआवा ॥
बातप पर्योकि सहल चीता । बरहीगण महँजिमि इभभीता ॥
तिमि मम तनय अंधसुतसाथा । परिहरि तात न दूसर नाथा ॥
धर्मराज आरत युत बानी । मंजु शांतरस मिलितखानी ॥
प्रणतपाल द्विजकेतु कृपाला । अद्भुत रूप धरौ सबकाला ॥

मायामय सब जग उपजायो । जड़ीकरण मुख भेद न पायो ॥
दो० दुर्लभ दर्शन देव कहँ मोक्षदानि तुवतात ।
जानि दास सुप्रवासहीं दरशदयो विख्यात ॥
पावसऋतु आगम है स्वामी । शुचिशुचिमासब्यतीतअकामी ॥
यहिथल निवसि हरियममपीरा । सेइ चरण कंज होउँ सधीरा ॥
बिहँसे प्रभु सुनि भूप प्रशंसा । यदुकुल सर्वरसोहर हंसा ॥
धर्म रूप तुम साधु महाना । धर्माधीन अहौं बिनुमाना ॥
रहब लालसा देखि तुम्हारी । नृपहि बोधअसबदिअसुरारी ॥
हरिनृपधाम बास किय राजा । मोदेउसुनिपुरदुबिधिसमाजा ॥
एक काल शरबंधु समेता । मृगयहिचले बिपुलजड़जेता ॥
गहन बिपिन गयसँगधनुसाई । बधे व्याघ्रमृग कोल नृराई ॥
दो० अपर आन बनचर अमित हने कृष्ण धनुधर्ण ।
सब कहँ बांटे धर्मसुत जो जाको भष कर्ण ॥
भोजन योग भूप जे पाये । पाक सदन ते बेगिपठाये ॥
करत अहेर इंद्र सुत श्यामा । गये दूरि बन बपु बहु कामा ॥
सरिता कूल पान पय कीन्हा । कछु बिराम कम्बोजनदीन्हा ॥
प्रभु चितये नृप दूसरि ओरा । दीख तरंगिनि तटचितचोरा ॥
सुंदरि नव यौबन बिधुआनन । मृगचषतनचम्पकद्युतिभानन ॥
पिकबचकेसरिरिपुगतिगामिनि । हरिकटिनखशिखमनहरभामिनि
शृंगारित छबि सदन सुनारी । अकसर बहुमद मद मतवारी ॥
फिरत कूलसरि संग न कोई । अर्जुन कौन नारि यह होई ॥
दो० सुनि देख्यो तब ओरतेहि भयोबिकलमनतासु ।
प्रभुरुख लहि सानंदमग गये तासुतट आसु ॥
कोहसि केहि कारण यहिठामा । अकसर फिरतमोहिंकहुबामा ॥
अवशिनाम गृह देह बताई । जोसुनि ममचितचिंताजाई ॥
पूषणसुता अहौं नरनायक । कालिंद्री ममनाम सुभायक ॥
पिताआपमहदेइ निवासा । पुनियहिबिधि कियवचनप्रकासा ॥
सरितट फिरत मिलिहि बरतोरा । सत्यबाक्य यह दुहितामोरा ॥

नामकृष्ण श्रीहरि अवतारा । पूरण धरिहि हरण महिभारा ॥
आदिमध्य अवसान बिहीना । कृपाउदधि सतचित्तअक्षीना ॥
मन पितुबचनसांचु अनुमानी । ध्याऊं हरिहि सत्यपतिजानी ॥
दो० जिनके पदकर ध्यानतोहिं तेप्रभु पूरण रूप ।
आयेयहिथल नैन लख सुंदर पुरुष अनूप ॥
यहिअवसरहिश्यामचलिआये । समाचारकहि तिनहिंसुनाये ॥
बिहँसिश्यामकहसुनुप्रियबानी । बेगिहिचलौ चढ़ौ रथ आनी ॥
स्यंदनताहि चढ़ाइ सिधाये । अर्जुन सहित परम मुदछाये ॥
जबलागि हरि आये नृपबासा । तबलगियकपावनसुअवासा ॥
हरिइच्छालखि पर्म स्वधर्मा । निर्मायो सोहर बिश्वकर्मा ॥
तेहिगृह हरि हरि सुता बसाई । सत्य चिदानंद प्रभु यदुराई ॥
सुखद प्रसंग समय यक भयऊ । सुनौतातजिमिहरिमुददयऊ ॥
हरि हरिजात बैठ यकठाईं । करत ज्ञानचर्चा बहुभाई ॥
दो० कंजजोरिकर आयतहँ बोल्यो शीश नवाय ।
क्षुधित फिरतहौं कृष्णजू भोजन देहु कराय ॥
उदरनभर्‌यो यज्ञभष मोरा । कहाकहौं निजक्षुधा अघोरा ॥
जो तुवनाथ रजायसु पाऊं । तौ नन्दनबन अवशि जराऊं ॥
निडर भस्म करु कानन जाई । पूरण क्षुधा करिय मुदपाई ॥
बिपुल बार मैं बनहि लगावा । पावस पव बरषाय बुझावा ॥
बिनु सहाय शरणागत पाला । उदरन मोरभरिहितिहुंकाला ॥
हँसि हरिकहा बली मुख केतै । जाइय अवशिकरणसुतहेतै ॥
आज्ञा पाय अमिष धनुधारा । कटि तूणीर कर्‌यो तेहिबारा ॥
बनसुत संग चल्यो रणधीरा । बासव बिपिनजायसुतक्षीरा ॥
दो० लग्यो जरावन काननहिं चारि ओर तेहिकाल ।
प्रजरत बहुपद पिकप्रिया तरुतालीस तमाल ॥
मंजुल बकुल ताल तरु श्यामा । हेम प्रसून पलाश सुनामा ॥
प्रियककर्ष फल बानरआनन । कोलवल्लिका तिक्ताकानन ॥
कोला अभया बिद्रुम पीडा । गुंजा मृदुंका सुमना ब्रीडा ॥

केतकि एला सहित लवंगा । अपर अपार वृक्षमय भंगा ॥
अरणी चक्रकृत वनचरभटके । अर्जुन बाणसुअर्जुन अटके ॥
हाहाभूत ज्वलित बन आगी । कौनो जीवन पावत भागी ॥
अमर नाथ सुनि क्रोधितभयऊ । बोलिजलदपतिआयसुदयऊ ॥
महा बृष्टि करि अग्नि नशावो । कानन तरु बहु जीवबचावो ॥

दो० आज्ञा पाय सुराधिकी चले मेघ मुद पाय ।
अंधकारभा ओर चहुं बिद्युन्मग दरशाय ॥

इषुधी कंत तजेउ नाराचा । शरपंजर नभबिरच्यो सांचा ॥
कामक सिक्का समहूवै गयऊ । ध्वंतनश्योकाशितरबिभयऊ ॥
झंझा बायुउड़त जिमि तूला । उड़े वलाहक नृपतेहि तूला ॥
आवत जात परे नहिं जानी । द्विगुण अनलप्रजरीसुनुज्ञानी ॥
मयथल पावक पहुंच्यो जाई । उठ्योअसुरतनमनअकुलाई ॥
करि प्रणामकह आरत बानी । रक्षा मोरि करौ सुखदानी ॥
दीन गिरा सुनि पंथ दयाला । राख्योशरणअसुरतेहिकाला ॥
तृणबिपिन भषि पावक भयऊ । पंथ असुरयुतहरिपहँगयऊ ॥

दो० कहा जोरिकर सुनो प्रभुयह मय बड़गुण खानि ।
शरण राखिये देव प्रति निज सेवक अनुमानि ॥

शरणराख मय पावक तोषी । प्रभुढौरीति सदा संतोषी ॥
मणिमय सदन मयासुर कीन्हे । अद्भुतचक्रतजातनहिंचीन्हे ॥
जल थल कथल द्वार बिनु द्वारा । बरणिनजायबिचित्रअपारा ॥
बिधि सुरेश लखि जीव सकाई । मानसजानिसकै किमिभाई ॥
बिहरत तहँ तीनों पुर नामी । जेहि माया कृत अंतरयामी ॥
चारि मासतहँ बसे कृपाला । सुखीकिये बड़लघुनरबाला ॥
राजसभाजहँ धर्म विराजा । आयेसुरुचि तहां बृजराजा ॥
कहेउ रजायसु दीजिय भाई । जाउँद्वारकहि मोचित आई ॥

दो० सुनतउदासित भयो नृपसभा सहित तेहिबार ।
अज्ञ तज्ञ सर्बज्ञ हरि किये प्रज्ञ अनुसार ॥

सबहि बोधि पथ हरिजासंगा । चले द्वारकहित्रिबयअभंगा ॥

कुंती द्रौपदि भेटि सयानी । गईं गेह दुविधा अनुमानी ॥
राखब पठउब द्वौ कठिनाई । आज्ञा प्रेम भंग लखि सईं ॥
कछुन कह्यो सुत धर्म स्वबानी । भेट्यो बार बार उरआनी ॥
वेगवंत रथ जिमि उरगारी । इंग तज्ञ बाहन सुखकारी ॥
बासर महँ पुर पहुंचे जाई । नहिं आश्चर्य दूरि बहुताई ॥
हरि आगम सुनि पुरके बासी । चले त्रिविध रुचिपर्मप्रकासी ॥
बीचहि भेटि बन्दि पद कंजा । कलुष नाग दर्शन हरिगंजा ॥
दो॰ हरि आवत पुरमोद नव छाय रहो चहुं आश ।
कहतबनैनहिं सहसमुख सोकिमिकरियप्रकाश ॥
हंस सुता लखि त्रियन सराहा । लहो भूपपितुहितसुनि लाहा ॥
उग्रसेनसन प्रभु कह जाई । कालिन्द्री की कथा सोहाई ॥
बिहँस्यो राउ सुनत मृदुबानी । सचिवहि कह्योसुनौ सज्ञानी ॥
ब्याहसाज सजि हमहिंजनावौ । पुनिकुलगुरुमुनिगर्गबोलावौ ॥
आज्ञालहि सब बस्तु मंगाई । ऋषिहि बोलिपुनिलग्नधराई ॥
कर्‍यो वेदबद हरि उद्वाहा । मन प्रसन्न है यादव नाहा ॥
जिमि ब्याही कालिंद्री श्यामा । बर्‍यौ अपूर्ब चरित गुणग्रामा ॥
जेहि प्रकार हितु वंदहि लाई । ब्याही कृष्ण सो सुनु नरराई ॥
दो॰ सुनौ अवनिपति चित्तदै कथा रुचिर सुखदानि ।
जो श्रुत प्रफुलित होयमन और पापकी हानि ॥

भुजंग प्रयात छन्द ॥

अहै शूरसेनात्मजा बिष्णु सेवी । महाज्ञानमैनामराजाधिदेवी ॥
सुताताासुकी मित्रबिंदासुनामा । युवावैसभाचंद्र देवी ललामा ॥
पिताठान ताकोस्वयंकंतजागा । महामोदस्योशोचिकैसानुरागा ॥
रसानाथलै सुद्धि आये तहांहीं । बिलोकेबिभौदेवराजासकाहीं ॥
गुणी संयमी वेदवक्ता सुखेना । जुरे यज्ञशालाधराधीशसेना ॥
बली बिक्रमी संगरी रूपरूरे । कहांलौं बखानौं सबैभांतिपूरे ॥
सुनेसुद्धि श्रीकृष्णलै पंथसंगा । गये यज्ञशालामहामोदअंगा ॥
बिलोके मुखाभारहीभूलिनारी । शकंजैतिसानन्द सोकंठडारी ॥

दो० देखिल जे बहु भूप तहँ मन माखे कुरुराय।
मित्रसेनि ताबंधुसों कह्यो भूपयों जाय॥
तव मातुल सुत कृष्ण कहावा। कौतुकलागि मखशालाआवा॥
रूप देखि तुव भगिनि भुलानी। लोक बिरुद्ध शोचुमनजानी॥
जोउद्वाह कृष्णसँग भयऊ।अपयशअकथजगततवछयऊ॥
यहिकारण अनुजा समुझावो। तजै श्यामबरभवयश पावो॥
सुनत व्यंग दुर्योधन बानी। निजभगिनिहिरसुझाइसिआनी॥
बन्धुबचन सुनिमनसकुचानी। परिहरि हरिपुरचलिसँगलानी॥
हरिश्रुति लागि पंथइमिभाषा। बिगरतकाज करियमनमाषा॥
कानिकरत यहिसमय कृपाला। हँसिहैं प्रभुसमुदाय नृपाला॥
दो० कोपि कृष्ण त्रियहाथ गहि रथलीनी बैठाइ।
अखिलभूप देखतखड़े सबकीकानि बिहाइ॥
जब स्यंदन चढ़ि चले मुरारी। तब रोषे महीप भटभारी॥
निज निजआयुधसाजिसिधाये। समर हेत बहुअनी बनाये॥
पुरजनकह हरिकरयो अनीती। उचित बिवाहलोकश्रुतिरीती॥
प्रभु देखा क्षोणिप दल आयो। सैनहि प्रभुकपिकेतु बुझायो॥
गुणाकेश तोमर धनुधारा। आपनहूं शारंग सम्हारा॥
मंड्यो असुग पंजराकारा। जोबिलोकि भूपति दलहारा॥
बिपुल जीव तजि हरिपुर धाये। शेषसमर तजि नृपतिपलाये॥
प्रभु निरद्वंद गये निज बासा। मुदित भये नरनारिअबासा॥
दो० कियो व्याह जग बेदबिधि कहे ग्रंथ बढ़िजाय।
जिमि सत्यालाये बहुरि सो चरित्र सुनुराय॥
कौशलदेश बिदितजग जाना। तहांनगनजित नृपबलवाना॥
सत्या नाम तासु सुकुमारी। रूपशील लक्षण अधिकारी॥
व्याहन योगजानि महिपाला। यह प्रण कीन्हो राउकराला॥
अगजगवृषभप्रबल अनुमानी। छोड़वाये रसाधि अभिमानी॥
जो नाथै निज बल नर कोई। मम जामात होइ भव सोई॥
अभैं बृषभ कोउगहि नहिंपावै। बधैताहि जो निकटहि जावै॥

पारथ सहित श्याम सुधिपाई। कौशल देश गये सुनुराई॥
सभाकश्यपी पति जब गयऊ। हरिहि बिलोकिमग्ननृपभयऊ॥
दो० सरवर आसन त्यागि उठिकीनेसि दंड प्रणाम।
करिआसीनसुआसनहिं पुनिपूज्यो परिणाम॥
करि अर्चा कह सुनो कृपाला। उदितभाग्यममभयउबिशाला॥
भूती सपितु तनय जेहि ध्यावैं। समय पाय तुव दर्शन पावैं॥
तुवबाणी बिरच्यो दशचारी। आदिपुरुष प्रभुकलिमलहारी॥
सहज स्वभाव धाममम आये। पूरब सुकृत चारि फल पाये॥
निज मूढ़ता कहौं छल छोरी। जाबश रहत सदा मतिभोरी॥
दुहिता व्याह हेत प्रण कीना। नाथै वृष जो सुभटप्रवीना॥
सप्तवृषभ बर मत्त छोड़ाये। फिरतनाथ कोउ बेधि न पाये॥
ताहि बरौं निज प्राण पियारी। एक बार नाथै भट भारी॥
दो० अहै कठिन प्रण सुलभभा पाय दरश असुरारि।
उठे सुनत हँसि तुरतही हरिसुख दुःख बिसारि॥
मुनितनधरिकटिकसिनिजचीरा। ममन जान काहु यहबीरा॥
एकहिबार वृषभ प्रभुनाथे। कुसुममालमालीजिमिगाथे॥
वृषभ बिलोकि श्याम भय कैसे। प्राण बिहून काठतन जैसे॥
यक रज ग्रासि सभालै आये। देखि सभायुत नृपसुखछाये॥
नगरलोगसुनि बिस्मितभयऊ। कौतुकलागिनिकरचलिगयऊ॥
धन्य धन्य इन कर बलभाई। भणै परस्पर लोग लोगाई॥
कुलगुरु बोलि नगनजितराजा। लग्नपूछि सजिमंगलसाजा॥
कन्या दान बेद बिधि कीन्हा। यौतुकअमितइलापतिदीन्हा॥
दो० धेनु सहस दश कर भनव सहस लाख दशअश्व।
लक्षतीनि मुनिरथ दिये प्रगट्यो यशशुचि विश्व॥
बहुसेवक सेवकिनि अपारा। दैबिनयोअति अवधभुवारा॥
चले श्वशुरकर पाय रजाई। कीरति सब देशन महँ छाई॥
सम्मत करि अनेक नृप आये। मारग मांझ युद्ध अरुझाये॥
रोषि धनुर्द्धर सबहि भगावा। बायुप्रबलदलदल बिचलावा॥

पावन चरित छयो दिशिचारी । गये द्वारकहिं नृप असुरारी ॥
आय प्रणाम करैं पुर लोगा । कहहिंसराहि ब्याहसमयोगा ॥
कौशल राज सुयश बड़लयऊ । अगणितदायजशुचिमनदयऊ ॥
प्रभुकह पंथहि तुम बड़ज्ञाती । बिज्ञानी रणधीर अघाती ॥
दो० जो दायज अवधीश दिय सोतुम लेउ सप्रेम ।
सुनत अचम्भे सब रहे दुर्लभ प्रभुकरनेम ॥
गुड़ाकेश करि अंगीकारा । लियोबिपुल धनदायजबारा ॥
कमला जासु चरण सेवकाई । तनमन बचन करत मुदपाई ॥
तृष्णा लोभ मोह नहिं जाके । कोधन एतिक गोचरताके ॥
अब भद्राकर सुनौ बिवाहा । मन दृढ़तामधि गोपउछाहा ॥
केकय देश प्रसिद्ध महाना । भूमिपाल तहँ चतुर सुजाना ॥
भद्रानाम सुतातेहि ज्ञानी । नृप तद्वत न रमा ब्रह्मानी ॥
तासुस्वयंबर हित नरनाहा । लिखेपत्र बहु सहित उछाहा ॥
बोले अपर अपर क्षितिपाला । बलबुधिमयजेबिदितबिशाला ॥
दो० गये सकल केकय पुरहि त्रिया लोभ उरधारि ।
तेहिसमाज महँ जातभे अर्जुन सहित मुरारि ॥
मखशाला भल जुर्यौ समाजा । शोभितबिपुलबिबिधकुलराजा ॥
मध्यसभा राजे यदुराई । तेहिअनमिषहिसुतानृपआई ॥
देखिरूप मोहे बहु कामी । करिबनाव बैठे मति वामी ॥
देवपितृ गुरुइष्ट मनावैं । अध ऊरधनिज मनहिंचलावैं ॥
शुचिजयमाल हाथसखिसंगा । निरखत भूपन नैन कुरंगा ॥
कोउ बरभूप न तियमन आवा । दैवयोग यहभयो बनावा ॥
रूपराशि मोहन तिहुँ धामा । बिलजाहिदेखिभांतिबहुकामा ॥
जहं शोभित आई तहँ बाला । प्रभुहिदेखि मेली जयमाला ॥
दो० मुदितभयो पितुतासु लखि श्रुतिवत कर्यौ बिवाह ।
दैदायज बहु को गनै बिदा कीन्ह नरनाह ॥
मग मंगल युत बजत निशाना । द्वारावति आये भगवाना ॥
पुर प्रमोद को बरणै भाई । वृद्धिग्रंथ लखिमन भ्रमखाई ॥

अबलक्ष्मण। ब्याहनृप सुनहू। हरिप्रताप निज उरद्दढ़ गुनहू॥
भद्रदेशकर अमुक नरेशा। बल सागर नागर सुठि वेशा॥
तनयातासु लक्ष्मणा सोहर। गुणनिधानप्रति अंगमनोहर॥
उत्सव योग बिचारि महीशा। रच्यौ स्वयंबर बोलिऋषीशा॥
द्विजबरनिगमधारि गुणखानी। प्रथम निमंत्र्यौ क्षोणिपज्ञानी॥
देश देश के पृथ्वीपालक। प्रबलबिजयरणरिपुगणघालक॥
दो० निवति बोलाये यज्ञसब आये साजि सहाय।
पंक्ति पंक्ति पदयोग मख राजितभे नरराय॥
रुक्मिणिरमण गये संगबाटा। साधारण शुचि पूरणठाटा॥
भूपसुता करमाल उठाये। देखतअखिल फिरत मुद्पाये॥
परिहरि सबहि प्रभुहि पहिराई। बिजय प्रसूनावलि सुखदाई॥
जस मर्य्याद ब्याह श्रुतिगाई। तसकरि ब्याहिचले यदुराई॥
बहु महीप तिन मारगरोका। लज्जितह्वैतजि नीतिविवेका॥
कोउकह जीवत बांधौ याको। संगरघात बेगिही ताको॥
निधन करिय मूरुख कहकोऊ। जानअजान बदतजड़सोऊ॥
रोकत पंथ पंथ अरुझाना। महा समरभा सब जगजाना॥
दो० चलेबाण दुहुँओरते प्राबिट बुन्द समान।
मारु मारु घनगर्ज भट मेघ तड़ित दुकृपान॥
प्रभु रोषे को रक्षण हारा। मारग समर प्रगट बिकरारा॥
निशितबिशिखलखिभूपपलाने। जनुहरिलखिहरिव्यूहलुकाने॥
क्षत्रीधर्म धारि जिय कोई। जीवन आशत्यागिरण सोई॥
जुरेत्यागि तनगे सुरधामा। पहुँचेपुर प्रभु पूरण कामा॥
बहु आनंद द्वारका छावा। पावन चरित भूप हौं गावा॥
पंचब्याहइमि करि जनपाला। कस्यौ बिहार पवित्र बिशाला॥
आठौ पटरानी सुखदानी। रहैं सदा सेवा महँ सानी॥
रुक्मिणि भालुसुता सतिभामा। कालिंदी हितुबिन्दा नामा॥
दो० सत्या भद्रा लक्ष्मणा नाम मनोहर आठ।
दुखदारिद भंजन नृपति करै जो नितप्रतिपाठ॥

मंगल को सामर्थजग हरि तजिभत्र जयकाज।
परिहरि आशभरोसतू भजु दुखहर ब्रजराज॥
इतिश्रीमद्विविधकिल्बिषान्धकारदिनमणिश्रीकृष्णप्रियायां
मंगलदासविरचितायांश्रीकृष्णपंचविवाहवर्णनोनाम
ऊनषष्टितमोऽध्यायः ५९॥

दो॰ यह शरीर जड़है सही बदत बेद बुधिवान।
देखि लेहनिज अच्छहू तजिमन भ्रमअभिमान॥
जैसे याकी पालना करत सरुचि नितमीत।
तैसे च्छणहूं मूढ़मन गाउ श्याम यश गीत॥
सिद्धि लहै तिहुं कालमें दुहूं ओर की सत्य।
भ्रमत वृथा भव वीथिका लहत अनेक बिपत्य॥
काम क्रोध लोभादि को भोगचहत मनमूढ़।
अंत समय पुर दंड कह डरत न लहत अगूढ़॥
बिनु ध्याये हरिपद कमल गाये बिनु यशतासु।
जीवत क्लेश अपार भव मृतेनरक महँ बासु॥

एक समय मानस तन धारी। च्छोणी कस्यो भूपतप भारी॥
तपसअकथलखिबिधिहरिबामा। तासु कूल आये गुणग्रामा॥
कहिय कश्यपी को बर चाहा। सो पांचौ भेटौउर दाहा॥
कोउ कृत करत अकारण नाहीं। बदत नीति यहनीतिसदाहीं॥
कृपापयोधि पुत्र अभिलाषा। मोरे हृदय सत्य मतभाषा॥
सबल होइ अति तेज प्रकासी। बहु प्रताप मयभूमिबिलासी॥
महा अजित रण जुरै न कोई। काहू कर न मरैसुत सोई॥
जो दयाल मोपर तुम देवा। तौबर याच्यमान है एवा॥

दो॰ एसा बचन सुनि हँसि बद्यो त्रैदेवन यों राय।
नरकासुर असनाम सुत ह्वै है तजु दुबिधाय॥

बल प्रताप युत महा प्रबीना। युद्ध अपीण तोर आधीना॥
ब्रह्मसृष्टि जहँ लगि सुनु च्छोनी। बधिहिनताहिकोउचहुंयोनी॥
भूपति तोर पृष्ठितल जेते। होहिं तदज्ञा बश सब तेते॥

अमर लोकलहुसोगति पाइहि। बार अपार दिवेश सताइहि ॥
संगर जीति अमरगण नाना। माधवसनबिरचिहिनिजथाना॥
कुंडल अदिति केर लै आइहि। भूषण करणसुआपुवनाइहि ॥
वासव छत्र धरिहि शिर आपू। बिपुलातंकित तासु प्रतापू ॥
षोडश सहस महीपति जाता। लाइहिसमर जीतिबिख्याता ॥
दो० अनउद्वाहित बंदि गृह राखिहि ते बहुनारि।
शुद्धि पाय परिणाम हरि आइहि कटक सम्हारि ॥
तब तू हरिहि तासु बधकाजा। कहिहि सरोषअरातजिलाजा ॥
मर्दि ताहि तुव आज्ञा पाई। नृपजालै जाइहि यदुराई ॥
बिहँसि महीकह अस जड़ताई। मैं किमर्थ करिहौं सुरसाई ॥
कोटि दुष्टता वश महतारी। सुतवधव्रहतनदीख बिचारी ॥
दैबर तोषि रसा भुवराई। गयेलोकनिजनिजत्रिबिधाई॥
समय पाय प्रगट्यो यकजाता। भौमासुर खलजग दुखदाता ॥
कोऊ कहत नरकासुर नामा। बसतप्रागज्योतिषपुर धामा ॥
बल प्रताप बरबश बहु ताके। बायु आग्नि रचक भे जाके ॥
दो० जसबर दीन्हो प्रथम बिधि हरिहर संभव जानि।
करै लाग तस असुरसोइ बिनुप्रयास मुदमानि ॥
देश देशके अधिप अनेका। बन्दी गृह राखे अविवेका ॥
सोरह सहस नृपन की जाया। बन्दि करसिकरितमचरमाया ॥
यतन समेत राख आगारा। संध्या प्रात रहै रखवारा ॥
सेवहि तिनहिंबिपुलबिधिराजा। यथासाधुकोउअतिथिसमाजा॥
जीति लंकपति पूरुष याना। लैआयो खल प्रबलमहाना ॥
तदारूढ़ वृंदारक बासा। गयउभूमिपतिबिनहिप्रयासा ॥
अखिल दिवौकस दुष्ट सताये। अमरलोकसबकहँबिकलाये ॥
जीव लोभ अमरेश पलाना। दारुणबिपतिबिवशबलवाना॥
दो० कुंडल लीने अदिति के छत्र मुकुट सुरराय।
यम कुबेर इत्यादि सब तजि थल गये पराय ॥
हरिजन ऋषय बिप्र गो राजा। दंड देत सबकहँ बेकाजा ॥

व्रततीरथ निंदा रत रहई । श्रुति विरोधखलधर्मंहिगहई ॥
सुनि आचरण तासु यदुनायक । दीनबंधु आरतसुखदायक ॥
शोचे यह जड़भा अन्याई । अवशिदेउ यमलोक पठाई ॥
त्रियगण मोचि बंदिते लाऊं । शुचिनिकेत द्वारकाबसाऊं ॥
छत्र लाय रिपु पाकहि देऊं । अभय बसाय सुयशबड़लेऊं ॥
कुंडल अदिति देइ सुख पाऊं । असुर भंजिमहिभारमिटाऊं ॥
पुनिबर तासु बिचारिबिशाला । सतिभामहिकहदीनदयाला ॥
दो० जोमम संग चलुतो बधौं भौमासुर बिबुधारि ।
बिनु आज्ञा तुव मरि हि नहिं धराअंश तू नारि ॥
जब त्रिदेव बरमहि कह दीन्हा । सुतहित तब यहबाचाकीन्हा ॥
निज मुख मृत्यु याचिहै जबहीं । जूझहि समर तनय तबतबहीं ॥
धरा अंशतू जननी ताकी । तुव आज्ञाकारी मृतु बाकी ॥
मन मलीन दुख तरु सुकुलानी । आरत मय फलगिराबखानी ॥
ममजा तुव सुत बधब अनीती । करियकंतवासंग अतिप्रीती ॥
जननी नेह हृदय तरु जामा । प्रभु देखा फल दुखपरिणामा ॥
खंड्यो तेहि निर्मोह कुठारी । प्रेरि योगमाया असुरारी ॥
पूरब चर्चा टारि विहारी । कह्यो प्रिया सुनु बात हमारी ॥
दो० नहिं इच्छा बध तासुकी एक बारता आन ।
एक समय हौं भूतही दियो तोहिं बरदान ॥
ताहि चहौं पूरण प्रिय कीना । को बरदीन सोकहियप्रबीना ॥
एक काल सुर ऋषि हरि फूला । दयो आय मोहिं मंगल मूला ॥
सो रुक्मिणिहि प्रेम युत दयऊ । तोरे उर अपार दुखभयऊ ॥
कह्यों नहो प्रिय जीव उदासा । करु प्रबोध पुजवौंतुवआसा ॥
तरु मंदार लाइ तोहि देहौं । मन प्रसन्न करि जगयशलेहौं ॥
यहि कारण चलु तू मम संगा । पुर बैकुंठ देखु अघ भंगा ॥
पारिजातगण जहां सोहाये । देत मनोरथ उर मुदछाये ॥
मन प्रसन्न बहुसुनि प्रभु बानी । तरस उपस्थित भई सयानी ॥
दो० बैनतेय आये तबहिं हरि इच्छा अनुमानि ।

सतिभामा युत चढ़ि चले दुहूं भांति सुखदानि ॥
का बिचारि प्रथमहिंदुखमाना। नित्यवाक्यप्रियकरिहिबखाना ॥
करहुन शोच भौमासुर मारे। दुष्ट निधन करि बेद पुकारे ॥
मर्दि असुर बहुभूप दुलारी। बरिहौं लाय दयाल अघारी ॥
तेहि समाजमहँ गणना मोरी। करिहौं नाथ धर्म सुख धोरी ॥
यहै बिथुर मोरे मन आवा। अजहूं नाथ जीव पछितावा ॥
तरु संतान लाय तुव धामा। धरिहौं सत्यमानु प्रिय बामा ॥
तेहिसंग पुण्यकरयो तुममोहीं। भवसुलोक बहुहोइहि तोहीं ॥
पुनिद्विजतेमोहिंलिहेउबिसाही। मेटयो चितचिन्ता बहुताही ॥
दो० तवाधीन रहिहौं सदा यहि कर्तव सुनु बाम।
कर्म अयोगन नारिसुनु महापुण्यदा काम ॥
इंद्रानी निजपति दिय दाना। एकसमय यहि भांति सज्ञाना ॥
अरुकश्यपहिअदितियककाला। दानदयोतजिभ्रम अघजाला ॥
तुवसम प्रिया न मम कोउहोई। यह सुदान शुचि बेदकहोई ॥
अस बतरात भौमपुर गयऊ। नगरनिरोध बिलोकतभयऊ ॥
कोट ओट गिरिपथ हरिबारी। लखिअतिदृढ़अस्त्रोभवनवारी ॥
पठयो चक्र अनिल अरिभाना। कहा बेगि नाशहु बलवाना ॥
क्षणमहँ ढाहि बुझाय बहावा। रोकि सक्रमशुभ पंथ बनावा ॥
प्रबिशे नगर देवजन त्राता। बिसमय मोद रहित बिख्याता ॥
दो० हरिहि देखि धाये अमित पुररक्षक करि क्रोध।
गदाघात मर्दे अखिल सुनि पुर बढ़यो बिरोध ॥
रक्षक बध सुनि पुर आतंका। भयो महीश यथा कपिलंका ॥
समाचार सुनि रोष बढ़ाई। चल्यो पंचशिरहित रव ताई ॥
मुरनामेति सुगढ़ रखवारा। महाबली जेहिकर जगहारा ॥
कर त्रिशूल जनु दंड कराला। गरजतमुदिर शब्दततकाला ॥
प्रभुतट आय अरुण करि नैना। दशन घाति बोल्यो कटुबैना ॥
ममसमद्वितियनबिधिउपजावा। कालबिवशाकसपुरचलिआवा ॥
असबादिदपटिझपटिखल धायो। मनो मत्त अहिहरिपरआयो ॥

तज्यो त्रिशूल देव आराती । जोबिलोकिमतिमृत्युसकाती ॥
दो० हरिस्वभावही चक्र करि खराड्यो शूल कराल ।
देखिअसुरबिस्मितभयो पुनिगहिधनुनरपाल ॥
क्रोधित जेखल बिशिख अपारा । तेप्रभु सहजकस्यो निरुत्रारा ॥
निकरायुध मर्दे मुरुकूरा । सकल हरे यदुनाथ समूरा ॥
अस्त्र रहित भा अमरअराती । धायो दुष्ट बज्रकरि छाती ॥
जुस्यो मल्लगति अबल महाना । कौतुक लखत देवगणनाना ॥
बहु उपाय छलबल युत करई । जाइवृथा नहिं पूरण परई ॥
सरुष भिरत जड़ सहजकृपाला । सतिभामा लखिभई बिहाला ॥
प्रिया बिकल जानी असुरारी । क्रोधितभे खल ध्वंत तमारी ॥
प्रेरिसुदर्शन खंडे शीशा । जयध्वनि गगनभई भूमीशा ॥
दो० तजतप्राणकिय शब्दअति सुनिचौंकेउ भूजात ।
कहतभयउ रवधन कहा मर्म जान कोउतात ॥
तस्मिन्काल बद्यो चर आई । सुनियदयानिधि चित्तलगाई ॥
बासुदेव अस नाम कहावा । बिहंगारूढ़ द्वारगढ़ आवा ॥
रच्छक मर्दि करयो मुरुघाता । महाप्रबल अकसर नरताता ॥
सुनिसखेदभा निशिचर नाथा । सैनपबोलिभरयोसबगाथा ॥
बधौ कृष्ण यदुवंशी होई । बिदित उपद्रवी यहहै सोई ॥
आयसु मानि चमूप सक्रोधा । साजिअनीखलसबलितयोधा ॥
नगर त्यागि चलिबाहिरआवा । हँसे श्यामलखि समरबनावा ॥
मुरसुत सुनिपितु मरणदुखारी । चले अस्त्रबहु निज तनधारी ॥
दो० सप्तबन्धु अति प्रबल नृप मुरजा बिदित जहान ।
जीति सकल जग एक यक पण्डितरणबिज्ञान ॥
आयकृष्ण सन्मुख भये अगणित भट बिकराल ।
समर भूमि बाजे बजे सुनु सच्चम महिपाल ॥
तो०छं० तबआइकहीचरयुद्धकरौ । अरिवेगिबधौ जनिजीवडरौ ॥
नृप आयसु पाय जुरे रणमें । हरित्रासितभे खलके गणमें ॥
सुरभान अपार चहूं दिशिमें । तियसाथतमारिकिधौंनिशिमें ॥

चहुं ओरहि बाण अलेख चले। लखि युद्ध सुरेश महेशहले॥
खगनायक सों कह यों हरिजू। त्रियरक्षक होन त्रसैडरिजू॥
खर ब्यूह यथा जलजात जरैं। खल अस्त्र तथा हरिकोपिहरैं॥
द्विजराज कह्यो सुनुदेव पती। सतिभाम भयातुर नाथअती॥
सुनि क्रोधित ह्वैकर चक्र धस्यो। क्षणमेंदलज्योंदलबायुहरयो॥

भुजंगप्रयात छन्द॥

चमूपालभंज्योबिनात्रासस्वामी। मृगाधीशसपैंतथाचक्रभ्रामी॥
मुरूजात सातौ बधे खेतहीमें। मिलायेघने युद्ध मंडीमहीमें॥
सुने सुद्धिभौमासुरै मोहआवा। कहादैवकरतारकोकालखावा॥
महाशोच में बुद्धि वे बुद्धिसोई। बलीनिर्बलीजीवक्योंज्ञानहोई॥
मुरै जोवधे औ हने सैनपाला। नहीं पुन्स संसारपुंरूपकाला॥
लिखाजोबिधातामानीकहोई। जयाजै सदायुद्धमें कर्मदोई॥
वृथाशोच की भूलमेंआयजावै। बिनाकर्म क्योंकर्मह्वैजीवपावै॥
कुचिंतासु चिंतानकीहानिकारी। तजेयाहि तू जीवहोवैसुखारी॥

दो० असमन शोचबिनाय दल चल्यो समर महिसूत।
आच्छादित आयुध बपुष महाबली महिपूत॥
सो० समरभूमि महं जाय हरिहि देखि गर्जत भयो।
महारोष उरछाय शिशिखासन शरकर धरयो॥
छं० करधारि धनुशर समर मंड्यो बाण बहु छंड्यो तहां।
अमरेश देखत देव मुनि गणसहित चित चिन्तामहा॥
जो तजै तोमर तीव्र निशिचर तुरत प्रभु खंडन करैं।
चहुं ओर घोर अपार आयुध छुटहिं ते सहजहिंहरैं॥
हरि कोपि त्यागे प्राण हर शर चलेते हहकार मय।
बेधेअनीतन सहज सिगरेबिपुलखल बिनप्राणकय॥
कोउ तात तात पुकार पितु पितु भ्रातभ्रात पुकारहीं।
लैजीव भागे युद्ध महि नहिं मित्र मित्र सम्हारहीं॥
पवमान रिपुसम बाण धावहिं असुर बाहनिकोडसैं।
बिललाय त्राहि पुकारि भागैं देखिकौतुक सुरहसैं॥